राजस्थान के 19 नवीनतम जिले :-

4 अगस्त 2023 को मंत्रीमण्डल की बैठक मे इन जिलो को अंतिम रूप दिया गया।
6 अगस्त 2023 को अधिसूचना जारी की गई जबकि यह अधिसूचना 7 अगस्त 2023 को प्रभावी हो गई।

1. अनूपगढ़
2. फलौदी
3. जोधपुर
4. जोधपुर ग्रामीण
5. बालोतरा
6. सांचौर
7. सलूम्बर
8. शाहपुरा
9. केकडी
10. ब्यावर
11. डीडवाना कुचामन
12. दूदू
13. जयपुर
14. जयपुर ग्रामीण
15. नीम का थाना
16. कोटपुतली बहरोड
17. खैरथल तिजारा
18. डीग
19. गंगापुर सिटी

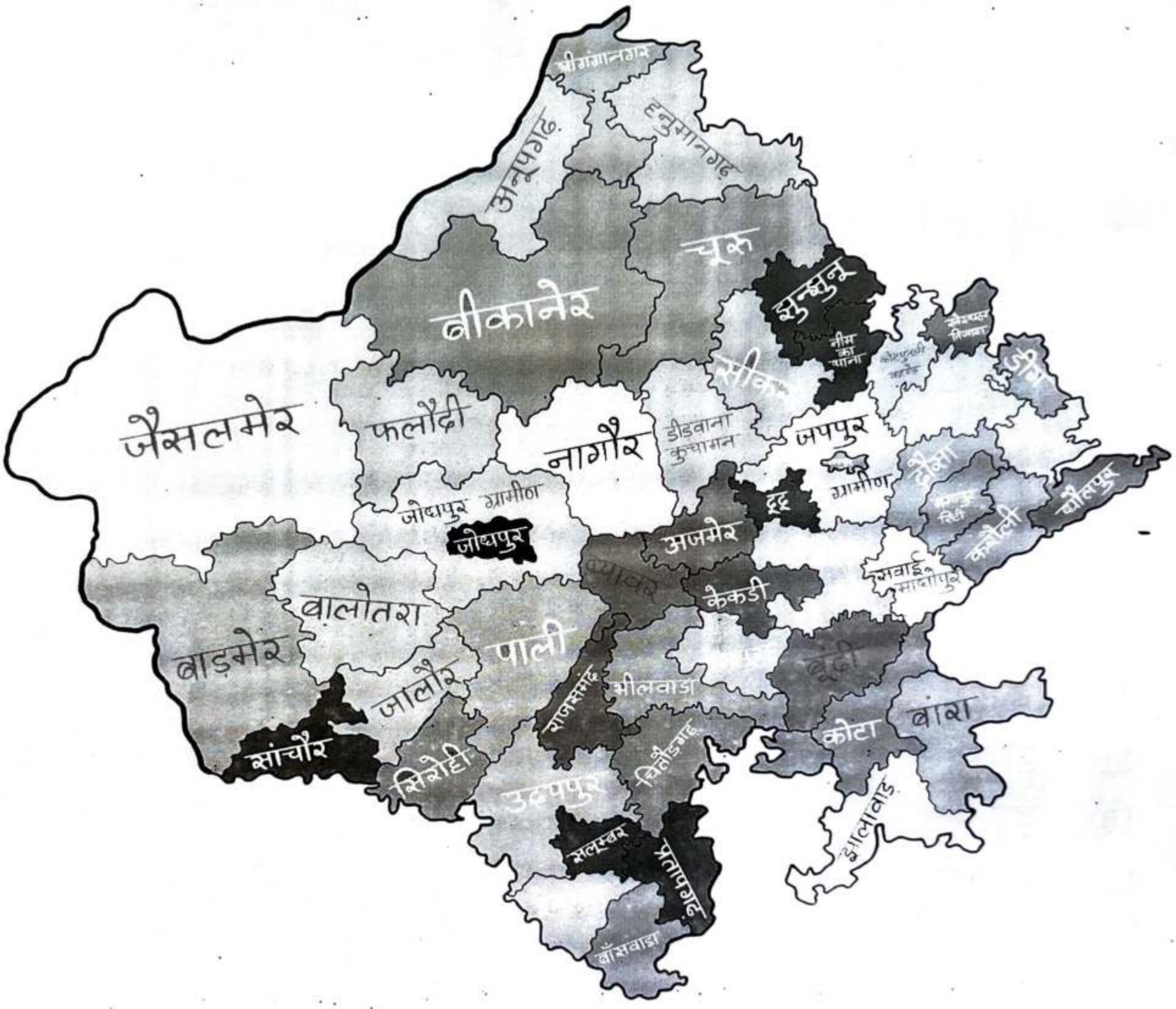
श्रीगंगानगर
हनुमानगढ़
अनूपगढ़
चूरू
झुन्झुनू
बीकानेर
नीम का थाना
सीकर
जैसलमेर
फलौदी
नागौर
डीडवाना कुचामन
जयपुर
ग्रामीण
दौसा
जोधपुर ग्रामीण
जोधपुर
अजमेर
दूदू
धौलपुर
करौली
सवाई माधोपुर
ब्यावर
केकड़ी
बालोतरा
बाड़मेर
पाली
बूंदी
भीलवाड़ा
राजसमंद
जालोर
कोटा
बारां
सांचौर
सिरोही
उदयपुर
चित्तौड़गढ़
झालावाड़
सलूम्बर
प्रतापगढ़
बाँसवाड़ा

जिला शुभंकर

क्र.स.	जिला	शुभंकर
1.	बाड़मेर	मरूलोमड़ी
2.	जैसलमेर	गोडावण
3.	बीकानेर	भट्टतीतर / रेत का तीतर
4.	श्रीगंगानगर	चिंकारा
5.	हनुमानगढ़	छोटा किलकिला
6.	चुरू	कृष्णा मृग
7.	झुंझुनू	काला तीतर
8.	सीकर	शाहीन
9.	जयपुर	चीतल
10.	अलवर	सांभर
11.	भरतपुर	सारस
12.	धौलपुर	पंचीरा / इंडियन स्कीमर
13.	करौली	घड़ियाल
14.	सवाई माधोपुर	बाघ
15.	कोटा	उद्‌बिलाव
16.	बांरा	मगरमच्छ
17.	झालावाड़	गागरोनी तोता
18.	चित्तौड़गढ़	चौसिंगा
19.	भीलवाड़ा	मोर
20.	प्रतापगढ़	उड़न गिलहरी
21.	बांसवाड़ा	जलपीपी
22.	डुंगरपुर	जांघिल

क्र.स.	जिला	शुभंकर
23	उदयपुर	कब्र बिज्जु
24	सिरोही	जंगली मुर्गा
25	जालौर	भालू
26	जोधपुर	कुरजा
27	नागौर	राजहंस
28	अजमेर	खड़मोर
29	टोंक	हंस
30	दौसा	खरगोश
31	बूँदी	सुर्खाब
32	राजसमंद	भेड़िया
33	पाली	तेन्दुआ

श्रीगंगानगर
हनुमानगढ़
चिकारा
छोटा किलकिला
चूरू
कृष्णा मृग
बीकानेर
भट्टतीतर
जैसलमेर
गोडावण
नागौर
राजहंस
कुरजा
जोधपुर
जोधपुर ग्रामीण
झुन्झुनू
सीकर
शाहीन
जयपुर ग्रामीण
जयपुर
चीतल
अलवर
भरतपुर
सारस
दौसा
करौली
धौलपुर
अजमेर
खड़मोर
टोंक
हंस
सवाई माधोपुर
बाघ
बूंदी
कोटा
बारां
झालावाड
बाड़मेर
पाली
तेन्दुआ
जालौर
भालू
सिरोही
जंगली मुर्गी
राजसमंद
मोर
भीलवाड़ा
भेड़िया
चित्तौड़गढ़
चौसिंगा
कबर बिज्जू
उदयपुर
प्रतापगढ़
उड़न गिलहरी
डूंगरपुर
जांघिल
बाँसवाड़ा
जलपीपी

राजस्थान का सामान्य परिचय

- स्थिति
- विस्तार

1. राजस्थान की स्थिति :-

विश्व / ग्लोब	-	उत्तर - पूर्व
भूमध्य रेखा	-	उत्तर
ग्रीनविच रेखा	-	पूर्व
भारत	-	उत्तर - पश्चिम
एशिया	-	दक्षिण - पश्चिम
अक्षांश	-	उत्तर
देशान्तर	-	पूर्व

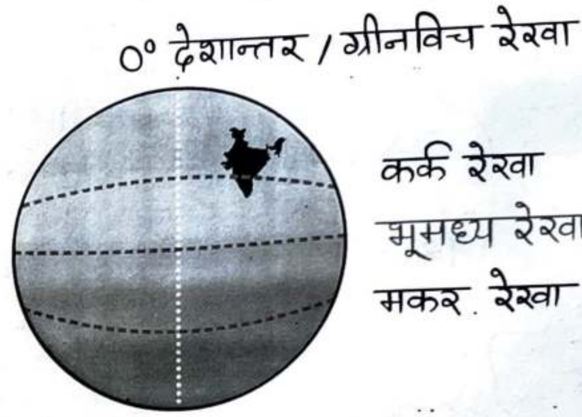

अक्षांश रेखा ⇒ ग्लोब पर पूर्व से पश्चिम की ओर खींची गई काल्पनिक रेखा अक्षांश रेखा कहलाती है।

अक्षांश ⇒ भूमध्य रेखा से उत्तर एवं दक्षिण के मध्य की कोणीय दूरी अंक्षाश कहलाती है।

देशान्तर रेखा ⇒ ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण के मध्य खींची गई काल्पनिक रेखा देशान्तर रेखा (Longitude line) कहलाती है।

देशान्तर ⇒ 0° देशान्तर से पूर्व तथा पश्चिम के मध्य की कोणीय दूरी देशान्तर कहलाती है।

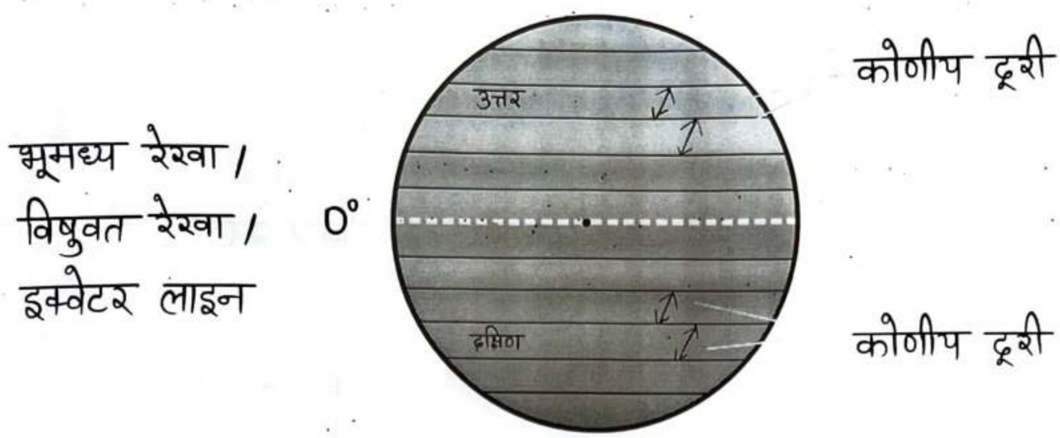
कोणीय दूरी
उत्तर
भूमध्य रेखा / विषुवत रेखा / इक्वेटर लाइन
0°
दक्षिण
कोणीय दूरी

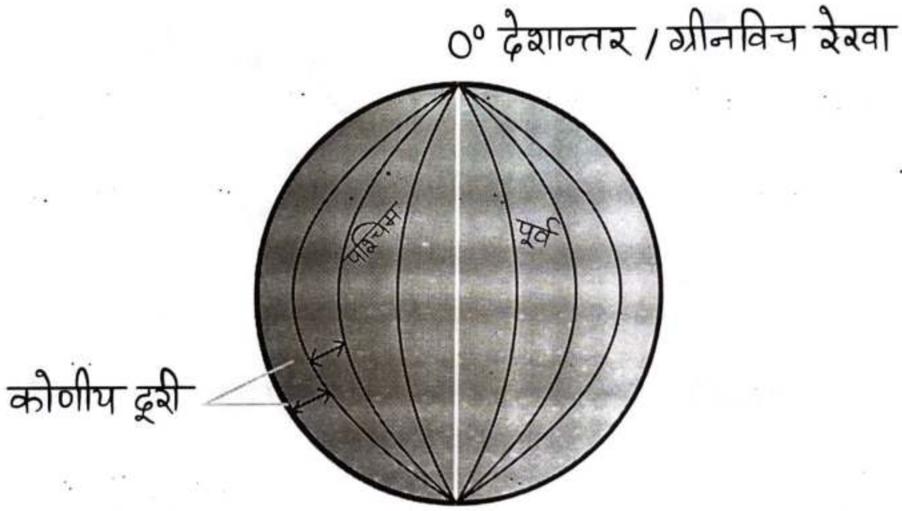
0° देशान्तर / ग्रीनविच रेखा
पश्चिम
पूर्व
कोणीय दूरी

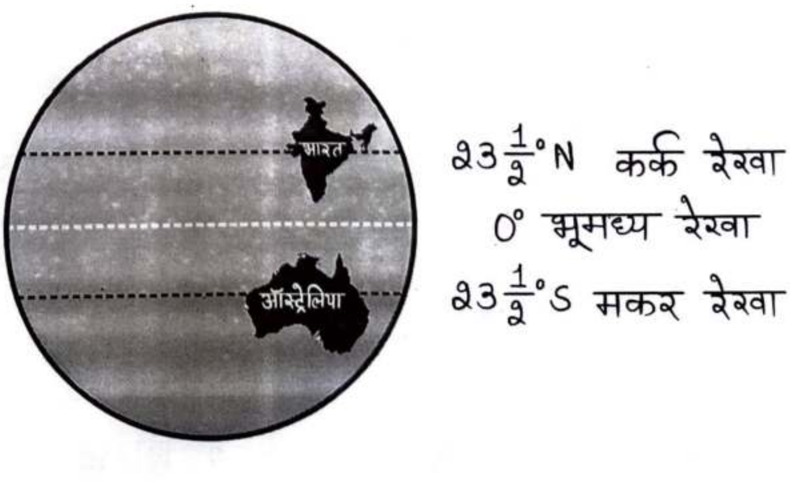
भारत
$23\frac{1}{2}$°N कर्क रेखा
0° भूमध्य रेखा
ऑस्ट्रेलिया
$23\frac{1}{2}$°S मकर रेखा

• ग्रीनविच रेखा के पूर्व दिशा की ओर जाने पर समय बढ़ता है जबकि पश्चिम की ओर जाने पर समय घटता है।

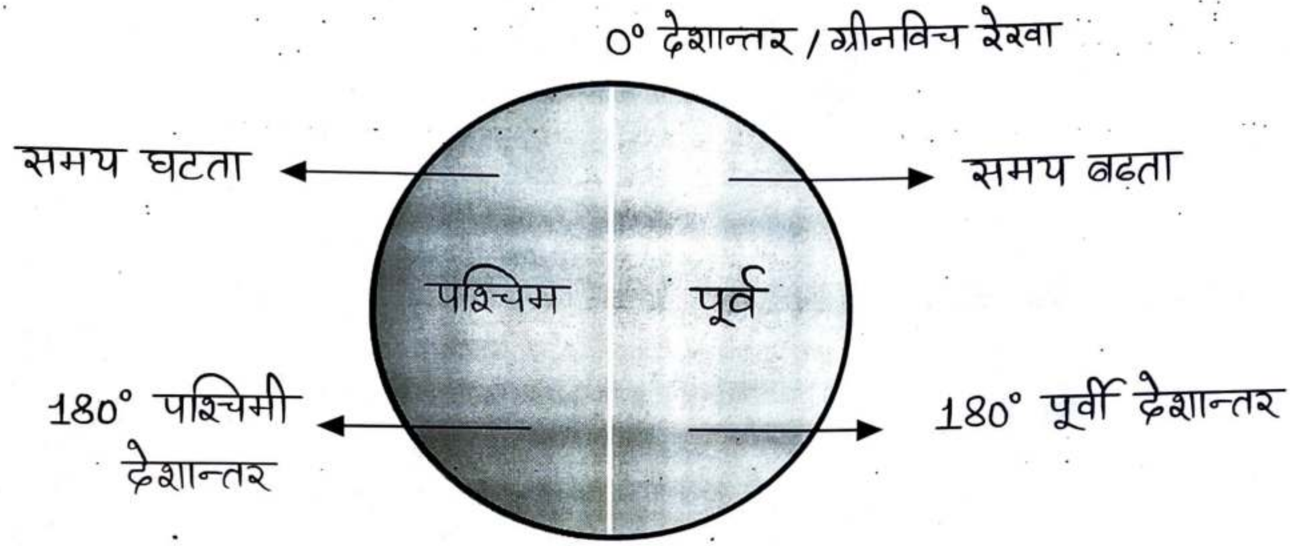

• कुल देशान्तर रेखाएँ - 360

➤ पृथ्वी 24 घण्टे में 360° देशान्तर रेखाओं को पार कर जाती है।

→ 24 घण्टे = 360° देशान्तर

→ 1 घण्टा = $\frac{360}{24}$ = 15° देशान्तर

→ 15° देशान्तर = 60 मिनट

1° देशान्तर = $\frac{60}{15}$ = 4 मिनट

Q.1 → 10° पूर्वी देशान्तर पर समय सांयकाल के 6 बजे हैं तो 70° पूर्वी देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

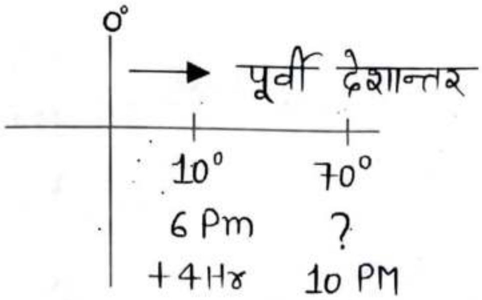

70 − 10 = 60
× 4
240 मिनट (4 Hr)

Q.2 → 70° पूर्वी देशान्तर पर समय 12 AM है तो 110° पूर्वी देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

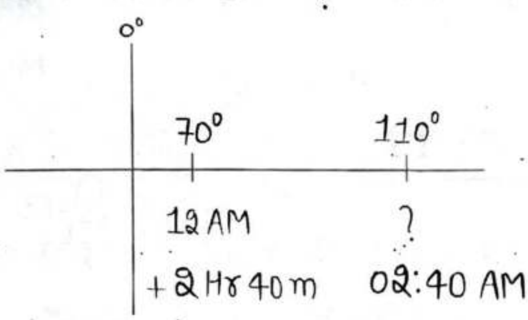

110 − 70 = 40
× 4
160 मिनट
(2 घण्टे 40 मिनट)

Q.3 → 80° पूर्वी देशान्तर पर समय 7 AM है तो 30° पूर्वी देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

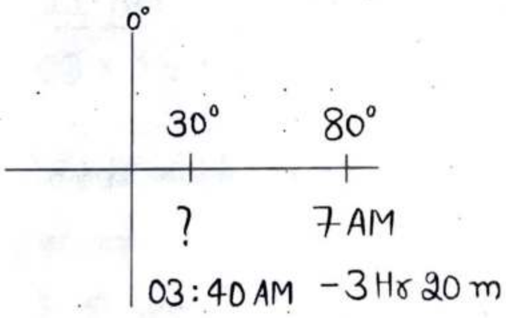

80 − 30 = 50
× 4
200 मिनट (3 Hr 20 m)

Q.4 → 130° पूर्वी देशान्तर पर समय 11 AM है तो 60° पूर्वी देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

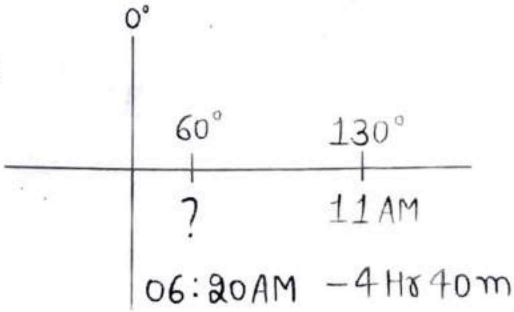

130 − 60 = 70
× 4
280 मिनट (4 Hr 40 m)

Q.5 → 30° पश्चिमी देशान्तर पर समय 9 PM है तो 60° पश्चिमी देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

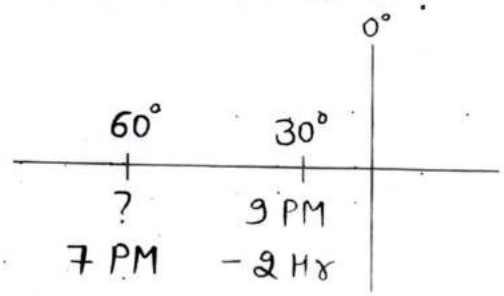

60 − 30 = 30
× 4
120 मिनट (2 घंटे)

Q.6 → 90° पश्चिमी देशान्तर पर समय 4 AM है तो 20° पश्चिम देशान्तर पर समय क्या होगा ?

Ans. →

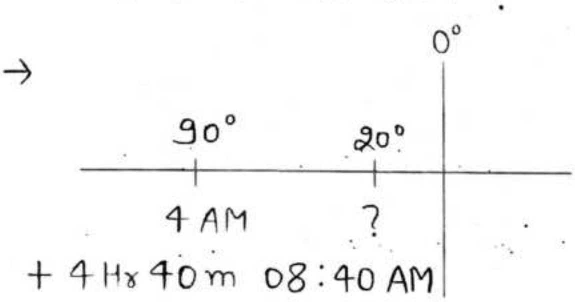

90 − 20 = 70
× 4
280 मिनट (4 Hr 40 m)

Q.7 → 70° पूर्वी देशान्तर पर समय 10 PM है तो कितने डिग्री पूर्वी देशान्तर पर समय 1 AM होगा ?

Ans. → 10 PM, 01 AM] अन्तर → 3 H × 15 = 45 + 70 = 115°

Q.8 → 30° पूर्वी देशान्तर पर समय 2 PM है तो कितने डिग्री देशान्तर पर समय 6 PM होगा ?

Ans. → 02 PM, 06 PM] अन्तर → 4 H × 15 = 60 + 30 = 90°

Q.9 → 100° पूर्वी देशान्तर पर समय 8 PM है तो कितने डिग्री देशान्तर पर समय 3 PM होगा ?

Ans. → 08 PM]
03 PM] अन्तर → 5 H × 15 = 75°

= 100° − 75° = 25°

Q.10 → 50° पश्चिमी देशान्तर पर समय 12 AM है तो कितने डिग्री देशान्तर पर समय 8 PM होगा ?

Ans. → 12 AM
08 PM

4 H × 15 = 60° + 50° = 110° पश्चिमी देशान्तर

Q.11 → 110° पश्चिमी देशान्तर पर समय 8 AM है तो कितने डिग्री पर समय 11 AM होगा ?

Ans. → 08 AM
11 AM

03 × 15 = 45   110° − 45 = 65°

Q.12 → धौलपुर जिला राजस्थान के पूर्व में स्थित है जो 78° पूर्वी देशान्तर पर स्थित है और यहाँ सूर्य उदय 5 बजकर 55 मिनट पर होता है तो बताइऐ राज्य के पश्चिम दिशा मे स्थित जैसलमेर जो की 70° पूर्वी देशान्तर मे स्थित है, यहाँ सूर्य उदय कब होगा ?

Ans. → 78° − 70° = 8 × 4 = 32 मिनट

05 : 55
+ 32 m

06 : 27 AM

Q.13→ बाडमेर 80° पूर्वी देशान्तर पर स्थित है यहाँ से यात्रीगण का प्रस्थान समय 06 AM है तो बताइऐ इन सभी यात्रीगण के अलवर (120° पूर्वी देशान्तर मे) पहुँचने का समय क्या होगा ?

Ans. → 80° - 120° = 40

$$\begin{array}{r} 40 \\ \times 4 \\ \hline 160 \end{array}$$

160 मिनट (2Hr 40m)

$$\begin{array}{r} 06:00 \text{ AM} \\ 02:40 \text{ m} \\ \hline 08:40 \text{ AM} \end{array}$$

→ भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर अक्षांश रेखाओं की लम्बाई कम हो जाती हैं लेकिन इनके बीच की दूरी पर सामान्यत: कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

→ देशान्तर रेखाओं की लम्बाई पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं लेकिन इनके बीच की दूरी ध्रुवों पर शून्य हो जाती हैं।
दो अक्षांश रेखाओं के बीच का क्षेत्र कटिबन्ध जबकि दो देशान्तर रेखाओं के मध्य का क्षेत्र गौरे कहलाता हैं।

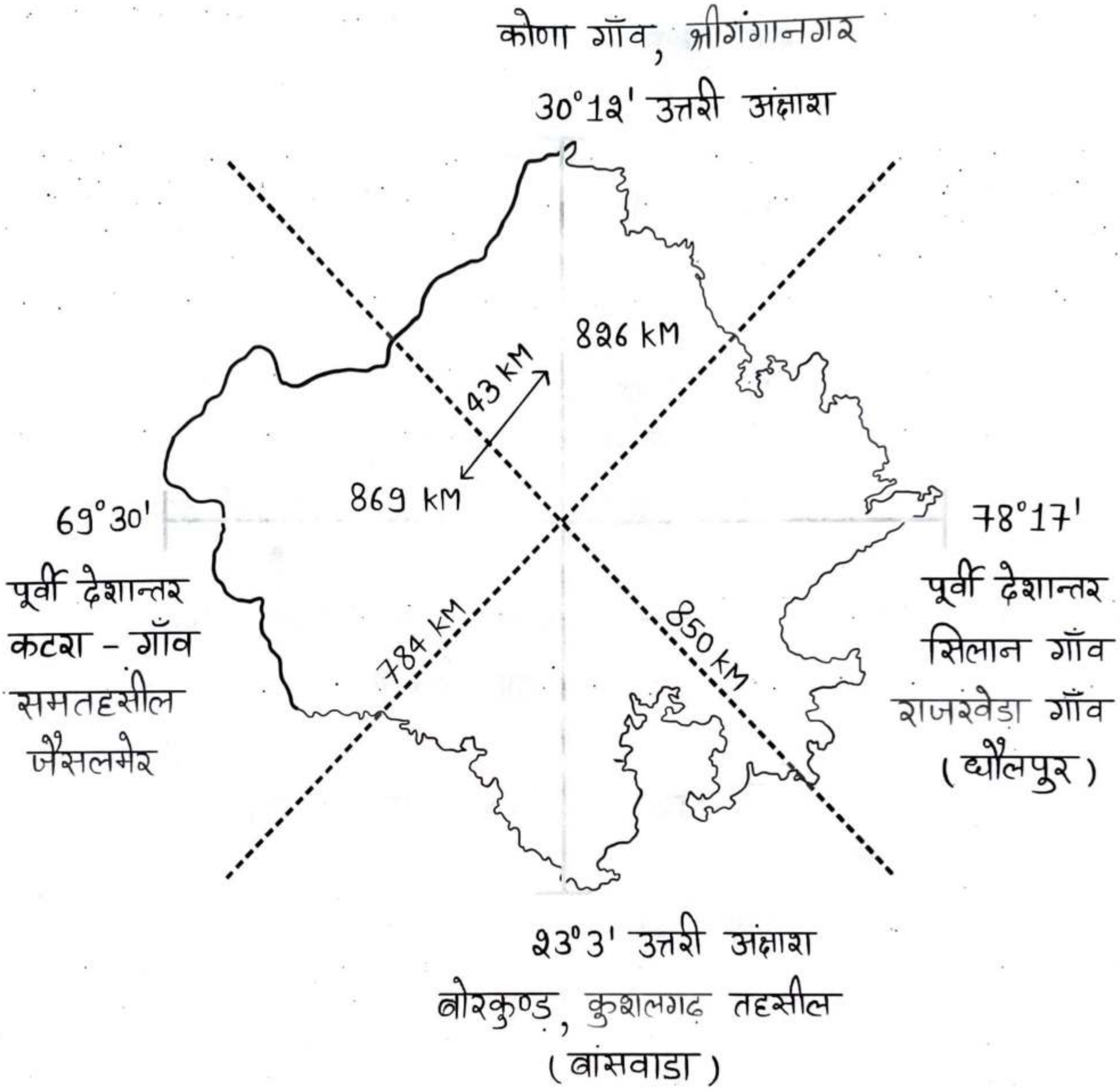

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार :-

23°3' उत्तरी अक्षांश → 30° 12' उत्तरी अक्षांश

7°9' (अक्षांशीय विस्तार)

अंक्षाश रेखाएँ - जलवायु निर्धारण
देशान्तर रेखाएँ - समय का निर्धारण

उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व विकर्ण की लम्बाई = 850 KM ⎤
दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व विकर्ण की लम्बाई = 784 KM ⎦ अंतराल 66 KM

राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार :-

69° 30' पूर्वी देशान्तर — 78° 17' पूर्वी देशान्तर

8° 47' (देशान्तरीय विस्तार)

→ राजस्थान मे 9 देशान्तर रेखाएँ तथा 7 अक्षांश रेखाएँ गुजरती हैं।

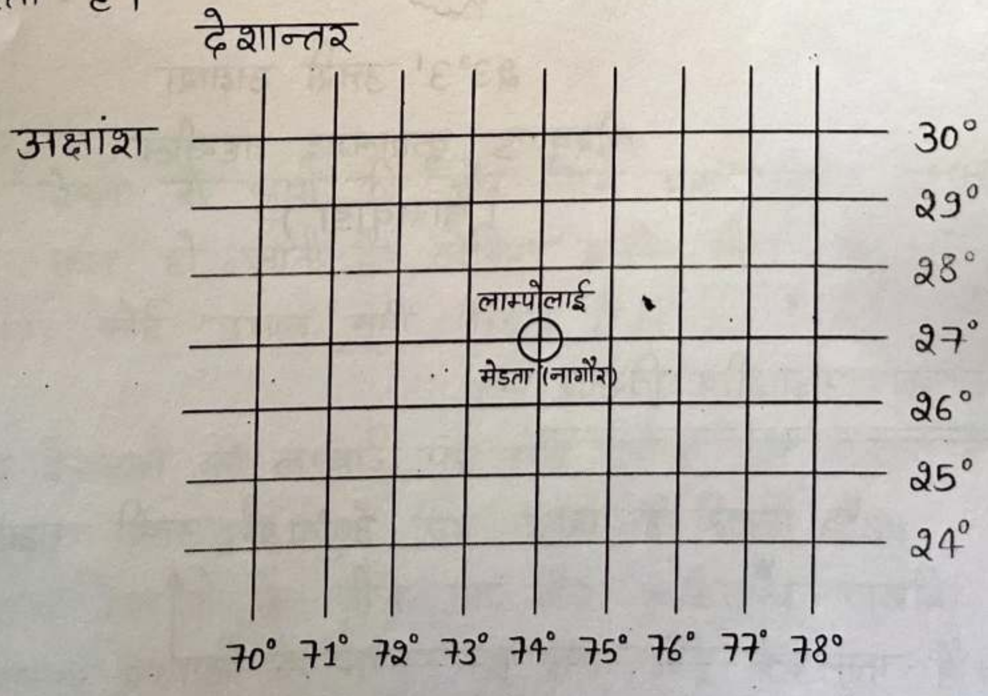

→ राजस्थान का मध्य गाँव = लाम्पोलाई, मेडता तहसील (नागौर)

2. राजस्थान का विस्तार :-

स्थलीय सीमा (5920 KM)

- अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
  - 1070 KM
- अन्तर्राज्यीय सीमा
  - 4850 KM

1. अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा

रेड क्लिफ रेखा (भारत - पाक)

निर्धारण - 15 अगस्त 1947

लागू - 17 अगस्त 1947

→ यह अध्यारोपित रेखा है।

→ इस पर दो केन्द्रशासित प्रदेश स्थित हैं - लद्दाख जम्मू कश्मीर

→ इस पर तीन राज्य स्थित हैं - पंजाब, राजस्थान, गुजरात

→ कुल लम्बाई - 3310 / 3323 KM

→ इस पर सर्वाधिक सीमा - राजस्थान (1070 KM - 32.32 %)

→ इस पर कम सीमा - गुजरात (510 KM - 15.4 %)

राजस्थान के सन्दर्भ मे रेडक्लिफ :-

शुरुआत - हिन्दुमल कोट (श्रीगंगानगर)

अंतिम बिंदु - बाखासर (बाड़मेर)

इस पर 5 जिले स्थित हैं - 1. श्रीगंगानगर 2. अनुपगढ 3. बीकानेर 4. जैसलमेर 5. बाड़मेर

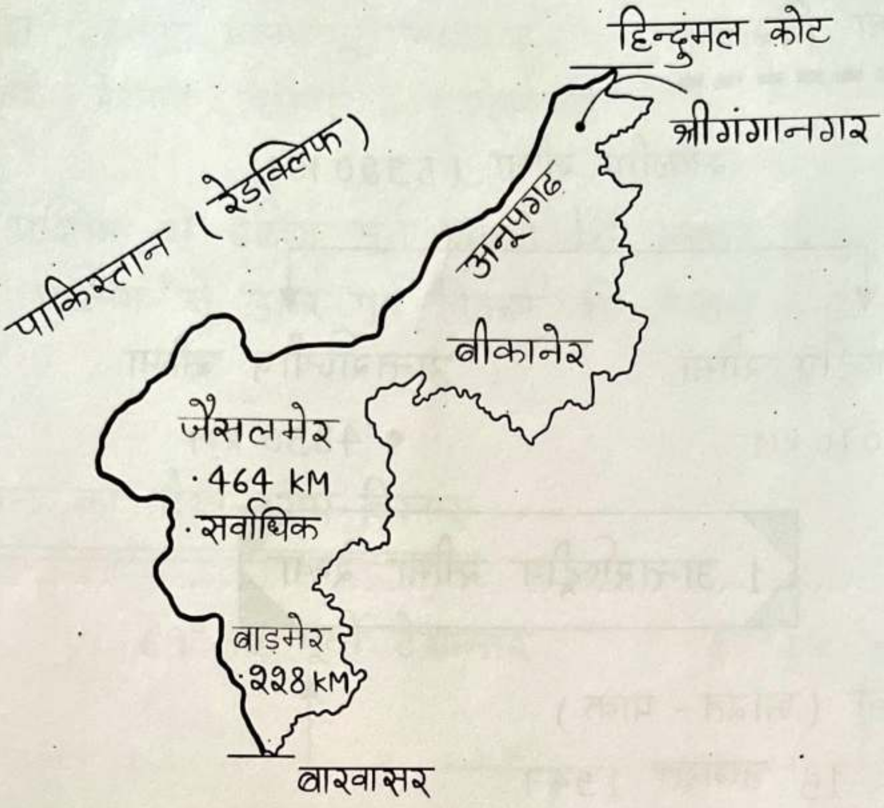

सर्वाधिक सीमा – जैसलमेर (464 KM) एवं बाड़मेर (228 KM) बनाता है।

नजदीकी जिला मुख्यालय – 1. अनुपगढ़
2. श्रीगंगानगर

इस पर दूर जिला मुख्यालय – बीकानेर

Note :- रेडक्लिफ पर दूर जिला मुख्यालय – धौलपुर

राजस्थान की स्थलीय सीमा में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा का योगदान 18.07 % है।

➤ पाकिस्तान के (9) जिले राजस्थान के साथ सीमा साझा करते हैं -

1. बहावलनगर सीमा का निर्धारण → श्रीगंगानगर
→ अनूपगढ़

2. बहावलपुर → अनूपगढ़
→ बीकानेर
→ जैसलमेर

3. संघर → जैसलमेर
→ बाड़मेर

➤ पाकिस्तान के (6) जिले जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं -

1. बहावलपुर
2. रहीमयारखान
3. घोटकी
4. सुक्कुर
5. खैरपुर
6. संघर

➤ पाकिस्तान के (4) जिले केवल जैसलमेर के साथ सीमा बनाते हैं -

1. रहीमयारखान
2. घोटकी
3. सुक्कुर
4. खैरपुर

➤ पाकिस्तान के (3) जिले बाड़मेर के साथ सीमा बनाते हैं -

1. संघर
2. उमरकोट
3. थारपारकर

➤ पाकिस्तान के (2) जिले केवल बाड़मेर के साथ सीमा बनाते हैं -

1. उमरकोट
2. थारपारकर

२. अन्तर्राज्यीय सीमा 4850 KM

➤ 5 राज्यों के साथ सीमा –

1. मध्यप्रदेश – 1600 KM
2. हरियाणा – 1262 KM
3. गुजरात – 1022 KM
4. उत्तरप्रदेश – 877 KM
5. पंजाब – 89 KM

1 मध्यप्रदेश (1600 KM)

		राजस्थान + मध्यप्रदेश	मध्यप्रदेश + राजस्थान
सर्वाधिक सीमा	–	झालावाड़	नीमच
कम सीमा	–	भीलवाड़ा	झाबुआ
नजदीक जिला मुख्यालय	–	धौलपुर	मंदसौर
दूर जिला मुख्यालय	–	भीलवाड़ा	रतलाम

राजस्थान के 10 जिले मध्यप्रदेश के साथ तथा मध्यप्रदेश के 10 जिले राजस्थान से साथ सीमा साझा करते हैं।

राजस्थान - अन्तर्राज्यीप सीमा

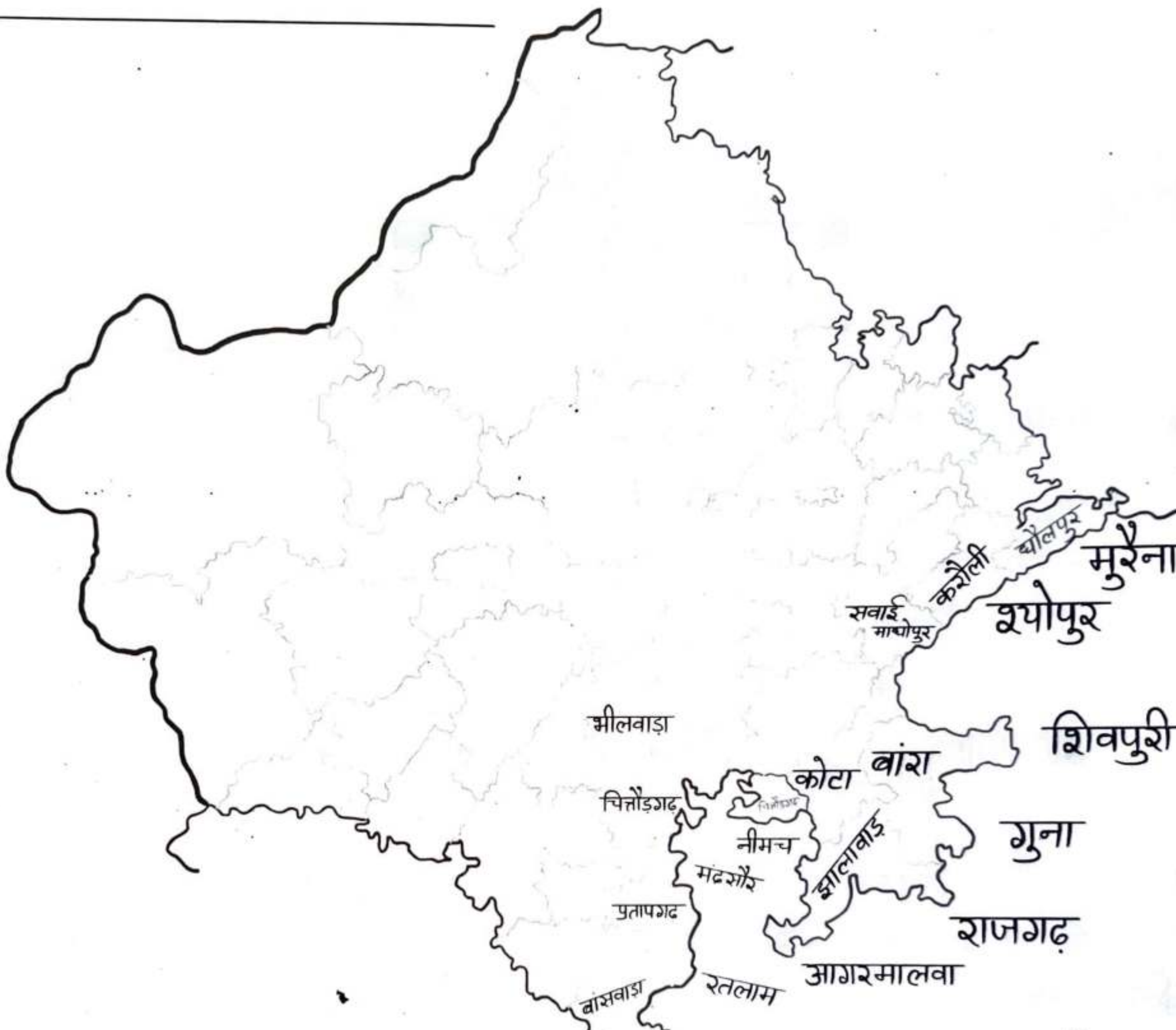

धौलपुर	⟷	मुरैना
करौली	⟷	श्योपुर
सवाई माधोपुर	⟷	शिवपुरी
कोटा	⟷	गुना
बांरा	⟷	राजगढ़
झालावाड़	⟷	अगरमालवा
भीलवाड़ा	⟷	मंदसौर
चित्तौड़	⟷	नीमच
प्रतापगढ़	⟷	रतलाम
बांसवाड़ा	⟷	झाबुआ

२. हरियाणा (1262 KM)

हनुमानगढ़	⟷	सिरसा
चुरू	⟷	फतेहाबाद
झुंझुनू	⟷	भिवानी
नीम का थाना	⟷	महेन्द्रगढ़
कोटपुतली	⟷	हिसार
खैरथल	⟷	रैवाड़ी
अलवर	⟷	मेवात / नूह
डीग	←	

राजस्थान - अन्तर्राज्यीय सीमा

		राजस्थान + हरियाणा	हरियाणा + राजस्थान
सर्वाधिक सीमा	-	हनुमानगढ़	महेन्द्रगढ़
कम सीमा	-	अलवर	फतेहाबाद
नजदीक जिला मुख्यालय	-	कोटपुतली	महेन्द्रगढ़
दूर जिला मुख्यालय	-	चुरू	भिवानी

राजस्थान के (8) जिले हरियाणा के साथ तथा हरियाणा के (7) जिले राजस्थान से साथ सीमा साझा करते है।

3 गुजरात (1022 KM)

1. बाड़मेर ⟷ कच्छ का रण
2. सॉंचौर ⟷ बनासकांठा
3. सिरोही ⟷ साबरकांठा
4. उदयपुर ⟷ माहीसागर
5. डुँगरपुर ⟷ अरावली
6. बांसवाड़ा ⟷ दाहोद

		राजेस्थान + गुजरात	गुजरात + राजस्थान
सर्वाधिक सीमा	-	उदयपुर	बनासकांठा
कम सीमा	-	बाड़मेर	कच्छ का रण
नजदीक जिला मुख्यालय	-	सॉंचौर	बनासकांठा
दूर जिला मुख्यालय	-	बाड़मेर	कच्छ का रण

राजस्थान – अन्तर्राज्यीय सीमा

4. उत्तर प्रदेश (877 KM)

डीग ↔ मथुरा
भरतपुर ↔ आगरा
धौलपुर ←

	राजस्थान + उत्तर प्रदेश	उत्तर प्रदेश + राजस्थान
नजदीक जिला मुख्यालय -	डीग	मथुरा
दूर जिला मुख्यालय -	धौलपुर	आगरा

(राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा)

राजस्थान - अन्तर्राज्यीय सीमा

5. पंजाब (89 KM)

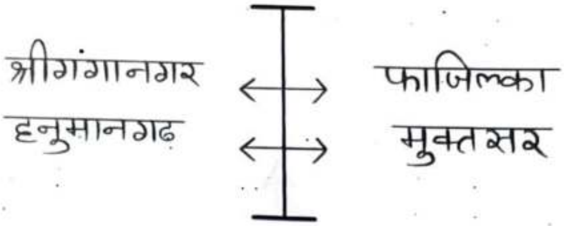

		राजस्थान + पंजाब	पंजाब + राजस्थान
सर्वाधिक सीमा	–	श्रीगंगानगर	फाजिल्का
कम सीमा	–	हनुमानगढ़	मुक्तसर
नजदीक जिला मुख्यालय	–	श्रीगंगानगर	फाजिल्का
दूर जिला मुख्यालय	–	हनुमानगढ़	मुक्तसर

राजस्थान – अन्तर्राज्यीय सीमा

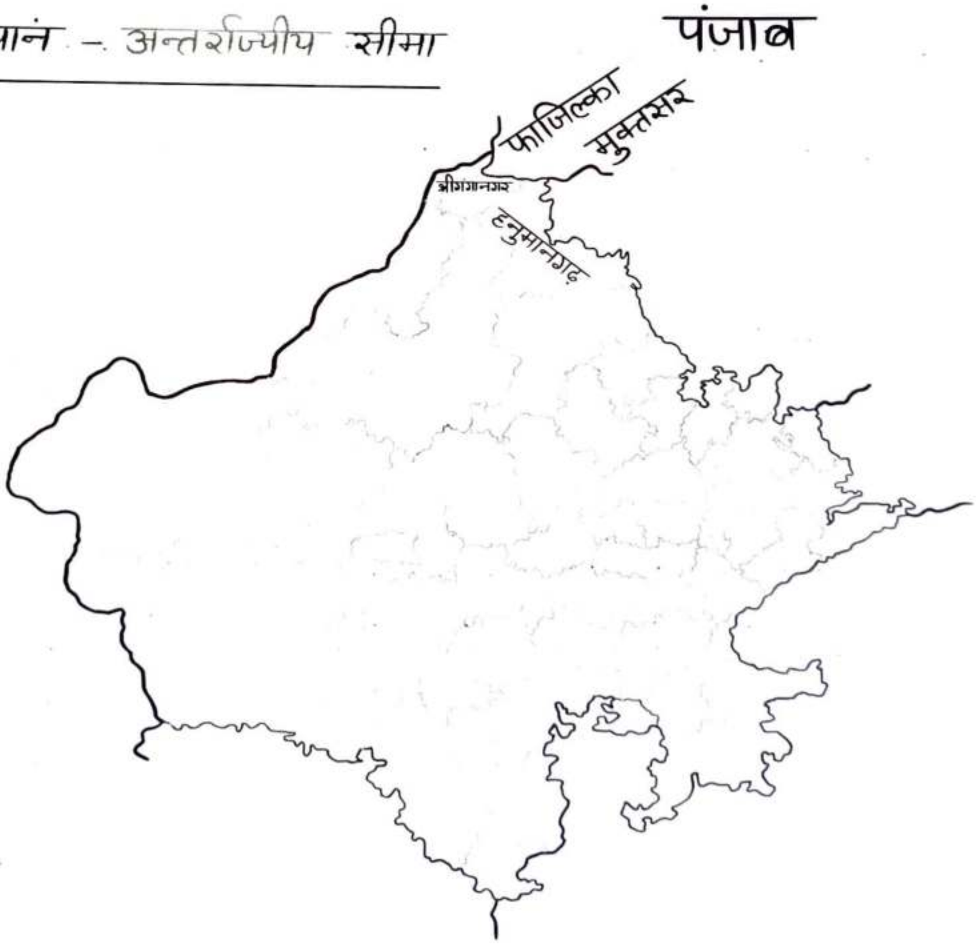

- राजस्थान के कुल जिले - 50
- सीमावर्ती जिले - 28
- अन्तवर्ती जिले - 22
- अन्तर्राज्यीय जिले - 25
- केवल अन्तर्राज्यीय - 23

↳ इसमे निम्न दो जिलो को शामिल नही करते हैं। क्योकिं ये दो जिले अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तर्राज्यीय दोनो प्रकार की सीमा बनाते हैं -

1. श्रीगंगानगर → पंजाब, पाकिस्तान

2. बाड़मेर → गुजरात, पाकिस्तान

- राजस्थान के 4 जिले 2-2 राज्यों के साथ सीमा का निर्धारण करते हैं।

- राज्य के ऐसे जिलें जो केवल एक ही राज्य के साथ सीमा का निर्धारण करते हैं - 19
- इनमे निम्न 4 जिलों को शामिल नहीं करते (दो राज्यो के साथ सीमा)

1. <u>हनुमानगढ़</u> < पंजाब, हरियाणा
2. <u>डीग</u> < हरियाणा, उत्तरप्रदेश
3. <u>धौलपुर</u> < उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश
4. <u>बांसवाड़ा</u> < मध्यप्रदेश, गुजरात

- राजस्थान के सर्वाधिक जिलों के साथ सीमा का निर्धारण जयपुर ग्रामीण करता है यह [10] जिलों के साथ सीमा लगाता है।
  1. टोंक
  2. दौसा
  3. अलवर
  4. कोटपुतली
  5. नीम का थाना
  6. सीकर
  7. डीडवाना कुचामन
  8. अजमेर
  9. दूदू
  10. जयपुर

- दुसरे नम्बर पर सर्वाधिक सीमा का निर्धारण टोंक करता है जो [8] जिलों के साथ सीमा साझा करता है।
  1. बूँदी
  2. सवाईमाधोपुर
  3. दौसा
  4. जयपुर ग्रामीण
  5. दूदू
  6. अजमेर
  7. केकड़ी
  8. शाहपुरा

सर्वाधिक तथा कम जिलों के साथ सीमा निर्धारण करने वाले जिले -

- कम जिलों से सीमा निर्धारण करने वाले निम्न जिले हैं -

1. **जयपुर** => यह केवल जयपुर ग्रामीण के साथ सीमा का निर्धारण करता है यह जिला जयपुर ग्रामीण से घिरा हुआ है।

2. **जोधपुर** => यह केवल जोधपुर ग्रामीण के साथ सीमा का निर्धारण करता है।

- निम्न 7 जिले 2-2 जिलों के साथ सीमा का निर्धारण करते हैं-

अनुपगढ → श्रीगंगानगर, बीकानेर

खैरथल तिजारा → कोटपुतली, अलवर

डीग → अलवर, भरतपुर

धौलपुर → भरतपुर, करौली

बांरा → कोटा, झालावाड़

झालावाड़ → कोटा, बांरा

बांसवाड़ा → प्रतापगढ, डुंगरपुर

- राजस्थान के (8) जिले है जो (7) जिलों के साथ सीमा लगाते हैं -

    1. जोधपुर ग्रामीण
    2. बीकानेर
    3. पाली
    4. ब्यावर
    5. अजमेर
    6. नागौर
    7. दौसा
    8. चित्तौड़गढ़

- कम जिलों के साथ सीमा निर्धारण करने वाले जिले -

    1. जयपुर (जयपुर ग्रामीण)
    2. जोधपुर (जोधपुर ग्रामीण)

- निम्न (6) जिले 3-3 जिलो के साथ सीमा का निर्धारण करते हैं -

    1. श्रीगंगानगर
    2. हनुमानगढ़
    3. झुंझुनू
    4. दूदू
    5. गंगापुर सिटी
    6. बाड़मेर

राजस्थान के नए जिलों का गठन तथा पुनर्गठन

1. अनूपगढ़ → इसके गठन के लिए श्रीगंगानगर जिले का पुनर्गठन किया गया।
जिला मुख्यालय - अनूपगढ़

इसमें निम्न 5 तहसीले हैं -

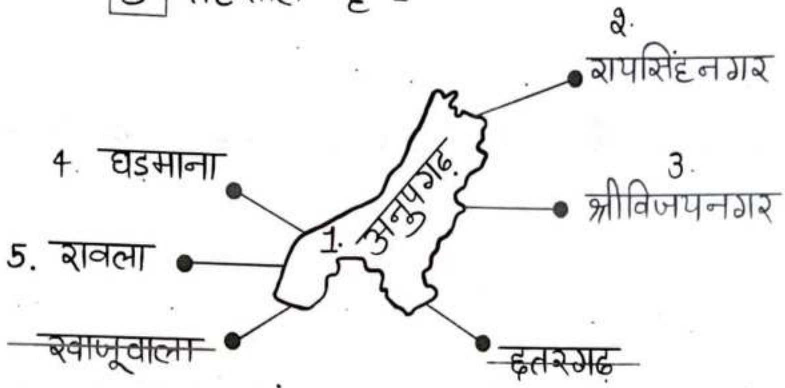

→ 6 अक्टूबर 2023 को खाजूवाला तथा छतरगढ़ को फिर से बीकानेर में मिला दिया गया।

2. फलौदी → पुनर्गठन जिला → जोधपुर
जिला मुख्यालय - फलौदी

इसमे निम्न 8 तहसीले हैं -

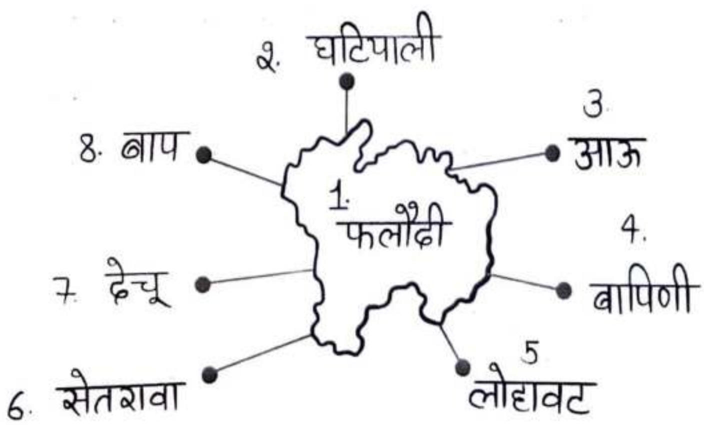

3. बालोतरा → पुनर्गठन जिला → बाड़मेर

जिला मुख्यालय - बालोतरा

इसमे निम्न [7] तहसीले है -

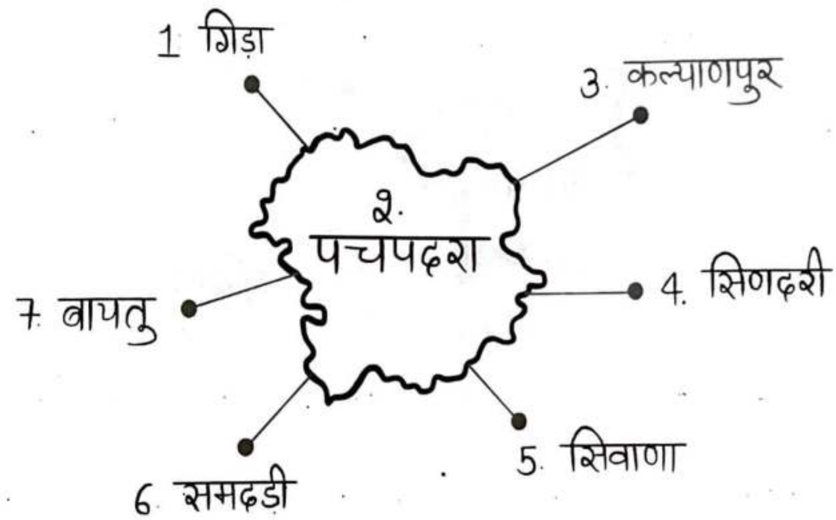

4 सांचौर → पुनर्गठन जिला → जालौर

जिला मुख्यालय - सांचौर

इसमे निम्न [4] तहसीले है -

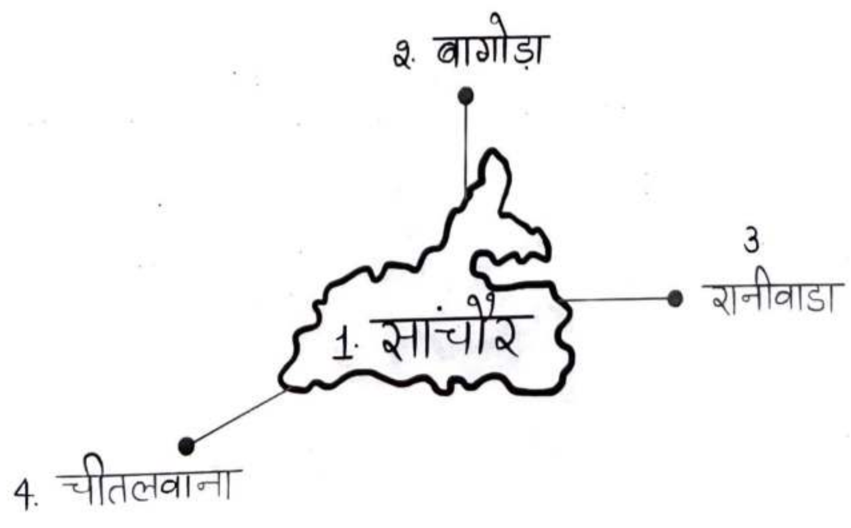

5. सलूम्बर → पुनर्गठन जिला → उदयपुर

जिला मुख्यालय - सलूम्बर

इसमें निम्न 5 तहसीलें हैं -

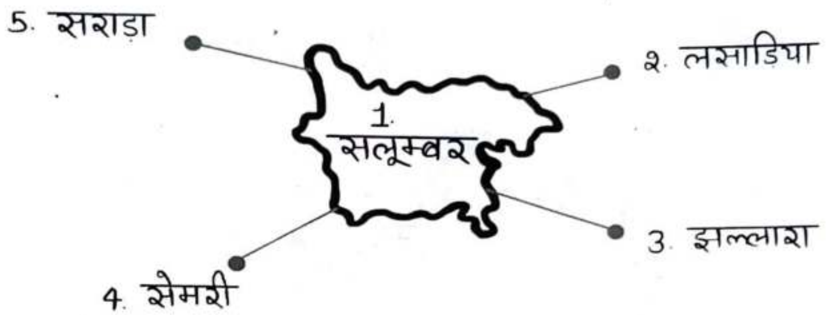

6. शाहपुरा → पुनर्गठन जिला → भीलवाड़ा

जिला मुख्यालय - शाहपुरा

इसमें निम्न 6 तहसीलें हैं -

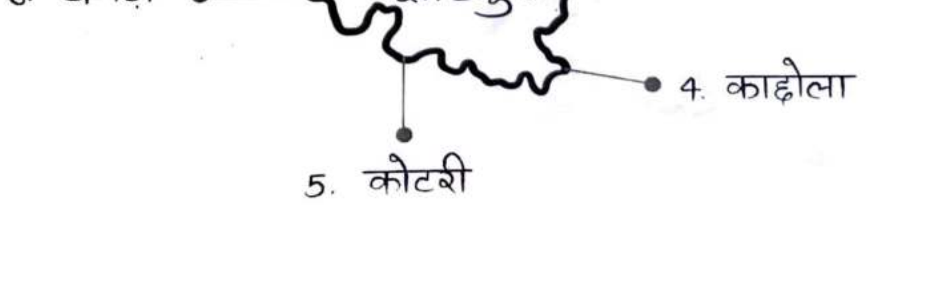

7. केकड़ी → पुनर्गठन जिला → अजमेर, टोंक

जिला मुख्यालय - केकड़ी

इसमें निम्न 6 तहसीले हैं -

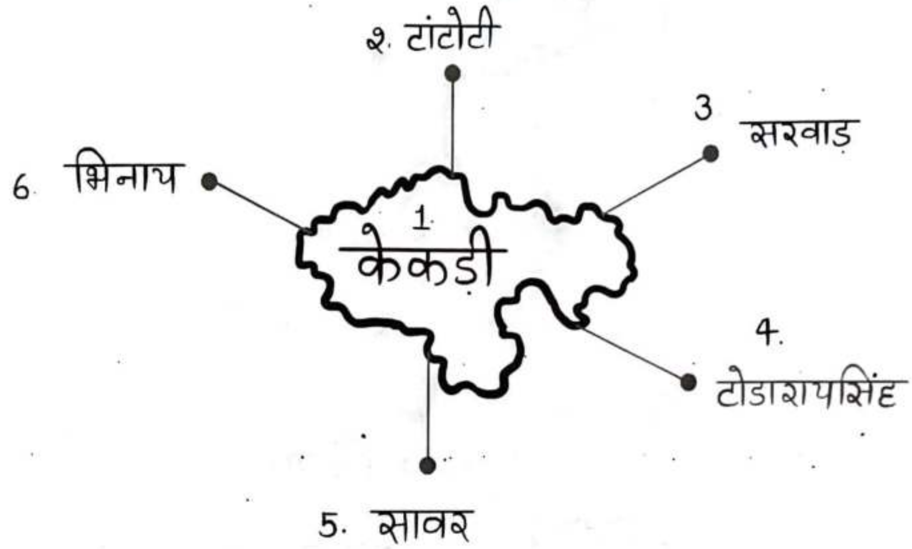

8. डीडवाना - कुचामन → पुनर्गठन जिला → नागौर

जिला मुख्यालय - डीडवाना (अस्थाई)

इसमे निम्न 8 तहसीले हैं -

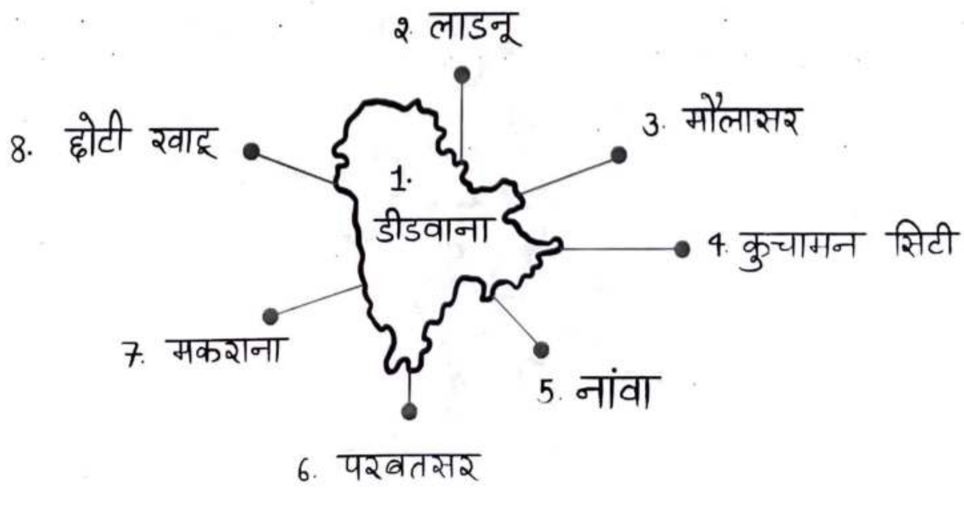

9. दूदू जिला → पुनर्गठन जिला → जयपुर

जिला मुख्यालय - दूदू

इसमे निम्न 3 तहसीले है -

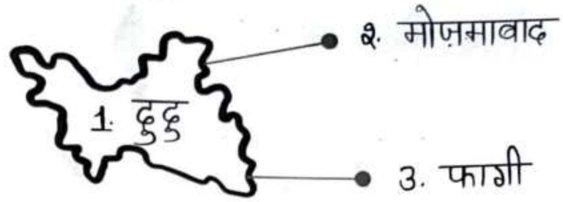

10. ब्यावर जिला → पुनर्गठन जिला → अजमेर, भीलवाडा, पाली

जिला मुख्यालय - ब्यावर

इसमे निम्न 7 तहसीले है -

11. नीम का थाना → पुनर्गठन जिला → झुन्झुनू, सीकर

जिला मुख्यालय - नीम का थाना

इसमे निम्न 5 तहसीले है -

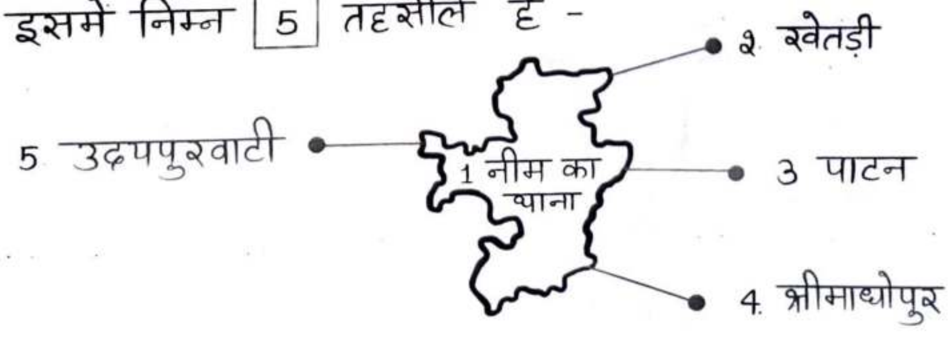

12. कोटपुतली बहरोड़ →

पुनर्गठन जिला → जयपुर, अलवर

जिला मुख्यालय - कोटपुतली

इसमे निम्न [8] तहसीले है -

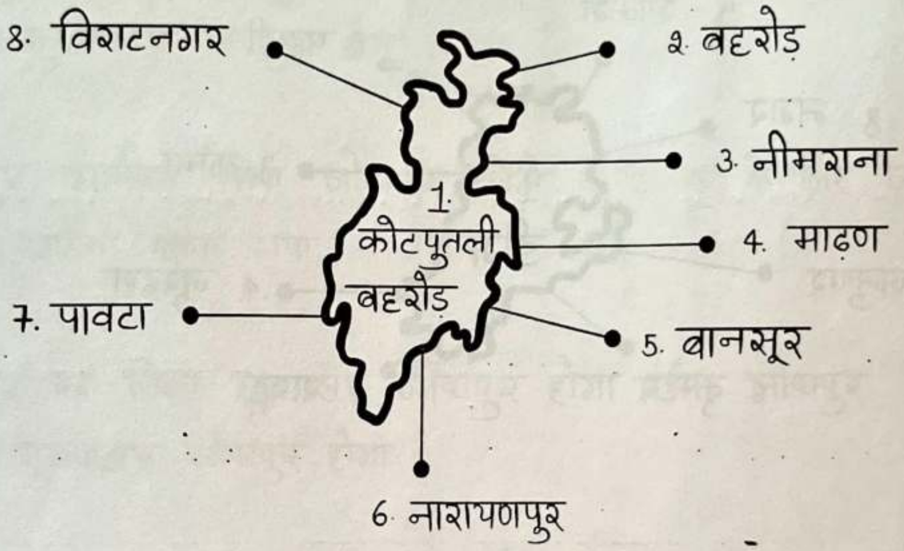

13. खैरथल तिजारा →

पुनर्गठन जिला → अलवर

जिला मुख्यालय - खैरथल

इसमे निम्न [7] तहसीले है -

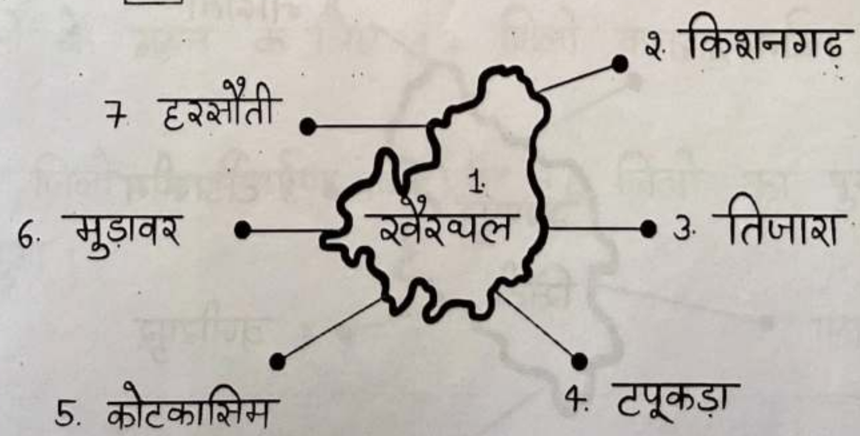

14. डीग → पुनर्गठन जिला → भरतपुर

जिला मुख्यालय - डीग

इसमे निम्न 9 तहसीले है -

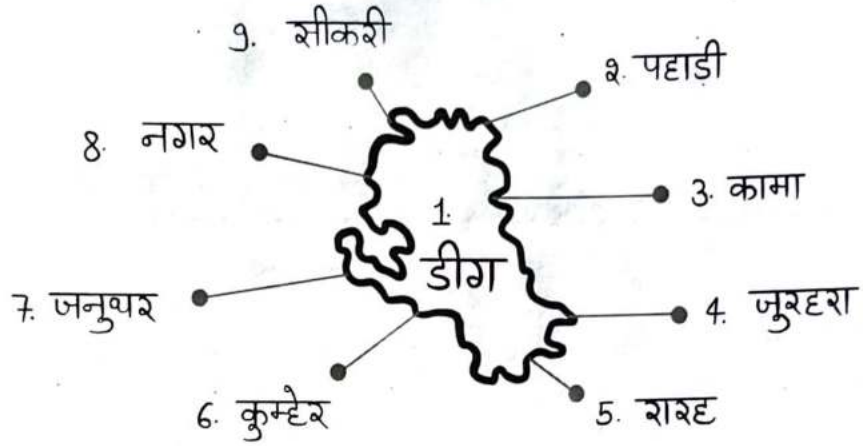

15. गंगापुर सिटी → पुनर्गठन जिला → भरतपुर, करौली

जिला मुख्यालय - गंगापुर सिटी

इसमे निम्न 7 तहसीले है -

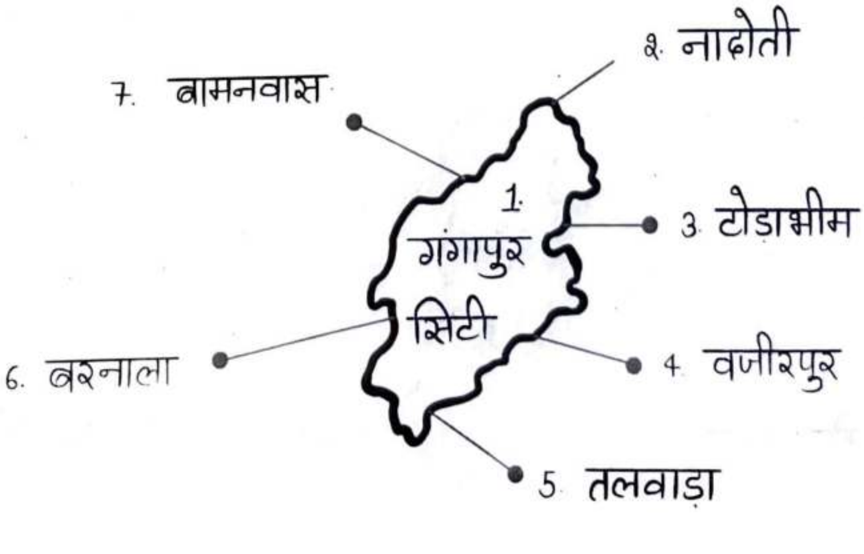

Note

→ जयपुर ग्रामीण तथा जयपुर जिले के गठन के लिए जयपुर जिले का पुनर्गठन किया गया।

→ जयपुर का जिला मुख्यालय जयपुर होगा तथा जयपुर ग्रामीण का जिला मुख्यालय जयपुर होगा।

→ जोधपुर ग्रामीण तथा जोधपुर जिले के गठन के लिए जोधपुर जिले का पुनर्गठन किया गया।

→ जोधपुर का जिला मुख्यालय जोधपुर होगा तथा जोधपुर ग्रामीण का जिला मुख्यालय जोधपुर होगा।

→ राजस्थान के निम्न (3) जिलों के नाम से जिला मुख्यालय स्थान नहीं हैं :-

1. राजसमंद
2. जयपुर ग्रामीण
3. जोधपुर ग्रामीण

→ 19 जिलों के गठन के लिए 17 जिलों का पुनर्गठन किया गया।

→ नवीन जिलों के निर्माण के लिए 16 जिलों का पुनर्गठन नहीं हुआ।

राजस्थान – जिलों के उपनाम

- सूर्य नगरी
- सन सिटी
- राजस्थान की ब्लू सिटी

- राजस्थान की धातु नगरी
- औजारो की नगरी
- अहिच्छत्रपुर

- राजस्थान की राजधानी
- राजस्थान का पेरिस
- हैरिटेज सिटी
- रत्न नगरी
- पन्ना नगरी
- पिंक सिटी.

- फलों की टोकरी

- राजस्थान की स्वर्ण नगरी
- राजस्थान का अण्डमान
- पंखो की नगरी
- पीले पत्थरो का शहर
- रेगिस्तान का गुलाब
- झरोखो की नगरी
- म्यूजियम सिटी
- हवेलियों का शहर

- ऊन का घर
- राती घाटी
- जांगल प्रदेश

- राजपूताना की कुँजी
- भारत का मक्का
- अण्डो की टोकरी

- तांबा नगरी

- राजस्थान का स्कॉटलैंड

- जाट रियासत

- रेड डायमड सिटी
- कोठी
- राज. का पूर्वी प्रवेश द्वार

- राजस्थान का मैंनचेस्टर
- वस्त्र नगरी
- टैक्सटाइल सिटी
- अभ्रक मण्डी

- राजस्थान का कानपुर
- औद्योगिक नगरी
- राजस्थान की शिक्षा नगरी
- उद्यानो का घर
- इन्द्रप्रस्थ नगर
- राजस्थान का नालन्दा

- राजस्थान का शिमला
- राजस्थान का वर्खोयांस्क

- पहाडों की नगरी

- झीलों की नगरी
- एशिया का विपना
- तश्तरीनुमा बेसिन मे बसा हुआ शहर
- राजस्थान का कश्मीर
- मेवाड़
- मेदपाट
- प्रागवाट
- फाउन्टेन का शहर
- जिंक नगरी

- छप्पन का मैदान

- राजस्थान का नागपुर
- राजस्थान का एलोरा
- घंटियों का शहर
- राजस्थान का मॉसिनराम

- सौ द्वीपों का शहर
- आदिवासियो का नगर
- राजस्थान का चेरापूँजी

- राजस्थान का गौरव
- पॉवर ऑफ सिटी

राजस्थान की संभागीय व्यवस्था

सर्वप्रथम शुरू ⇒ 1949 ई. हीरालाल शास्त्री
(इस समय 5 संभाग थे :-
जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा)

समाप्त ⇒ 1962 मोहनलाल सुखाड़िया

पुन: शुरू ⇒ 1987 ई. हरिदेव जोशी
• अजमेर संभाग बना। (6 संभाग)

⇒ 7 वाँ संभाग 4 जून 2005 को भरतपुर बना।

⇒ 17 मार्च 2023 को राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा (3) नये संभाग (पाली, बांसवाडा, सीकर) बनाने की घोषणा की गई। जिसे 4 अगस्त 2023 को मंत्रीमण्डल की बैठक में अंतिम मंजूरी दी गई।

⇒ वर्तमान मे (10) संभाग हैं। इन संभागो की अधिसूचना 7 अगस्त 2023 से प्रभावी हो गई।

राजस्थान में 4 बार राष्ट्रपति शासन -

	मुख्यमंत्री	राज्यपाल
1. 1 मार्च 1967	मोहनलाल सुखाड़िया	सम्पूर्णानन्द
2. 19 अप्रेल 1977	हरिदेव जोशी	वेदपाल त्यागी
3. फरवरी 1980	भैंरोसिंह शेखावत	रघुवर तिलक
4. दिसम्बर 1992	भैंरोसिंह शेखावत	चैनास्वामी रेड्डी

➤ राजस्थान के निम्न [10] संभाग हैं :-

1 जयपुर संभाग → जयपुर, जयपुर ग्रामीण, अलवर, दौसा, दूदू, खैरथल - तिजारा, कोटपुतली बहरोड [7 जिले]

2 जोधपुर संभाग → जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा [6 जिले]

3. बीकानेर संभाग → बीकानेर, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ [4 जिले]

4. उदयपुर संभाग → उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, भीलवाड़ा [5 जिले]

5. कोटा संभाग → कोटा, बांरा, बूँदी, झालावाड़ [4 जिले]

6. अजमेर संभाग → अजमेर, केकड़ी, शाहपुरा, ब्यावर, टोंक, नागौर, डीडवाना कुचामन [7 जिले]

7 भरतपुर संभाग → भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, डीग, गंगापुर सिटी [6 जिले]

8 सीकर संभाग → सीकर, नीम का थाना, झुन्झुनू, चुरू [4 जिले]

सीकर सभांग के गठन के लिए जयपुर तथा बीकानेर सम्भाग का पुनर्गठन किया गया। चुरू पहले बीकानेर सम्भाग मे तथा सीकर, झुन्झुनू जयपुर सभांग में आते थे।

9. पाली संभाग → पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही [4 जिले]
पाली संभाग के गठन के लिए जोधपुर संभाग का पुनर्गठन किया गया।

10. बांसवाड़ा संभाग → बांसवाड़ा, डुँगरपुर, प्रतापगढ़ [3 जिले]
बांसवाड़ा संभाग के गठन के लिए उदयपुर संभाग का पुनर्गठन किया गया।

प्रश्न → नए सम्भागो के गठन के लिए कितने सम्भागो का पुनर्गठन किया गया ?

उत्तर → 4 संभागों का।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

राजस्थान का क्षेत्रफल - 3,42,239 KM^2
वर्ग मील - 1,32,139

- 1 मील = 1.609344 KM
  = 1609.344 मीटर
- 1 सागरीय मील = 1.8 KM

• नवीन जिलों के पुनर्गठन से पूर्व सबसे बड़े तथा छोटे सम्भाग -

1. जैसलमेर (38401 KM^2)	1. धौलपुर (3034 KM^2)
2. बीकानेर (30247 KM^2)	2. दौसा (3432 KM^2)
3. बाड़मेर (28387 KM^2)	3. डुंगरपुर (3770 KM^2)

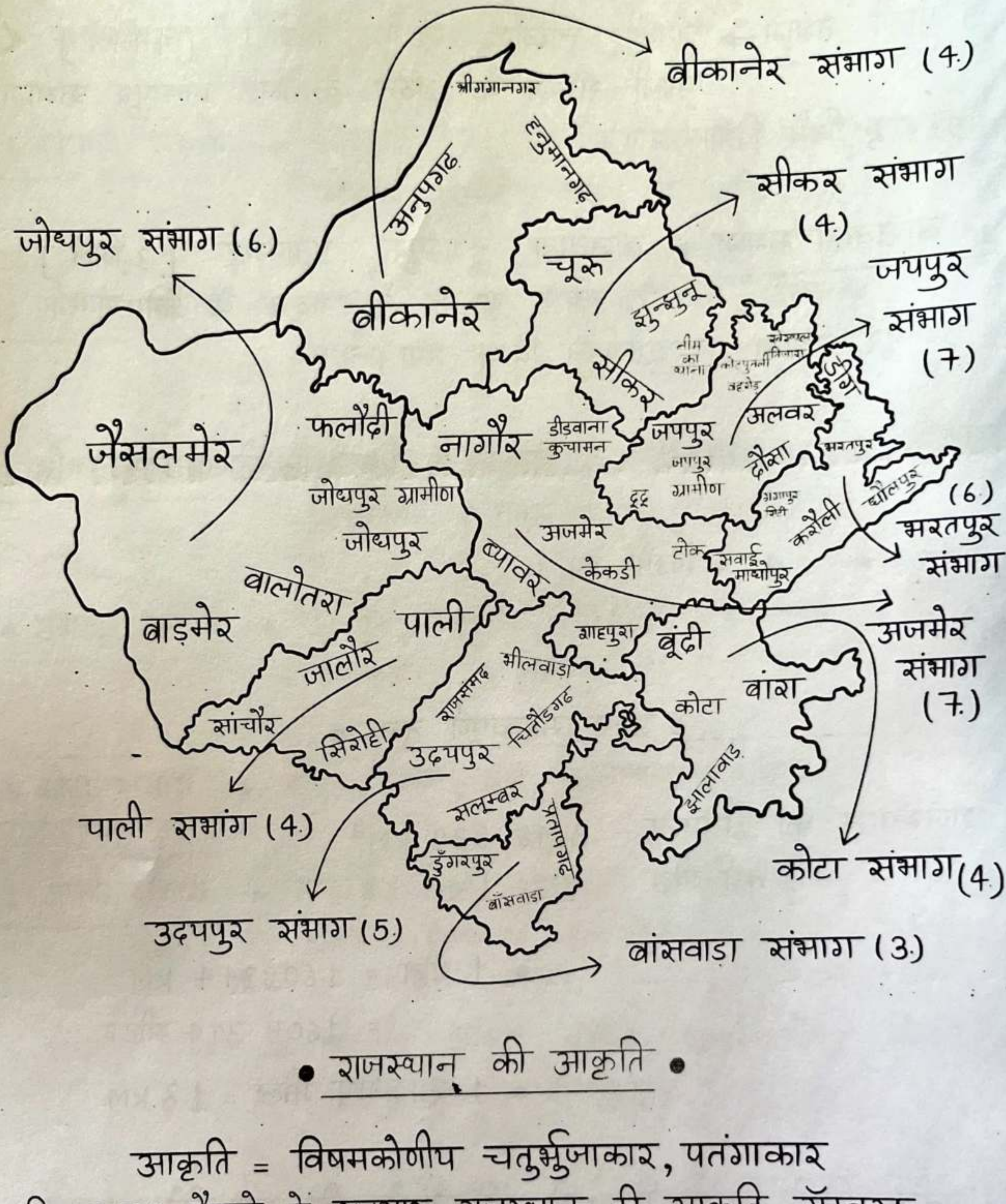

• राजस्थान की आकृति •

आकृति = विषमकोणीय चतुर्भुजाकार, पतंगाकार

- विद्वान T.H. हैंण्डले के अनुसार राजस्थान की आकृति रॉम्बस प्रकार की हैं।
- भारत के कुल भू-भाग का राजस्थान 10.41% भाग रखता हैं।

राजस्थान की भू-गर्भिक संरचना

- आद्य महाकल्प
  1. प्री अरावली
  2. प्री केम्ब्रियन
- पुराजीवी महाकल्प
  1. विन्ध्यन महासमूह
  2. परमियन कार्बोनिफेरस महाकल्प
- मध्यजीवी महाकल्प
  1. क्रिटेशियस युग
  2. जुरैसिक युग
- नवजीवी महाकल्प
  1. तृतीयक महाकल्प
  2. चतुर्थ महाकल्प

1. आद्य महाकल्प [Protozoic Era]

1. प्री-अरावली [Pre-Aravali]
2. प्री-केम्ब्रियन [Pre-Cambrian]

1. प्री-अरावली

↓

आनाच्छादन [Denudation]

↓

अवशिष्ट पर्वत [Residual Mountains]

↓

बुन्देलखण्ड नीस [Bundelkhand Gneiss]

→ पी अरावली, यह विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत शैल है। इसमें आनाच्छादन (अपक्षय + अपरदन) की प्रक्रिया होने के कारण इनकी ऊँचाई कम होती जा रही है इसलिए यह अवशिष्ट पर्वत (Residual Mountains) की श्रेणी मे आता है।

आनाच्छादन [Denudation]

अपक्षय (Weathring)	अपरदन (Erosion)
चट्टानो का अपने स्थान पर टूट - फूटकर बिखरना।	विभिन्न कारको के द्वारा विभिन्न कणो का एक जगह से दूसरी जगह चले जाना।

बुन्देलखण्ड नीस [Bundelkhand Gneiss]

- बेड़च घाटी (Bedach Valley) से चित्तौड़गढ़ एंव भीलवाड़ा मे 110 KM का क्षेत्र भीलवाड़ा सुपर ग्रुप (Bhilwada Super Group) के नाम से जाना जाता है।

- इस बुन्देलखण्ड नीस मे गुलाबी ग्रेनाइट की प्रधानता है। इसके साथ में अन्य चट्टाने - पैग्मेटाइट, मैग्नेटाइट, शिष्ट, हार्न ब्लेड हैं।

२ प्री-केम्ब्रियन

- अरावली पर्वतमाला का निर्माण अपनति के कारण हुआ है।

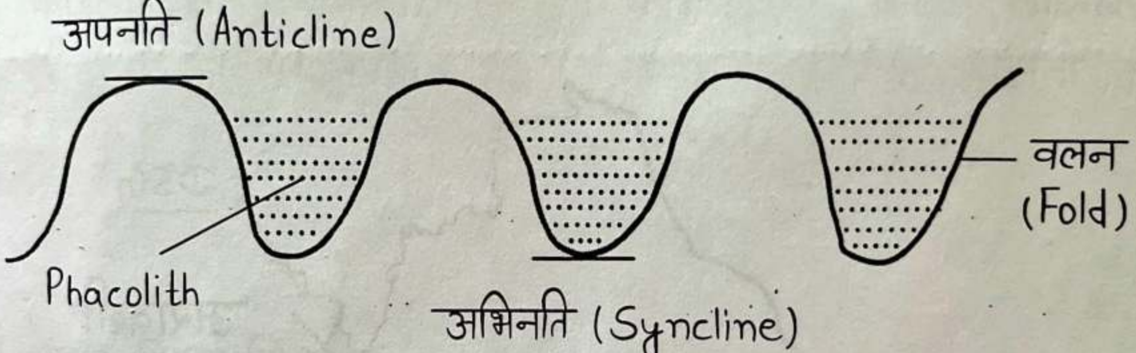

- अरावली पर्वतमाला को वलन (Fold) का उदाहरण या वलित पर्वतमाला कहा जाता है।

वलन ⇒ भू-गर्भ मे सर्पिलाकार आकृति वलन कहलाती है।

अपनति ⇒ वलन का ऊपर उठा भाग अपनति जबकि नीचे वाला भाग अभिनति कहलाती है।

फैकोलिथ ⇒ अपनति तथा अभिनति के मध्य मैग्मा का जमाव फैकोलिथ कहलाता है।

समपनति ⇒ एक अपनति मे बहुत सारी अपनति एंव अभिनति होती हैं, जिसे समपनति (Anticlinorium) कहते हैं।

इस समपनति के कारण विशाल सीमा भ्रंश (Great Boundary Foult) 1530 मीटर ऊपर उठ जाता है।

प्री-केम्ब्रियन समूह को (दो) भागो मे विभाजित करते हैं:-

A. अरावली महासमूह (Aravali Super Group)

B. देहली महासमूह (Delhi Super Group)

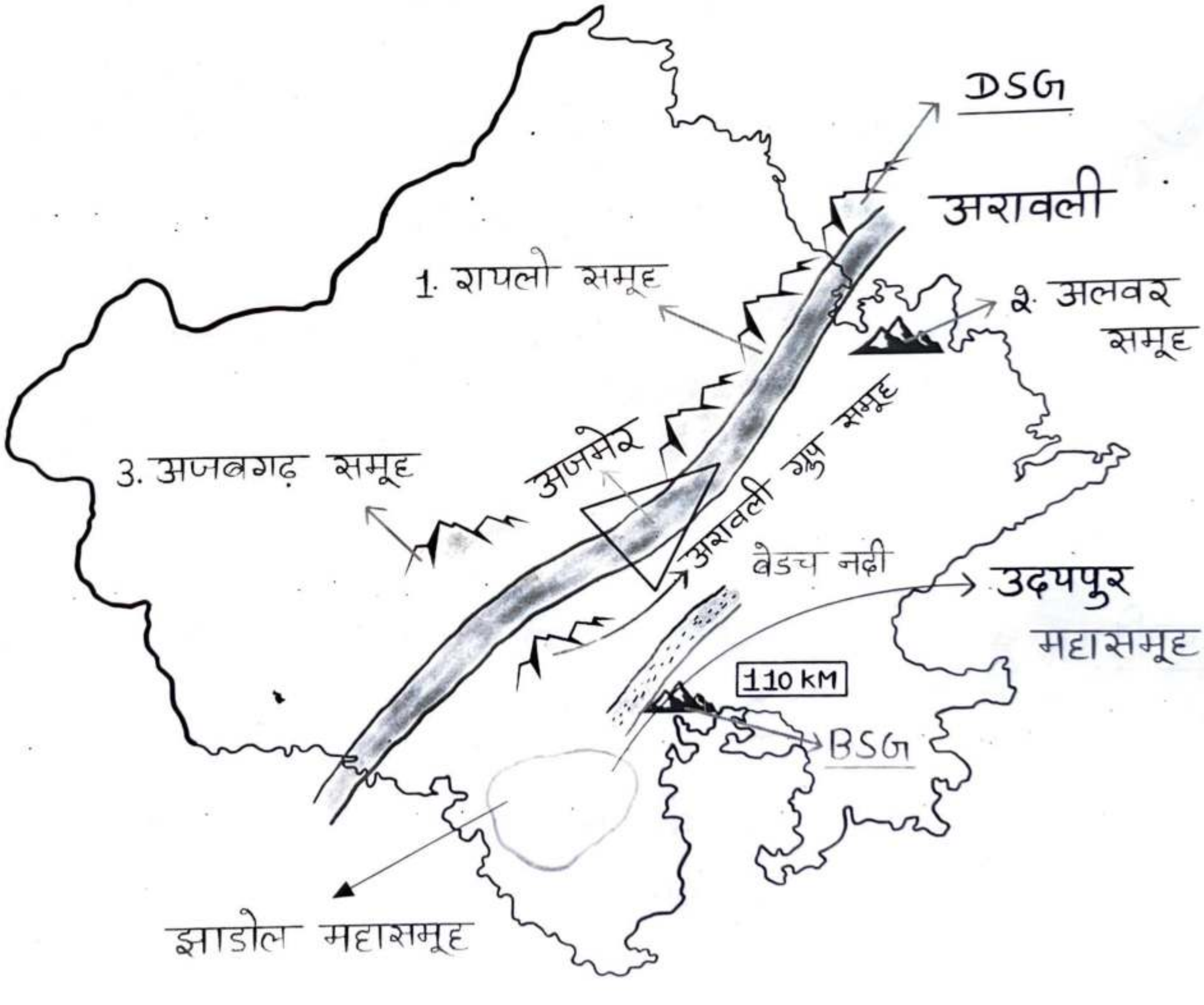

[A.] Aravali Super Group :- इसका निर्माण विभिन्न मोड़ो के द्वारा हुआ है तथा इसमें फाइलाइट्स और क्वार्ट्ज चट्टाने मिलती है।

- अरावली सुपर ग्रुप को दो भागो मे विभाजित करते है -

झाड़ौल महासमूह	उदयपुर महासमूह
फाइलाइट्स और क्वार्ट्ज चट्टानों की प्रधानता।	फाइलाइट्स, मार्बल, लाइमस्टोन तथा माइकाशिष्ट चट्टानों की प्रधानता।

[B.] Delhi Super Group :-

- यह राजस्थान मे सर्वाधिक विस्तारित है, इसकी शुरुआत दिल्ली से गुजरात तक है।
- अजमेर तथा पश्चिमी पहाडियों का निर्माण इसी के कारण हुआ है।

- दिल्ली सुपर ग्रुप को तीन भागो मे विभाजित किया गया है-

1. रायलो समूह (Rialo Series)

- यह देहली ग्रुप के समान्तर ही चलता है तथा इसके अन्तर्गत क्वार्टज, मार्बल (मकराना) शैल पाई जाती है।

2. अलवर समूह (Alwar Series)

- यह अलवर के आस-पास पहाड़ियों के रूप में विस्तारित है।
- अलवर समूह के उत्तरी भाग से रायलो समूह विसंगत / विलग होता है। (Discontinue)

3. अजबगढ़ समूह (Alwar Series)

- किशनगढ़ के आस-पास नेफेलाइन साइनाइट चट्टाने मिलती है तथा एरिनपुरा का ग्रेनाइट भी इसी के अन्तर्गत आता है।

Note ⇒ देहली सुपर ग्रुप और अरावली सुपर ग्रुप की संरचना विभेदन तथा विवर्तनिक संरचना भिन्न है।

२. पुराजीवी महाकल्प [Palaeozoic Era]

- इस काल मे आधारभूत चट्टानो का निर्माण हुआ है।
- इसको दो भागों मे बांटा जाता है :-

A. विन्ध्यपन महासमूह

B. परमियन कार्बोनिफेरस महाकल्प

[A.] विन्ध्यपन महासमूह (Vindhyan Super Group) :-

- यह धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, सुकेत (कोटा) तथा निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़) तक विस्तारित है।
- यह गंभीर नदी एंव कालीसिंध नदियों के मध्य है।
- इसमें कांग्लोमेरेट, बालुकाश्म चूना पत्थर, चूना पत्थर (लाइम स्टोन) शैल है।

- इसको चार भागों मे विभाजित किया गया है -

(i) भंडेर समूह (Bhander Series)
(ii) रीवा समूह (Rewa Series)
(iii) कैमूर समूह (Kaimur Series)
(iv) सेमरी समूह (Semari Series)

— बालूकाश्म चूना पत्थर, चूना पत्थर की प्रधानता।

→ विन्ध्यन महासमूह के विखण्डन से पश्चिमी राजस्थान मे निम्न शैल का निर्माण हुआ है, जिनका नामकरण 1984 मे किया गया –

1. नागौर बेसिन – यह जोधपुर, पोकरण, बीकानेर, श्रीगंगानगर तथा नागौर में विस्तारित है।

2. बिरमानिया बेसिन समूह – यह जैसलमेर के दक्षिण में विस्तारित है तथा इसमें नागौर बेसिन की समकालीन चट्टाने मिलती है।

Note ⇒ नागौर बेसिन तथा बिरमानिया बेसिन को "मारवाड़ सुपर ग्रुप" के नाम से भी जाना जाता है।

[B.] परमियन कार्बोनिफेरस महाकल्प :-

• इसमें शैल बेड का निर्माण हुआ जो निम्न है :-

परमियन कार्बोनिफेरस महाकल्प
- बाप फोल्डर बेड
- भादूरा बालूकाश्म

1. बाप फोल्डर बेड -

* बाप फलौदी के आस-पास का क्षेत्र है तथा गोलाकार, अर्द्धगोलाकार, लोढी, बटिया आकृति का है।

* बाप फोल्डर का निर्माण विन्ध्यपन सुपर ग्रुप तथा अरावली सुपर ग्रुप के विखण्डन से हुआ है।

२. भादूरा बालूकाश्म –

* यह बाप फोल्डर के उत्तर-पश्चिम मे विस्तारित है।
* इसका निर्माण सामुद्रिक अवस्था मे हुआ है।

Note ⇒ बाप फॉल्डर बेड मे हिमयुगीन चिह्न मिले है, इस कारण इसे हिमवाहित क्षेत्र कहते है।

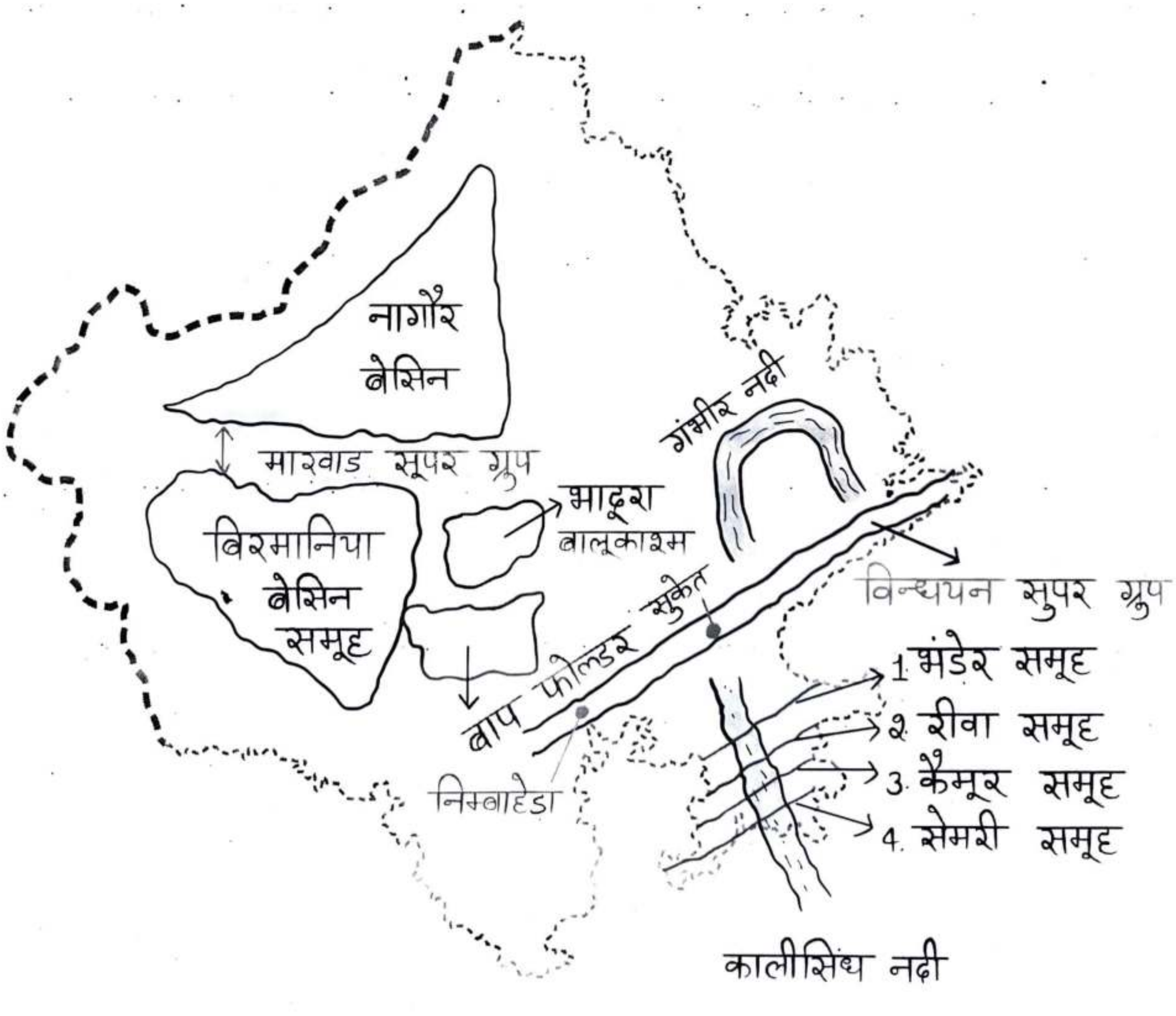

3. मध्यजीवी महाकल्प [Mesozoic Era]

- यह राजस्थान के पश्चिमी भाग मे है जिसका विस्तार जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर क्षेत्र में है।
- इस काल मे बीकानेर, जैसलमेर की चट्टानों का अवसादन हुआ इसके कारण यह अवसादी मालानी, आग्नेय चट्टानों पर अध्यारोपित हो गया।

- हम इसको दो भागों मे विभाजित करते हैं -

1. क्रिटेशियस युग

- फतेहगढ़ श्रेणी (जैसलमेर)
- विभिन्न खनिज - डोलामाइट, मुल्तानी मिट्टी / फुलर्स अर्थ, लाइमस्टोन

2. जुरैसिक युग

- लाठी सीरिज
- डायनासोर के अवशेष
- आकल वुड फोसिल्स पार्क

लाठी सीरिज ⇒ भू-गर्भिक जलपट्टी

विस्तार - पोकरण से मोहनगढ़
गाँव आकल - आकल वुड फोसिल्स पार्क
नलकूप - चाँदन / चाँधन नलकूप (थार का घडा)
घास - सेवण, शरण स्थली - क्रोरियोटिस नाइग्रीसेप्स (गोडावण)

4. नवजीवी महाकल्प [Neozoic Era] /Cenozoic Era

नवजीवी महाकल्प को दो भागों मे विभाजित किया गया है –

- 1. तृतीयक महाकल्प (टर्शियरी)
- 2. चतुर्थ महाकल्प (क्वोर्टन)

1. तृतीयक महाकल्प :-

- इसमें पश्चिमी राजस्थान में लिग्नाइट कोयला तथा लाइमस्टोन के भण्डार मिले हैं।
- इसका विस्तार बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर व बाड़मेर मे है।

2. चतुर्थ महाकल्प :-

- इसमें कोयला तथा जिप्सम के भण्डार हैं।
- इसी क्षेत्र मे लाइमस्टोन के भण्डार हैं।
- इसका विस्तार पलाना (बीकानेर) एवं श्रीगंगानगर तक हैं।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

राजस्थान की रचना विशेष प्रकार की है, क्योंकि इसमें प्री-कैम्ब्रियन की चट्टाने तथा वायु अपरदन के द्वारा निर्मित भाग हैं।

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

I	II	III
सर्वप्रथम निर्धारण		
प्रो. वी. सी. मिश्रा	एस. के. सेन	डॉ. रामलोचन सिंह
↓	↓	↓
1968 में 7 भागों मे विभाजित	1968 में 3 भागों मे विभाजित	1971 मे 2 भाग 4 उपभाग 12 लघुप्रदेश

राजस्थान को मुख्यतः 4 भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया जाता है - (हरिमोहन सक्सेना के अनुसार)

1. थार का मरूस्थल
2. अरावली पर्वतमाला
3. पूर्वी मैदान
4. दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश

1. थार का मरुस्थल / उत्तरी - पश्चिमी मरुस्थल

सहरा अरबी भाषा का शब्द हैं, जिसका अर्थ मरुस्थल होता हैं। मरुस्थल का अर्थ मरुभूमि हैं अर्थात वनस्पति रहित क्षेत्र हैं।

मरुस्थल की विशेषता :-

1. वर्षा की कमी
2. वनस्पति की कमी
3. खाद्यानों की कमी
4. कृषि योग्य भूमि की कमी
5. प्रतिकूल प्रभाव
   - मरुस्थल गर्म हैं तो तापमान अधिक होगा। जैसे :- सहारा, थार का मरुस्थल
   - मरुस्थल ठण्डा हैं तो तापमान कम होगा। जैसे :- अंटार्कटीका

थार के मरुस्थल को टैथिस सागर का अवशेष माना जाता हैं।

अल्फ्रेड़ वेगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धान्त –

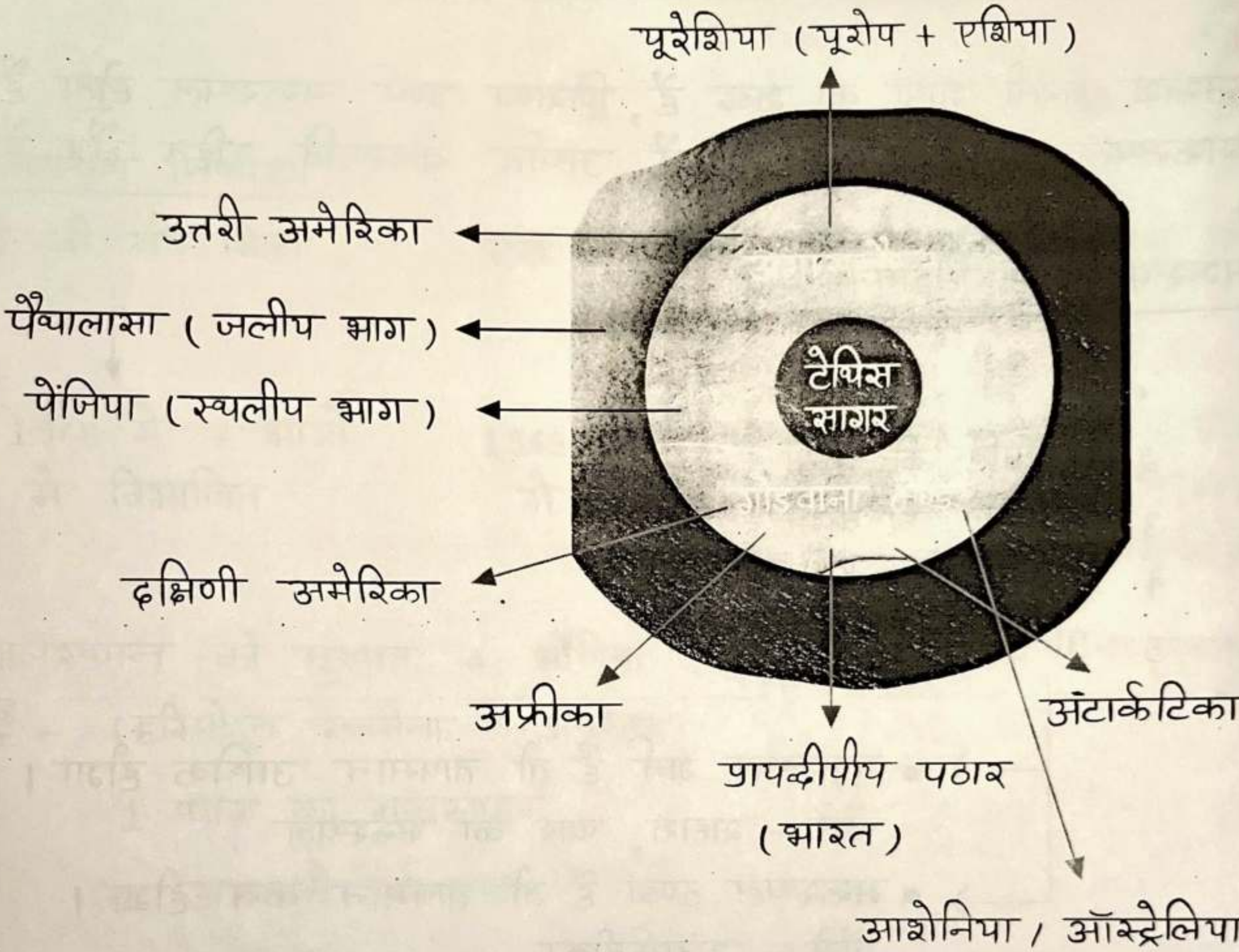

⇒ थार का मरुस्थल टेथिस सागर का अवशेष है जिसके निम्न प्रमाण मिले है :-

- खारे पानी की झीले
- कुलधरा गाँव (जैसलमेर) मे मच्छली के अवशेष मिलना।
- अवसादी चट्टानो की प्रधानता (जैसे:- खनिज, तेल व कोयला मिलना)

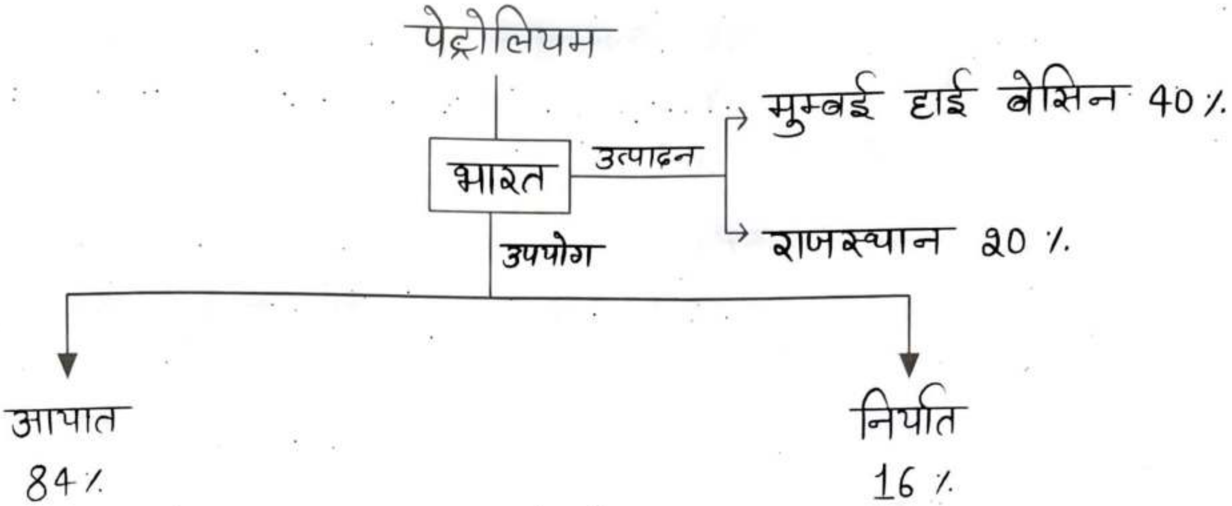

- विश्व मे सर्वाधिक पेट्रोलियम उपभोक्ता देश :- 1. अमेरिका
  2. चीन
  3. भारत

- गुढ़ामालानी (बाड़मेर) मे विश्व मे सबसे कम गहराई मे सबसे कम गहराई में पेट्रोलियम के भण्डार हैं।

थार के मरुस्थल की विशेषताएँ :-

यह विश्व का 17 वाँ सबसे बड़ा मरुस्थल तथा उपोष्ण दृष्टि से 9 वाँ सबसे बडा मरुस्थल हैं।

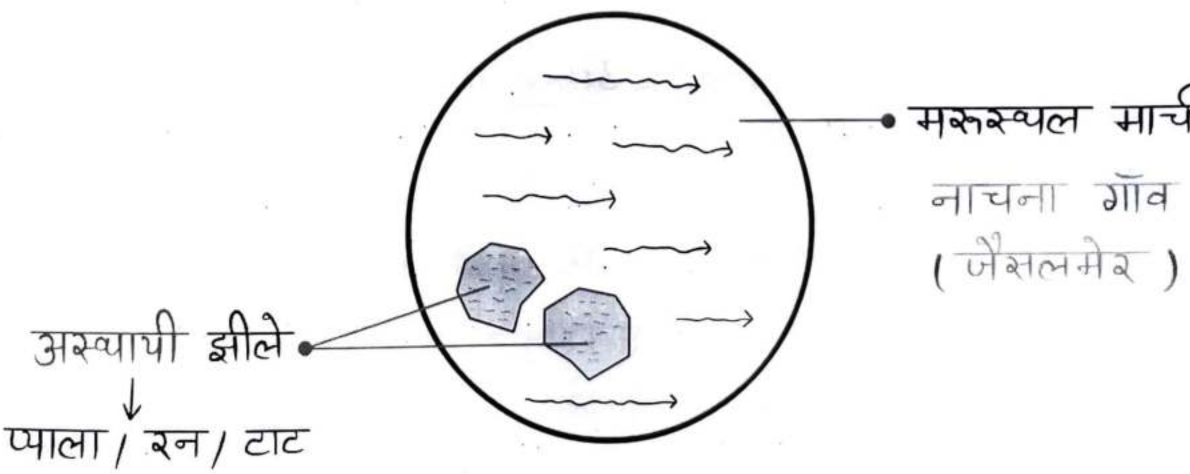

→ मरुस्थल का अपने मूल स्थान से आगे बढ़ना मरुस्थल मार्च कहलाता है।

→ मरुस्थल मे वर्षा ऋतु के अन्तर्गत अस्थायी झीलों का निर्माण हो जाता है उसे प्याला / रन / टाट कहते हैं तथा इस क्षेत्र मे पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली कृषि खड़ीन कृषि कहलाती हैं।

खड़ीन ⇒ जल संरक्षण की परम्परागत विधि।

→ मरुस्थल का प्रचार दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व की ओर होता हैं।

→ सर्वाधिक मरुस्थल मार्च हरियाणा राज्य में होता है तथा मरुस्थल मार्च के लिए उत्तरदायी कारक बरखान बालू का स्तूप हैं।

मरुस्थल का ढाल → उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम

मरुस्थलीकरण :- मरुस्थल के लगातार आगे बढने की प्रक्रिया मरुस्थलीकरण कहलाती हैं।

- जिसके लिए निम्न कारक उत्तरदायी है -

1 वनोन्मूलन - वनो को काटना।

2 निर्वनीकरण - वन का समाप्त होना।

3 जलवायु परिवर्तन - सन् 1973 मे राजस्थान मे 101 दिन वर्षा होती थी। जो कि वर्तमान मे घटकर औसत वर्षा दिनों की संख्या 29 दिन रह गई हैं।

* वर्षा के कम होने पर तापमान मे बढोतरी होती है। इस कारण चट्टानो मे अपक्षय की क्रिया होती है।

अपक्षय का अर्थ → चट्टानो का अपने स्थान पर टूट-फूट कर बिखर जाना।

* पवन के द्वारा अपरदन (मिट्टी के कणो का एक जगह से दूसरी जगह चले जाना) होता है। जिसके कारण अरावली पर्वतमाला में 12 अंतराल है, इस कारण मरुस्थल आगे की ओर बढ़ रहा है।

4. जनसंख्या तथा नगरीकरण,
5. अतिचारण / पशुचारण,
6. मृदा का अनुचित प्रबन्धन।

- मरुस्थलीकरण को रोकने के निम्न उपाय है :-

1. वृक्षारोपण करना।
2. सामाजिक वानिकी का विकास करना अर्थात वृक्षारोपण करना।
3. शेल्टर बेल्ट विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देना अर्थात् एक कतार के रूप में वृक्षारोपण करना।

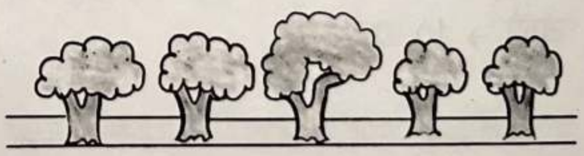

4. मृदा का उचित प्रबन्धन करना अर्थात् जैविक खेती को बढ़ावा देना।
5. जनसंख्या पर नियन्त्रण।

Note :- काजरी (CAZRI) CENTRAL ARID ZONE RESEARCH INSTITUTE

[केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान केन्द्र]

स्थापना :- 1959

मुख्यालय :- जोधपुर

उद्देश्य → मरुस्थलीकरण को रोकना / सीमित करना

* संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1994 में 17 जून को मरुस्थलीकरण दिवस घोषित किया।
  - 17 जून 1995 को प्रथम बार मनाया गया।
  - 29 वाँ मरुस्थलीकरण दिवस 17 जून 2023 को मनाया गया।
    थीम → उसकी भूमि, उसका अधिकार [Her Land, Her Rights]

"थार के मरुस्थल को [2] भागों मे विभाजित करते है"

1. शुष्क मरुस्थल
   वर्षा → 10-20 cm

2. अर्द्धशुष्क मरुस्थल
   वर्षा → 20 - 40 cm

1. शुष्क मरुस्थल

इसको निम्न दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है :-

(i) बालू का स्तूप युक्त

(ii) बालू का स्तूप मुक्त

(i) बालू का स्तूप युक्त :-

बालू का स्तूप का अर्थ - रेत का टीला

रेत के टीलों को धोरे / धोरियन कहते हैं।

बालू का स्तूप युक्त (58.50%) — क्षेत्रफल 128028 KM²

बालू का स्तूप मुक्त (41.50%) — 85660 KM²

0 - 20% = 11.5%

20 - 40% = 4.8%

40 - 60% = 14.7%

60 - 80% = 18.6%

80 - 100% = 8.9%

Q. बालू का स्तूप युक्त के 40% भाग पर स्तूप आच्छादित (ढका हुआ) है?

Ans. 16.3%

• बालू का स्तूप का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है :-

1 अनुदैर्ध्य ⇒ पवनो की दिशा के समानान्तर।

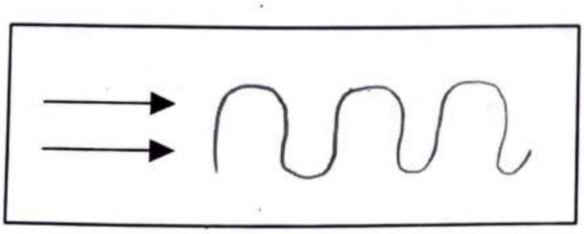

विस्तार → जैसलमेर, बाड़मेर, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण

→ अन्य बालूओं की तुलना मे वनस्पति अधिक।

→ बालूओं की लम्बाई सर्वाधिक।

2. अनुप्रस्थ ⇒ पवनो की दिशा के समकोण पर बनने वाले बालू का स्तूप।

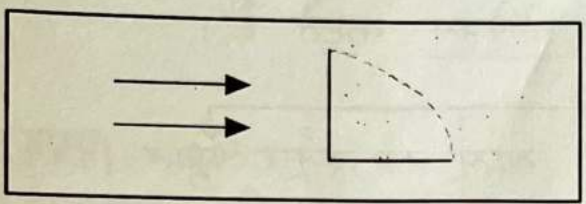

विस्तार → पूगल (बीकानेर), झुन्झुनू, चुरू, सुरतगढ़ (श्रीगंगानगर) रावतसर (हनुमानगढ़)

3. बरखान ⇒ अर्द्धचन्द्राकार आकृति बरखान कहलाती है।

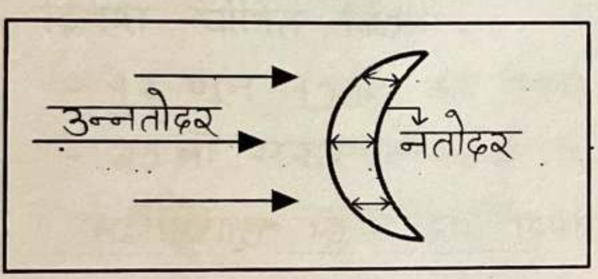

विस्तार → भालेरी (चुरू), सीकर, ओसिया (जोधपुर ग्रामीण) करणीमाता (देशनोक)

सर्वाधिक - चुरू

- बरखान की मध्य में चौड़ाई अधिक होती हैं।
- पवनो की दिशा वाला भाग - उन्नोदर (ऊपर उठा हुआ भाग)
  तथा विपरीत भाग - नतोदर (निम्न भाग)

*. मरुस्थल के विस्तार के लिए सर्वाधिक उत्तरदायी।
*. सर्वाधिक गतिशील बालू का स्तूप।

4. तारा बालू का स्तूप ⇒ अनियमित हवाओं के प्रवाह द्वारा निर्मित

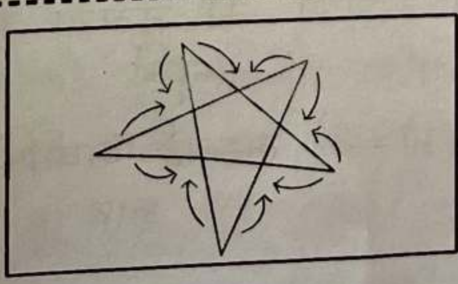

विस्तार → सोहनगढ़ (जैसलमेर) सुरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

5. पारडन बालू का स्तूप ⇒ लहरदार बालू का स्तूप कहते हैं।

उपनाम → उर्मिका

विस्तार → सम्पूर्ण मरुस्थल (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर ग्रामीण)

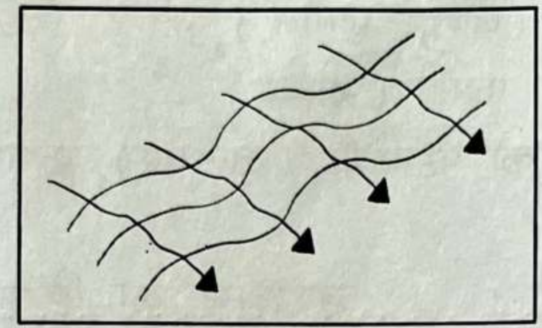

6. नेटवर्क बालू का स्तूप ⇒ लगातार बनने वाले बालू का स्तूप।

विस्तार → श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़।

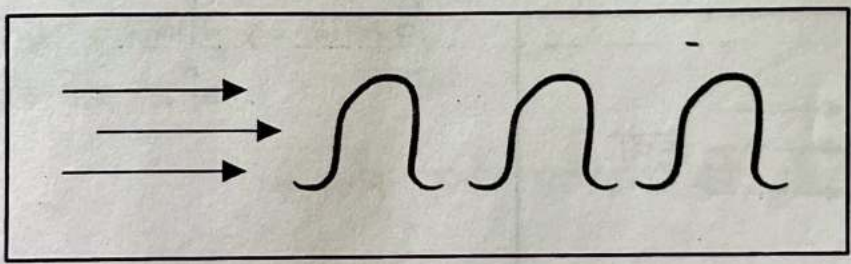

7. शब्र काफिज ⇒ छोटे-छोटे बालू का स्तूप को शब्र काफिज कहते हैं।

विस्तार → सम्पूर्ण मरुस्थल।

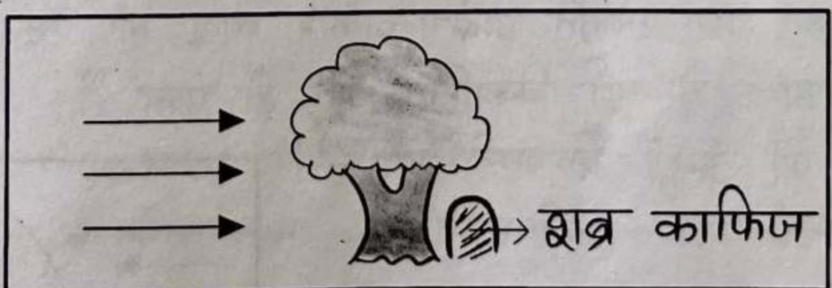

8. अवरोधी बालू का स्तूप ⇒ अवरोध के कारण निर्मित बालू का स्तूप।

अवरोध जैसे - पेड, झाड़ी या पर्वत के कारण हो सकता है।

विस्तार → जोबनेर (जयपुर ग्रामीण),
हर्ष की पहाडी (सीकर),
पुष्कर की पहाड़ियाँ (अजमेर), कुचामन।

9. पेराबोलिक बालू का स्तूप ⇒ बरखान का विस्तारित रूप या
* बरखान का विपरीत रूप है।

इसकी आकृति महिलाओं के हेयरपिन के समान हैं।

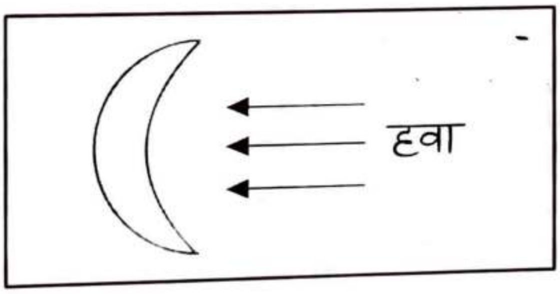

विस्तार → सीकर, चुरु, झुन्झुनू,
नीम का थाना।

Note ⇒ राजस्थान मे सर्वाधिक बालू का स्तूप जैसलमेर मे है तथा अधिकांश (सभी प्रकार के) बालू का स्तूप जोधपुर ग्रामीण मे है।

सीफ :- जब हवा द्वारा निर्मित अर्द्धचन्द्राकार बालू का स्तूप जो मिट्टी के अभाव में पूर्ण विकासित नहीं हो पाता हैं।
* जो अनुदैर्ध्य प्रकार का है।

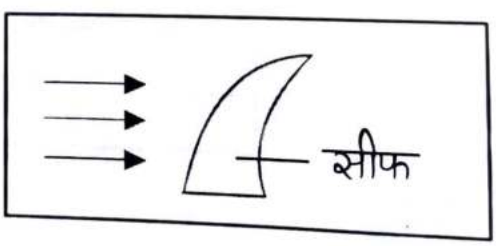

धरियन :- लहरदार गतिशील बालू के स्तूपों को धरियन कहते हैं।

(ii) बालू का स्तूप मुक्त :- (41.50 %)

मरुस्थल के प्रकार - 1 हम्मादा - चट्टानी / पथरीला
2. इर्ग - रेतीला
3. रेग - हम्मादा + इर्ग (मिश्रित रूप)

1. हम्मादा :-

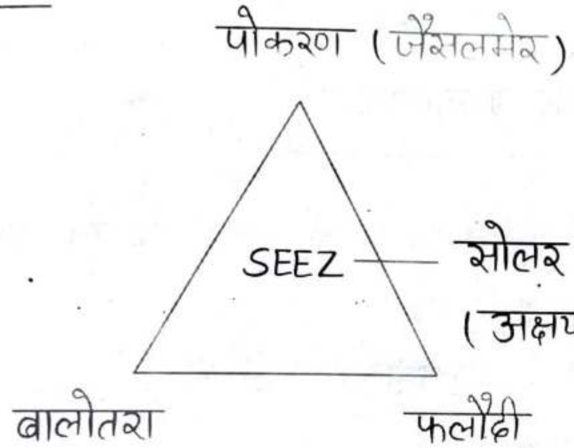

SEEZ — सोलर इनर्जी इंटरप्राइजिंग जोन (अक्षय ऊर्जा निगम द्वारा स्थापित)

*. सौर ऊर्जा उत्पादन की दृष्टि से प्रसिद्ध

लाठी सीरिज → भू- गर्भिक जलपट्टी
विस्तार → मोहनगढ़ से पोकरण (जैसलमेर)
गाँव → आकल
आकल वुड फोसिल पार्क → नलकूप - चाँदन नलकूप
(थार का घड़ा)

सेवण घास प्रजनन स्थली - गोडावण की
वैज्ञानिक नाम - कोरियोटिस नाइग्रीसेप्स

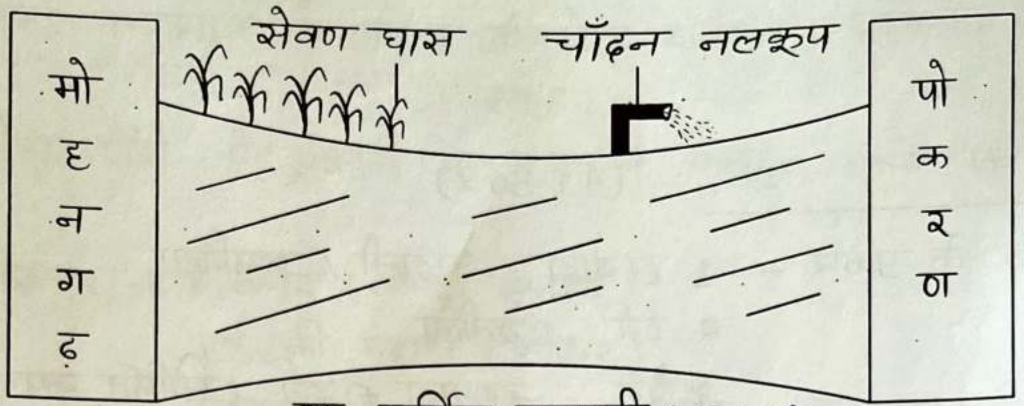

भू - गर्भिक जलपट्टी (60 KM)

२. अर्द्धशुष्क मरूस्थल

- शुष्क मरूस्थल तथा अरावली पर्वतमाला के मध्य स्थित भाग को अर्द्धशुष्क मरूस्थल कहते हैं।
- शुष्क मरूस्थल तथा अर्द्धशुष्क मरूस्थल को 2 भागो मे विभाजित करने वाली समवर्षा रेखा 25 cm है।
- थार के मरूस्थल को दो भागो में विभाजित करने वाली समवर्षा रेखा 25 cm है।
- शुष्क मरूस्थल का पूर्वी भाग तथा अर्द्धशुष्क मरूस्थल का पश्चिमी भाग 25 cm समवर्षा रेखा को स्पर्श करता है।
- मरूस्थल का पूर्वी भाग अरावली पर्वतमाला को जबकि पश्चिमी भाग 10 cm समवर्षा रेखा को स्पर्श करता है।
- शुष्क मरूस्थल प्रदेश 10 cm समवर्षा रेखा तथा 25 cm समवर्षा रेखा के मध्य स्थित है।
- राजस्थान को दो भागो में विभाजित करने वाली समवर्षा रेखा 50 cm है।
- अरावली पर्वतमाला के पूर्व मे 50 cm समवर्षा रेखा है जबकि पश्चिम में 40 cm समवर्षा रेखा निर्धारित है।

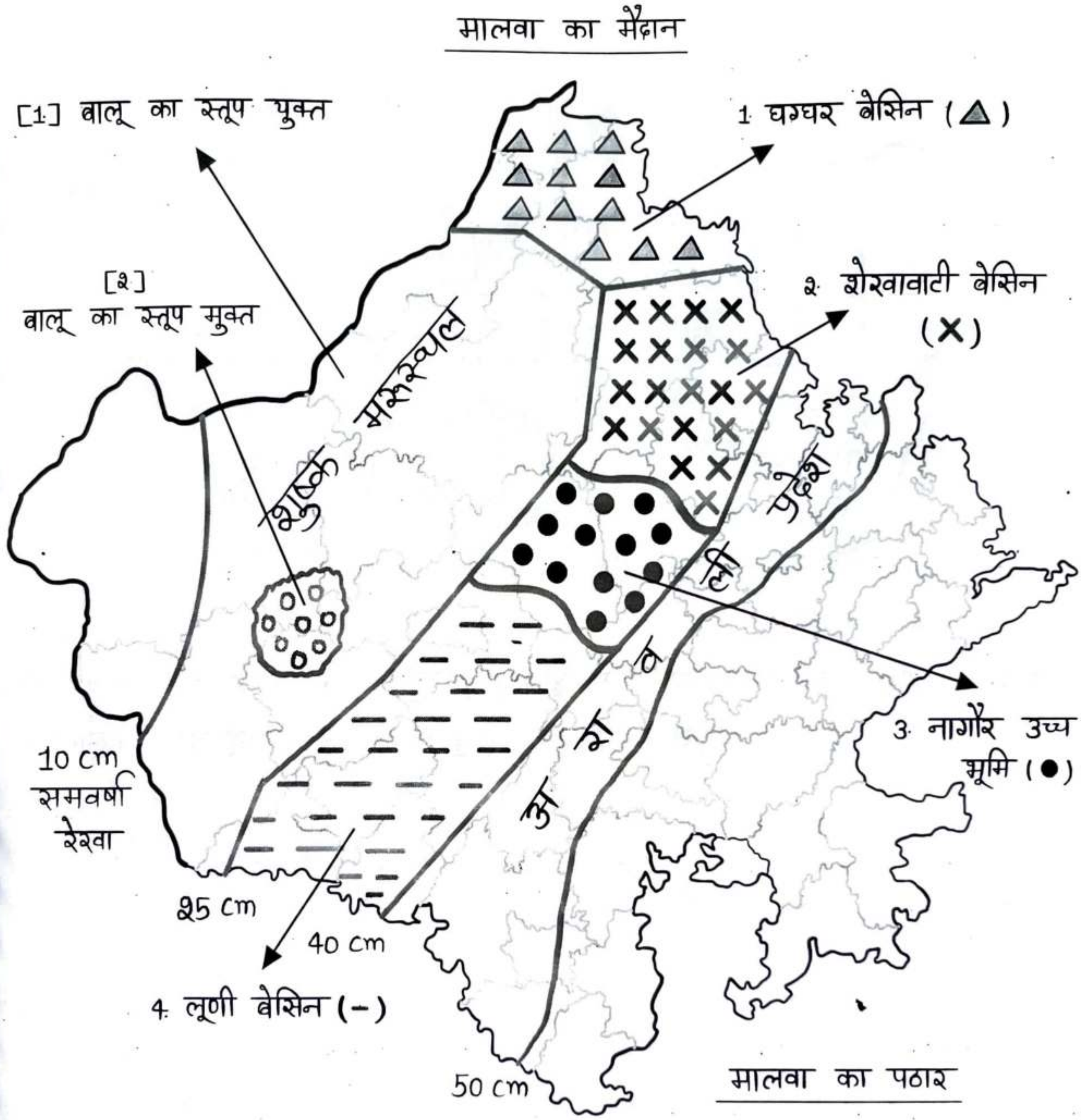

मालवा का मैदान
[1] बालू का स्तूप युक्त
1 घग्घर बेसिन (▲)
[2]
बालू का स्तूप मुक्त
शुष्क मरुस्थल
2 शेखावाटी बेसिन
(×)
अर्द्ध शुष्क प्रदेश
3 नागौर उच्च भूमि (●)
10 cm
समवर्षा
रेखा
25 cm
40 cm
4 लूणी बेसिन (–)
50 cm
मालवा का पठार

• थार मरूस्थल का निर्माण पेलियो आर्कटिक युग मे सहारा मरुस्थल से चलने वाली पश्चिम - पूर्वी पवनो के साथ लाई गई मिट्टी के द्वारा किया गया।

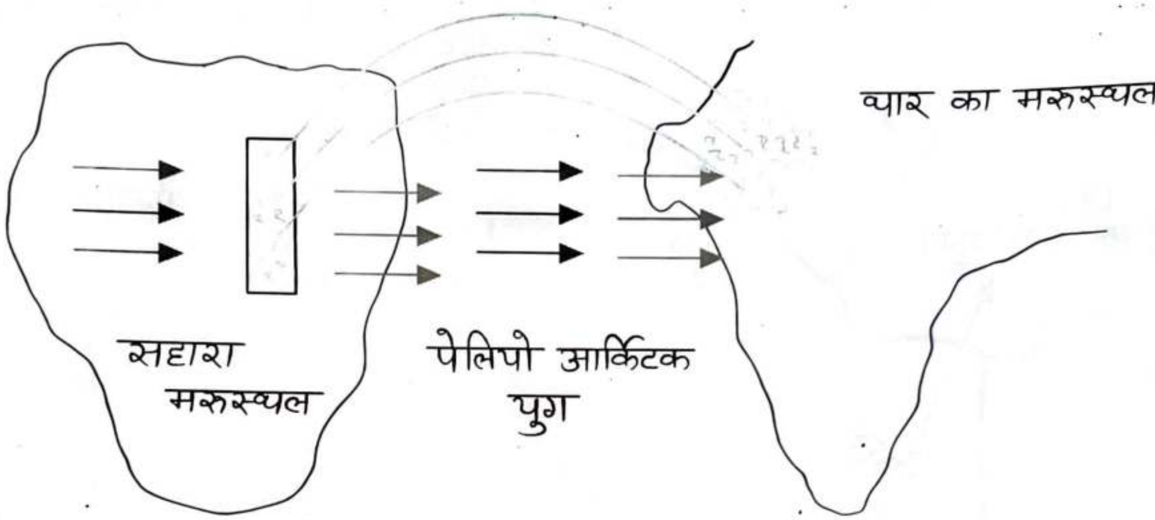

• थार मरूस्थल का राजस्थान मे क्षेत्र = 2 लाख 10 हजार वर्ग किलोमीटर

पूर्ण मरूस्थल = 1 लाख 75 हजार वर्ग किलोमीटर

लम्बाई - 640 KM

चौड़ाई - 300 KM

*. अर्द्धशुष्क मरूस्थल को **4 भागो** मे विभाजित किया जाता है :-

1. घग्घर बेसिन
2. शेखावाटी बेसिन
3. नागौर उच्च भूमि
4. लूणी बेसिन

1. घग्घर बेसिन

उत्तरी भाग	–	मालवा मैदान
दक्षिणी भाग	–	शेखावाटी / शुष्क मरूस्थल
पूर्वी भाग	–	हरियाणा राज्य
पश्चिमी भाग	–	25 cm समवर्षा रेखा
जिले	–	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, अनुपगढ का उत्तरी भाग

सेम की समस्या →

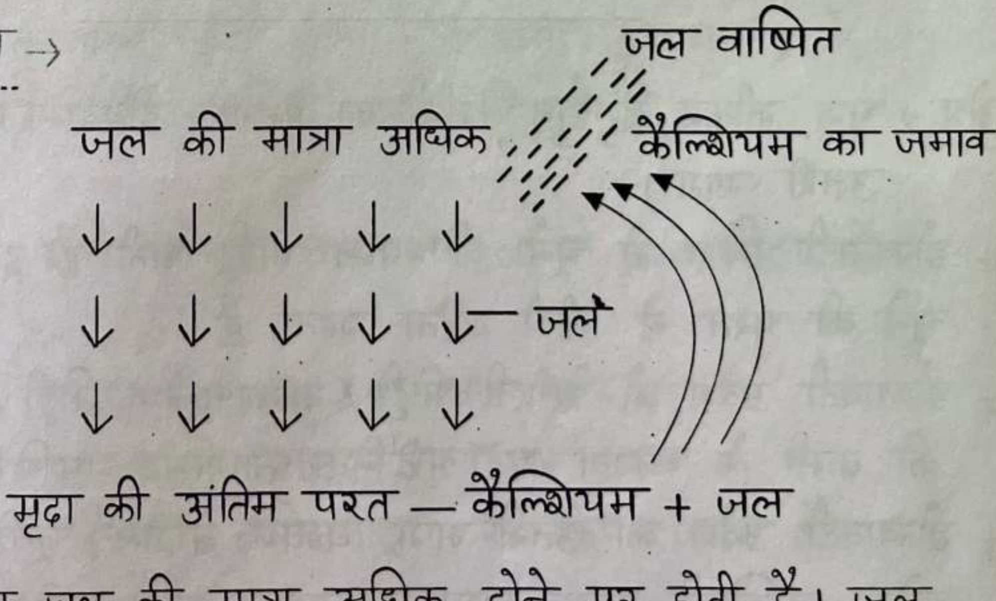

- सेम की समस्या जल की मात्रा अधिक होने पर होती है। जल मृदा की अंतिम परत मृदापरिच्छेदिका मे जाकर कैल्शियम से मिल जाता है।

- यह दोनो मृदा के ऊपर आ जाते है जहाँ जल वाष्पित हो जाता है तथा कैल्शियम की परत जम जाती है जिसे सेम की समस्या कहते हैं।
- सेम की समस्या को दूर करने के लिए जिप्सम तथा रॉकफास्फेट का प्रयोग किया जाता है।
- यह समस्या सर्वाधिक हनुमानगढ़ (बडोप्पल) व श्रीगंगानगर में देखी जाती है।

नाली / नट / पाट :- घग्घर नदी के प्रवाह क्षेत्र को कहते हैं।

बग्गी क्षेत्र (उपजाऊ क्षेत्र) :- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

सर्वाधिक अम्लीयता व क्षारीयता की समस्या घग्घर बेसिन मे है।

2. शेखावटी प्रदेश / बांगर क्षेत्र

क्षेत्र → चुरू, सीकर, झुन्झुनू, नीम का थाना, डीडवाना कुचामन का उत्तरी भाग।

शेखावटी प्रदेश मे चूने की परत पाई जाती है इस कारण जल चूने की परत में नीचे बहता रहता है।

शेखावटी प्रदेश मे रेतीली मिट्टी / मरुस्थलीय मिट्टी तथा वनस्पति की कमी के कारण यहाँ दैनिक तापान्तर अधिक होता है।

शेखावटी प्रदेश का उत्तरी भाग घग्घर बेसिन, पूर्वी भाग अरावली प्रदेश, पश्चिमी भाग शुष्क मरुस्थल तथा दक्षिणी भाग नागौर उच्च भूमि को स्पर्श करता है।

3. नागौर उच्च भूमि

विस्तार → नागौर, डीडवाना कुचामन, अजमेर

नागौर उच्च भूमि का पूर्वी भाग - अरावली पर्वतमाला
पश्चिमी भाग - शुष्क मरूस्थल
उत्तरी भाग - शेखावाटी प्रदेश
दक्षिणी भाग - लूणी बेसिन को स्पर्श करता हैं।

कुबड / बाका / फ्लोरोसिस पट्टी / हांच बेल्ट :-
मेडता (नागौर) से पुष्कर (अजमेर) के मध्य।

→ प्रो. HS शर्मा के अनुसार यहाँ की खारे पानी की झीलें टैथिस सागर का अवशेष नही हैं। क्योकिं सागर के जल मे मैग्निशियम की अधिकता होती हैं जबकि यहाँ इस तत्व की कमी हैं।

→ इस क्षेत्र मे कुचामन तथा नावा (डीडवाना कुचामन) के अतिरिक्त कही भी पहाड़ियाँ नही मिलती हैं।

→ नागौर उच्च भूमि समुद्र तल से 300 से 500 मीटर हैं।

समुद्र तल :- * समुद्र जल का उच्च जल स्तर।
* भारत मे समुद्र तल का मापन चैन्नई (तमिलनाडू) से किया जाता हैं।

4. लूणी बेसिन

विस्तार → अजमेर, नागौर, ब्यावर, जोधपुर ग्रामीण, जालौर, सांचौर, बालोतरा, बाड़मेर ।

नदी बेसिन का अर्थ :- एक नदी तथा उसकी सहायक नदियाँ ।

इसका उत्तरी भाग - नागौर उच्च भूमि
दक्षिणी भाग - गुजरात
पूर्वी भाग - अरावली पर्वतमाला
पश्चिमी भाग - शुष्क मरुस्थल

इस क्षेत्र में "छप्पन की पहाड़ियों (बालोतरा)" मे स्थित पिपलूद मे मरुस्थल की सर्वाधिक वर्षा होती है इस कारण पिपलूद को "मरुस्थल माउण्ट आबु" कहते हैं।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

नखलिस्तान :- मरुस्थल मे किसी झील के चारों तरफ हरियाली विकसित हो जाती है जिसे नखलिस्तान कहते हैं।
जैसे :- कोलायत झील (बीकानेर)

बालसन :- मरुस्थलीय क्षेत्र में दो पर्वतों के मध्य जिस झील का निर्माण हो जाता है उसे बालसन कहते हैं।
जैसे :- सांभर झील ।

→ इन पर्वतो के मध्य जब जल समाप्त हो जाता है तो इसे बजादा कहते हैं।

- थार के मरूस्थल को निम्न नामो से जाना जाता है –
  1. लिबिया व मिस्र – सिटिर
  2. तुर्कमेनिस्तान – कार्डम
  3. पाकिस्तान – चोलिस्तान

- थार का मरूस्थल निम्न संभाग तथा जिलो मे विस्तारित हैं–

1. बीकानेर संभाग – अनुपगढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर

2. जोधपुर संभाग – जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा

3. पाली संभाग – पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही

4. उदयपुर संभाग – राजसमंद

5. अजमेर संभाग – अजमेर, डीडवाना - कुचामन, नागौर, ब्यावर

6. जयपुर संभाग – जयपुर ग्रामीण, कोटपुतली बहरोड़

7. सीकर संभाग – सीकर, चुरु, झुन्झुनू, नीम का थाना।

→ इसरो (ISRO) की रिपोर्ट - 2007 के अनुसार राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 67% भाग पर मरुस्थल है।

→ राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 61.11% भाग पर मरुस्थल है।

→ अरावली के पश्चिम में 58% भाग पर मरुस्थल है।

→ थार का मरुस्थल भारत, पाकिस्तान में विस्तारित है।

→ थार का मरुस्थल भारत के निम्न चार राज्यों में विस्तारित है -
(1.) राजस्थान
(2.) गुजरात
(3.) पंजाब
(4.) हरियाणा

ईश्वरी प्रसाद ने - थार के मरुस्थल को रुक्ष (सूखा) प्रदेश कहा है।

→ श्रीगंगानगर से बाड़मेर तक के क्षेत्र को महान मरुस्थल कहते हैं।

→ विश्व का सबसे बडा "जैव विविधता वाला मरुस्थल" है।

जैव विविधता - किसी क्षेत्र में पादप तथा जीव-जंतुओ की संख्या।

२. अरावली प्रदेश

→ अरावली पर्वतमाला की कुल लम्बाई - 692 KM
→ राजस्थान मे कुल लम्बाई - 550 KM
→ अरावली पर्वतमाला की कुल लम्बाई का 80% भाग राजस्थान में विस्तारित हैं।
→ अरावली पर्वतमाला की शुरूआत - मिनिकॉय द्वीप (लक्षद्वीप)
→ अरावली पर्वतमाला की स्थलीय भाग से शुरूआत खेडब्रह्म, पालनपुर (गुजरात) से प्रारम्भ होकर रायसिना हिल्स तक विस्तारित हैं।
→ इस रायसिना पहाड़ी पर भारत का राष्ट्रपति भवन बना हुआ हैं।
→ राज्य मे अरावली पर्वतमाला की शुरूआत सिरोही से प्रारम्भ होकर सिंघाना (झुन्झुनू) तक विस्तारित हैं।

अरावली पर्वतमाला की विशेषताएँ :-

1. यह राजस्थान को दो भागों में विभाजित करती हैं।
2. यह मरूस्थल के प्रसार को रोकती हैं लेकिन इसमें 12 अंतराल पाये जाने के कारण मरूस्थल आगे की ओर बढ़ रहा हैं।
3. इसके उत्तरी भाग की तुलना मे दक्षिणी भाग अधिक चौड़ा हैं।
4. अरावली पर्वतमाला जल विभाजक हैं अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी की नदियों का जल विभाजन करती हैं।
5. यह पर्वतमाला मानसून के समानान्तर होने के कारण राज्य के राज्य के पश्चिमी भाग मे वर्षा कम होती हैं।

Note → • अरावली पर्वतमाला का विस्तार दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व की ओर है।

• अरावली पर्वतमाला की ऊँचाई दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व की ओर कम होती है जबकि उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम की ओर ऊँचाई बढ़ती है।

6. राजस्थान की अधिकतम नदियों का उद्‌गम अरावली पर्वतमाला से होता है लेकिन सभी नदियों का उद्‌गम अरावली से नही होता है।

7. अरावली पर्वतमाला अवशिष्ट रूप (घिसा हुआ रूप) मे स्थित है तथा इसकी तुलना उत्तरी अमेरिका महाद्वीप की अपलेशियन पर्वतमाला से की गई है।

8. अरावली पर्वतमाला वलन का उदाहरण है।

* सर्पिलाकार आकृति

अबुल फजल ने अरावली पर्वतमाला की तुलना ऊँट की गर्दन के समान की।

9. अरावली पर्वतमाला में खनिजों की प्रधानता है इसलिए इसको राजस्थान की जीवनरेखा कहते है।

10. अरावली पर्वतमाला की औसत ऊँचाई 930 मीटर है।

Q. कथन - A: अरावली पर्वतमाला मरुस्थल के प्रसार को रोकती है।
कारण - R: अरावली पर्वतमाला राज्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर - पूर्व की ओर अविच्छिन्न (खण्डित नही) रूप से फैली हुई है।

(A.) A तथा R दोनो सही हैं।
(B.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की व्याख्या करता हैं।
(C.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की व्याख्या नही करता।
(D.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की आंशिक व्याख्या करता हैं।

Ans. ⇒ [D]

Q. कथन - A: अरावली पर्वतमाला मे खनिजो की अधिकता हैं।
कारण - R: अरावली पर्वतमाला मानसून के समानान्तर हैं इस कारण राज्य मे वर्षा कम होती हैं।

(A.) A तथा R दोनो सही हैं।
(B.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की व्याख्या करता हैं।
(C.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की व्याख्या नही करता।
(D.) A तथा R दोनो सही हैं, लेकिन R, A की आंशिक व्याख्या करता हैं।

Ans. ⇒ [C]

Q. कथन - A: अरावली पर्वतमाला से राजस्थान की अधिकतम नदियों का उद्गम होता हैं।
कारण - R: अरावली पर्वतमाला का पूर्वी भाग मैदानी जबकि पश्चिमी भाग मरूस्थलीय हैं।

(A.) A तथा R दोनो सही हैं।
(B.) A तथा R दोनो गलत हैं।
(C.) A गलत हैं लेकिन R सही हैं।
(D.) A सही हैं लेकिन R गलत हैं।

Ans. ⇒ [A]

11. अरावली पर्वतमाला का सर्वाधिक विस्तार - उदयपुर मे
अरावली पर्वतमाला का कम विस्तार - झुन्झुनू मे।

12. अरावली पर्वतमाला का सबसे उच्च स्तर माउंट आबू है जबकि सबसे निम्न स्तर पुष्कर झील (अजमेर) हैं।

Note ⇒ राजस्थान का सबसे उच्च स्तर माउंट आबू है जबकि निम्न स्तर सांभर झील (जयपुर ग्रामीण) है।

13. अरावली पर्वतमाला को तीन भागों मे विभाजित किया जाता है:-

उत्तरी अरावली	मध्य अरावली	दक्षिणी अरावली
औसत ऊँचाई - 450 m प्रमुख चोटियाँ - 1. रघुनाथगढ़ (सीकर) - 1055 m 2. खोह (जयपुर) - 920 m 3. भैंराच (अलवर) - 792 m 4. बरवाड़ा - 786 m (जयपुर ग्रामीण) 5. बबाई - 780 m (नीम का थाना) 6. बिलाली - 774 m 7. मनोहर थाना (जयपुर ग्रामीण) - 747 m 8. बैराठ - 704 m (कोटपुतली बहरोड़)	औसत ऊँचाई - 550/500 m प्रमुख चोटियाँ - 1. गोरमजी टॉडगढ़ - 934 m (ब्यावर) 2. तारागढ़ (अजमेर) - 870/872/873 m	औसत ऊँचाई - 1000 m प्रमुख चोटियाँ - 1. गुरु शिखर (सिरोही) - 1722 m 2. सेर (सिरोही) - 1597 m 3. दिलवाड़ा (सिरोही) - 1442 m 4. जरगा (उदयपुर) - 1431 m 5. अचलगढ़ (सिरोही) - 1380 m 6. आबू खण्ड (सिरोही) - 1295 m 7. कुंभलगढ़ (राजसमंद) - 1224 m 8. ऋषिकेश (सिरोही) - 1017 m 9. कमलनाथ (उदयपुर) - 1000 m 10. सज्जनगढ़ (उदयपुर) - 938 m

TRICK — (दक्षिण अरावली)

गुरू से दिल मे जरा आशा रखो ।

गुरू	से	दिल	मे	जरा	आशा	रखो ।
गुरूशिखर	सेर	दिलवाडा		जरगा	अचलगढ	आबूखण्ड
(1722)	(1597)	(1442)		(1431)	(1380)	(1295)

कुंभ	ऋषि	कमल	सज्जन
कुंभलगढ़	ऋषिकेश	कमलनाथ	सज्जनगढ़
(1224)	(1017)	(1000)	(938)

1. उत्तरी अरावली

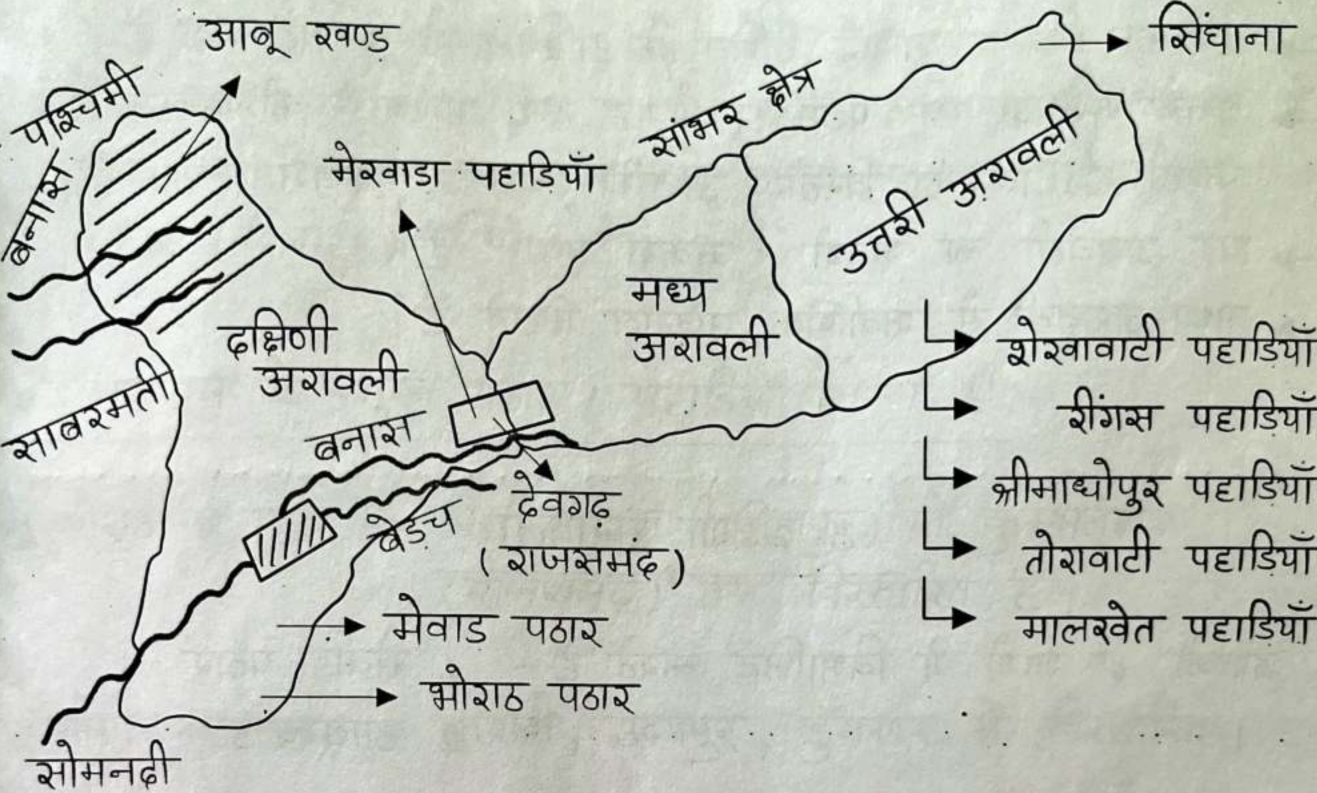

→ यह सांभर बेसिन से सिंघाना तक है।

इसमे निम्न पहाडियाँ आती है:-

1. शेखावाटी पहाड़ियाँ (सीकर)
2. रींगस पहाड़ियाँ (सीकर)
3. तोरावाटी पहाड़ियाँ (सीकर)
4. मालखेत पहाड़ियाँ (सीकर)
5. श्रीमाधोपुर पहाड़ियाँ (नीम का थाना)

→ उत्तरी अरावली क्वार्टजाइट तथा फाइलाइट्स चट्टानो से मिलकर बनी है।

→ इसमे क्रासका एंव कांकनवाड़ी पठार है।

2. मध्य अरावली

→ इसका विस्तार सांभर बेसिन के पश्चिम से देवगढ़ तक है।
→ इसमे मेरवाड़ा की पहाड़ियाँ मेवाड़ तथा मारवाड़ को अलग करती है। जिनका विस्तार अजमेर, ब्यावर, राजसमंद तक है।
→ यह अरावली का सबसे 'संकरा भाग' है।
→ मध्य अरावली मे सर्वाधिक अंतराल मिलते है।

3. दक्षिणी अरावली

इसको दो भागो मे विभाजित करते है – 1. मेवाड़ पठार
2. आबूखण्ड

1. मेवाड़ पठार ⇒ इसका प्रवाह क्षेत्र (नदियों का बहाव) समानान्तर तथा दक्षिणवर्ती है।
→ इसी मेवाड के पठार से भारत/राजस्थान की जल विभाजक रेखा दक्षिण से शुरू होकर दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर चली जाती है।
→ भोराठ का पठार भी जल विभाजक का कार्य करता है।

लसाड़िया पठार (सलूम्बर) :- मेवाड़ के पठार की सबसे ऊँची चोटी जरगा है।

2. आबूखण्ड (सिरोही) ⇒ इसकी सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर है।

Note ⇒ राजस्थान की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर को कर्नल जेम्स ने "संतो का शिखर" कहा है।

- यह पठार 19 KM लम्बा व 8 KM चौंडा है।
- इस पठार पर नन रॉक व टॉड रॉक आकृति की चट्टाने है इस पर राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार उडिया का पठार (सिरोही) स्थित है।

- राजस्थान के प्रमुख पठार / पहाड़ियाँ निम्न है :-

1. भोराठ का पठार → यह गोगुन्दा (उदयपुर) से कुम्भलगढ़ (राजसमंद) तक विस्तारित है।

2. भोमट का पठार → सिरोही, उदयपुर, डुँगरपुर मे विस्तारित।

3. भाकर → सिरोही में उबड़-खाबड़ क्षेत्र को भाकर कहते है।

4. देशहरो (उदयपुर) → जरगा व रागा पहाड़ियों के मध्य का क्षेत्र जो वर्षभर हरा-भरा रहने के कारण देशहरो कहलाता है।

5. गिरवा (उदयपुर) → इसको पहाड़ो की मेखला कहते है।

6. छप्पन का पर्वत → उदयपुर

Note ⇒ छप्पन की पहाडियाँ - बालोतरा

7. विह्वामेडा की पहाड़ियाँ → उदयपुर

8. भंवरमाता की पहाड़ी → प्रतापगढ़

9. बिजराल पहाड़ी
10. दिवेर पहाड़ी
11. खमनौर पहाड़ी
→ राजसमंद

12. सुंडा पर्वत - 869 m
13. रोजा भाकर - 730 m
14. ईसराना भाकर - 839 m
15. झारोला भाकर - 588 m
→ जालौर

16. जसवंतपुरा पहाड़ी → जालौर

17. गोरिया पहाड़ी → पाली
18. बीजासण पर्वत → भीलवाड़ा

19. नागपहाड़ी
20. रत्नागिरी पहाड़ी
→ अजमेर

21. ऊपरमाल का पठार → बिजौलिया (भीलवाड़ा) → भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़)

22. मेसा पठार
23. धोराजी पठार
→ चित्तौड़गढ़

24. पिडमांट पठार → राजसमंद

25. नानी सीरड़ी पहाड़ी → पाली
26. सारण पर्वत → पाली

27. टॉडगढ़ पहाड़ी → ब्यावर

28. देवगिरी पहाड़ी → दौसा

29. झालाना पहाड़ी
30. मोती डूँगरी पहाड़ी
31. गणेश डूँगरी पहाड़ी
→ जयपुर

32. बैराठ पहाड़ी → कोटपुतली

33. हर्षनाथ पहाड़ी
34. उदयनाथ पहाड़ी
→ अलवर

35. हर्ष की पहाड़ी → सीकर

• राजस्थान के प्रमुख दर्रे एवं नाल -

1. पगल्या / जीलवाड़ा की नाल
2. देसूरी की नाल
3. सोमेश्वर की नाल

→ पाली

4. बर दर्रा
5. पारवेरिया दर्रा
6. सुरा घाट दर्रा
7. शिवपुरी घाट दर्रा

→ ब्यावर

8. गोरमघाट दर्रा
9. खामली घाट दर्रा

→ राजसमंद

10. फुलवारी की नाल → उदयपुर
(राजस्थान की सबसे बड़ी नाल)

11. हल्दीघाटी की नाल → राजसमंद
(इसमे चन्दन के वृक्ष मिलते है)

• अरावली पर्वतमाला निम्न जिलों से गुजरती है - उदयपुर, सिरोही,

डूँगरपुर, सलूम्बर, प्रतापगढ, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, पाली, भीलवाड़ा, ब्यावर, अजमेर, दूदू, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, अलवर, कोटपुतली बहरोड़, खैरथल, सीकर, नीम का थाना, झुन्झुनू ।

3. पूर्वी मैदान

अरावली पर्वतमाला तथा हाड़ौती प्रदेश के मध्य पूर्वी मैदान हैं।

या

50 cm तथा 75 cm समवर्षा रेखा के मध्य पूर्वी मैदान स्थित हैं।

→ पूर्वी मैदान का ढाल - पश्चिम से पूर्व की ओर हैं।

→ गंगा व यमुना की सहायक नदियों द्वारा निर्मित भाग -

↓

जलोढ मिट्टी

↓

(सर्वाधिक) उपजाऊ

↓

सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि

↓

सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व

Q. निम्न मे से असंगत हैं -

[1.] पूर्वी मैदान का ढाल पूर्व की ओर हैं।

[2.] पूर्वी मैदान राजस्थान को दो भागों मे विभाजित करने वाली समवर्षा रेखा को स्पर्श करता हैं।

[3.] पूर्वी मैदान सर्वाधिक कृषि योग्य होने के कारण सर्वाधिक खाद्यान उत्पन्न करता हैं।

सही हैं :- (1.) केवल 1 (2.) केवल 2
(3.) केवल 1 व 2 (4.) इनमे से कोई नही [4]

• पूर्वी मैदान को निम्न भागों मे विभाजित करते है -

1. बनास - बाणगंगा बेसिन
2. चम्बल बेसिन
3. माही बेसिन

1. बनास बेसिन

बनास बेसिन को 2 भागों में विभाजित करते है -

1. मेवाड का मैदान
2. मालपुरा करौली का मैदान

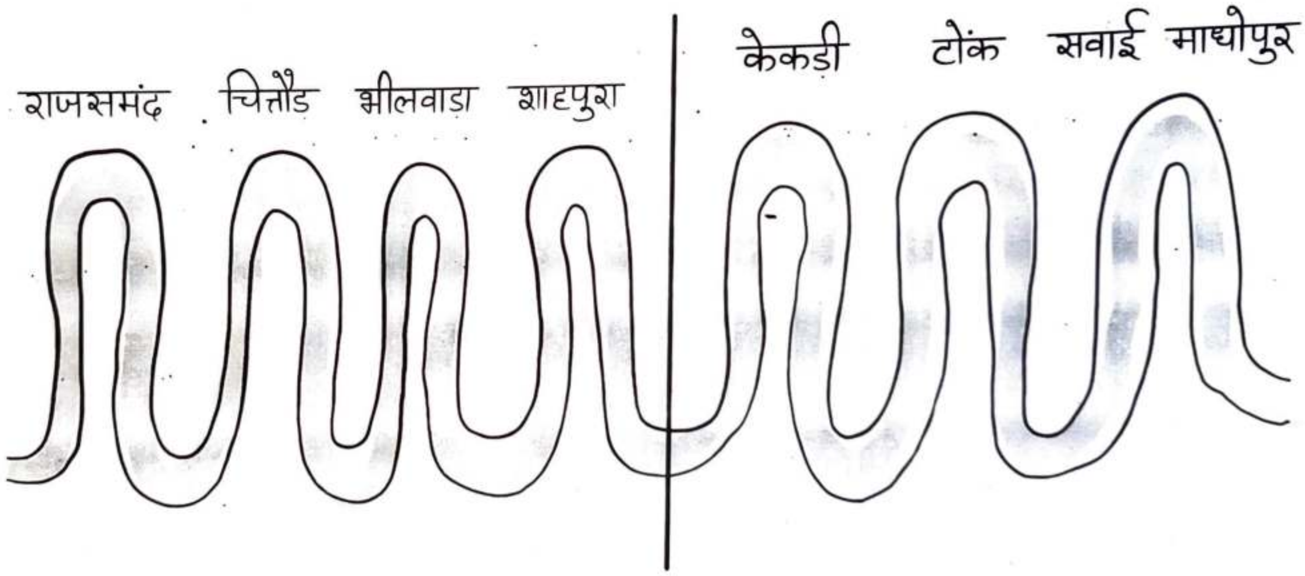

1. मेवाड़ का मैदान = राजसमंद, चित्तौड, भीलवाड़ा, शाहपुरा
* खेराड (शाहपुरा) - जहाजपुर तहसील का क्षेत्र
समुद्र तल से औसत ऊँचाई - 280 से 500 मीटर

2. मालपुरा - करौली का मैदान = केकड़ी, टोंक, सवाई माधोपुर
* मालखेराड़ - टोंक जिले का क्षेत्र
समुद्र तल से औसत ऊँचाई - 280 से 400 मीटर

बाणगंगा बेसिन

इसमे कोटपुतली, जोधपुर, जयपुर ग्रामीण, भरतपुर, दौसा आदि क्षेत्र आता है।

2. चम्बल बेसिन

- इसमे चम्बल नदी तथा इसकी सहायक नदियाँ आती है।
- चम्बल नदी के द्वारा अवनालिका अपरदन (GULLY-EROSION) किया जाता है।

जिसके परिणामस्वरूप भूमि उत्खात भूमि (Band Land Topography) हो जाती है जो कृषि योग्य नही है।

डांगलैण्ड :- करौली के पठार पर अनियमित पहाड़ियों को कहते है।

चम्बल नदी गॉर्ज का निर्माण करती है।
└── अपरदन की गहरी अवस्था।

चम्बल नदी कोटा से यमुना नदी तक 'बीहड़' का निर्माण करती है यह बीहड़ का क्षेत्र 480 KM है।

3. माही बेसिन

- माही नदी का ढाल प्रवणांक - 8 से 12 m/km है जो कि सर्वाधिक है।
- माही बेसिन मे महुआ के वृक्ष की प्रधानता है इस कारण इसे प्राचीन पुष्पप्रदेश कहते है।

- माही बेसिन मे लाल- लोमी मिट्टी पाई जाती है।
- माही बेसिन के अन्तर्गत स्थानांतरित कृषि की जाती है।

स्थानांतरित कृषि :- आदिवासियों के द्वारा पेड़-पौधों को काटकर जलाकर तथा भूमि को खाली करके एक जगह दो या तीन वर्ष तक कृषि करना।

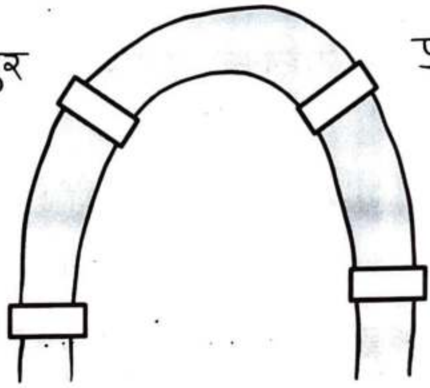

• पूर्वी मैदान मे निम्न जिले आते है – अलवर, भरतपुर, डीग, धौलपुर, करौली, दौसा, सवाईमाधोपुर, जयपुर ग्रामीण, टोंक, अजमेर, बांसवाड़ा, केकड़ी, शाहपुरा, गंगापुर सिटी, खैरथल।

4. दक्षिण - पूर्वी पठारी प्रदेश / हाड़ौती प्रदेश

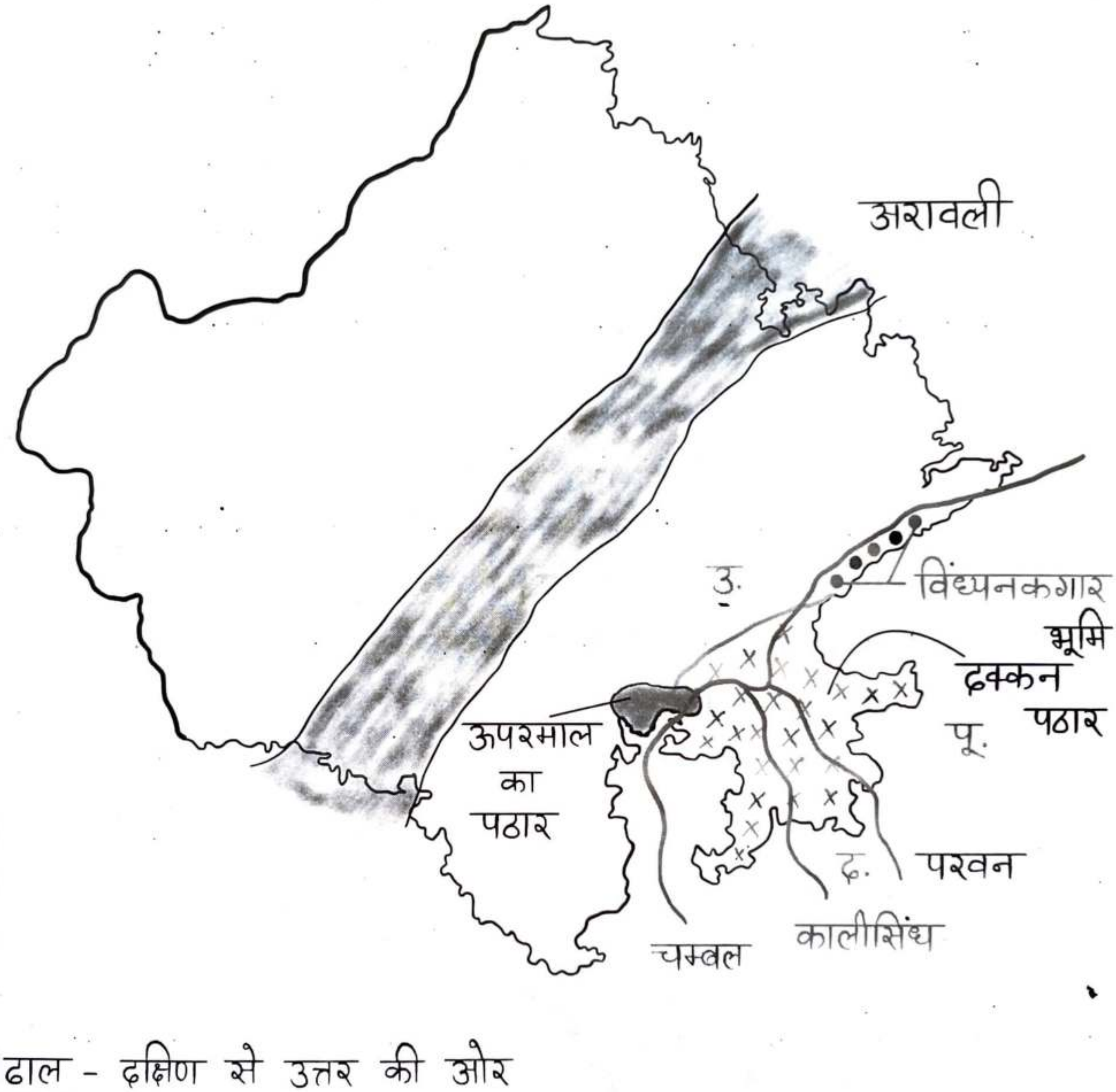

<u>ढाल</u> - दक्षिण से उत्तर की ओर

- यह ज्वालामुखी क्रिया द्वारा निर्मित है जिसके कारण मध्यम काली मिट्टी है जो कपास तथा सोयाबीन हेतु उपयोगी है।
- इस प्रदेश को 'अस्पष्ट अपवाह प्रवाह क्षेत्र' कहा जाता है।

- इसमे कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड़, सवाईमाधोपुर, भीलवाडा, चित्तौड़गढ़ जिले आते हैं।

इसको दो भागों मे विभाजित किया जाता है :-

1. विन्ध्यपन कगार भूमि
   - (i) अर्द्धचन्द्राकार पहाडी
   - (ii) नदी निर्मित
   - (iii) शाहबाद क्षेत्र

2. दक्कन पठार
   - (i) डग - गंगधर प्रदेश
   - (ii) झालावाड़ पठार

1. विन्ध्यपन कगार भूमि

विस्तार ⇒ धोलपुर, करौली, सवाई माधोपुर।

* अरावली पर्वतमाला तथा विन्ध्यपाचल पर्वतमाला को दर्शाने वाली भौतिक इकाई ऊपरमाल का पठार है।
* इसको तीन भागों मे विभाजित किया जाता है:-

(i) अर्द्धचन्द्राकार पहाडी :-

* बूँदी की पहाड़ी सबसे ऊँची चोटी - सतूर
* कुण्डला की पहाड़ी - कोटा
* मुकुन्दरा की पहाड़ी - कोटा + झालावाड़
* हाड़ौती क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी - चांदवाड़ी (झालावाड़) - 517 m

(ii) नदी निर्मित बेसिन :- इसमे चम्बल नदी तथा इसकी सहायक नदियाँ आती है।

(iii) शाहबाद क्षेत्र :- बांरा जिले का उच्च भूमि क्षेत्र।

2. दक्कन पठार

विस्तार ⇒ कोटा, बूँदी, बांरा, झालावाड़।

* इसको (दो) भागो मे विभाजित किया जाता है:-

(i) डग - गंगधर प्रदेश

* झालावाड़ का दक्षिणी - पश्चिमी भाग जो समुद्रतल से 350 m ऊपर उठा हुआ है डग गगधर प्रदेश कहलाता है।

(ii) झालावाड़ पठार

(झालावाड़)

दक्षिण - पूर्वी पठारी प्रदेश को 5 उपभागों मे विभाजित किया जाता है :-

	थार मरूस्थल	अरावली प्रदेश	पूर्वी मैदान	द. - पू. पठारी प्रदेश
जनसंख्या	40%	10%	39%	11%
क्षेत्रफल	61% (61.11%)	9%	23%	7% (6.89%)
अवशेष	टेथिस सागर	गोंडवाणा लैण्ड	टेथिस सागर	गोंडवाणा लैण्ड
कालक्रम	प्लिस्टोसीन	प्री - कैम्ब्रियन	प्लिस्टोसीन	क्रिटेशियस
भारत	विशाल मैदान	प्रायद्वीपीय पठार	विशाल मैदान	प्रायद्वीपीय पठार
मिट्टी	बलुई	पर्वतीय	जलोढ़	काली
चट्टान	परतदार	प्राथमिक / आग्नेय	परतदार	आग्नेय

→ महाद्वीप व महासागर प्रथम श्रेणी के उच्चावच हैं।
→ पर्वत, पठार, मैदान II श्रेणी के उच्चावच हैं।
→ V आकार की घाटी, U आकार की सर्क III श्रेणी के उच्चावच हैं।

राजस्थान का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र का अर्थ :- मुख्य नदी तथा उसकी सहायक नदियों का क्षेत्र।

राजस्थान के अपवाह तंत्र को 3 भागो में विभाजित किया जाता है -

	अरब सागर अपवाह तंत्र	बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र	आन्तरिक अपवाह तंत्र
प्रतिशत	60%	23%	17%
जलग्रहण	12%	53%	35%

1. अरब सागर का अपवाह तंत्र

TRICK → सलमा अरबसागर के पश्चिम में सोजा।

- स → साबरमती
- ल → लूणी
- मा → माही
- पश्चिम → पश्चिमी बनास
- सो → सोम
- जा → जाखम

लूणी नदी

उद्गम स्थल - नागपहाड़ (अजमेर)
संगम - अरब सागर
उपनाम - साक्री / सागरमती,
आधी खारी आधी मीठी / कालीदास ने इसे "अन्तसलीला" कहा है।

* सागरमती नदी तथा सरस्वती नदी दोनो के आपस मे गोविन्दगढ़ (पुष्कर) मे मिलने के बाद लूणी नदी के नाम से जाना जाता है।

* पुष्कर झील मे जल की आपूर्ति सरस्वती नदी करती है।

* जब पुष्कर की पहाडियों मे भारी वर्षा होती है तो बाढ़ बालोतरा मे आती है जिसका कारण है बालोतरा लूणी नदी के पेटे / तल से नीचे स्थित है।

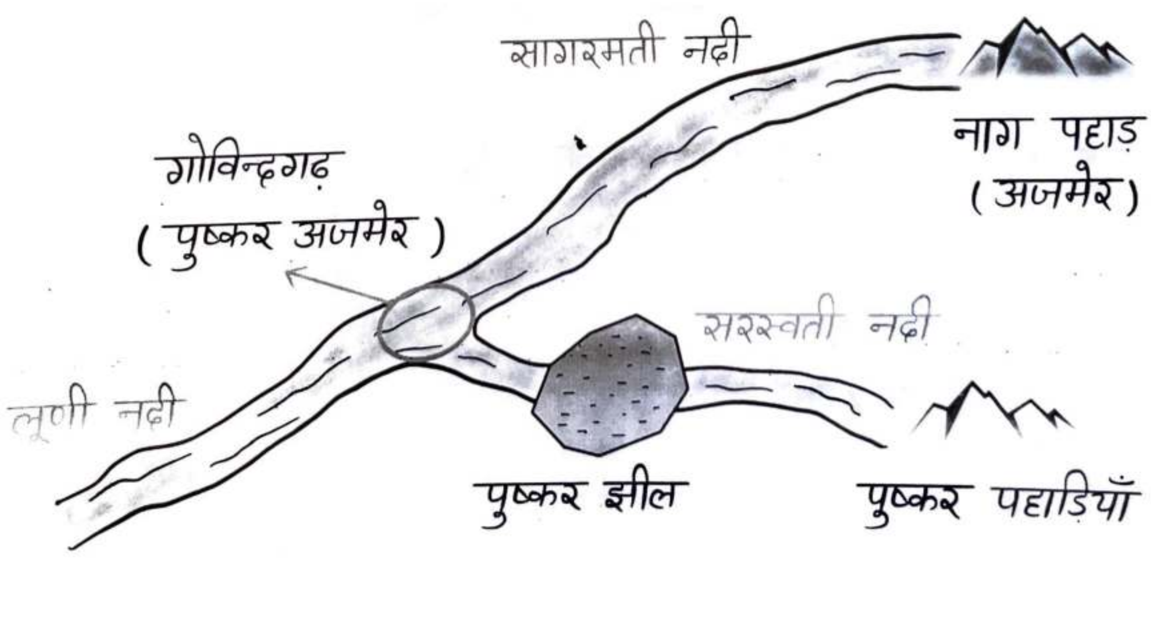

* लूणी नदी का बहाव क्षेत्र अधिक वर्षा से कम वर्षा की ओर है।

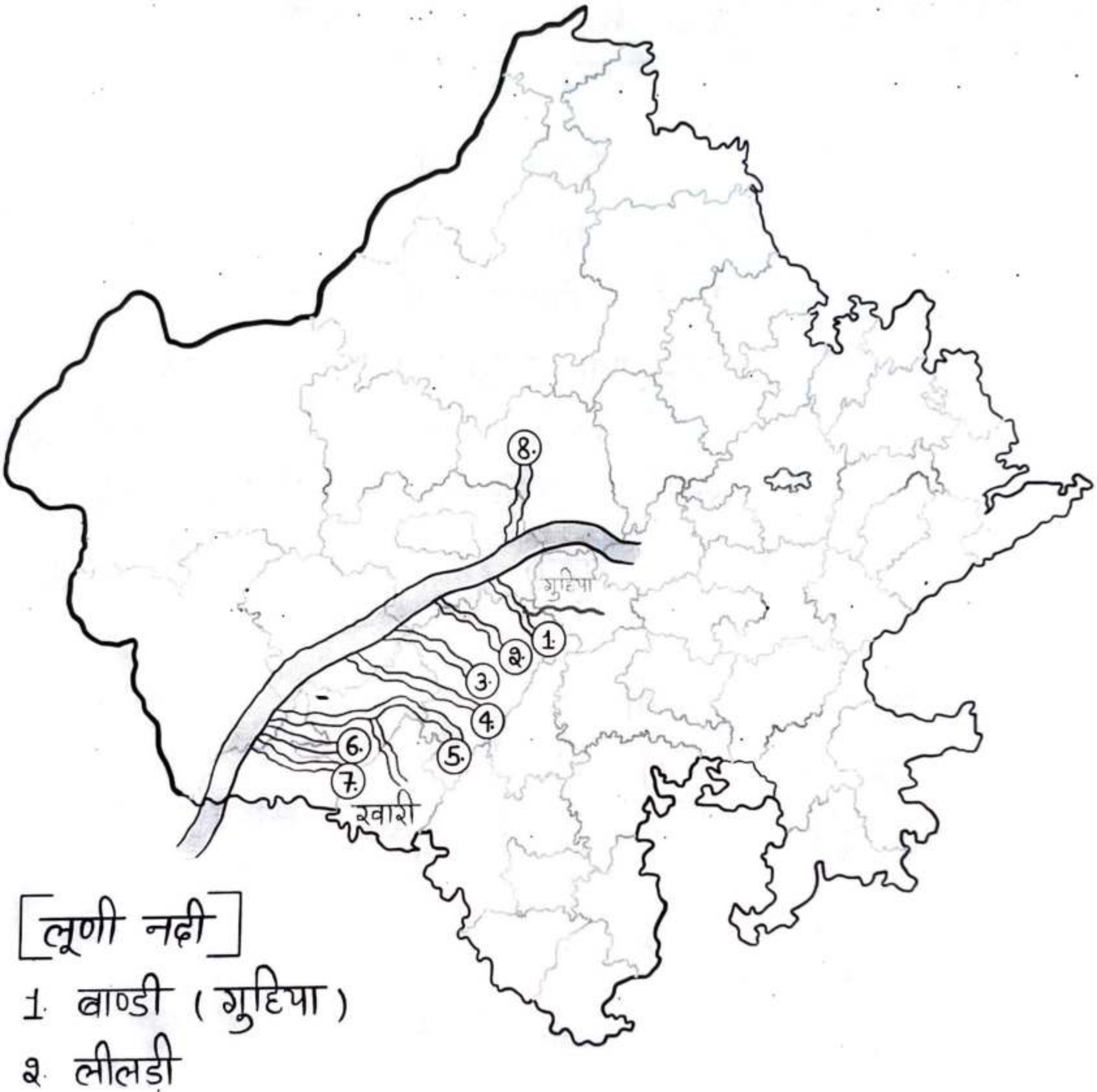

[लूणी नदी]

1. बाण्डी (गुहिया)
2. लीलड़ी
3. मीठड़ी
4. सुकड़ी
5. जंवाई (खारी)
6. सागी
7. मित्री
8. जोजड़ी

* इस नदी का पानी बालोतरा के बाद खारा हो जाता है जिसका कारण है नमक युक्त चट्टाने।

लूणी नदी की बांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

1 बाण्डी :-
उद्गम - बाली तहसील (पाली)
संगम - लखर चम्ब गाँव (जोधपुर ग्रामीण) मे लूणी से।
प्रवाह क्षेत्र - पाली + जोधपुर ग्रामीण
किनारे - महाराजा उम्मेद मील (पाली)
* इस मील मे रंगाई - छपाई उद्योग के कारण बाण्डी तथा लूणी नदी का जल प्रदूषित हो रहा है।

इस नदी की सहायक नदी - गुहिया (जो ब्यावर, पाली मे बहती है)

2 लीलड़ी :-
उद्गम - पाली
संगम - लूणी नदी में
प्रवाह क्षेत्र - पाली, जोधपुर ग्रामीण

3 मीठड़ी :-
उद्गम - पाली
संगम - लूणी नदी
प्रवाह क्षेत्र - पाली + बालोतरा

4. सुकड़ी :-
उद्गम - देसूरी (पाली)
संगम - समदड़ी (बालोतरा)
प्रवाह क्षेत्र - पाली + जालौर + बालोतरा
किनारे - बाकली बांध (जालौर)

5. जवाई :- उद्गम - गौरिया पहाडी (पाली)
संगम - गुढ़ामालानी (बाड़मेर) मे लूणी नदी से मिल जाती है।
प्रवाह क्षेत्र - पाली, जालौर, सांचौर, बाड़मेर
किनारे - जंवाई बाँध (सुमेरपुर पाली)
* यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे लम्बा बांध है जिसे मारवाड़ का अमृत सरोवर कहते हैं।
इसकी सहायक नदी 'खारी' है।

खारी नदी ⇒ उद्गम - शेरगाँव पहाडी (सिरोही)
संगम - सापला गांव (जालौर) मे जंवाई में मिल जाती है।
प्रवाह क्षेत्र - सिरोही + जालौर।

6 सागी :- उद्गम - जसवंतपुरा पहाड़ी (जालौर)
संगम - गाँधव गांव (बाड़मेर) मे लूणी नदी में मिल जाती है।
प्रवाह क्षेत्र - जालौर + सांचौर + बाड़मेर

7 मित्री :- उद्गम - जालौर की पहाड़ियाँ
संगम - लूणी नदी में
प्रवाह क्षेत्र - जालौर + सांचौर + बाड़मेर

➤ लूणी नदी की दाँये तट की सहायक नदी :-

8. जोजड़ी नदी :- उद्गम - पोण्डलु पहाड़ी (नागौर)
संगम - खेजड़ली खुर्द (जोधपुर ग्रामीण) मे लूणी नदी में मिल जाती है।
प्रवाह क्षेत्र - नागौर + जोधपुर ग्रामीण

* यह लूणी नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है। (150 KM)
* इस नदी का उद्गम अरावली की पहाडियो से नहीं होता है।
* यह लूणी नदी की एकमात्र सहायक नदी है जिसका उद्गम बांयी ओर से नही होता है।
* इस नदी पर जोधपुर ग्रामींण मे पेरिस के समतुल्य वाटर फ्रंट विकसीत किया गया है।

➤ लूणी नदी की कुल लम्बाई - 495 KM
➤ राजस्थान में लूणी नदी की कुल लम्बाई - 330/350 KM

माही नदी

उद्गम स्थल - मेहद झील (मध्यप्रदेश) अमरोरू पहाड़ी
संगम - खंभात की खाड़ी
प्रवाह क्षेत्र - बांसवाड़ा, डुँगरपुर, प्रतापगढ़
राजस्थान मे प्रवेश - खांदू गाँव (बांसवाड़ा)
उपनाम - वागड़ / कांठल / आदिवासियों की गंगा
किनारे - गलियाकोट (डुँगरपुर)

* माही नदी दक्षिण दिशा से प्रवेश करके दक्षिण मे से ही प्रवाहित होते हुए गुजरात मे प्रवेश करके खंम्भात की खाड़ी में मिल जाती है।

त्रिवेणी संगम - नवाटापरा गाँव, बेणेश्वर (डुंगरपुर)
माही + सोम + जाखम

* बेणेश्वर में माघ पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसे आदिवासियों का कुंभ कहते हैं।

* माही नदी अंग्रेजी के उल्टे यू (∩) आकार जैसे प्रवाहित होती है।

* "सुजलाम सुफलाम" क्रान्ति का सम्बन्ध माही नदी में साफ-सफाई से सम्बन्धित है।

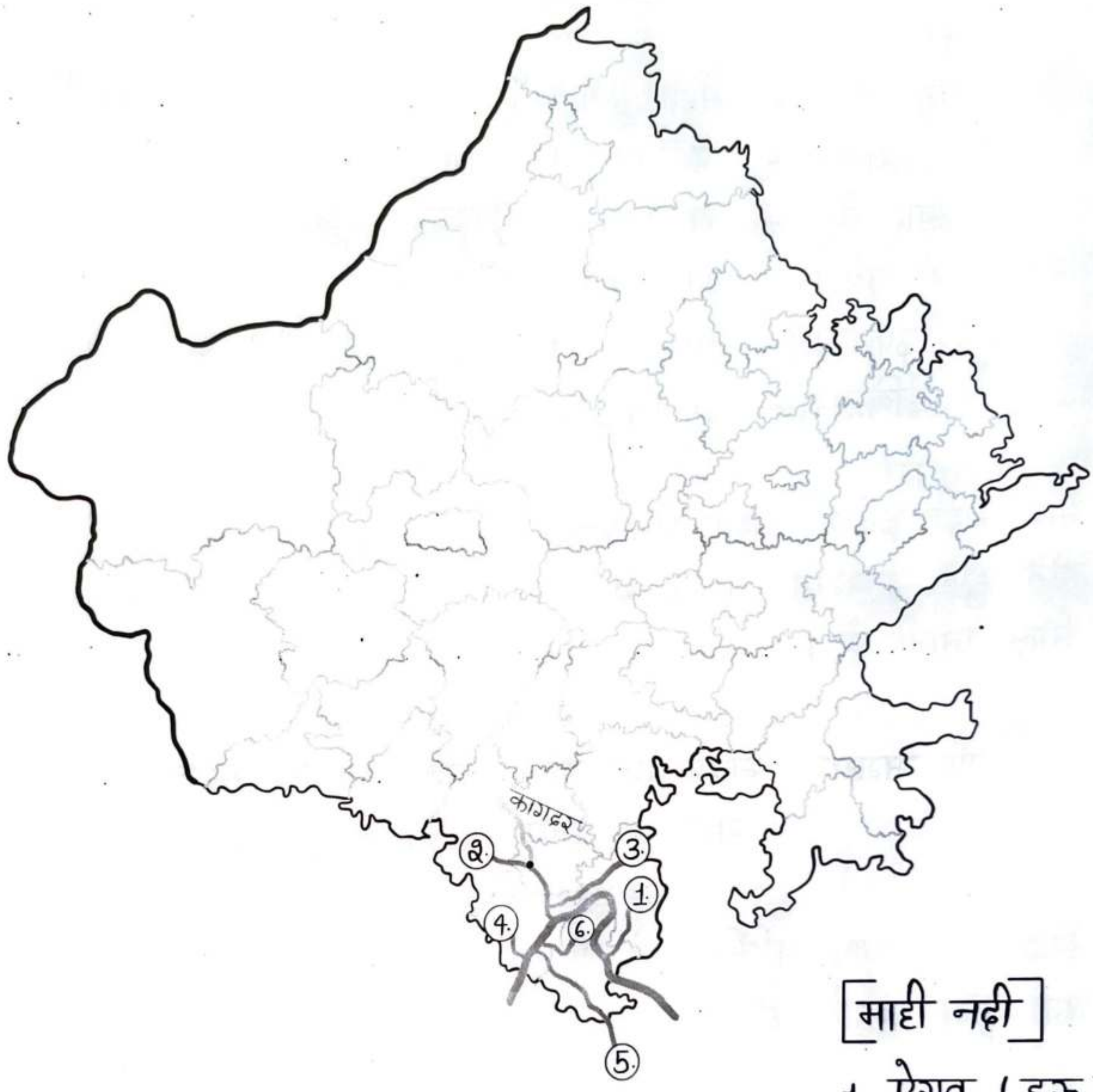

[माही नदी]

1. ऐराव (इरू)
2. सोम
3. जाखम
4. मोरेन
5. अनास (हरण)
6. चाप

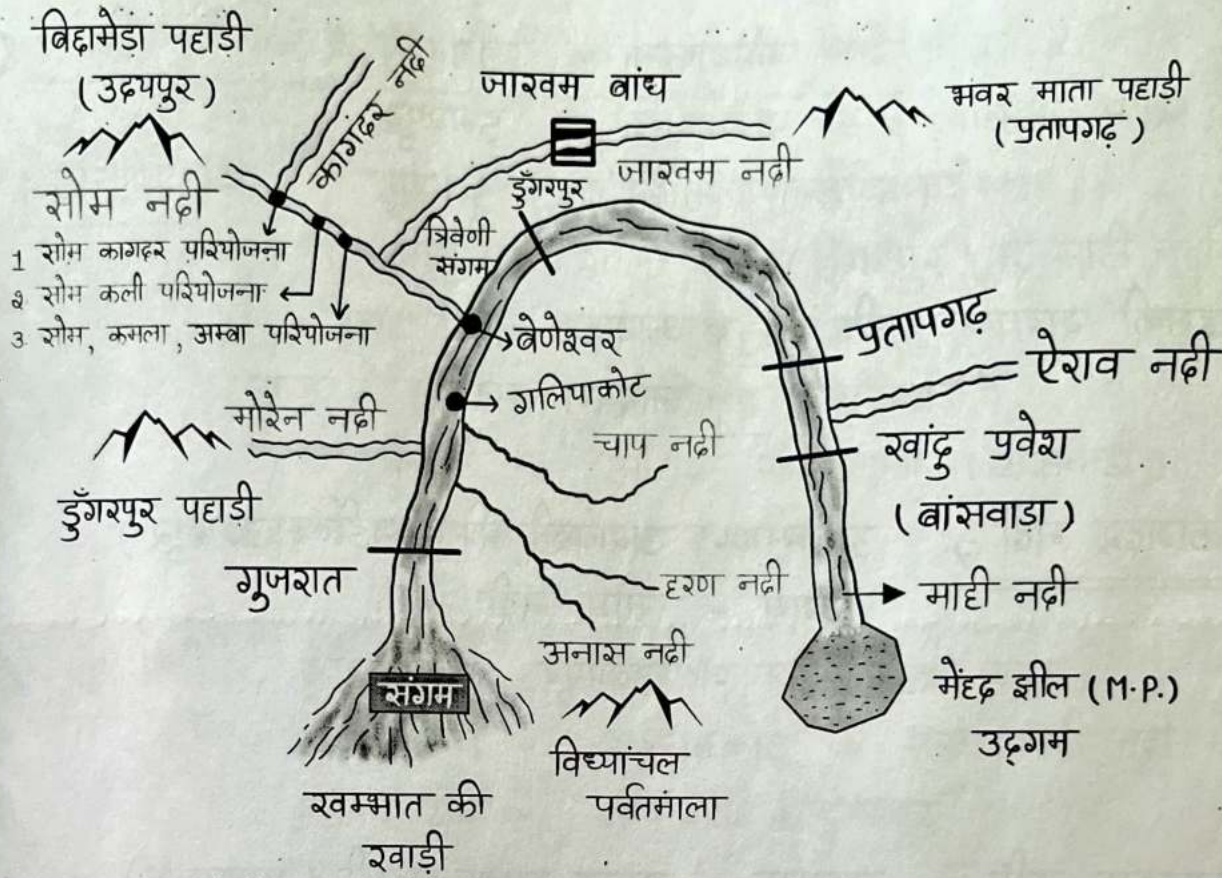

➤ माही नदी की दांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

1. ऐराव नदी :-
उद्गम - प्रतापगढ़
संगम - बांसवाड़ा में माही नदी
प्रवाह क्षेत्र - प्रतापगढ़, बांसवाड़ा

2. सोम नदी :-
उद्गम - बिछामेड़ा पहाड़ी (उदयपुर)
संगम - बेणेश्वर (डूँगरपुर) माही नदी मे
प्रवाह क्षेत्र - उदयपुर, सलूम्बर, डूँगरपुर

CET
किनारे - सोम कागदर परियोजना - सलूम्बर
यह परियोजना सोम तथा कागदर नदी के संगम पर है।

सोम कली परियोजना - डुँगरपुर
सोम, कमला, अम्बा परियोजना - डुँगरपुर
देव सोमनाथ मंदिर - डुँगरपुर

*. इसकी सहायक नदी - 1| कागदर नदी
2| जाखम नदी

कागदर नदी → उद्गम - अरावली की पहाडी (उदयपुर)
संगम - सोम नदी मे
प्रवाह क्षेत्र - उदयपुर, सलूम्बर

जाखम नदी → उद्गम - भंवर माता पहाडी (प्रतापगढ़)
संगम - बेणेश्वर में सोम नदी मे
प्रवाह क्षेत्र - प्रतापगढ़, सलूम्बर, डुँगरपुर
किनारे - जाखम बांध (प्रतापगढ़)

* यह राजस्थान का सबसे ऊँचा बांध है। (ऊँचाई 81m)

3. मोरेन नदी :- उद्गम - डुँगरपुर की पहाडियाँ
संगम - माही नदी मे
प्रवाह क्षेत्र - डुँगरपुर

➤ माही नदी की बांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

1. अनास नदी :-
- उद्गम - विंध्यांचल पर्वतमाला (MP)
- संगम - गलियाकोट (डुँगरपुर) मे माही नदी मे
- प्रवाह क्षेत्र - बांसवाडा + डुँगरपुर
- राज्य मे प्रवेश - मेलेडिखेडा (बांसवाडा)
- किनारे - अनास परियोजना (बांसवाडा)

* इसकी सहायक नदी - हरण नदी

2. चाप नदी :-
- उद्गम - कालींजरा पहाड़ी (बांसवाड़ा)
- संगम - गलियाकोट के पास माही नदी मे
- प्रवाह क्षेत्र - बांसवाडा + डुँगरपुर

➤ माही नदी के किनारे स्थित बांध :-

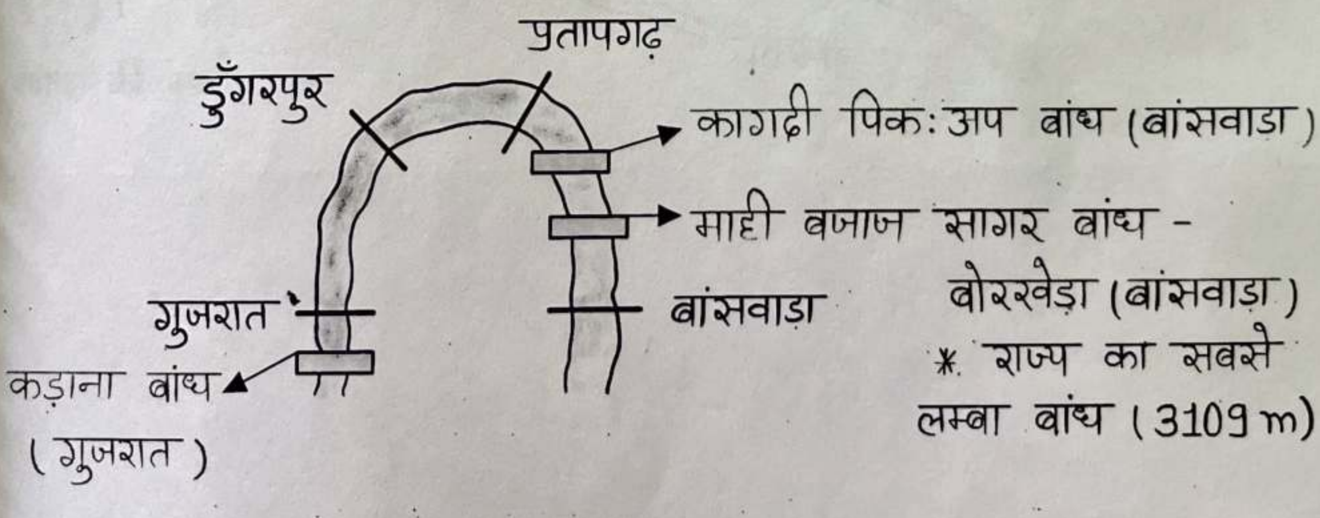

* माही नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है।

* माही नदी → 576 / 580 KM

राज्य में → 171 KM

Q. निम्न में से वह नदी जिसका उद्गम दक्षिण राजस्थान से होता है –

a. जाखम

b. माही

c. जंवाई

d. लूणी [a.]

Q. निम्न में से वह नदी जो उत्तर दिशा की ओर प्रवाहित होती है –

a. जोजड़ी

b. अनास

c. सोम

d. कागदर [b.]

साबरमती नदी

कुल लम्बाई → 416 KM
राजस्थान मे → 45 KM

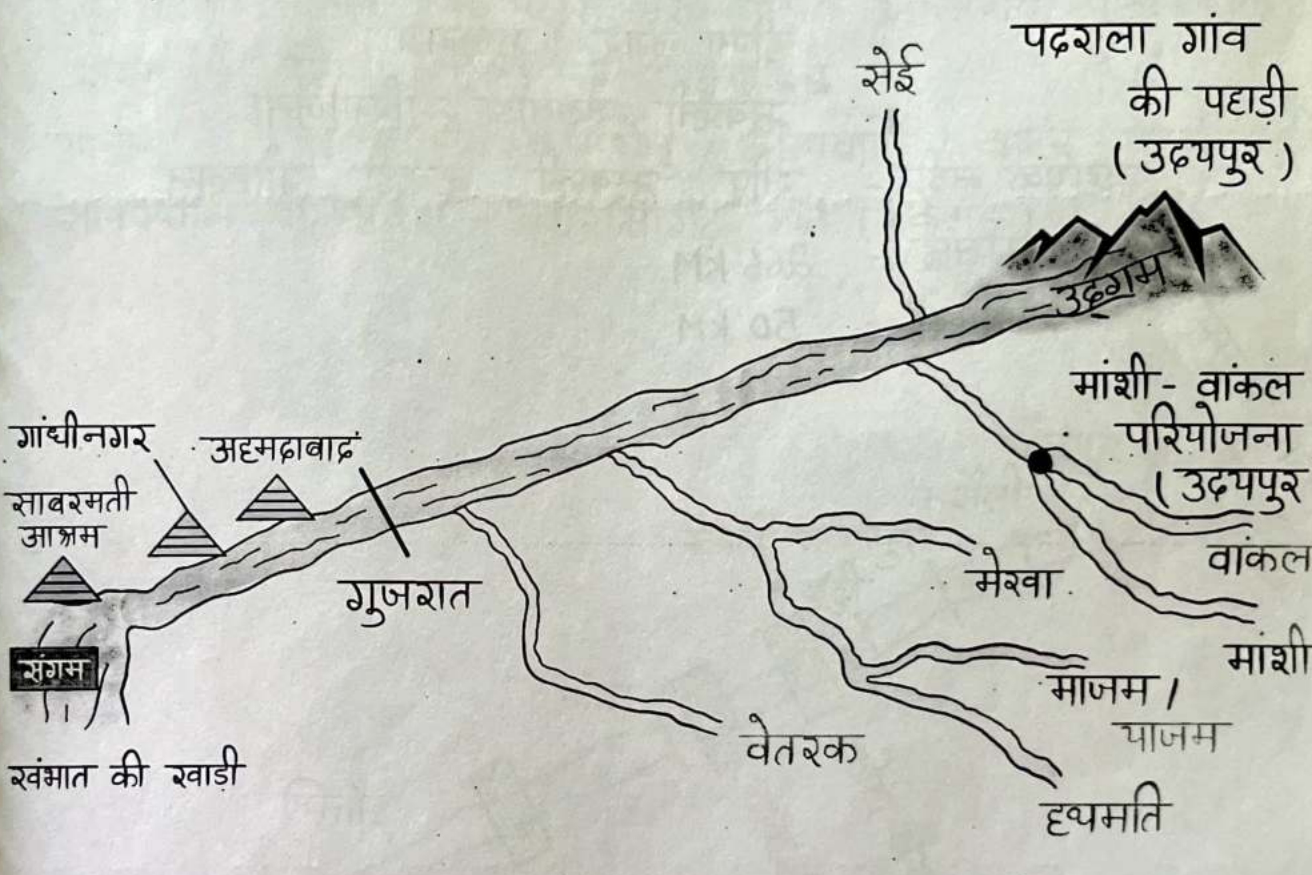

पश्चिमी बनास नदी

उद्गम - नया सानवारा (सिरोही)
संगम - कच्छ की खाडी
किनारे - माउंट आबू (सिरोही)
- डीसा नगर (गुजरात)
- ★★सूकली सेलवाड़ा परियोजना
सहायक नदी - सीपू , सूकली , कूकडी , गोहलन
कुल लम्बाई - 266 KM
राज्य में - 50 KM

2. बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र

1. चम्बल नदी

उद्गम - मालवा के पठार पर स्थित जानापाव पहाड़ी (MP)
संगम - ईटावा (UP) मे यमुना में
उपनाम - चर्मण्वती / कामधेनु / नित्यवाही / वाटर सफारी नदी
राजस्थान में प्रवेश - चौरासीगढ़ गाँव (चित्तौड़)

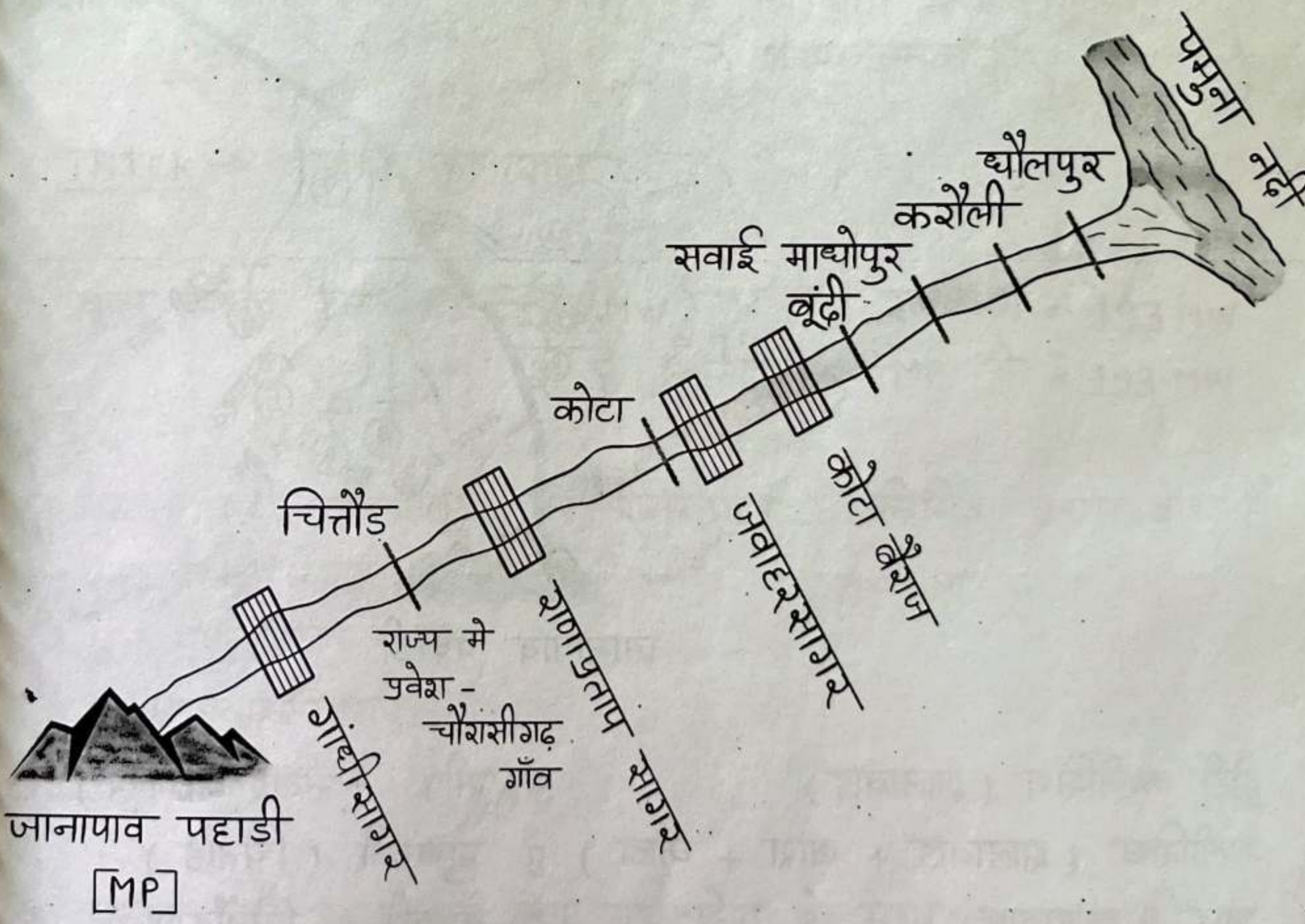

* चम्बल नदी के उद्गम से मुहाने की ओर बांधो का क्रम निम्न है -

1. गांधीसागर बांध (MP)
2. राणाप्रताप सागर बांध - चित्तौड़गढ़
3. जवाहरसागर बांध - कोटा
4. कोटा बैराज - कोटा

* चम्बल नदी चित्तौड़गढ़ मे " चूलिया जलप्रपात " (ऊँचाई - 18m) का निर्माण करती है।

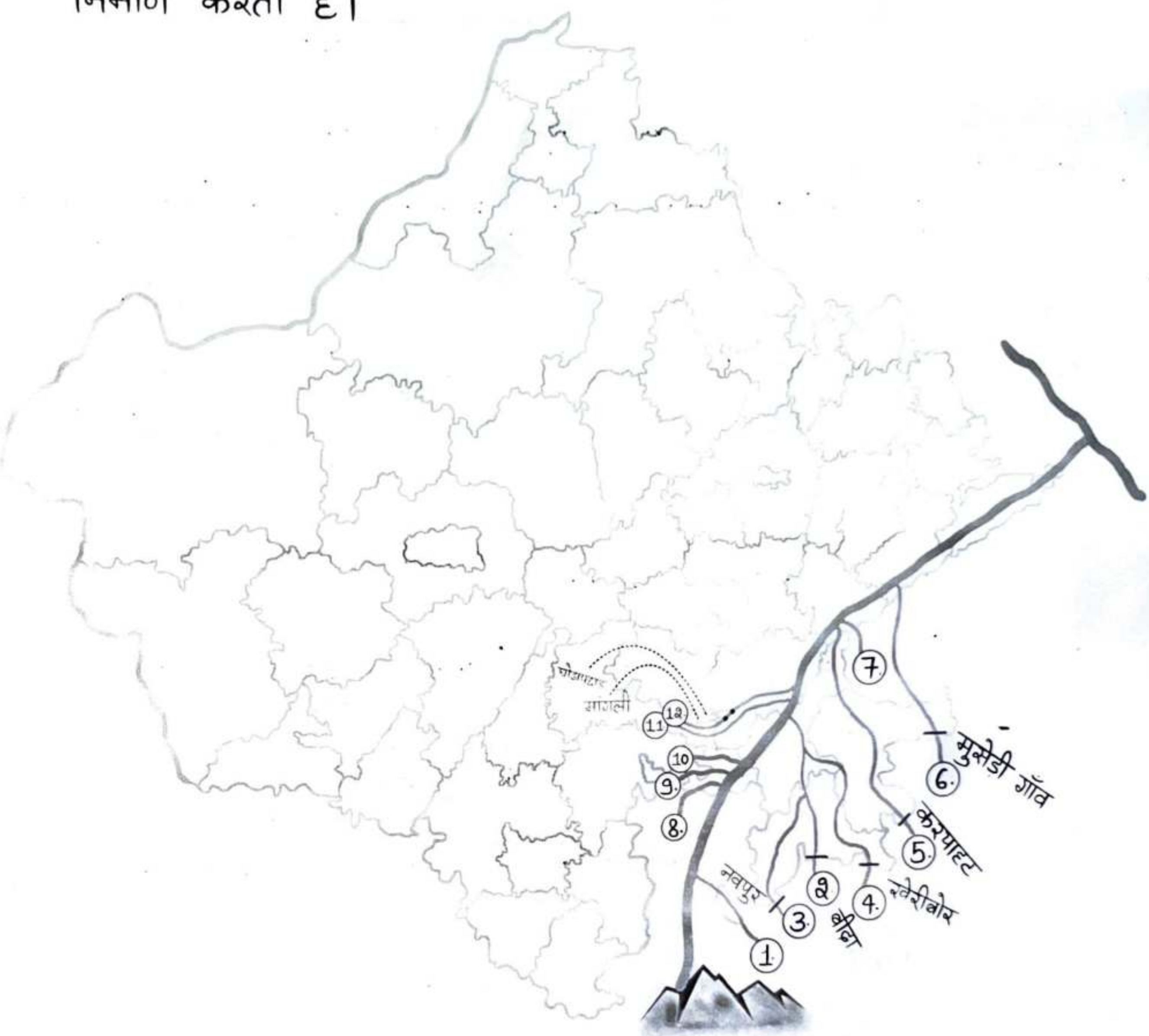

जानापाव पहाडी

1. छोटी कालीसिंध (झालावाड़)
2. कालीसिंध (झालावाड़ + बांरा + कोटा)
3. आहू (झालावाड़)
4. परवन (झालावाड़ + बांरा + कोटा)
5. पार्वती (बांरा + कोटा)
6. कुन्नु (बांरा + करौली)
7. सीप (सवाई माधोपुर)
8. गुंजाली (चित्तौड़)
9. बामनी (चित्तौड़)
10. ईज (चित्तौड़)
11. कुराल (भीलवाडा + बूंदी)
12. मेज (भीलवाडा + बूंदी)

चम्बल घाटी परियोजना

साझेदारी – RAJ 50% / MP 50%

गांधीसागर	कोटा बैराज	राणाप्रताप सागर	जवाहरसागर
निर्माण - 1959	1960	1970	1972
विद्युत उत्पादन - 23 MW × 5 यूनिट = 115 MW	विद्युत उत्पादन नहीं	43 MW × 4 यूनिट = 172 MW	33 MW × 3 यूनिट = 99 MW
* सर्वाधिक भराव क्षमता		* राजस्थान मे सर्वाधिक भराव क्षमता	

TRICK → गांधी का राज

कुल विद्युत उत्पादन = $\frac{386 \text{ MW}}{2} = 193$

राज्य मे = 193 MW
MP मे = 193 MW

Q. चम्बल घाटी परियोजना पर राजस्थान मे निर्मित प्रथम बांध है:-
(A.) कोटा बैराज
(B.) राणाप्रताप सागर
(C.) जवाहरसागर
(D.) गांधीसागर [A.]

* चम्बल नदी राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के मध्य 252 KM की अन्तर्राजीय सीमा बनाती है।
* चम्बल नदी पर कोटा मे "हेगिंग ब्रिज" (झूलता हुआ पुल) बना हुआ है।

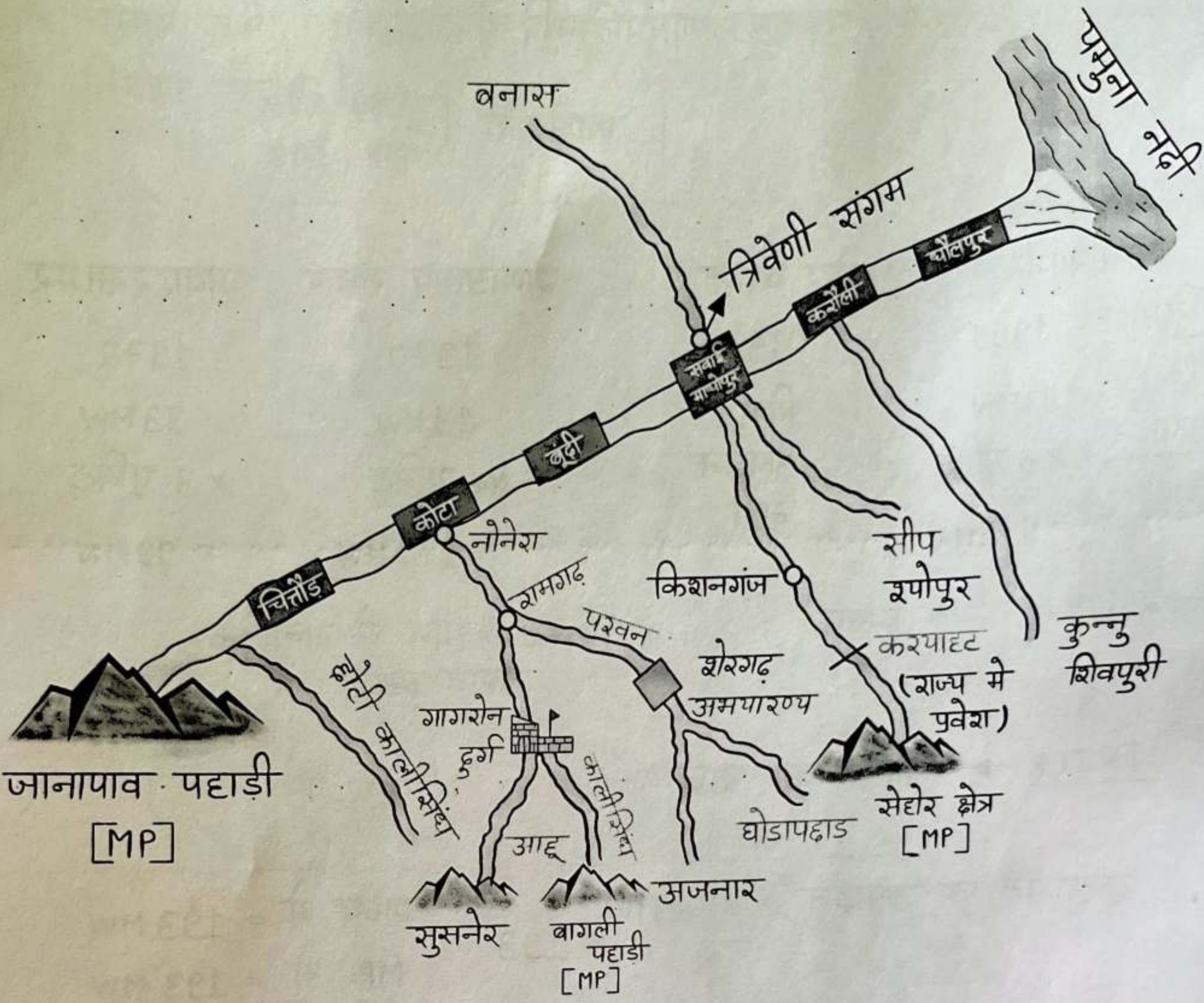

➤ चम्बल नदी की दांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

1. छोटी कालीसिंध :- उद्गम - विंध्यांचल पर्वतमाला
संगम - चम्बल नदी

* झालावाड़ मे बहते हुए मध्यप्रदेश में चम्बल नदी से मिल जाती हैं।

2. कालीसिंध :- उद्गम - बागली पहाडी (MP)
संगम - नोनेरा गांव (कोटा) में चम्बल नदी में।
राज्य में प्रवेश - बीढा गांव (झालावाड)
प्रवाह क्षेत्र - झालावाड + बांरा + कोटा

किनारे - गागरोन दुर्ग (झालावाड़)
कालीसिंध + आहु

नोनेरा बैराज बांध - कोटा * यह बांध पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के अन्तर्गत आता है।

3. आहू नदी :- उद्गम - सुसनेर क्षेत्र (MP)
संगम - गागरोन के नजदीक कालीसिंध नदी
राज्य में प्रवेश - नंदपुर (झालावाड)
प्रवाह क्षेत्र - झालावाड

4. परवन नदी :- उद्गम - अजनार तथा घोड़ापछाड़ जलधाराओं के द्वारा निर्मित होती हैं।
संगम - रामगढ़ (कोटा) मे कालीसिंध नदी
राज्य में प्रवेश - खेरीबोर गॉव (झालावाड)
प्रवाह क्षेत्र - झालावाड + बांरा + कोटा
किनारे -

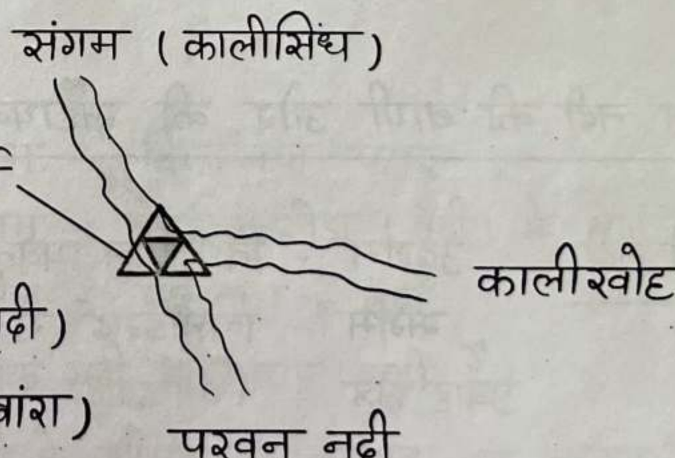

* मनोहरथाना दुर्ग
(झालावाड़)
(परवन + कालीखोह नदी)

* शेरगढ़ अभयारण्य (बांरा)

5. पार्वती नदी :- उद्गम - सेहोर क्षेत्र (MP)
संगम - पलिया स्थान (सवाई माधोपुर)
राज्य में प्रवेश - करयाहट (बांरा)

प्रवाह क्षेत्र - बांरा + कोटा + सवाईमाधोपुर
किनारे - किशनगंज शहर (बांरा)
सहायक नदी - अँधेरी, रेतडी, ल्हासी, विलास

6. कुन्नु नदी :- उद्गम - शिवपुरी जिला (MP)
संगम - करौली मे चम्बल मे
राज्य में प्रवेश - मुसेडी गांव (बांरा)
प्रवाह क्षेत्र - MP → बांरा → MP → करौली

7 सीप नदी :- उद्गम - श्योपुर जिला (MP)
संगम - रामेश्वरम् (सवाई माधोपुर) में चम्बल नदी
प्रवाह क्षेत्र - सवाई माधोपुर

त्रिवेणी संगम :-

रामेश्वर, खण्डार तहसील, सवाई माधोपुर = चम्बल + बनास + सीप

➤ चम्बल नदी की बांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

8. गुंजाली नदी :- उद्गम - विंध्यांचल पर्वतमाला (MP)
संगम - चित्तौड़गढ़ मे (चम्बल नदी)
प्रवाह क्षेत्र - चित्तौड़गढ़

9. बामनी / ब्रह्मणी :- उद्गम - हरिपुरा गांव (चित्तौड़गढ़)
संगम - भैंसरोडगढ़ दुर्ग (चित्तौड़गढ़) के निकट चम्बल नदी में।

10. ईज नदी :- उद्गम - भैंसरोड़गढ़
संगम - डाबी वन (चित्तौड़गढ़) मे चम्बल मे।

11. कुराल नदी :- उद्गम - बिजौलिया पठार
संगम - बूँदी मे चम्बल नदी में।
प्रवाह क्षेत्र - भीलवाडा + बूँदी

12. मेज नदी :- उद्गम - बिजौलिया पठार
संगम - सीनपुर गांव (बूँदी) मे चम्बल नदी में।
प्रवाह क्षेत्र - भीलवाडा (बूँदी)
किनारे - गुढ़ा बांध बूँदी

*. इस बांध पर राजस्थान का प्रथम सोलर लिफ्ट प्लांट स्थापित होगा, जिसमें 522 सोलर प्लेट, 167 MW के दो सोलर प्लांट होंगे। जिसके द्वारा 25,000 बीघा भूमि को निःशुल्क सिंचाई उपलब्ध होगी।

*. इसकी सहायक नदी मांगली है।

मांगली नदी :- उद्गम - बिजौलिया पठार
संगम - बाईन्स खेडा (बूँदी) मे मेज नदी मे।
प्रवाह क्षेत्र - भीलवाडा + बूँदी

* इसकी सहायक नदी घोडापछाड़ नदी है।

*. मांगली नदी बूँदी जिले मे भीमलत जलप्रपात का निर्माण करती हैं।

घोडापछाड़ नदी :- उद्गम - बिजौलिया पठार
संगम - सागवाड़ (बूँदी) मे मांगली नदी।
प्रवाह क्षेत्र - भीलवाडा + बूँदी

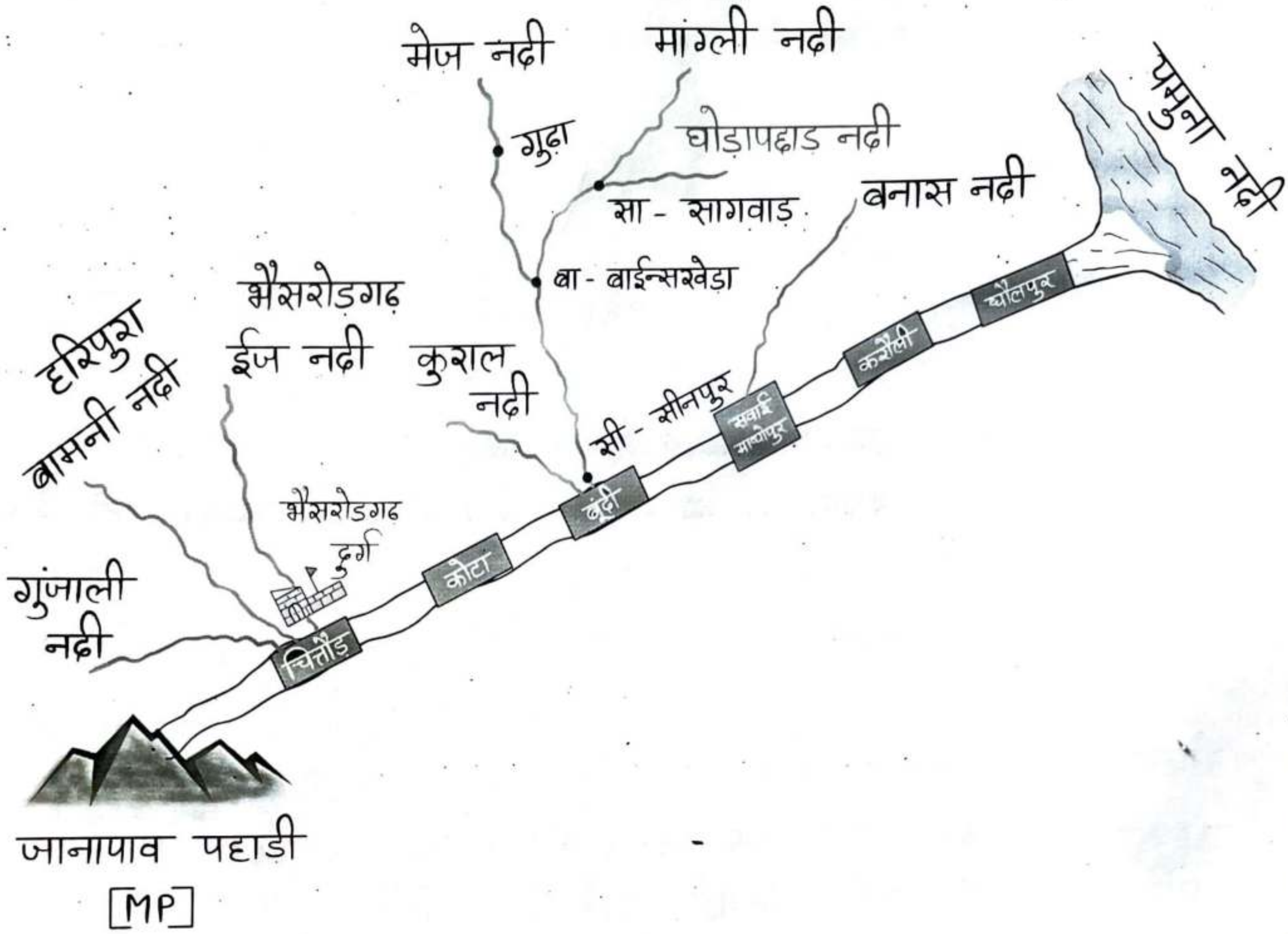

२. बनास नदी

उद्‌गम - खमनौर पहाड़ी (राजसमंद)
संगम - रामेश्वर (सवाई माधोपुर) मे चम्बल नदी में।
प्रवाह क्षेत्र - राजसमंद + चित्तौड + भीलवाडा + शाहपुरा + केकड़ी + टोंक + सवाई माधोपुर
उपनाम - वर्णाशा / वन की आशा

*. बनास नदी राजस्थान की राजस्थान मे बहने वाली सबसे लम्बी नदी है।

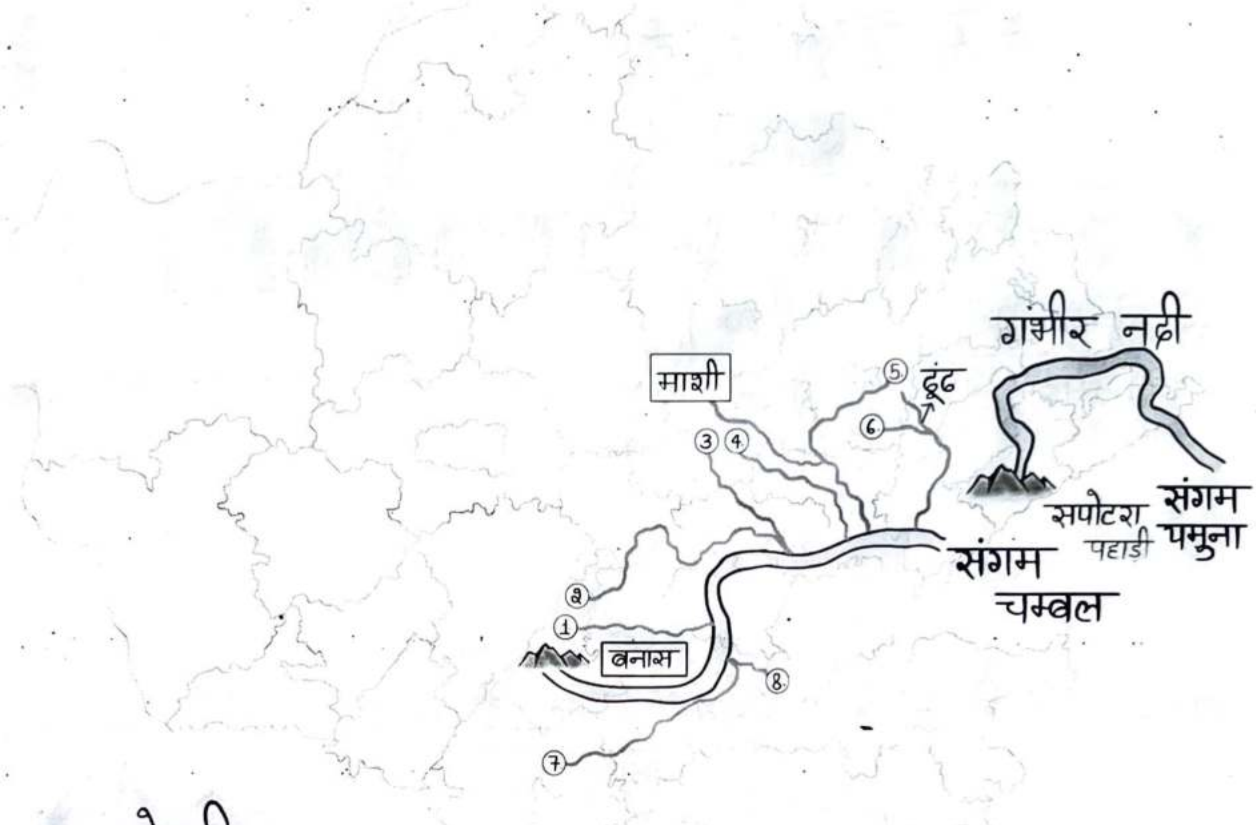

1. कोठारी
2. खारी
3. डाई
4. सहोदरा
5. बाण्डी
6. मोरेल
7. बेडच
8. मेनाल

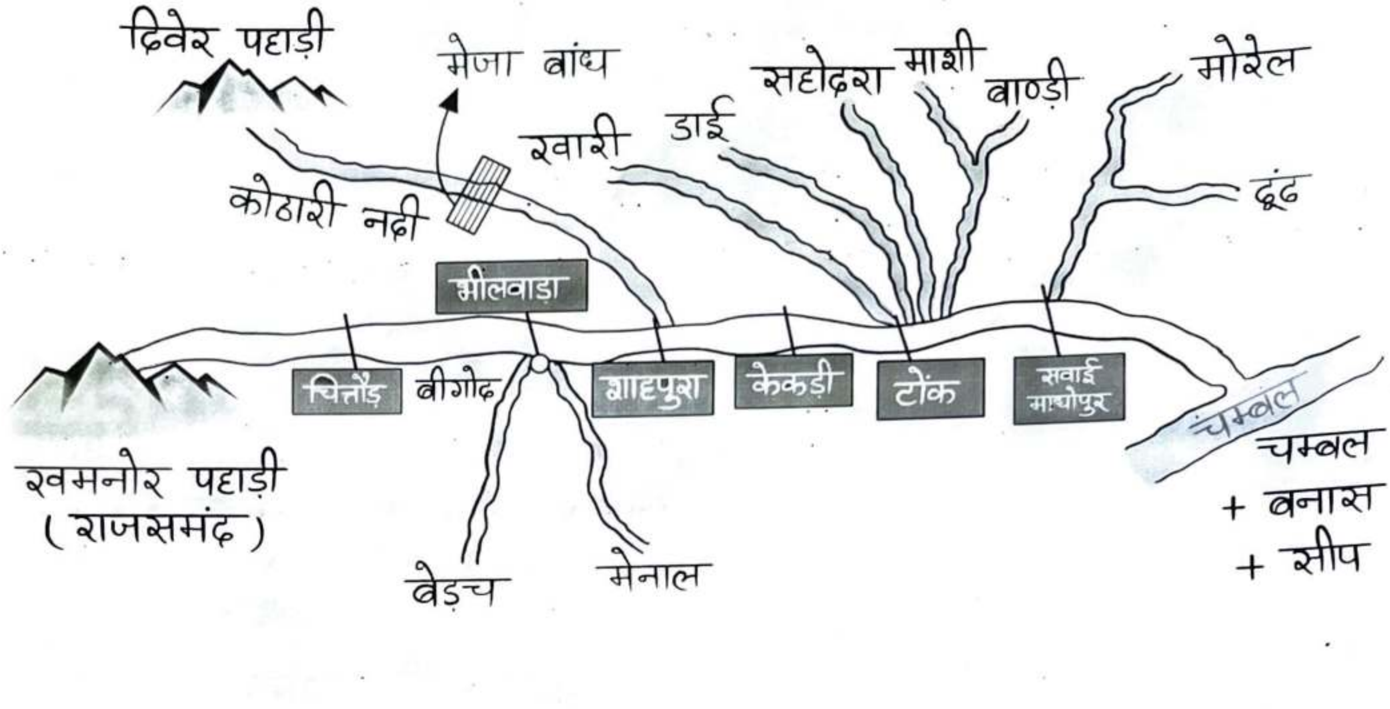

<u>बनास नदी निम्न त्रिवेणी संगम बनाती है :-</u>

1. बीगोद (माण्डलगढ़) भीलवाड़ा → बनास + बेड़च + मेनाल
2. राजमहल (टोंक) → बनास + खारी + डाई
3. रामेश्वर (सवाई माधोपुर) → बनास + चम्बल + सीप

*. बनास नदी के किनारे राजसमंद मे "गिलुण्ड सभ्यता" का विकास हुआ है।

बांध परियोजना

नंदसमंद परियोजना	बिसलपुर परियोजना	ईशरदा परियोजना
राजसमंद	टोंक	सवाईमाधोपुर

बनास नदी की बांयी ओर की सहायक नदियाँ :-

1. कोठारी नदी :-

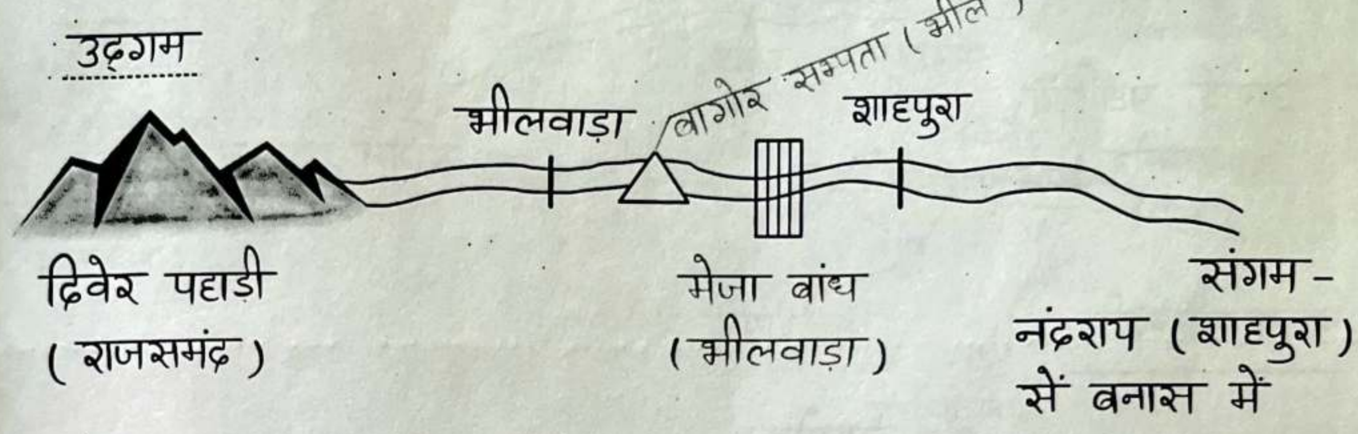

2. खारी नदी :-

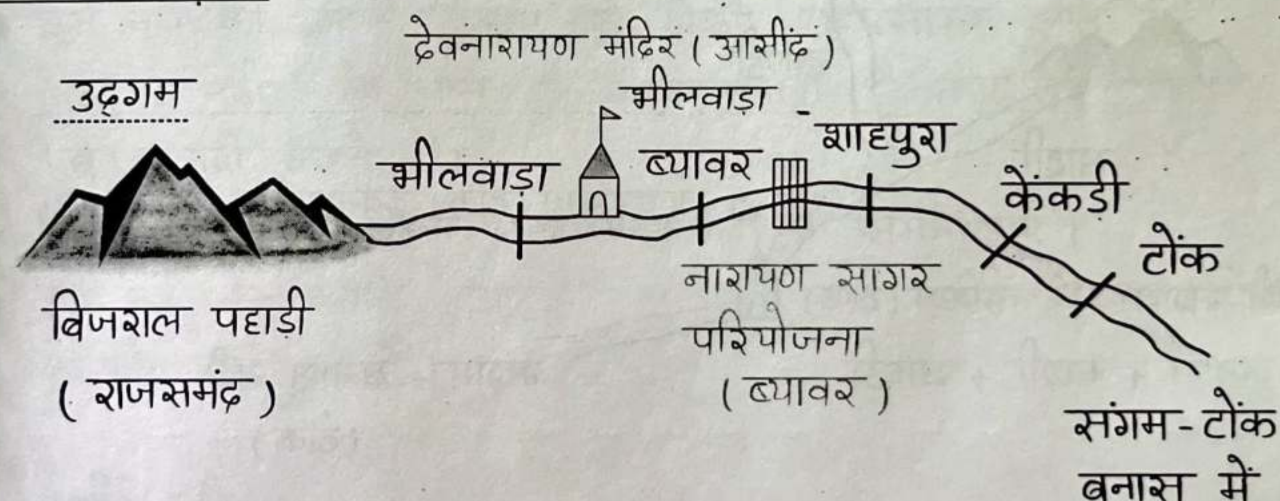

3. डाई नदी :-

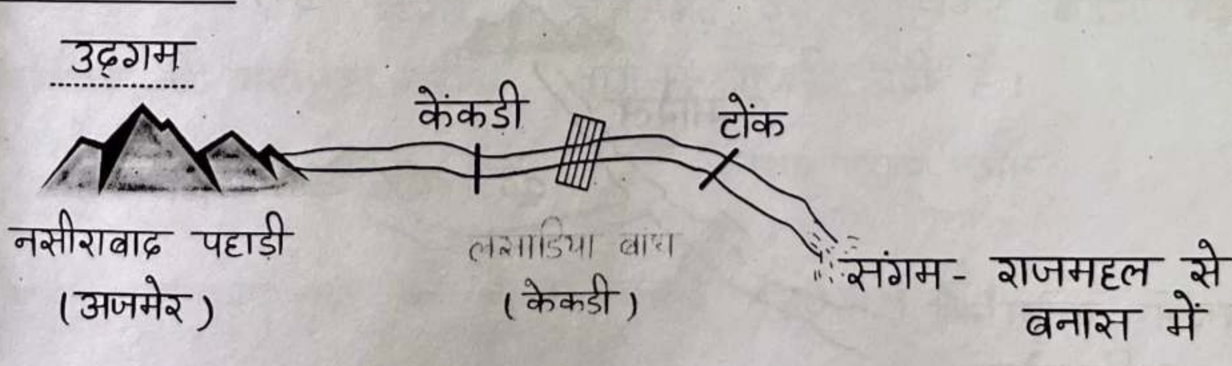

4. सहोदरा नदी :-

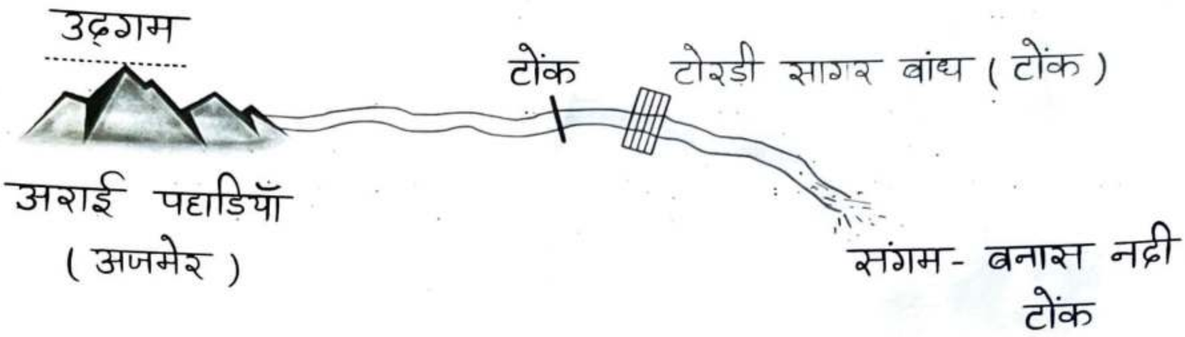

5. बाण्डी नदी :-

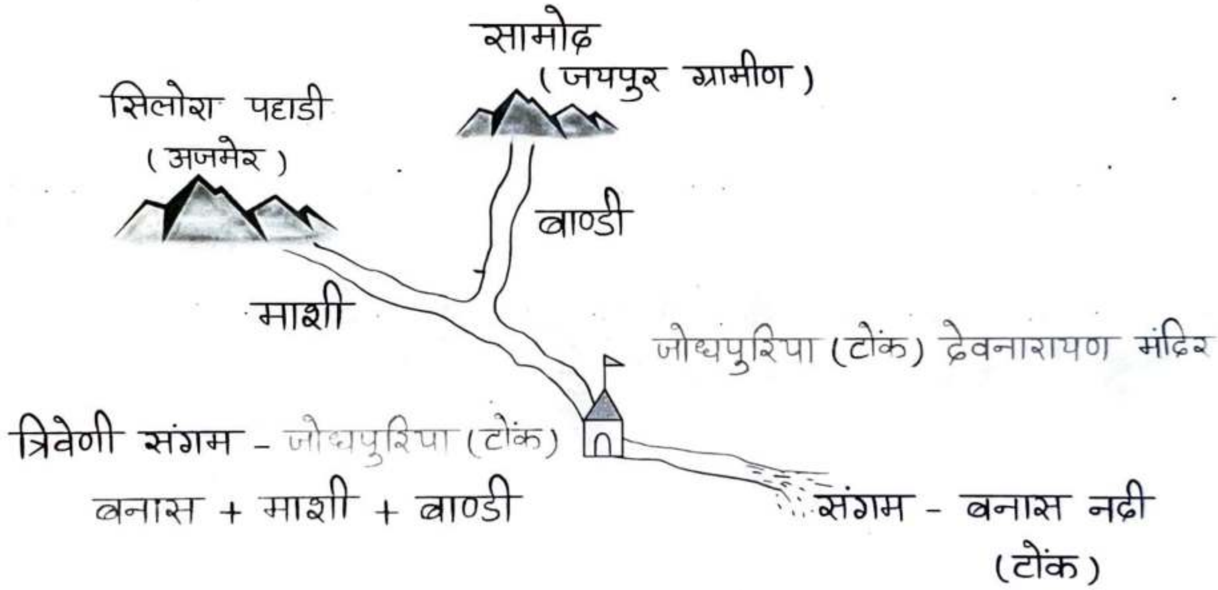

6. मोरेल नदी :-

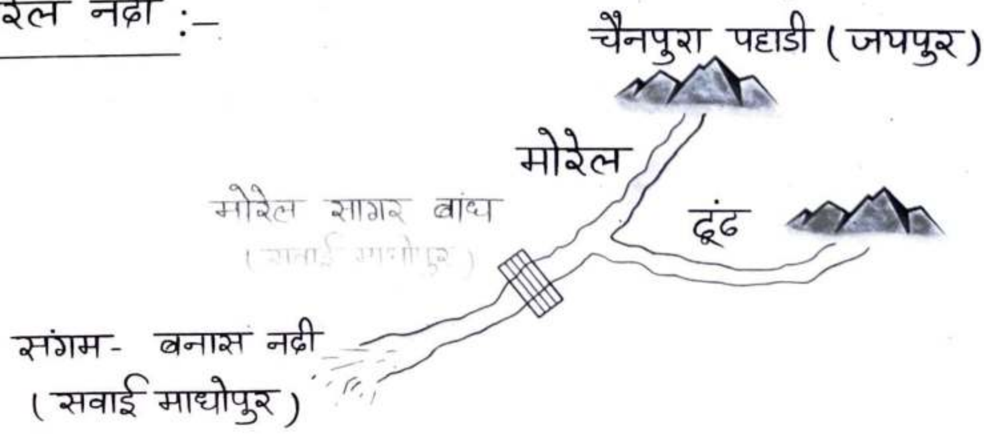

➤ बनास नदी की दायीं ओर की सहायक नदियाँ :-

7. बेड़च नदी :-

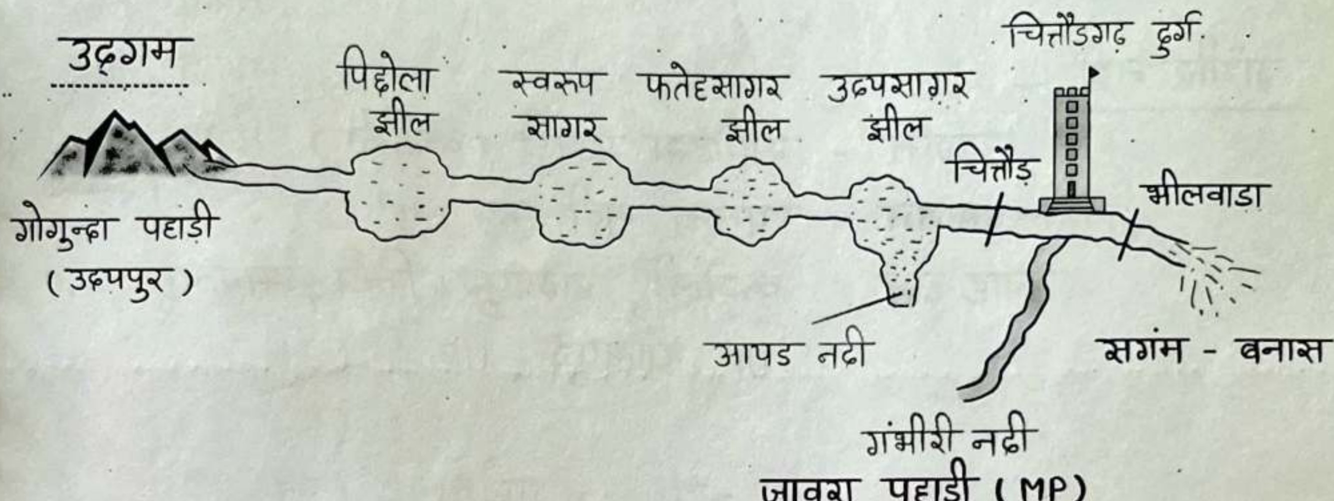

* इस नदी को अपने उद्गम से लेकर उदयसागर झील तक 'आयड नदी' के नाम से जाना जाता है तथा इसके बाद 'बेड़च नदी' कहते हैं।
* चित्तौड़गढ़ दुर्ग = बेड़च + गंभीरी नदी के संगम पर।
* इस नदी के किनारे 'आहड़' (उदयपुर) तथा 'नगरी सभ्यता (चित्तौड़)' का विकास हुआ है।

गंभीरी नदी :-

उद्गम - जावरा पहाड़ी (MP)

संगम - चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निकट बेड़च नदी मे

गंभीरी की सहायक नदी - वागन, गुजरी नदी हैं।

Note ⇒ बनास नदी की कुल लम्बाई 480 KM हैं।

8. मेनाल नदी :-

उद्गम - बिजौलिया पठार (भीलवाड़ा)
संगम - बीगोद के निकट बनास नदी।
प्रवाह क्षेत्र - भीलवाड़ा।

गंभीर नदी :-

उद्गम - सपोटरा पहाडी (करौली)
संगम - यमुना नदी मे
प्रवाह क्षेत्र - करौली, गंगापुर सिटी, भरतपुर, UP, धौलपुर, UP

गंगा बेसिन → इसमे गंगा नदी तथा इसकी सहायक नदियाँ एंव उपसहायक नदियाँ आती है।

- राजस्थान का सम्पूर्ण बंगाल की खाडी का अपवाह तंत्र, गंगा बेसिन मे आता है।

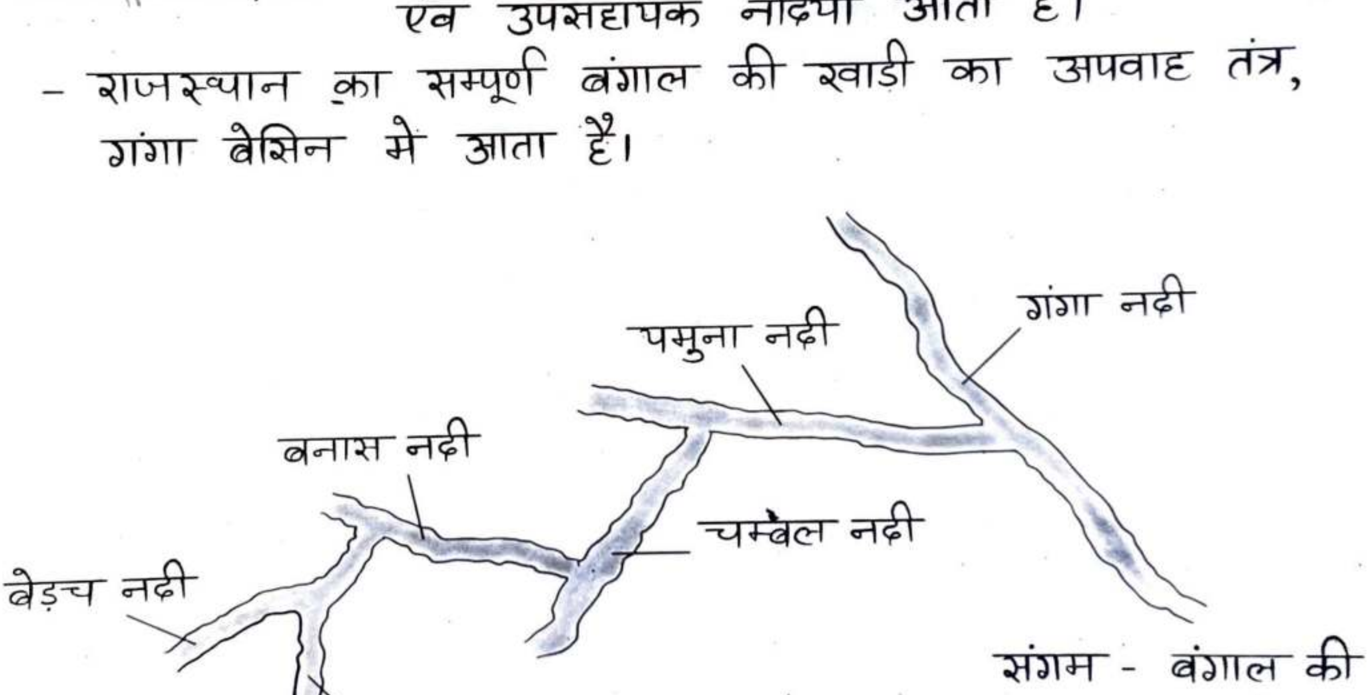

Q. निम्न मे से कौनसी नदी गंगा बेसिन का भाग नही है -

1. वाकल
2. माही
3. वागन
4. याजम
5. खारी

सही है :- (A.) 1,2,5

(B.) 1,4,5

(C.) 1,4

(D.) 1,3

(E.) अनुत्तरित [C.]

3. आन्तरिक अपवाह तंत्र

* ऐसी नदियाँ जो विलुप्त हो जाती हैं या किसी भी सागर या महासागर मे नही मिलती हैं आन्तरिक अपवाह तंत्र कहलाता हैं।

1. घग्घर नदी

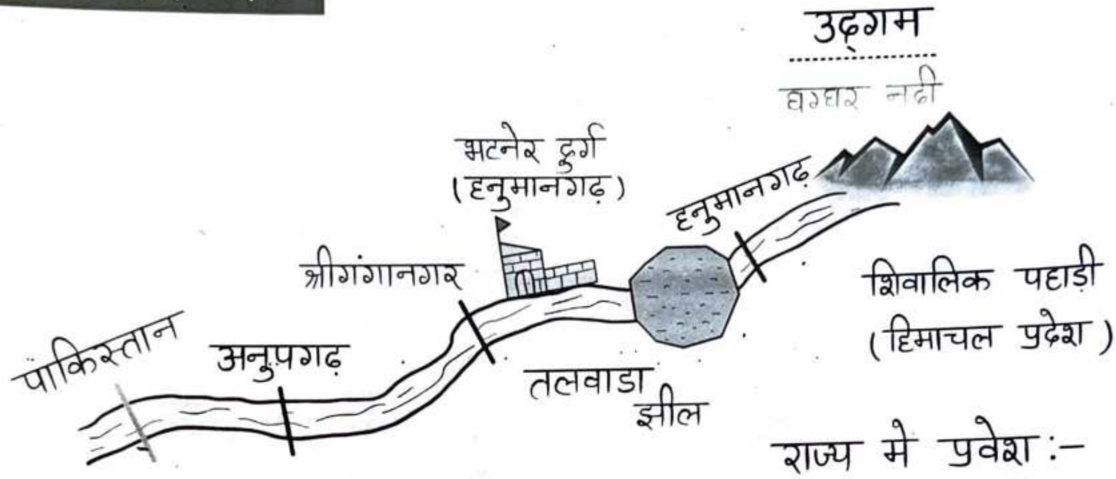

राज्य मे प्रवेश :-
गांव तलवाडा
तहसील - टिब्बी
(हनुमानगढ़)

सभ्यता - कालीबंगा,
पीलीबंगा
रंगमहल

उद्गम - शिवालिक पहाडी
राज्य में प्रवेश - टिब्बी तहसील (तलवाडा गॉव, हनुमानगढ़)
किनारे - कालीबंगा, पीलीबंगा, रंगमहल।

* इस नदी के प्रवाह क्षेत्र को हनुमानगढ़ मे 'नाली, नट' कहते हैं।
(बग्गी / काठी)

* पाकिस्तान में इसके प्रवाह क्षेत्र को 'हकरा' कहते हैं।

उपनाम - सरस्वती, मृत नदी, पूर्व का शौक नदी, द्वैषवती, सोतर नदी।

* राज्य की एकमात्र नदी जिसका उल्लेख ऋग्वेद मे मिलता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय नदी है।
* भारत की आन्तरिक अपवाह तंत्र की सबसे लम्बी नदी है। (465 KM)
* इस नदी के किनारे हरियाणा में ओटू झील तथा बनावली सभ्यता का विकास हुआ।

2. कांतली नदी

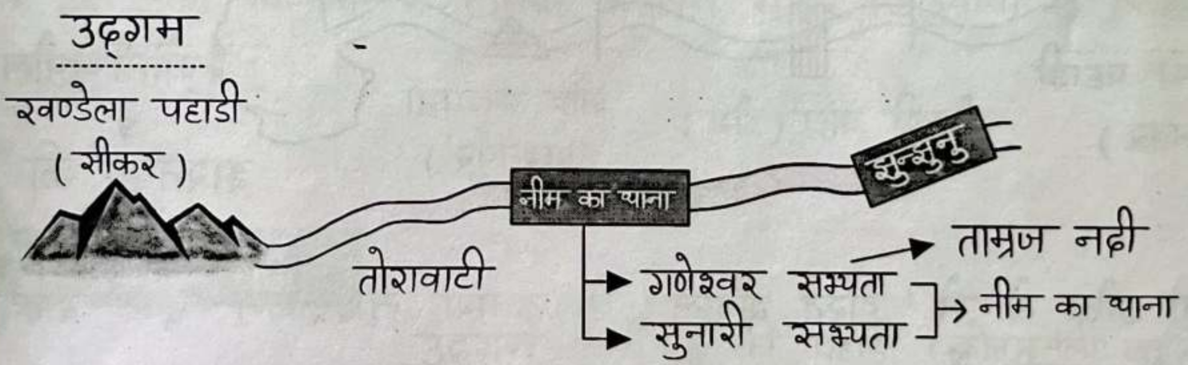

* कांतली नदी के प्रवाह क्षेत्र को सीकर, नीम का थाना मे तोरावाटी कहते हैं।
* यह राजस्थान की पूर्णतः आन्तरिक अपवाह तंत्र की सबसे लम्बी नदी है।

3. काकनी नदी / काकनेय / मसूरदी नदी :-

* यह राजस्थान की सबसे छोटी नदी है।

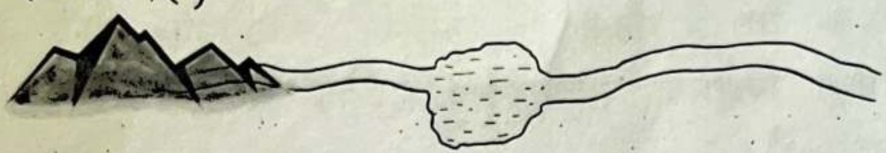

4. रूपारेल नदी

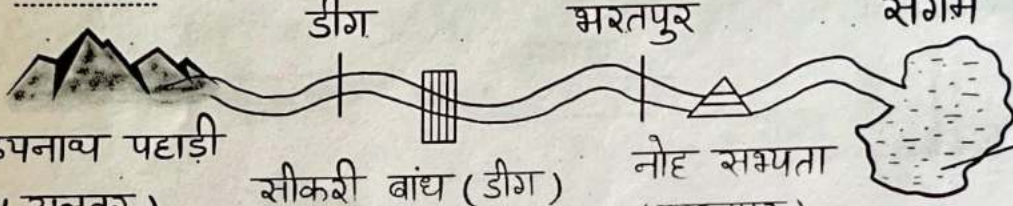

* मोती झील में से 'हरित शैवाल' के द्वारा नाइट्रोजन युक्त खाद बनाई जाती है।

5. रूपनगढ़ नदी

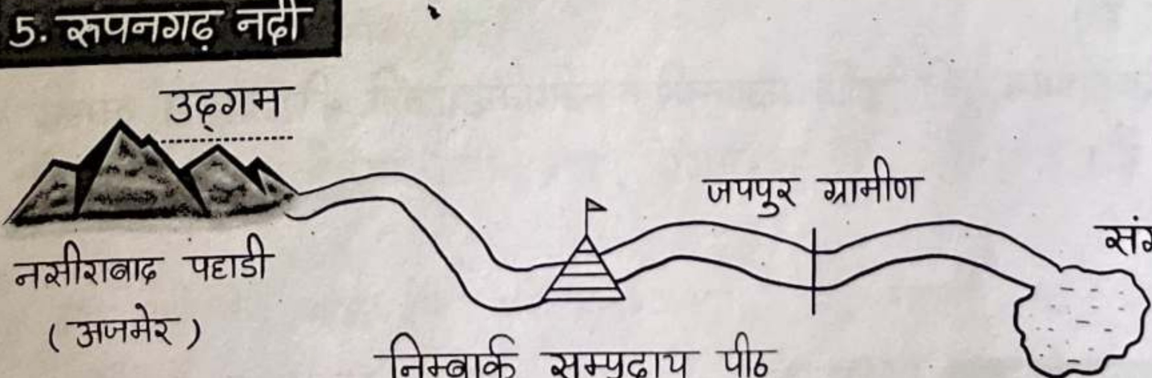

6. साबी नदी

उद्गम - सेवंर पहाड़ी (कोटपुतली)

* इस नदी के किनारे जोधपुरा सभ्यता (कोटपुतली बहरोड़) का विकास हुआ।
* यह नदी कोटपुतली बहरोड़, खेरथल तिजारा से बहती है।

7. मेंथा नदी

उद्गम - मनोहर थाना (जयपुर ग्रामीण)

संगम - सांभर झील (जयपुर ग्रामीण)

* यह नदी जयपुर ग्रामीण तथा डीडवाना कुचामन मे बहती हुई सांभर झील मे मिल जाती है।
* इस नदी के किनारे लूणवा के जैन मंदिर (डीडवाना कुचामन) स्थित है।

8. बाणगंगा नदी

उद्गम - बैराठ की पहाड़ी (कोटपुतली बहरोड़)

उपनाम - अर्जुन की गंगा / रुढ़ित नदी

* यह नदी पहले यमुना मे मिलती थी लेकिन अब आगे खिसक जाने के कारण नही मिल पाती है इसलिए इसे रुण्डित सरिता कहते हैं।

प्रवाह क्षेत्र - कोटपुतली, जयपुर ग्रामीण, दौसा, भरतपुर।

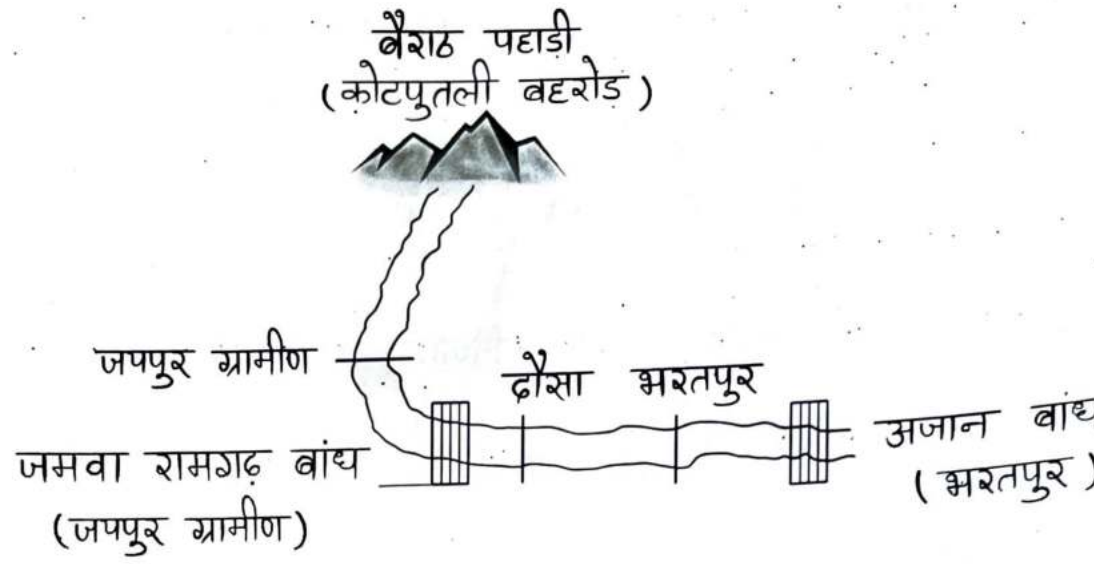

9. खारी नदी

उद्गम - कुचामन
संगम - सांभर झील
प्रवाह क्षेत्र - कुचामन, जयपुर ग्रामीण

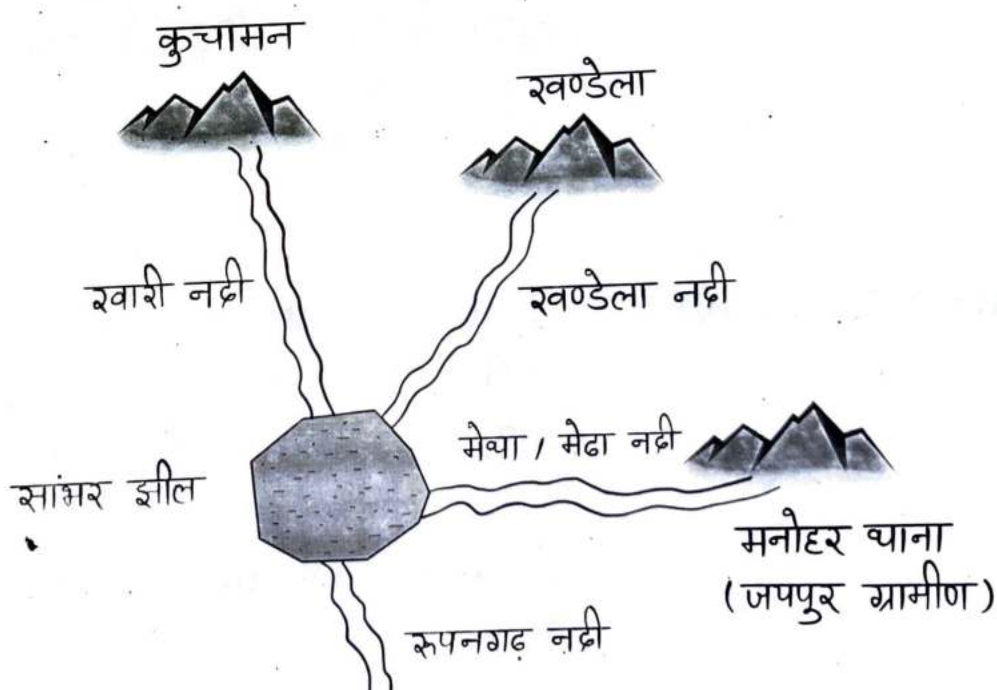

10. काकुंड नदी उद्गम - भरतपुर।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

कुल जलग्रहण :- एक क्षेत्र मे पानी की मात्रा।

कुल प्रवाहक्षेत्र / अपवाह क्षेत्र :- एक नदी तथा उसकी सहायक नदियाँ

	कुल जलग्रहण	कुल प्रवाहक्षेत्र
बंगाल की खाडी -	53.13 %	24 (23%)
अरबसागर -	35.11 %	16 (17%)
आन्तरिक अपवाह तंत्र -	11.76 %	60 %

कुल प्रवाहक्षेत्र		
1.	चम्बल	- 20.9 %
2.	लूनी	- 10.4 %
3.	माही	- 4.8 %
4.	साबरमती	- 1 %
5.	बनास	- 0.90 %

जलग्रहण		
1.	बनास	- 27.50 %
2.	लूनी	- 20.12 %
3.	चम्बल	- 17.15 %
4.	माही	- 09.46 %

1. बीकानेर संभाग → केवल आंतरिक अपवाह तंत्र
2. जोधपुर संभाग → आंतरिक + अरबसागर
3. पाली संभाग → केवल अरबसागर
4. उदयपुर संभाग → अरबसागर + बंगाल खाड़ी
5. अजमेर संभाग → अरबसागर + बंगाल खाड़ी + आंतरिक
6. सीकर संभाग → केवल आंतरिक
7. कोटा संभाग → केवल बंगाल खाड़ी
8. भरतपुर संभाग → आंतरिक + बंगाल खाड़ी
9. बाँसवाड़ा संभाग → केवल अरबसागर
10. जयपुर संभाग → आंतरिक + बंगाल खाड़ी

राजस्थान की जलवायु

जलवायु ← तापमान, वर्षा, आर्द्रता → **मौसम**

दीर्घकालीन योग
[30 से 35 वर्ष]

अल्पकालीन योग

जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक :-

1. अक्षांशीय स्थिति
2. समुद्र से दूरी
3. समुद्र तल से ऊँचाई
4. अरावली पर्वतमाला
5. तापमान
6. वनस्पति
7. मिट्टी
8. पवनें

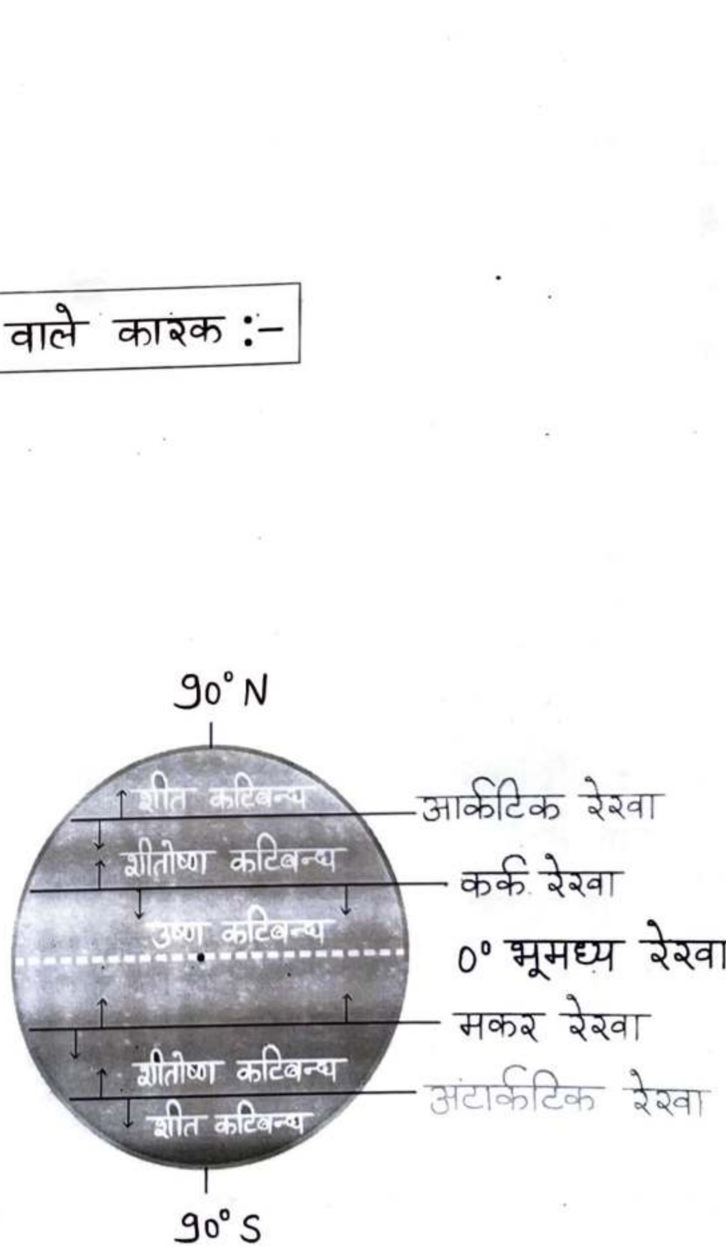

1. अक्षांशीय स्थिति ▸ डूँगरपुर तथा बाँसवाड़ा से कर्क रेखा गुजरती है। इस कारण इसका दक्षिणी भाग 'उष्ण' कटिबन्ध क्षेत्र में आता है।

* राजस्थान की जलवायु उपोष्ण / शीतोष्ण (दोनो हो तो उपोष्ण) कटिबन्ध है।
* राजस्थान के दो जिले उष्ण कटिबन्ध में आते है जबकि 50 जिले उपोष्ण कटिबन्ध मे आते हैं।
* अक्षांशीय स्थिति जलवायु को प्रभावित करती है।

Q. पृथ्वी पर सबसे बडा दिन हैं?

[A.] 21 जून
[B.] 22 दिसम्बर
[C.] 21 मार्च
[D.] विकल्प उपयुक्त नहीं हैं। [D.]

* 21 मार्च से 23 सितम्बर तक सूर्य की स्थिति उत्तरायन होती हैं जबकि 23 सितम्बर से 21 मार्च तक सूर्य की स्थिति दक्षिणायन होती हैं।

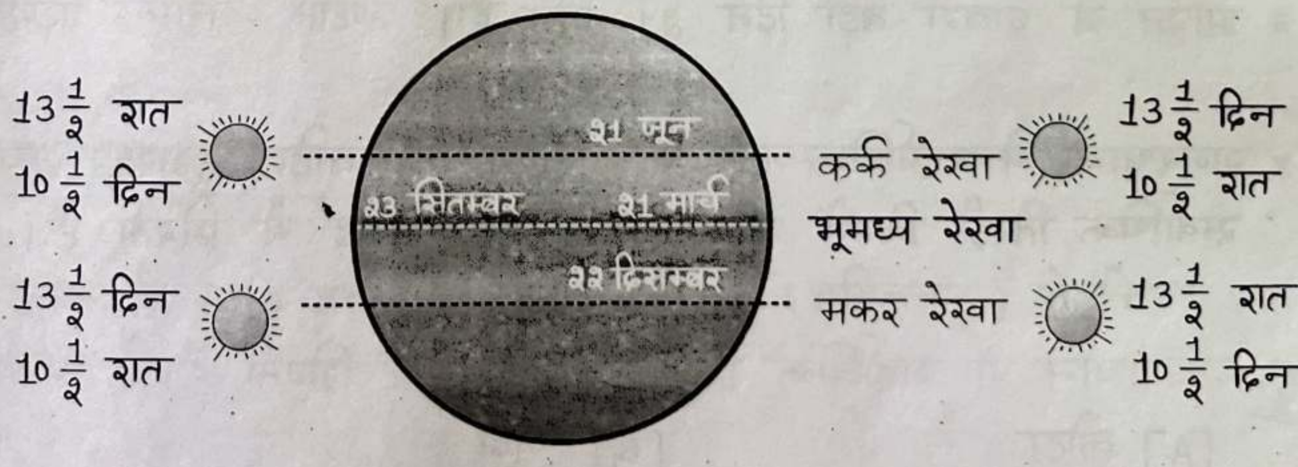

* २1 मार्च तथा २3 सितम्बर को सूर्य की लम्बवत किरणें भू-मध्य रेखा पर गिरती है इस कारण पृथ्वी के दोनो भागो में दिन तथा रात की अवधि बराबर-बराबर होती हैं।

* २1 जून को सूर्य की लम्बवत किरणें कर्क रेखा पर होती है इस कारण इस दिन यहाँ सबसे बड़ा दिन ($13\frac{1}{2}$ घंटे) व सबसे छोटी रात ($10\frac{1}{2}$ घंटे) होती हैं। लेकिन इसी २1 जून को मकर रेखा पर सबसे बडी रात ($13\frac{1}{2}$ घंटे) व सबसे छोटा दिन ($10\frac{1}{2}$ घंटे) होता हैं।

* २२ दिसम्बर को सूर्य की लम्बवत किरणें मकर रेखा पर होती हैं इस कारण यहाँ सबसे बड़ा दिन ($13\frac{1}{2}$ घंटे) तथा सबसे छोटी रात ($10\frac{1}{2}$ घंटे) होती हैं।

* इसी २२ दिसम्बर को कर्क रेखा पर सबसे बडी रात तथा सबसे छोटा दिन होता हैं।

* भारत में सबसे बडा दिन २1 जून हैं।

* राजस्थान मे सर्वाधिक लम्बवत किरणें बाँसवाडा, डुंगरपुर तथा सर्वाधिक तिरछी किरणें श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ मे गिरती हैं।

Q. राजस्थान में सर्वाधिक तिरछी किरणें कहाँ गिरती हैं?

[A.] कोटा [B.] बूँदी

[C.] दौसा [D.] उदयपुर [C.]

2. समुद्र से दूरी / महाद्वीपीयता ► समुद्र के नजदीक राज्यों मे समकारी प्रभाव होता हैं जबकि समुद्र से दूर राज्यों में विषमकारी प्रभाव होता हैं।

* राजस्थान तथा पश्चिम बंगाल दोनो राज्य 23° से 30° अक्षांश पर स्थित हैं फिर भी पश्चिम बंगाल की जलवायु आर्द्र तथा राजस्थान की जलवायु शुष्क हैं।

आर्द्र :- तापमान मे विषमता कम।
शुष्क :- तापमान मे विषमता अधिक।

3. समुद्र तल से ऊँचाई ► जैसे-जैसे धरातल से 165 मीटर ऊपर जाते हैं तो 1°c तापमान कम हो जाता हैं।

* माउण्ट आबू (सिरोही) समुद्र तल से 1200 मीटर जबकि झालावाड़ 410 मीटर ऊँचाई पर स्थित हैं इस कारण राज्य का सबसे ठण्ड़ा स्थान - माउण्ट आबू हैं।

समुद्र तल का अर्थ :- समुद्र जल का उच्च स्तर भाग।

* भारत मे समुद्र तल का मापन चैन्नई (तमिलनाडु) से किया जाता हैं।

4. अरावली पर्वतमाला ► मानसूनी पवनों के समानान्तर हैं। इस कारण राज्य मे वर्षा कम हो पाती हैं।

5. **तापमान** ► यह जलवायु को सर्वाधिक प्रभावित करता है।

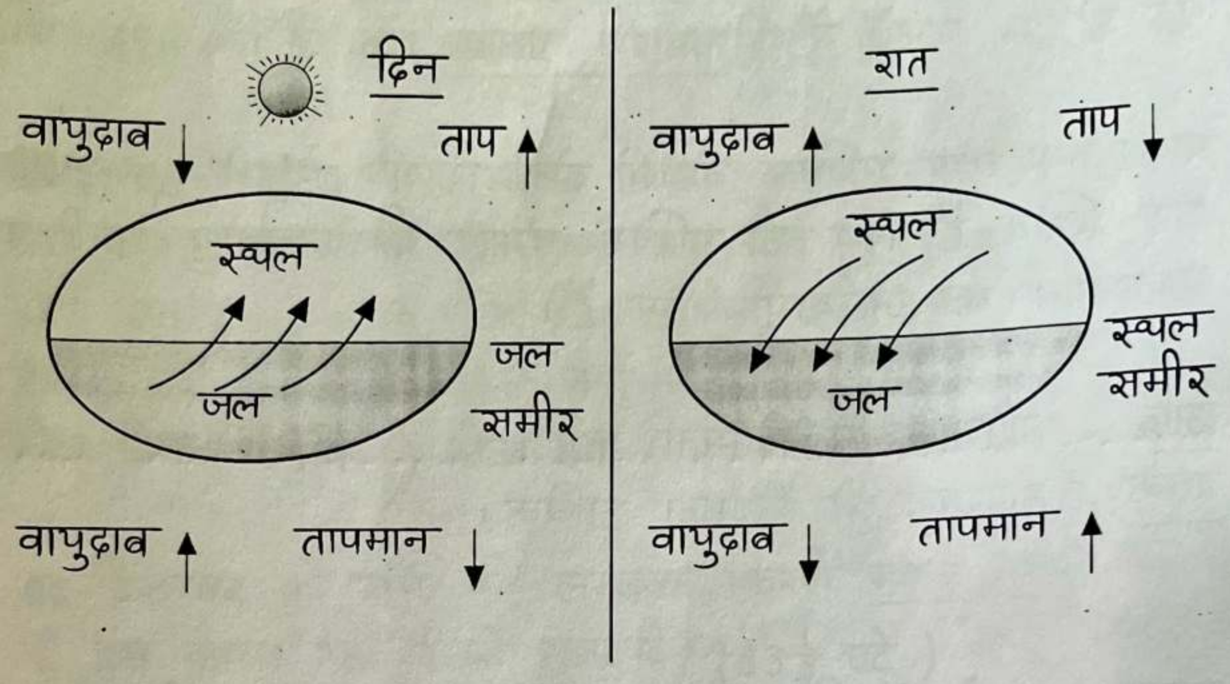

* दिन के समय स्थलीय भाग पर अधिक तापमान होता है इस कारण यहाँ निम्न वायुदाब उत्पन्न हो जाता है।

* दिन के समय जलीय भाग पर कम तापमान के कारण उच्च वायुदाब उत्पन्न हो जाता है।

Note → पवन उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती हैं।

* इस कारण दिन के समय "जलीय समीर" चलती है।

* रात मे स्थलीय भाग पर कम तापमान के कारण उच्च वायुदाब उत्पन्न हो जाता है जबकि जलीय भाग पर अधिक तापमान के कारण निम्न वायुदाब उत्पन्न हो जाता है।
* इस कारण स्थलीय समीर रात के समय चलती है।

6. वनस्पति ► वनस्पति की अधिकता के कारण जलवायु आर्द्र जबकि कमी के कारण जलवायु शुष्क होती हैं।

7. मिट्टी ► पश्चिमी राजस्थान मे रेतीली / मरूस्थलीय / बलुई मिट्टी पाई जाती हैं।

यह मिट्टी दिन में तापमान ग्रहण करके अधिक गर्म हो जाती है जबकि रात के समय जल्दी ठण्डी हो जाती हैं।

* मरूस्थलीय क्षेत्र मे दिन अधिक गर्म तथा रातें ठण्डी होने का कारण बलुई मिट्टी, वनस्पति की कमी तथा शुष्क वातावरण का होना है।

* पूर्वी तथा दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान में जलोढ़ तथा मध्यम काली मिट्टी पाई जाती हैं। यह मिट्टी जल्दी से गर्म तथा ठण्ड़ी नही हो पाती हैं। इस कारण यहाँ की जलवायु आर्द्र होती हैं।

8. पवनें ► अरब सागर तथा बंगाल की खाडी की पवन राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करती हैं।

ऋतुओं के आधार पर जलवायु वर्गीकरण :-

1 ग्रीष्म ऋतु 2. मानसून ऋतु 3. शीत ऋतु

1. ग्रीष्म ऋतु -> (मध्य मार्च से मध्य जून)

(1) लू - गर्म पवन
(2) भभूल्या - निम्न वायुदाब क्षेत्र
(3) दोगड़ा - राजस्थान मे मानसून पूर्व की वर्षा।

2. मानसून ऋतु -> (मध्य जून से मध्य सितम्बर)

/ वर्षा ऋतु

* इसमे दक्षिणी - पश्चिमी मानसूनी पवन आती है। जिसकी दो शाखाएँ हैं :-
  (i) अरबसागर की शाखा
  (ii) बंगाल की खाडी की शाखा

* राजस्थान मे सर्वप्रथम अरब सागर की शाखा बाँसवाड़ा जिले से प्रवेश करती हैं जिसकी दिशा दक्षिणी - पश्चिम से उत्तर - पूर्व की ओर होती हैं।

* यह शाखा अरबसागर की शाखा राज्य के दक्षिणी भाग में वर्षा कर पाती है तथा इसके बाद अरावली पर्वतमाला के समानान्तर निकल जाती हैं।

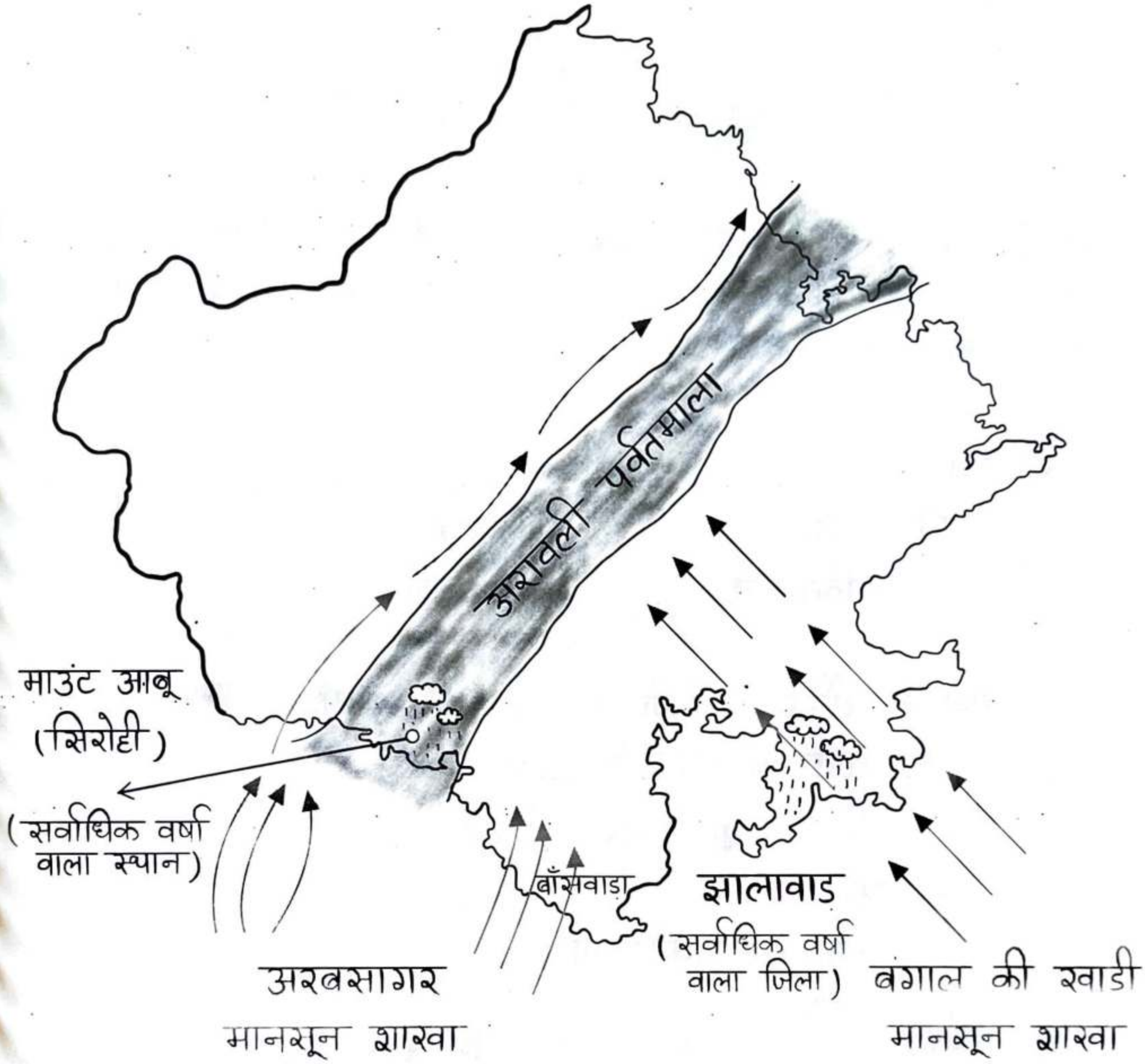

* राज्य का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान माउंट आबू है जहाँ सर्वाधिक वर्षा अरबसागर की शाखा करती है।

* बंगाल की खाडी की शाखा झालावाड़ जिले से प्रवेश करती है जिसकी दिशा दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर होती है।

* राजस्थान मे सर्वाधिक वर्षा बंगाल की खाडी की शाखा करती है।

* अरबसागर की तथा बंगाल की खाडी की शाखा दोनो आपस में बाँसवाड़ा जिले मे मिल जाती है। इस कारण मानसून की सर्वाधिक सक्रियता बाँसवाड़ा जिले में है।

* राज्य मे उत्तर - पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर वर्षा की मात्रा बढ़ती है जबकि दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर वर्षा की मात्रा घटती है।

* जिस तरफ वर्षा की मात्रा बढ़ती है उसी तरफ वर्षा के दिनो की संख्या भी बढेगी और जिस तरफ वर्षा की मात्रा घटती है उसी तरफ वर्षा के दिनो की संख्या भी घटेगी।

* राजस्थान के भौतिक प्रदेशों का अवरोही क्रम :-
  (वर्षा की मात्रा के आधार पर)
  1. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश
  2. पूर्वी मैदान
  3. अरावली पर्वतमाला
  4. मरुस्थल

* राजस्थान मे मानसून प्रवेश 15 जून को करता है।

* राजस्थान मे वर्षा कम होने के कारण निम्न है :-
  1. अरावली पर्वतमाला की दिक् स्थिति
  2. बंगाल की खाडी की पवन अपनी आर्द्रता को गंगा के मैदान मे छोड देती है।

3. शीत ऋतु ->

• मावठ → सर्दियों मे होने वाली वर्षा को कहते हैं।
* यह रवी की फसल के लिए अमृत के समान हैं।
* मावठ का कारण :- भू-मध्य सागरीय पवन या पश्चिमी विक्षोभ हैं।

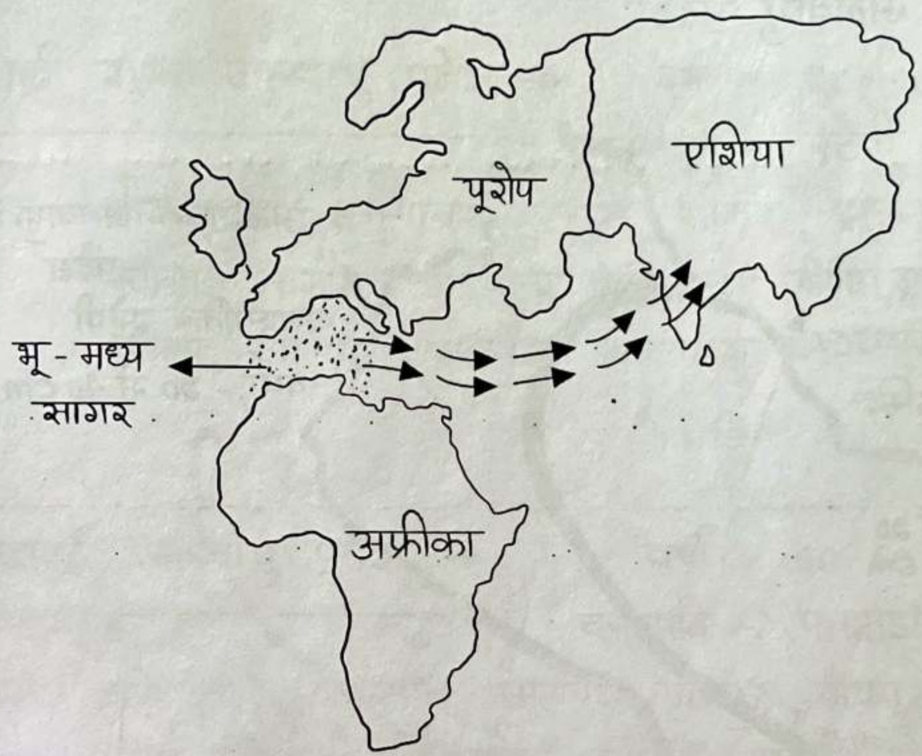

* इस ऋतु मे राजस्थान मे तापमान कम होने के निम्न कारण हैं :- 1 महाद्वीपीय जलवायु / समुद्र से दूरी का अनुभव करना।
2. हिमालय पर्वतमाला में बर्फबारी होने के कारण शीत लहर का आना।
3. कैस्पियन सागर से आने वाली ठण्डी-ठण्डी पवन।

* मावठ का सर्वाधिक प्रभाव श्रीगंगानगर व हनुमानगढ मे देखा जाता है।

• सीली → ठण्डी पवन को कहते हैं।

राजस्थान की जलवायु को 5 भागों मे विभाजित किया जाता हैं :-

1. शुष्क जलवायु प्रदेश
2. अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश
3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश
4. आर्द्र जलवायु प्रदेश
5. अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश

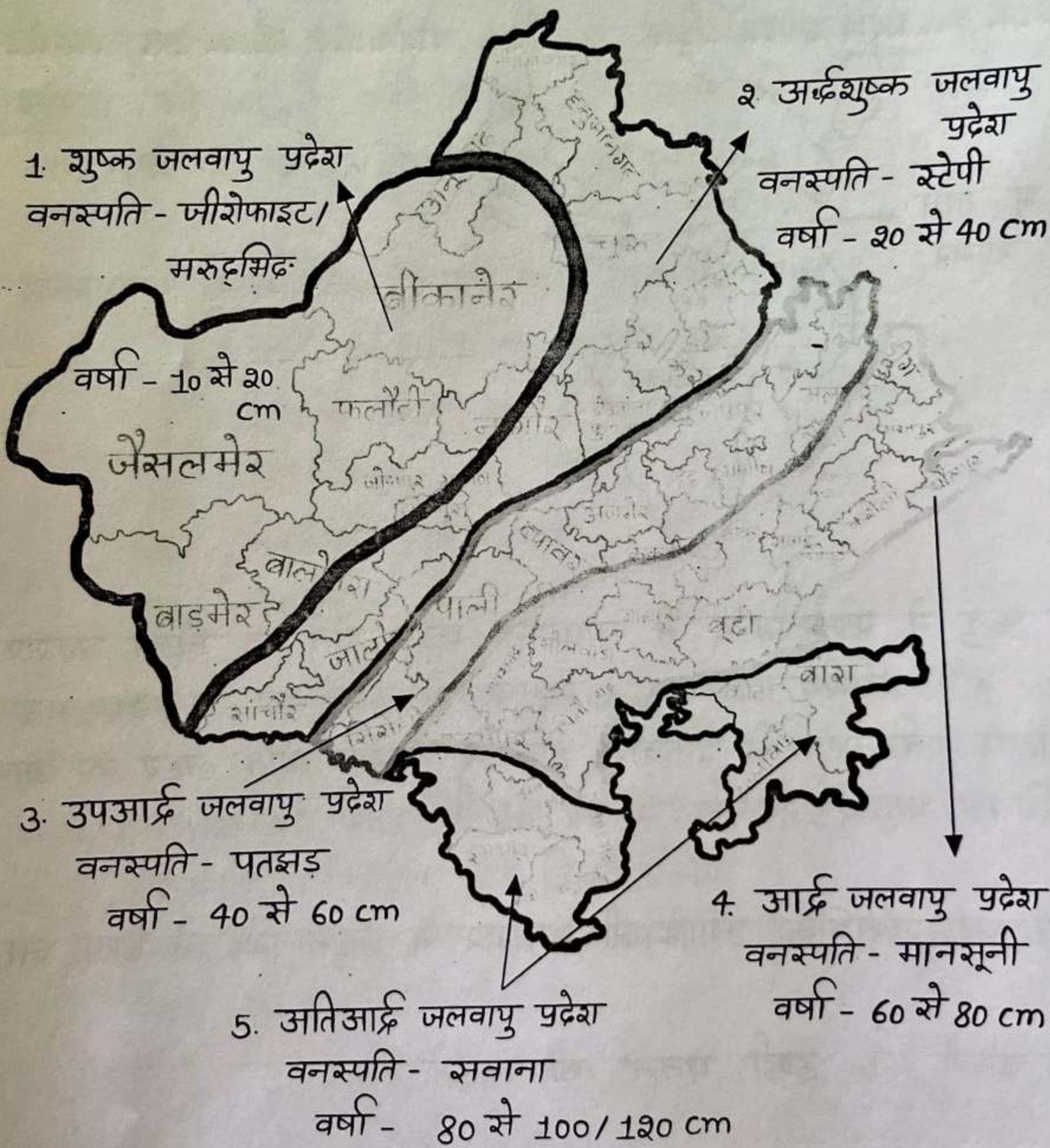

1 शुष्क जलवायु प्रदेश → वर्षा - 10-20 cm
वनस्पति - मरुद्भिद / जीरोफाइट

विस्तार - जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, फलौदी, अनुपगढ़, बालोतरा, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ का कुछ भाग तथा चुरू, नागौर, जयपुर ग्रामीण का पश्चिम।

2. अर्द्ध शुष्क जलवायु प्रदेश → वर्षा - 20-40 cm
वनस्पति - स्टेपी तुल्य (छोटी घास)

विस्तार - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, सीकर, झुन्झुनू, नीम का थाना, नागौर, डीडवाना कुचामन, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, पाली, जालौर, सांचौर, बालोतरा का कुछ भाग।

3. उपआर्द्र जलवायु प्रदेश → वर्षा - 40-60 cm
वनस्पति - पतझड़

विस्तार - कोटपुतली, खैरथल, अलवर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, टोंक, केकड़ी, अजमेर, ब्यावर, पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही।

4 आर्द्र जलवायु प्रदेश → वर्षा - 60-80 cm
वनस्पति - मानसूनी

विस्तार - भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, डीग, दौसा, टोंक, बूँदी, केकड़ी, शाहपुरा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, सिरोही तथा उदयपुर, सलुम्बर, प्रतापगढ़, कोटा का उत्तरी भाग।

5. अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश → वर्षा - 80 - 100/120 cm
वनस्पति - सवाना तुल्य

विस्तार - उदयपुर, सलूम्बर, डुँगरपुर, बाँसवाड़ा, कोटा, बांरा, झालावाड़, चित्तौडगढ़, प्रतापगढ़, माउंट आबू ।

कॉपेन का जलवायु वर्गीकरण

कॉपेन का जन्म - रूस
निधन - ऑस्ट्रिया
इनका वर्गीकरण " केंडोले " के वर्गीकरण पर आधारित हैं।
आधार - वर्षा, तापमान, वनस्पति

- इन्होने [5] प्रकार के जलवायु प्रदेशो का वर्गीकरण किया -

1. उष्ण कटिबन्ध ▸ वर्षभर महीने का औसत तापमान 18°c से अधिक होगा।

2. शुष्क जलवायु ▸ इसमे तापमान अधिक तथा वर्षा कम होती हैं।

3. गर्म जलवायु ▸ इसमे तापमान अधिक तथा वर्षा भी अधिक होती हैं। इसमे ठण्डे महीने का तापमान 18° से -3° c के मध्य होगा।

4. हिम जलवायु ▸ इसमे गर्म महीने का तापमान 10°c से अधिक जबकि ठण्डे महीने का तापमान 3°c से कम होगा।

5. बर्फीली जलवायु ▸ इसमे गर्म महीने का औसत तापमान 10°c से कम होगा।

1. **BWhw**
जलवायु - शुष्क
वर्षा - 10-20 cm
वनस्पति - जीरोफाइट्स
विस्तार - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, अनुपगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण का पश्चिमी भाग।

2. **BShw**
जलवायु - अर्द्धशुष्क
वर्षा - 20-40 cm
वनस्पति - स्टेपी
विस्तार - चुरू, झुन्झुनू, सीकर, नीम का थाना, नागौर, डीडवाना कुचामन, पाली, जालौर, सांचौर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, बाडमेर, ब्यावर का कुछ भाग।

3. **Cwg**
जलवायु - उपार्द्र / आर्द्र
वर्षा - 40-80 cm
वनस्पति - मानसूनी पतझड़

विस्तार - कोटपुतली बहरोड़, खैरथल तिजारा, डीग, भरतपुर, अलवर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, दूदू, टोंक, करौली, धौलपुर, बूँदी, अजमेर, केकड़ी, शाहपुरा, भीलवाड़ा, गंगापुर सिटी, प्रतापगढ़, सिरोही, राजसमंद, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, ब्यावर का कुछ भाग।

4.

Aw

जलवायु - अतिआर्द्र

वर्षा - 80 - 120 cm

वनस्पति - सवाना

विस्तार - माउंट आबू, उदयपुर, सलूम्बर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, कोटा, बांरा, चित्तौड़गढ़ का कुछ भाग, झालावाड़।

[कॉपेन का जलवायु वर्गीकरण]

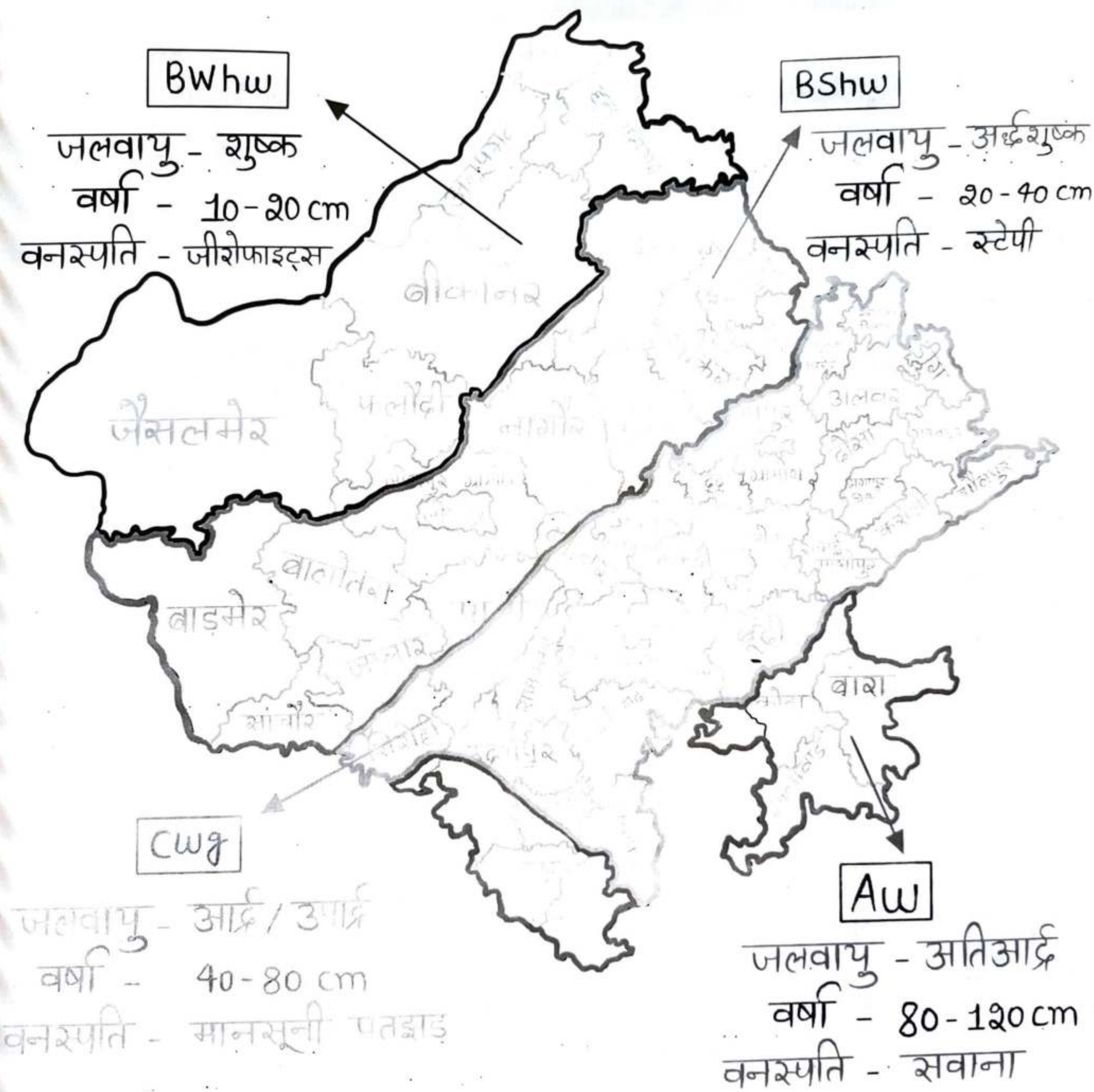

थॉर्नवेट का जलवायु वर्गीकरण 4

आधार - तापमान, वर्षा, वाष्पीकरण

1.
EA'd

जलवायु - शुष्क
वर्षा - 10 - 15 cm
विस्तार - बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण (पश्चिमी भाग) + अनुपगढ़।

2.
DB'w

जलवायु - मिश्रित
वर्षा - 15 - 20/25 cm
विस्तार - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, बीकानेर, अनुपगढ़।

3.
DA'w

जलवायु - अर्द्धशुष्क
वर्षा - 50 - 80 cm
विस्तार - सीकर, झुन्झुनू, नीम का थाना, नागौर, डीडवाना कुचामन, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, कोटपुतली, खैरथल, ABCD, डीग, दौसा, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, टोंक, बूँदी, केकड़ी, ब्यावर, दूदू, अजमेर, प्रतापगढ़, शाहपुरा, भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़।

4.
CA'ω

जलवायु - आर्द्र
वर्षा - 80 - 100/120 cm
विस्तार - सिरोही, उदयपुर, सलुम्बर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, कोटा, बांरा, झालावाड़, माउंट आबू।

[थॉर्नवेट का जलवायु वर्गीकरण]

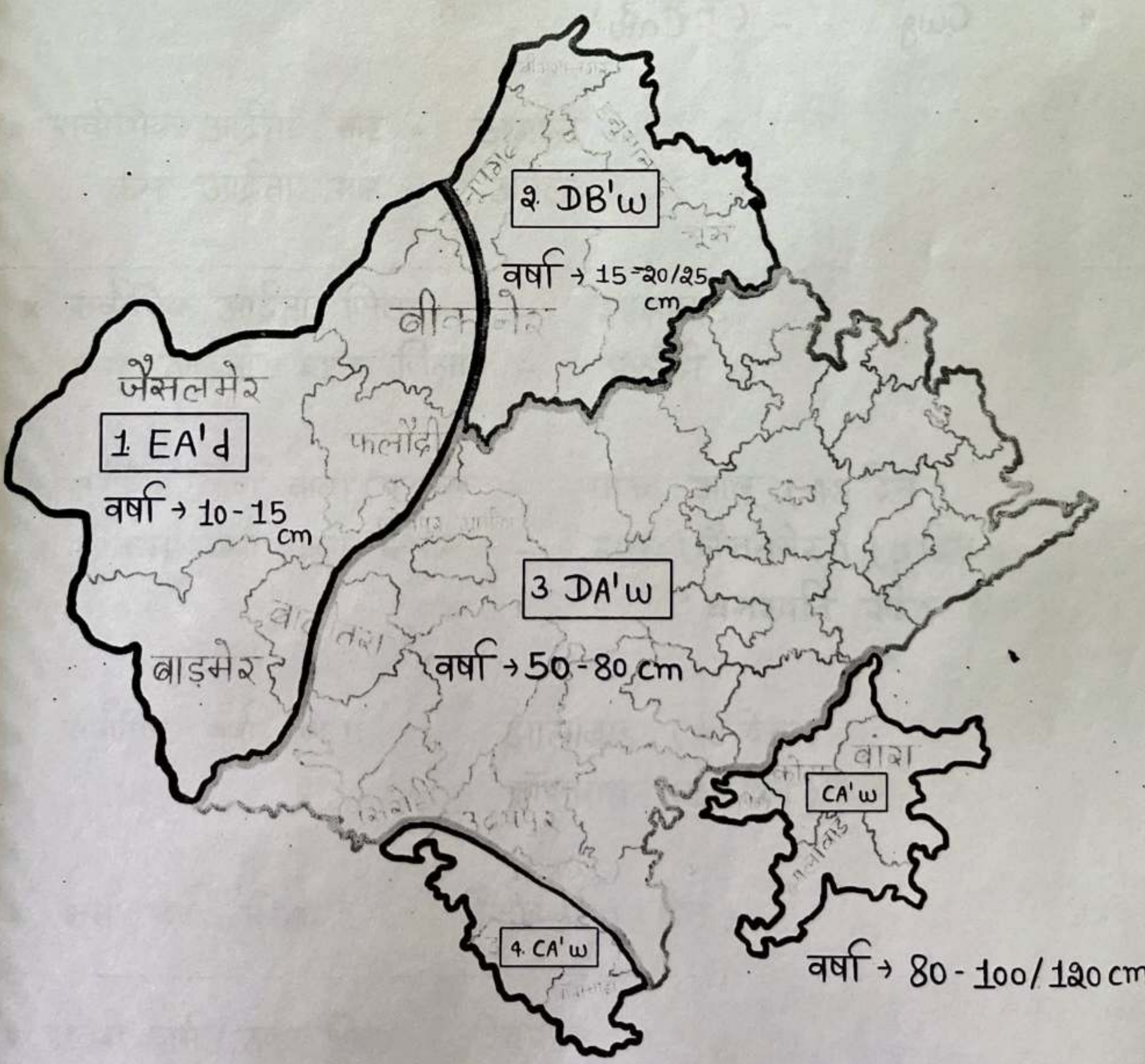

ट्रिवार्था का जलवायु वर्गीकरण

* इन्होने कॉपेन के जलवायु वर्गीकरण का संशोधन किया।

	कॉपेन		ट्रिवार्था
1	Aw	—	Aw
2.	BWhw	—	BWh
3.	BShw	—	BSh
4.	Cwg	—	Caw

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

* राजस्थान मे औसत वर्षा दिनो की संख्या 29 दिन है। जबकि औसत वर्षा 57.5 cm है।

* सर्वाधिक आँधियां - श्रीगंगानगर (27 दिन)
  हनुमानगढ़ (24 दिन)

* सबसे कम आँधियां - झालावाड़ (3 दिन)
  कोटा (5 दिन)

* सर्वाधिक आर्द्रता माह - अगस्त
  कम आर्द्रता माह - अप्रैल

* सर्वाधिक आर्द्रता जिला - झालावाड़
  कम आर्द्रता / शुष्क जिला - फलौदी

* सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान - मांउट आबू (48 दिन)
  कम वर्षा वाला स्थान - सम (जैसलमेर) (0 दिन)
  → वनस्पति रहित क्षेत्र।

* सर्वाधिक वर्षा जिला - झालावाड़ (40 दिन)
  बाँसवाड़ा (38 दिन)

* कम वर्षा जिला - जैसलमेर (3 दिन)

* सबसे गर्म / ठण्डा जिला - चुरु

* राजस्थान मे सर्वाधिक वर्षा - जुलाई - अगस्त मे

* राज्य मे सर्वाधिक वाष्पोत्सर्जन की दर - जैसलमेर
कम वाष्पोत्सर्जन की दर - डुंगरपुर

* राज्य मे उत्तर - पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर आँधियों की संख्या मे कमी आती है जबकि दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर आँधियों की संख्या मे वृद्धि होती है।

प्रमुख पवने :-

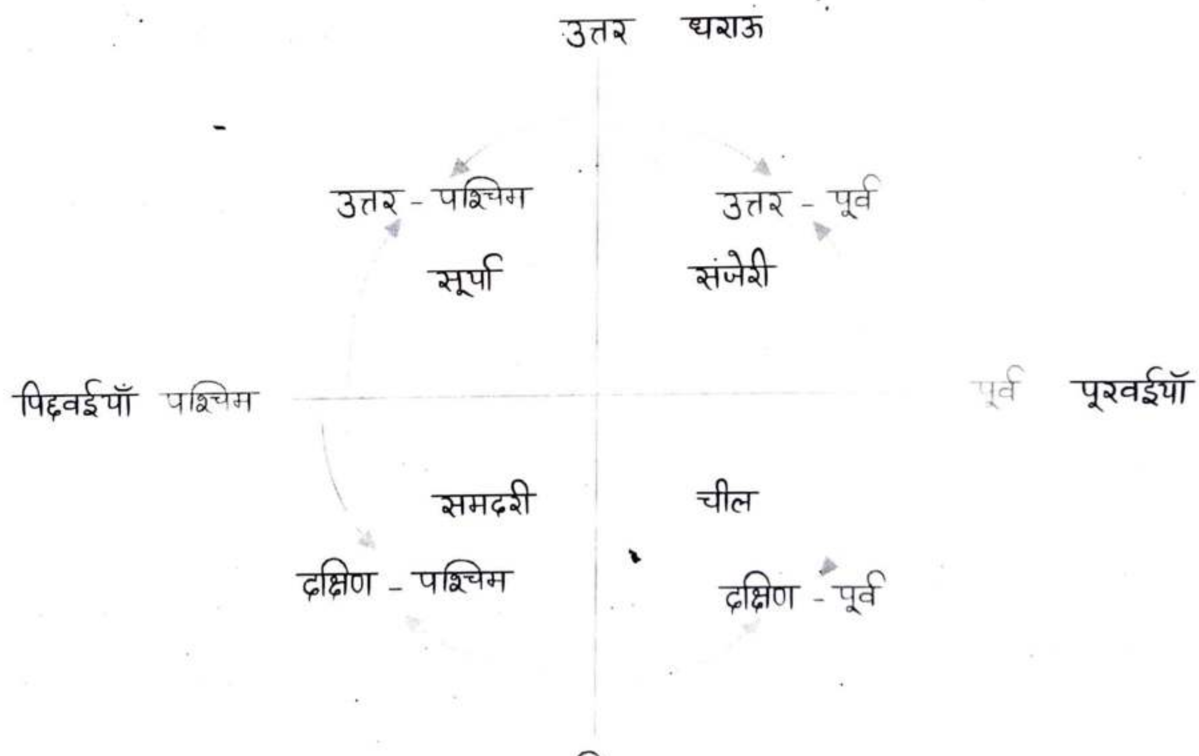

राजस्थान के उद्योग

- व्यक्ति अपनी आजीविका चलाने के लिए जो क्रिया करता है, उसे उद्योग कहते है।
- 1 जुलाई 2020 मे सूक्ष्म, मध्यम तथा वृहत् उद्योगो का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है :-

सूक्ष्म उद्योग → निवेश - 1 करोड़ से अधिक नही
कारोबार - 5 करोड से अधिक नही

लघु उद्योग → निवेश - 10 करोड़ से अधिक नही
कारोबार - 50 करोड से अधिक नही

मध्यम उद्योग → निवेश - 50 करोड से अधिक नही
कारोबार - 250 करोड से अधिक नही

➤ उद्योग स्थापित करने मे निम्न समस्याएँ आती है :-

1 वित्त / धन
2 कच्चा माल
3 परिवहन
4 ऊर्जा

➤ इन समस्याओ के निदान के लिए निम्न संस्थान कार्यरत है -

1 रीको (RIICO)
2 RFC
3 RAJSICO
4 RUDA
5 DMIC
6 राजस्थान खादी एंव ग्रामोद्योग बोर्ड
7 RAJCON

1. रीको

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एव विनियोजन निगम

(Rajasthan State Industrial Development and Investment Corporation)

स्थापना - 1980 मुख्यालय - जयपुर

* राजस्थान उद्योग एव खनिज विकास निगम लिमिटेड - 1969

* राजस्थान राज्य खनिज विकास लिमिटेड - 1979

इसके बाद रीको की स्थापना की गई जिसके कार्य निम्न है -

RIICO के कार्य :-

1) औद्योगिक इकाईयो की स्थापना के लिए भूमि का आंवटन करना।
2) मध्यम तथा बडे उद्योगो को वितिय सहायता उपलब्ध करवाना।
3) आयात - निर्यात की सुविधा उपलब्ध करवाना।
4) प्रवासी भारतीयो को विशेष सुविधा उपलब्ध करवाना।

रीको के द्वारा निम्न गतिविधियाँ संचालित है :-

1. औद्योगिक क्षैत्र :-

1. टपूकड़ा
2. पाथरेडी
3. भिवाडी

(1–3) — खैरथल तिजारा

4. कोटकासिम — खैरथल

5. घिलोट
6. नीमराना

(5–6) — कोटपुतली - बहरोड

7. इन्द्रप्रस्थ - कोटा
8. विश्वकर्मा - जयपुर
9. भगत की कोठी - जोधपुर
10. बोरानाडा - जोधपुर ग्रामीण

2. विशेष आर्थिक क्षेत्र :- [SEZ - Special Economy Zone]

1. बोरानाडा (जोधपुर ग्रामीण) - संचालित - हस्तशिल्प (राज्य का प्रथम सेज)
2. नीमराना (कोटपुतली बहरोड़) - संचालित - होजरी
3. महिन्द्रा सेज (जयपुर) - संचालित - सूचना प्रौद्योगिकी
4. सीतापुरा (जयपुर) - संचालित - जेम्स एण्ड ज्वैलरी
5. टेक्सटाईल सेज (बीकानेर) - संचालित - वस्त्र उद्योग
6. ऊन गलीचा (बीकानेर)

3. औद्योगिक पार्क या जोन :-

1.) फार्मास्युटिकल जोन - उदयपुर
2.) ट्रांसपोर्ट जोन - राजसमंद
3.) मेन्युफेक्चरिंग जोन - कोटपुतली बहरोड़
4.) सिरेमिक जोन - खारा (बीकानेर), नीमराना
5.) एकीकृत कपडा पार्क - जयपुर
6.) अर्थ स्टेशन - जयपुर
7.) लेदर कॉम्पलेक्स - मानपुरा माचेडी (जयपुर ग्रामीण)
8.) बायोटेक्नोलॉजी पार्क - चौपंकी (खैरथल-तिजारा)
9.) स्टोन पार्क - धौलपुर, करौली, जोधपुर
10.) जेट्रोपार्क] - नीमराना (कोटपुतली बहरोड)
11.) कोटरापार्क]

12.) C. DOS (सेन्टर फॉर डवलपमेन्ट ऑफ स्टोन) – सीतापुरा
(पत्थर उद्योग के लिए)

13.) साइबर पार्क – जोधपुर

14.) होजरी पार्क – चौपंकी (खैरथल-तिजारा)

15.) एग्रो फूड पार्क – JOKAS
- S – श्रीगंगानगर
- A – अलवर
- K – कोटा
- J – जोधपुर ग्रामीण

16.) मेगा फूड पार्क – रूपनगढ (अजमेर)

17.) टेक्सटाईल पार्क – भीलवाड़ा

18.) MED TECH / DEVICE PARK – जोधपुर

4. E.P.I.P. :- निर्यात संवर्द्धन एंव औद्योगिक पार्क
(Export Promotion Industrial Park)

1.) प्रथम EPIP – सीतापुरा (यहाँ 2 EPIP है)
स्थापना – 1997

2.) द्वितीय EPIP – बोरानाडा (जोधपुर ग्रामीण)
स्थापना – 2005

3.) तीसरा EPIP – नीमराना
स्थापना – 2007

Rajasthan Financial Corporation(RFC)
Government of Rajasthan
सत्यमेव जयते

२ राजस्थान राज्य वित्त निगम R.F.C.

स्थापना - 17 जनवरी 1955 मुख्यालय - जयपुर

कार्य :- अतिलघु, लघु तथा मध्यम उद्योगो को वित्तीय सहायता देना।

इसकी मुख्य योजनाएँ निम्न है :-

1 शिल्पबाडी योजना :- ग्रामीण तथा शहरी दस्तकारो को ऋण देने की योजना।

२ सिल्वर कार्ड :- वित्त निगम का अच्छा ऋणी जिसने 50% तक ऋण समय पर दिया है तो उसको फिर से ऋण देने की योजना।

3 गोल्ड कार्ड :- वित्त निगम का अच्छा ऋणी जिसको तत्काल 30 लाख रूपये देने की योजना।

4. प्लेटिनम कार्ड :- वित्त निगम का अच्छा ऋणी जिसने २ वर्षो तक समय पर ऋण दिया है तो उसे फिर से ऋण देने की योजना।

5 विजलोन :- महिलाओ को उद्योग स्थापित करने के लिए ऋण देने की योजना।
* परिवहन के क्षेत्र मे नही दिया जायेगा।

6. सेमफेक्स योजना :- भूतपूर्व सैनिको को ऋण देने की योजना।

7. टेक्नोक्रेट योजना :- तकनीकी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जो उद्योग स्थापित करना चाहता है को ऋण देने की योजना।

3. राजसीको [RAJSICO]

राजस्थान लघु उद्योग निगम

Rajasthan Small Industries Corporation

स्थापना - 3 जून 1961 मुख्यालय - जयपुर

कार्य :- 1. उद्योगो को कच्चा माल तथा विपणन (क्रय - विक्रय) उपलब्ध करवाना।
2. उद्योगो मे तालमेल / सामंजस्य स्थापित करना।
3. मेला / सेमीनार / प्रदर्शनी का आयोजन करना।
4. गलीचा प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना।

इसके के द्वारा निम्न गतिविधियाँ संचालित हैं :-

(1.) एयरकार्गो कॉम्पलेक्स - जयपुर, स्थापना - 1979

(2.) इनलैंड कन्टेनर डिपो (I.C.D.), उद्देश्य - अन्तर्देशीय व्यापार को बढावा।

राज्य के I.C.D. - प्रथम I.C.D. - जयपुर - 1989
दूसरा I.C.D. - जोधपुर - 1995
तीसरा I.C.D. - भिवाडी - 1999
चौथा I.C.D. - भीलवाडा - 2000

केन्द्र सरकार के I.C.D. - प्रथम I.C.D. - जोधपुर - 2001
दूसरा I.C.D. - जयपुर - 2001
तीसरा I.C.D. - कोटा - 2003

निजि क्षेत्र के I.C.D. - प्रथम I.C.D. - पालगॉव (जोधपुर ग्रामीण) - 2001

(3) वुड सीजनिंग प्लान्ट - जोधपुर
आधारित - काष्ठ उद्योग पर
(4) उस्ताकला - बीकानेर
(5) फड़ चित्रण - शाहपुरा
(6) मयूर बीड़ी केन्द्र - टोंक

ग्रामीण गैर कृषि विकास अभिकरण (रूडा)
राजस्थान सरकार
सत्यमेव जयते

4. RUDA

Rural Non-Farm Development Agency
ग्रामीण गैर-कृषि विकास अभिकरण

स्थापना - नवम्बर 1995 मुख्यालय - जयपुर

कार्य :- यह तीन उपक्षेत्र में कार्य कर रहा है - ऊन, चर्म / चमड़ा, लघु खनिज

1. ग्रामीण दस्तकारों को प्रशिक्षण देना।
2. ग्रामीण दस्तकारों को तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाना।
3. ग्रामीण दस्तकारों के उत्पाद का प्रचार - प्रसार करना।
4. ग्रामीण दस्तकारों को वित्तीय सहायता / ऋण उपलब्ध करवाना।

इसके के द्वारा निम्न गतिविधियाँ संचालित हैं :-

1. डोरिया साड़ी केन्द्र - कैथून (कोटा)
2. बुनाई केन्द्र - लेटा (जालौर)
मांगरोल (बारां)
सालावास (जोधपुर ग्रामीण)
3. तालछापर हस्तशिल्प उत्पाद परियोजना - 2007 (चुरू)

5. D.M.I.C.

दिल्ली - मुम्बई डेडिकेटेड फ्रंट कॉरिडोर -> शुरूआत - दादरी (UP), दिल्ली हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मुम्बई

- कुल लम्बाई - 1504 km
- इसकी सहायता के लिए DMIC का गठन किया गया।

DMIC :- दिल्ली - मुम्बई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर

गठन - फरवरी 2014

उद्देश्य - औद्योगिक पार्क क्षेत्र तथा सेज का गठन करना।

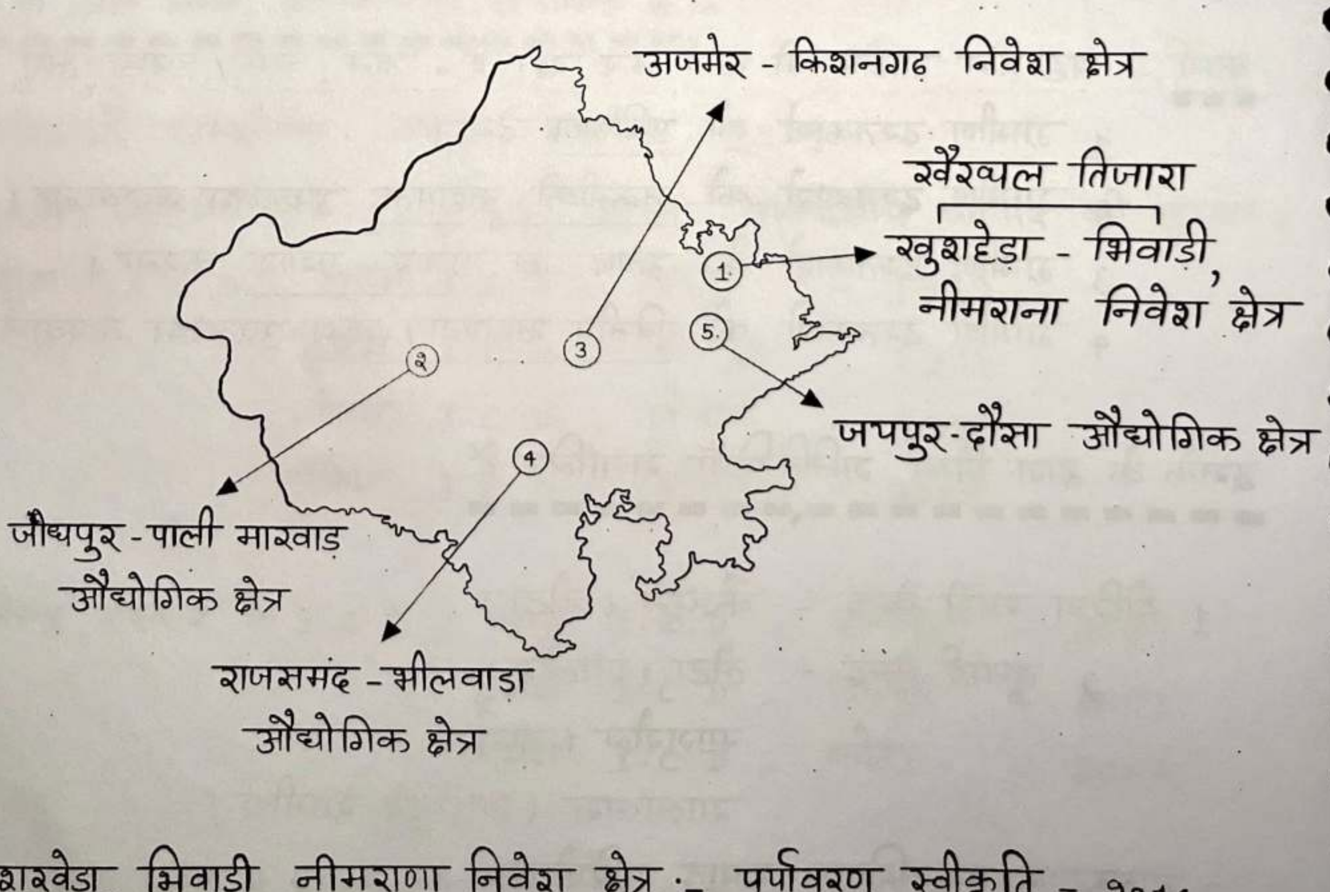

1. खुशखेड़ा, भिवाडी, नीमराणा निवेश क्षेत्र :- पर्यावरण स्वीकृति - 2014
खैरथल - तिजारा
अधिसूचना - दिसम्बर 2020

Note :- 1+2 के विकास के लिए RIDCO / रिडको (राजस्थान इंडस्ट्रियल कॉरिडोर डवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन) का गठन 15 मार्च 2020 को किया गया।

2. जोधपुर, पाली, मारवाड औद्योगिक क्षेत्र :- पर्यावरण स्वीकृति - 2017
अधिसूचना - अक्टूबर 2020

3. अजमेर किशनगढ निवेश क्षेत्र

4. राजसमंद भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र

5. जयपुर दौसा औद्योगिक क्षेत्र

Note :- D.M.I.C के 5 क्षेत्र मे से 2 निवेश क्षेत्र तथा 3 औद्योगिक क्षेत्र हैं।

राजस्थान खादी और ग्राम उधोग बोर्ड
राजस्थान सरकार
सत्यमेव जयते

6. राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड

स्थापना - 1955   मुख्यालय - जयपुर

- खादी को बढ़ावा देने के लिए (3) प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हैं -
  1. सांगानेर (जयपुर)
  2. पुष्कर
  3. माउंट आबू

RAJASTHAN CONSULTANCY ORGANISATION LIMITED

7. राजस्थान कन्सल्टेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड :-

स्थापना - 1978   मुख्यालय - जयपुर

उद्योगो का वर्गीकरण

A. कृषि आधारित उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. ऊनी उद्योग
3. चीनी उद्योग
4. वनस्पति घी उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग :- यह भारत तथा राजस्थान का सबसे प्राचीनतम एंव संगठित उद्योग हैं।

(a) निजी क्षेत्र की मिले :-

1. द कृष्णा मिल्स लिमिटेड - ब्यावर
   1889
   - राज्य की प्रथम मिल।
   - यह सेठ दामोदर दास राठी व कर्नल डिक्शन द्वारा स्थापित।
2. मेवाड़ टेक्सटाईल मिल - भीलवाडा
   1938
3. महाराजा उम्मेद मिल - पाली
   1942
   - यह मिल बाण्डी नदी के किनारे हैं।
   - राज्य की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल।
4. शार्दुल टेक्सटाईल मिल - श्रीगंगानगर
   1946

(b) सार्वजनिक क्षेत्र की मिले :-

1. एडवर्ड मिल्स लिमिटेड ब्यावर
   स्थापना - 1906
   - राज्य की दूसरी सूती वस्त्र मिल
2. विजय कॉटन मिल ब्यावर
   स्थापना - 1932
3. महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड ब्यावर
   स्थापना - 1925

Note :- 1974 मे राष्ट्रीय वस्त्र निगम द्वारा इन तीनो मिलो को निजि क्षेत्र से सार्वजनिक क्षेत्र मे मिला दिया गया।

(c) सहकारी क्षेत्र की मिले :-

1. गुलाबपुरा सहकारी मिल - भीलवाड़ा
   स्थापना - 1965
   - सहकारी क्षेत्र की प्रथम सूती वस्त्र मिल।

2. श्रीगंगानगर सहकारी मिल - हनुमानगढ़
   स्थापना - 1978

3. गंगापुर सहकारी मिल - भीलवाडा
   स्थापना - 1981

Note :- 1 अप्रेल 1993 को इन तीनो मिलों को मिलाकर राजस्थान राज्य स्पिनिंग एण्ड जिनिंग मिल्स लिमिटेड नाम कर दिया गया।

मुख्यालय - जयपुर

- राजस्थान के वर्तमान स्वरूप तक राजस्थान मे (7) सूती वस्त्र मिले थी।
- वर्तमान मे कुल सूती वस्त्र मिले - 23

निजि क्षेत्र की मिलें - 17
सार्वजनिक क्षेत्र की मिलें - 03
सहकारी क्षेत्र की मिलें - 03

Q. राजस्थान के वर्तमान स्वरूप तक सार्वजनिक क्षेत्र की मिले हैं :-

[a] द कृष्णा
[b] एडवर्ड
[c] गुलाबपुरा
[d] विकल्प अनुपयुक्त

2. ऊनी उद्योग :-

वर्स्टेड स्पीनिंग मिल	ऊन का आयात - निर्यात	ऊन मण्डी - 03
- लाडनु (डीडवाना कुचामन) - चुरू	संस्थान - कोटा	1 बीकानेर - एशिया की सबसे बडी। 2 ब्यावर 3 केकडी

राजस्थान देश के लगभग 47.98% ऊन का उत्पादन करत है जो कि देश मे प्रथम स्थान पर है।

3. चीनी उद्योग :-

(1) द मेवाड़ शुगरमिल - भोपालसागर (चित्तोड़)
स्थापना - 1932 मे निजि क्षेत्र
इसकी सहायक शाखा के रूप मे 1976 मे "उदयपुर शुगरमिल" की स्थापना की गई।

(2) गंगानगर शुगरमिल - श्रीगंगानगर
स्थापना - 1937 (निजि क्षेत्र)
1 जूलाई 1956 को सार्वजनिक क्षेत्र मे मिला दिया गया।

- 1968 मे यहॉ चकुन्दर से चीनी बनाने का कारखाना स्थापित किया गया।
- यहॉ शराब का कारखाना है तथा सबसे प्रदूषित मिल है।
- यहॉ द हाइटेक प्रिसीजन ग्लास फेक्ट्री कार्यरत है।

(3) केशवरायपाटन शुगरमिल (बूंदी) - स्थापना - 1965
यह सहकारी क्षेत्र मे है जो वर्तमान मे बंद है।

4. वनस्पति घी उद्योग

राजस्थान की प्रथम वनस्पति घी फेक्ट्री 1964 मे भीलवाडा मे स्थापित की गई।

B. रसायन आधारित उद्योग

1. प्रथम जैव उर्वरक कारखाना - भरतपुर
2. सोडियम सल्फेट कारखाना - डीडवाना
3. चम्बल फर्टिलाइजर्स एड केमिकल्स लिमिटेड - गढेपान (कोटा)
4. चम्बल फर्टिलाइजर्स एड केमिकल्स इंडस्ट्रीज - जयपुर
5. राजस्थान राष्ट्रीय केमिकल्स एड फर्टिलाइजर्स - कपासन (चित्तौड)
6. टायर - ट्यूब कारखाना - अलवर
7. JK टायर - ट्यूब कारखाना - कांकरोली (राजसमंद)
8. श्रीराम फर्टिलाइजर्स लिमिटेड - श्रीरामनगर (कोटा)
9. ज्योति ट्रिपल खाद कारखाना - खेतड़ी (नीम का थाना)
10. दी एक्सप्लोसिव केमिकल्स लिमिटेड - धौलपुर
11. द सल्फ्युरिक एसिड कारखाना - अलवर

C खनिज आधारित उद्योग

1. सीमेन्ट उद्योग :- प्रथम सीमेन्ट कारखाना 1915 में लाखेरी (बूंदी) मे क्लिक निकसन कम्पनी के द्वारा स्थापित किया गया।
[उत्पादन शुरू - 1917 मे]

- भारत का प्रथम सफेद सीमेन्ट कारखाना - 1984 मे गोटन (नागौर)
- राजस्थान का सबसे बडा सफेद सीमेन्ट कारखाना - 1988 मे खारियाखंगार (जोधपुर ग्रामीण)

> राज्य के प्रमुख सीमेन्ट कारखाना -

1. JK सीमेन्ट कारखाना — चित्तौडगढ
2. चेतक सीमेन्ट कारखाना — चित्तौडगढ
3. आदित्य बिरला सीमेन्ट कारखाना — चित्तौडगढ
4. JK लक्ष्मी सीमेन्ट कारखाना — सिरोही
5. बिनानी सीमेन्ट कारखाना — सिरोही
6. श्री सीमेन्ट कारखाना → ब्यावर
7. मंगलम सीमेन्ट कारखाना — कोटा
8. श्रीराम सीमेन्ट कारखाना — कोटा
9. अल्ट्राटेक सीमेन्ट कारखाना → जयपुर ग्रामीण

- राजस्थान मे सर्वाधिक सीमेन्ट उत्पादन चित्तौडगढ से होता है इसलिए इसे सीमेन्ट नगरी कहते हैं।
- दक्षिण एशिया का सबसे बडा कारखाना - जयपुर उद्योग लिमिटेड (सवाई माधोपुर)

2 कांच उद्योग :-

- दी हाईटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री - धौलपुर
  स्थापना - 1964 मे, सार्वजनिक क्षेत्र
- सेमकोर ग्लास इंडस्ट्रीज - कोटा
  सार्वजनिक क्षेत्र, टी. वी. पिक्चर ट्यूब बनाती हैं।
- धौलपुर ग्लास वर्क्स - धौलपुर
  निजि क्षेत्र मे स्थापित

- सेट गोबेन ग्लास फैक्ट्री - कहरानी (भिवाडी)
  समझौता - 2008 मे फ्रांस तथा राज्य सरकार के साथ
  उद्घाटन - 2010

3 नमक उद्योग :-

केन्द्र सरकार का उपक्रम :-

- सांभर झील (जयपुर ग्रामीण) -> देश का 8.9% नमक उत्पादन
  -> राज्य का 80% नमक उत्पादन

राज्य सरकार का उपक्रम :-

1 डीडवाना झील -> राजस्थान स्टेट कैमिकल वर्क्स - 1964
-> राजस्थान स्टेट सॉल्ट वर्क्स - 1960

2 पचपदरा (बालोतरा) -> सर्वश्रेष्ठ नमक क्योंकि यहॉ के नमक मे सोडियम क्लोराइड (NaCl) की मात्रा 98% तक हैं।

D इंजीनियरिंग उद्योग

CEERI - 1953	CIMMCO - 1957	MEMU - 2013
- झुन्झुनू	- भरतपुर	- गुलाबपुरा (भीलवाडा)
सेन्ट्रल इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर रिसर्च इन्स्टीट्यूट	सेन्ट्रल इण्डिया मशीनरी मेन्युफेक्चरिंग	मेन इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट
उद्देश्य - इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र मे अनुसंधान	उद्देश्य - रेल के डिब्बे का निर्माण	उद्देश्य - इलेक्ट्रॉनिक रेल के डिब्बे का निर्माण

- कृषि औजार कारखाना - जयपुर
- एशिया का सबसे बड़ा बियरिंग निर्माण कारखाना :-
  नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज - जयपुर

> केन्द्र सरकार के राजस्थान मे निम्न उपक्रम हैं :-

1. हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड - उदयपुर
   स्थापना - 1966
   सहयोग - ग्रेट ब्रिटेन
   इसके दो स्मेल्टर हैं - 1. देबारी (उदयपुर)
   2. चन्देरिया (चित्तौड)

2. हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड - खेतड़ी (नीमका थाना)
   स्थापना - 1967
   सहयोग - अमेरिका

3. हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (HMT) - अजमेर
   स्थापना - 1967
   सहयोग - चेकोस्लोवाकिया (चेकगणराज्य)

4. इन्स्ट्रुमेंटेशन लिमिटेड - कोटा
   स्थापना - 1965

5. मॉडर्न बेकरीज - जयपुर
   स्थापना - 1965

6. हिन्दुस्तान सॉल्ट लिमिटेड - सांभर झील (जयपुर ग्रामीण)
   स्थापना - 1960

   इसकी सहायक शाखा के रूप मे "सांभर सॉल्ट लिमिटेड" की स्थापना की गई।

7. राजस्थान ड्रग्स एण्ड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड - जयपुर
स्थापना - 1978

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

• राजस्थान की औद्योगिक नीतियाँ :-

क्र.	नीति		तिथि	मुख्यमंत्री
1	प्रथम नीति	-	24 जून 1978	मुख्यमंत्री - भैरोसिंह शेखावत
2	द्वितीय नीति	-	अप्रेल 1991	
3	तीसरी नीति	-	जून 1994	
4	चौथी नीति	-	जून 1998	
5	पाँचवी नीति	-	जून 2010	मुख्यमंत्री - अशोक गहलोत
6	छठी नीति	-	दिसम्बर 2019	

• राजस्थान मे सर्वाधिक निर्यात - इंजीनियरिंग तथा कपड़ो का किया जाता है।

• भारत का मेनचेस्टर - अहमदाबाद (गुजरात)
उत्तरी भारत का मेनचेस्टर - कानपुर (UP)
दक्षिणी भारत का मेनचेस्टर - कोयम्बटूर (तमिलनाडु)
राजस्थान का मेनचेस्टर - भीलवाड़ा

आर्थिक राजधानियाँ

भारत
मुम्बई (महाराष्ट्र)

राजस्थान
कोटा

- औद्योगिक नगरी :-

  भारत → कानपुर

  राजस्थान → कोटा

- कपड़ो की राजधानी :-

  भारत → मुम्बई

  राजस्थान → भीलवाड़ा

- राजस्थान का कानपुर :- कोटा

राज्य की सिंचाई परियोजनाएँ

सिंचाई परियोजनाओं को निम्न भागो मे विभाजित किया गया है :-

1 लघु 2. मध्यम 3. वृहत्

लघु सिंचाई	मध्यम सिंचाई	वृहत् सिंचाई
2000 हेक्टेयर से कम	2 से 10,000 हेक्टेयर तक	10,000 हेक्टेयर से अधिक

1. भाखड़ा नागल परियोजना ▶ राजस्थान + पंजाब + हरियाणा

* 1959 मे भाखड़ा नागल समझोते के तहत्
* राजस्थान का हिस्सा 15.22% निर्धारित किया।
* यह परियोजना ** सतलुज नदी पर है।

इस परियोजना पर 2 बांध है :-

- भाखड़ा (हिमाचल प्रदेश) — पंजाब
- नागल बांध (पंजाब) — 2 नहर
  - बिस्त दो आब
  - नागल परियोजना — पंजाब + हरियाणा + राजस्थान

2. व्यास परियोजना ► साझेदारी - राजस्थान + पंजाब + हरियाणा

* राजीव लोंगोवाल समझौता - 1985

* ईराडी आयोग - 1986

इस परियोजना पर 2 बांध हैं :-

पोंग (हिमाचल प्रदेश)
राजस्थान → 59 %
का हिस्सा

पडोह (हिमाचल प्रदेश)
20 %

3. चम्बल घाटी परियोजना ► साझेदारी - राजस्थान + मध्यप्रदेश

राजस्थान 50 %, मध्यप्रदेश 50 %

बांध

गांधीसागर बांध (MP)	कोटा बैराज कोटा	राणाप्रताप सागर चित्तौड़गढ़	जवाहरसागर कोटा
निर्माण - 1959	1960	1970	1972
विद्युत उत्पादन - 23 MW × 5 यूनिट = 115 MW	विद्युत उत्पादन नहीं	43 MW × 4 यूनिट = 172 MW	33 MW × 3 यूनिट = 99 MW
* सर्वाधिक भराव क्षमता		* राज्य में सर्वाधिक भराव क्षमता वाला बांध * रावतभाटा परमाणु अनुसंधान को जलापूर्ति करना	

कुल विद्युत उत्पादन = 386 MW
राजस्थान का हिस्सा = 193 MW

4. गंगनहर परियोजना ► राज्य मे प्रवेश - शिवपुर (श्रीगंगानगर)

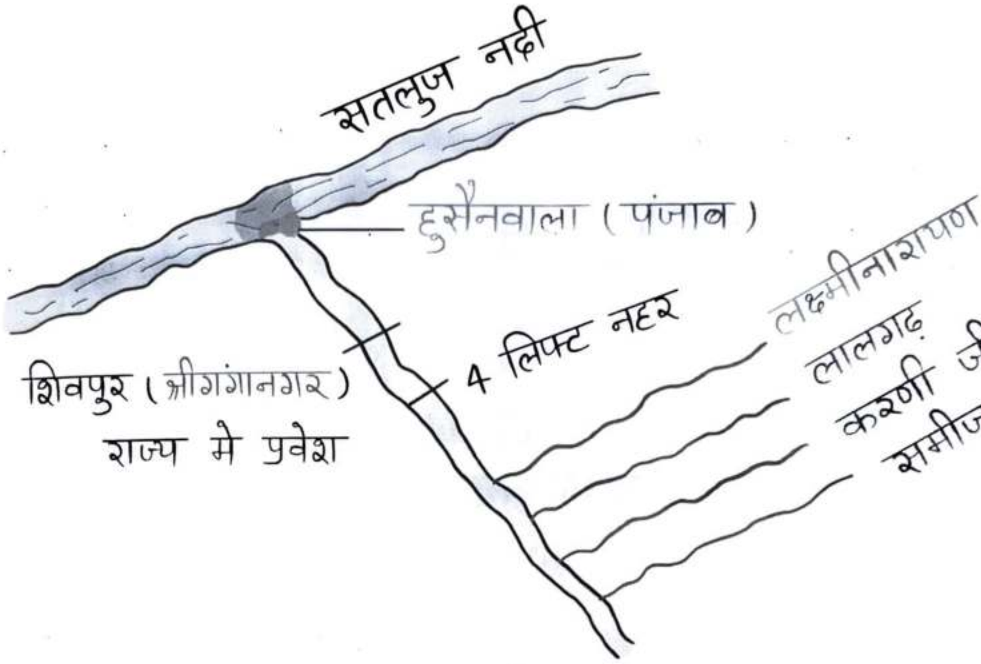

* यह राजस्थान की प्रथम सिंचाई परियोजना है जिससे श्रीगंगानगर तथा अनुपगढ़ लाभान्वित है।

* इस नहर के आधुनिकीकरण के लिए सन् 2000 मे स्वीकृति दी गई जो 2008 मे पूरी हो गई।

* यह राज्य की प्रथम पक्की नहर प्रणाली है।

* कुल लम्बाई – 129 KM
  राज्य में – 17 KM

5. राजस्थान नहर परियोजना

जनक - कंवरसेन

कंवरसेन ने 1948 मे 'बीकानेर राज्य को पानी की आवश्यकता' लेख मे इसका उल्लेख किया।

आधारशिला - 31 मार्च 1958 को गोविन्दवल्लभ पंत के द्वारा।

उद्घाटन - 11 अक्टूबर 1961 को सर्वपल्ली राधाकृष्णन के द्वारा रावतसर शाखा की नौरंगदेसर वितरिका से किया गया।

* 2 नवम्बर 1984 को इस नहर का नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP/IGCP) कर दिया।

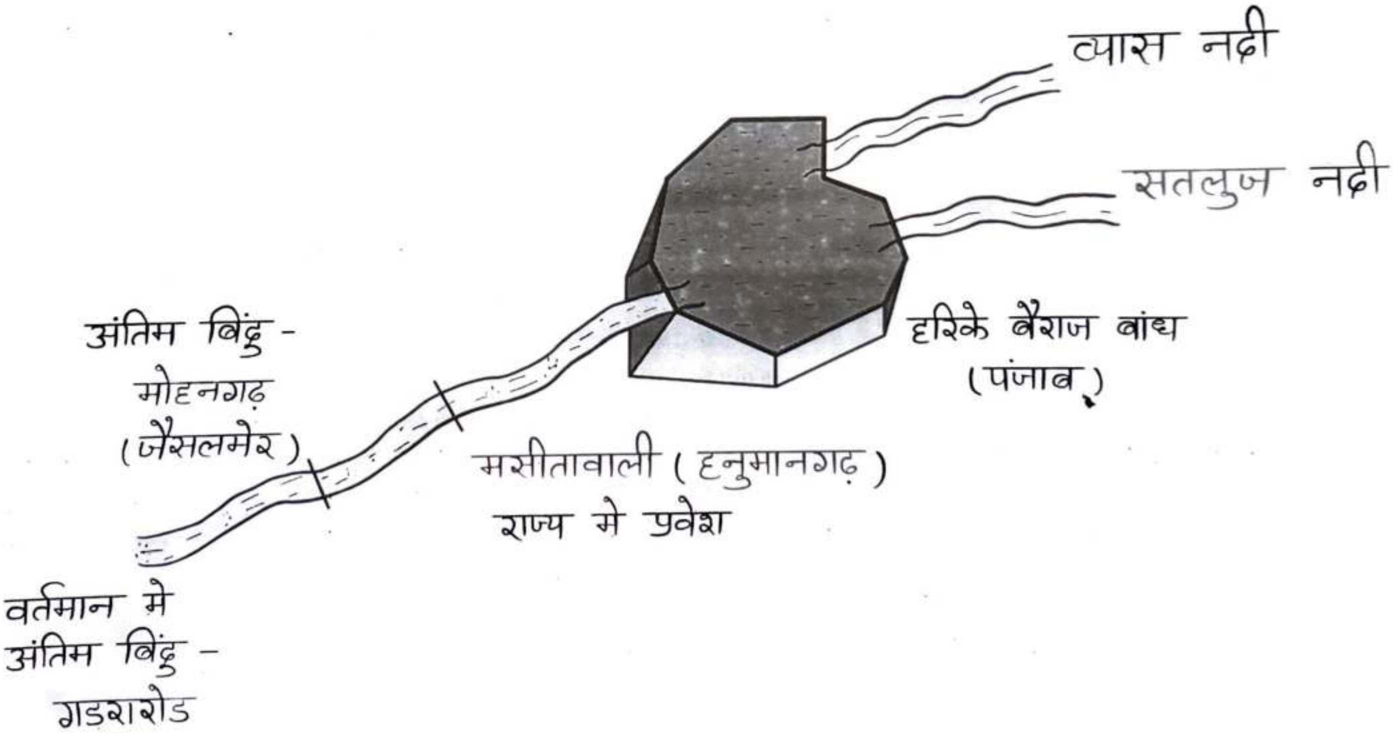

IGNP मे सात लिफ्ट नहरें :-

नया नाम	पुराना नाम
1. चौधरी कुंभाराम	गंधेली साहवा
जिला - हनुमानगढ़, चुरू, झुन्झुनू, नीम का थाना, बीकानेर	
2. कंवरसेन	लूणकरणसर
श्रीगंगानगर, अनुपगढ़, बीकानेर	
3. पन्नालाल बारूपाल	गजनेर
बीकानेर, नागौर, डीडवाना कुचामन	
4. वीर तेजाजी	बांगडसर
बीकानेर	
5. करणी सिंह	कोलायत
बीकानेर, फलौदी	
6. गुरु जम्भेश्वर	फलौदी
बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर, जोधपुर ग्रामीण, जोधपुर	
7. जयनारायण व्यास	पोकरण
फलौदी, जैसलमेर	

1. चौधरी कुंभाराम लिफ्ट नहर
2. कंवरसेन
3. पन्नालाल बारूपाल
4. वीरतेजा
5. करणी सिंह लिफ्ट नहर
6. गुरू जम्भेश्वर
7. जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर

IGNP मे 9 शाखाएँ हैं :-

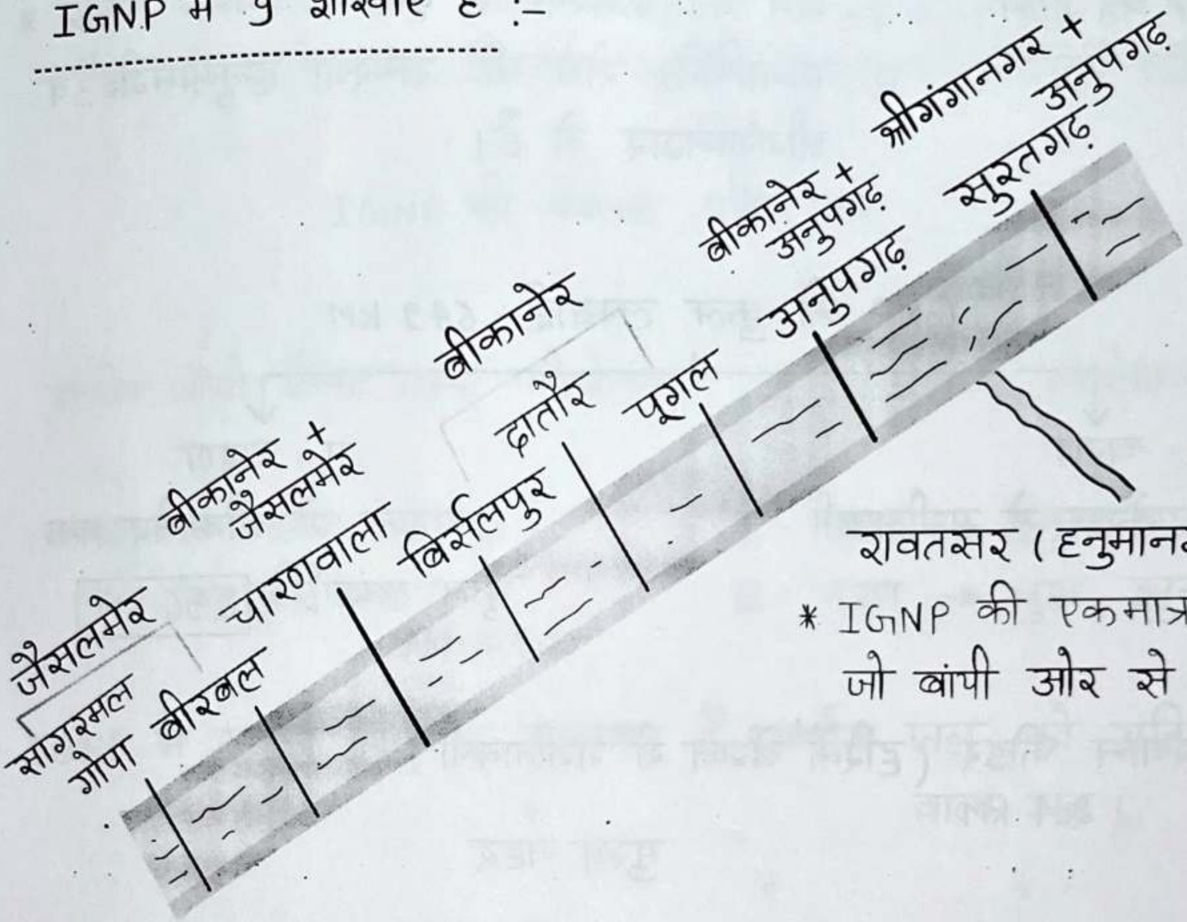

*. सागरमल गोपा शाखा से दो उपशाखाएँ निकाली गई हैं जो निम्न हैं - 1 लीलवा 2. दीघा

* IGNP की सबसे लम्बी लिफ्ट नहर कवंरसेन जबकि छोटी वीरतेजाजी हैं।

* IGNP के लाभ :-

1 खाद्यानो मे बढावा।
2 किसानो की आत्मनिर्भरता।
3 मरुस्थल के प्रसार मे कमी क्योकिं खेत - खलिहान हरे - भरे हो गये।

* IGNP की हानि :- 1. सेम की समस्या मे वृद्धि
2. सर्वाधिक सेम की समस्या हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर मे है।

IGNP की कुल लम्बाई - 649 KM

I - चरण
हरिकें बैराज से मसीतावली

II - चरण
पूगल से बीकानेर तक
कुल लम्बाई = 256 KM

राजस्थान फीडर (हरिकें बैराज से मसीतावली)
204 KM

पंजाब 150 KM
हरियाणा 19 KM
राजस्थान 35 KM

मुख्य नहर
मसीतावली से पूगल
कुल लम्बाई = 189 KM

* IGNP की राजस्थान मे कुल लम्बाई = 256 + 189 = 445 KM
* मोहनगढ़ से गडरारोड़ तक इसकी कुल लम्बाई = 90 KM

* IGNP की गहराई - 21 फिट
चौंडाई - 134 फिट

* IGNP मे सिंचाई :- प्रथम चरण - 5.46 लाख हैक्टेयर
दूसरा चरण - 10.71 लाख हैक्टेयर
कुल 16.17 लाख हैक्टेयर पर सिंचाई उपलब्ध हो रही है।

* राज्य मंत्रीमण्डल की बैठक 2005 के अनुसार :- 19.63 लाख हैक्टेयर भूमि पर सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाई जायेगी।

IGNP की पेयजल परियोजना

- राजीव गाँधी लिफ्ट नहर परियोजना
  - कायलाना झील (जोधपुर) को जलापूर्ति करना
- आपणी परियोजना
  - I - चरण → हनुमानगढ़, चुरू
  - II - चरण → चुरू, झुन्झुनू

IGNP मे स्काडा सिस्टम उपलब्ध है अर्थात जल को गति देने वाला यंत्र।

6. राजीव गांधी सिद्धमुख नोहर परियोजना ►

नींव - 1989
पानी प्रवाहित - 2002

* वित्तिय सहायता - विश्व बैंक के द्वारा शुरुआत मे वित्तीय दी जा रही थी लेकिन भारत ने परमाणु परीक्षण कर लिया इसलिए वित्तीय सहायता बंद कर दी गई।

लाभान्वित जिले - हनुमानगढ़, चुरू

7. रतनपुरा परियोजना ► पानी प्रवाहित - 1999
लाभान्वित जिले - हनुमानगढ़, चुरू

8. यमुना लिंक नहर परियोजना ►

निर्माण - 1964-86
लाभान्वित जिला - भरतपुर

9. भरतपुर नहर ►

निर्माण - 1964
लाभान्वित जिला - भरतपुर
जलापूर्ति - यमुना नदी

10. जंवाई बांध परियोजना ►

पाली, उदयपुर

* पश्चिमी राजस्थान का सबसे लम्बा बांध जंवाई बांध है।

11. जाखम परियोजना ►

प्रतापगढ़

* यह बांध जनजाति उपयोजना के तहत निर्मित है।

12. बीसलपुर परियोजना ►

टोंक (देवली तहसील)

* राजस्थान की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना है।
* जलापूर्ति - केकड़ी, सरवाड़, ब्यावर, किशनगढ़, अजमेर, दूदू, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, भीलवाड़ा, नागौर (नवीनतम जोडा गया)।
* टोंक जिले को सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाता है।

13. पांचना बांध ▶
(करौली)

लाभान्वित जिले - करौली, भरतपुर

* राजस्थान का मिट्टी से निर्मित सबसे लम्बा बांध
* सहयोग - अमेरिका
* यह बांध 5 नदियो के संगम पर निर्मित हैं :-

1. अटा
2. माची
3. भैंसावट
4. बरखेड़ा
5. भद्रावती

> राजस्थान मे निम्न मध्य सिंचाई परियोजनाएँ निर्मित हैं -

1. गरदड़ा परियोजना ▶ बूंदी
   नदी - मांगली, गणेशनाला, डुँगरी

2. तकली परियोजना ▶ कोटा - तकली नदी

3. ल्हासी परियोजना ▶ बांरा - ल्हासी नदी

4. हथियादेह परियोजना ▶ बांरा - हथियादेह नदी

5. गागरिन परियोजना ▶ झालावाड़ - कालीसिंध नदी

6. राजगढ़ परियोजना ▶ झालावाड़ - आहु तथा कंठाली नदी

राजस्थान की प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ :-

1. कोटा
   - आलनिया
   - हरिशचन्द्र
   - सावनभादो
   - जवाहर सागर
   - गोपालपुर

2. बांरा
   - रेतड़ी
   - विलास

3. झालावाड़
   - कालीसिंध
   - चोली
   - छापी

4. टोंक
   - डिग्गुसागर
   - टोरडीसागर

5. सवाईमाधोपुर
   - मोरेलसागर
   - इंदिरा गांधी लिफ्ट नहर परियोजना

6. करौली
   - चूलीदेह
   - कालीसिंध

7. ब्यावर
   नारायणसागर परियोजना

8. सिरोही
   - सुकली
   - सेलवाड़ा

9. चित्तौड़गढ़
   - ओराई परियोजना
   - गंभीरी परियोजना

पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना ▸

वर्तमान नाम - पूर्वी क्षेत्र नहर परियोजना

[Eastern Region Canal Project - E.R.C.P.]

लागत - 45 हजार करोड़

नदी - चम्बल तथा इसकी सहायक नदियाँ

* यह परियोजना 21 जिलो के लिए बनाई गई है - कोटा, बूँदी, बारा, झालावाड़, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, करौली, जयपुर, दौसा, टोंक, अजमेर

* पूर्वी क्षेत्र नहर परियोजना में कालीसिंध नदी पर नवनेरा बैराज बांध निर्मित किया जा रहा है।

* पूर्वी क्षेत्र नहर परियोजना में 26 मध्यम तथा लघु सिंचाई परियोजनाओं को मिलाया जायेगा।

* इस परियोजना से 2051 तक जल उपलब्ध करवा दिया जायेगा।

* यह परियोजना राष्ट्रीय स्तर का दर्जा प्राप्त करने के लिए प्रस्तावित है।

सिंचाई के स्रोत :-

	कुएँ	नलकूप	नहर	तालाब	अन्य
	24%	42%	30%	1%	3%
सर्वाधिक सिंचाई →	जयपुर	जयपुर	श्रीगंगानगर हनुमानगढ़	भीलवाड़ा	

⇒ E.R.C.P. से DMIC (दिल्ली मुम्बई इण्डस्ट्रियल कोरिडोर) को जल उपलब्ध करवाया गया।

⇒ E.R.C.P. का समझौता 28 जनवरी 2024 को राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के मध्य हुआ।

राजस्थान की प्रमुख झीलें

② प्रकार

- मीठे पानी की झीलें
- खारे पानी की झीले

मीठे पानी की झीलें

1. जयसमंद झील ► (सलूम्बर)

निर्माण - जयसिंह
└ 1685-91

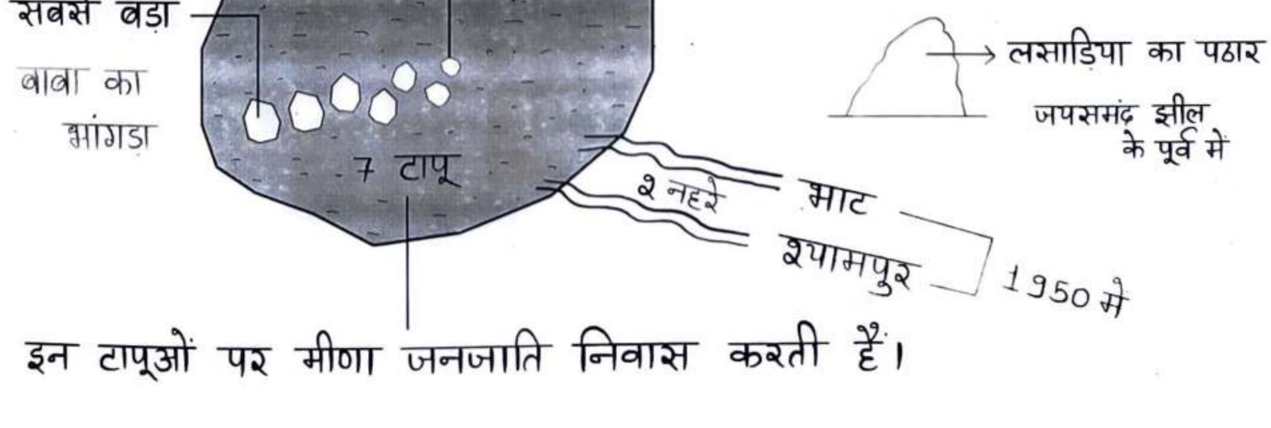

इन टापूओं पर मीणा जनजाति निवास करती हैं।

उपनाम - ढेबर झील / जलचरों की बस्ती

* जयसमंद झील मे स्थित मगरा टापू पर आइसलैण्ड रिसॉर्ट होटल निर्मित है।

२. राजसमंद झील ▸ (राजसमंद)

निर्माण - राजसिंह (1662-71)

* राजसमंद झील की उत्तरी पाल को " नौचौकी " पाल कहते हैं।
* इस झील के किनारे 25 शिलालेखों पर संस्कृत भाषा में 'राजसिंह प्रशस्ति' रणछोड़भट्ट तेलंग के द्वारा अपने ग्रन्थ " अमरकाव्य वंशावली " के ऊपर आधारित हैं।
* इस झील के किनारे द्वारिकाधीश तथा घेवरमाता का मंदिर हैं।

3 नक्की झील ▸ (सिरोही)

किवदंती के अनुसार - देवताओं के नाखूनों द्वारा निर्मित

* यह क्रेटर निर्मित झील है अर्थात् ज्वालामुखी क्रिया द्वारा निर्मित।
* राजस्थान की सबसे ऊँची तथा सबसे गहरी झील हैं।
* गरासिया जाति अपनी अस्थियों का इस झील मे विसर्जन करती हैं।
* आकृतियाँ - टॉड-रॉक, नन-रॉक, नन्दी रॉक

4. पुष्कर झील ► (अजमेर)

घाट - 52
परम्परा - दीपदान
मेला - कार्तिक पूर्णिमा
राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 58

* 1705 मे गुरु गोविन्दसिंह ने यहाँ गुरु ग्रन्थ का पाठ किया।

Note → 944 ई. इसका निर्माण नरेश नाहर राव के द्वारा।

* 1809 मे मराठा सरदारों के द्वारा पुन: निर्माण करवाया।
* कालीदास ने यहाँ अभिज्ञानशाकुंतलम की रचना की।
* वेदव्यास ने यहाँ महाभारत की रचना की।
* 1911 मे मेड़म मैरी यहाँ आई थी जिसके नाम पर 'जनाना घाट' नाम रखा गया।
* 1997 मे कनाडा के सहयोग से इसमें साफ-सफाई का कार्य किया जा रहा हैं।
* 2006 मे ब्रह्माजी के मंदिर को राष्ट्रीय धरोहर का दर्जा दिया।
* यह राजस्थान की सबसे पवित्र तथा प्रदूषित झील हैं।

5. कोलायत झील ► (बीकानेर)

घाट - 52
परम्परा - दीपदान
मेला - कार्तिक पूर्णिमा
* कपिल मुनि का जो सांख्य दर्शन के प्रणेता
राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 62

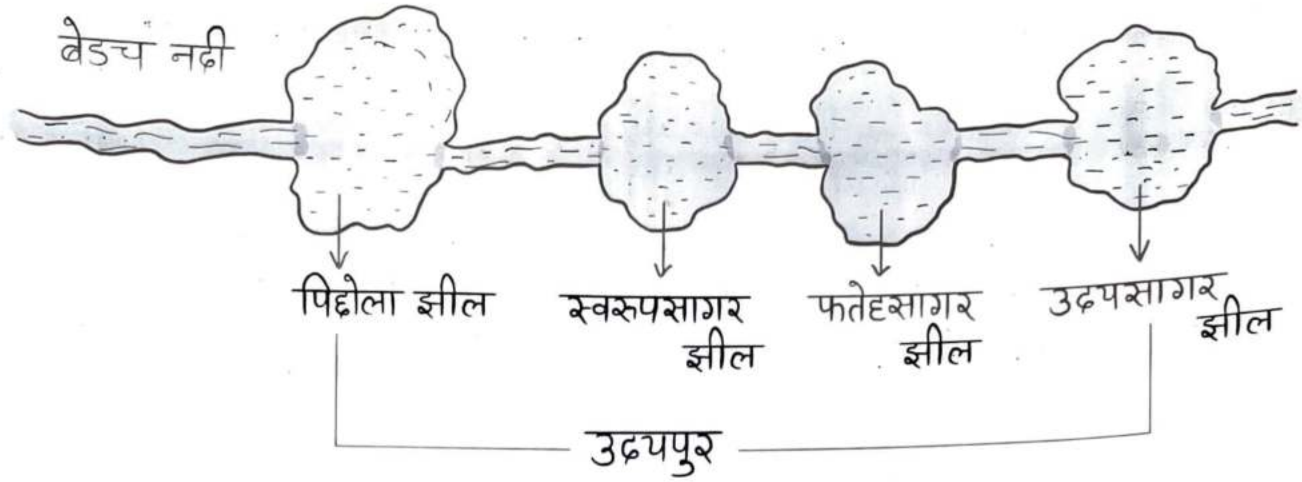

6. पिछोला झील ▸ (उदयपुर)

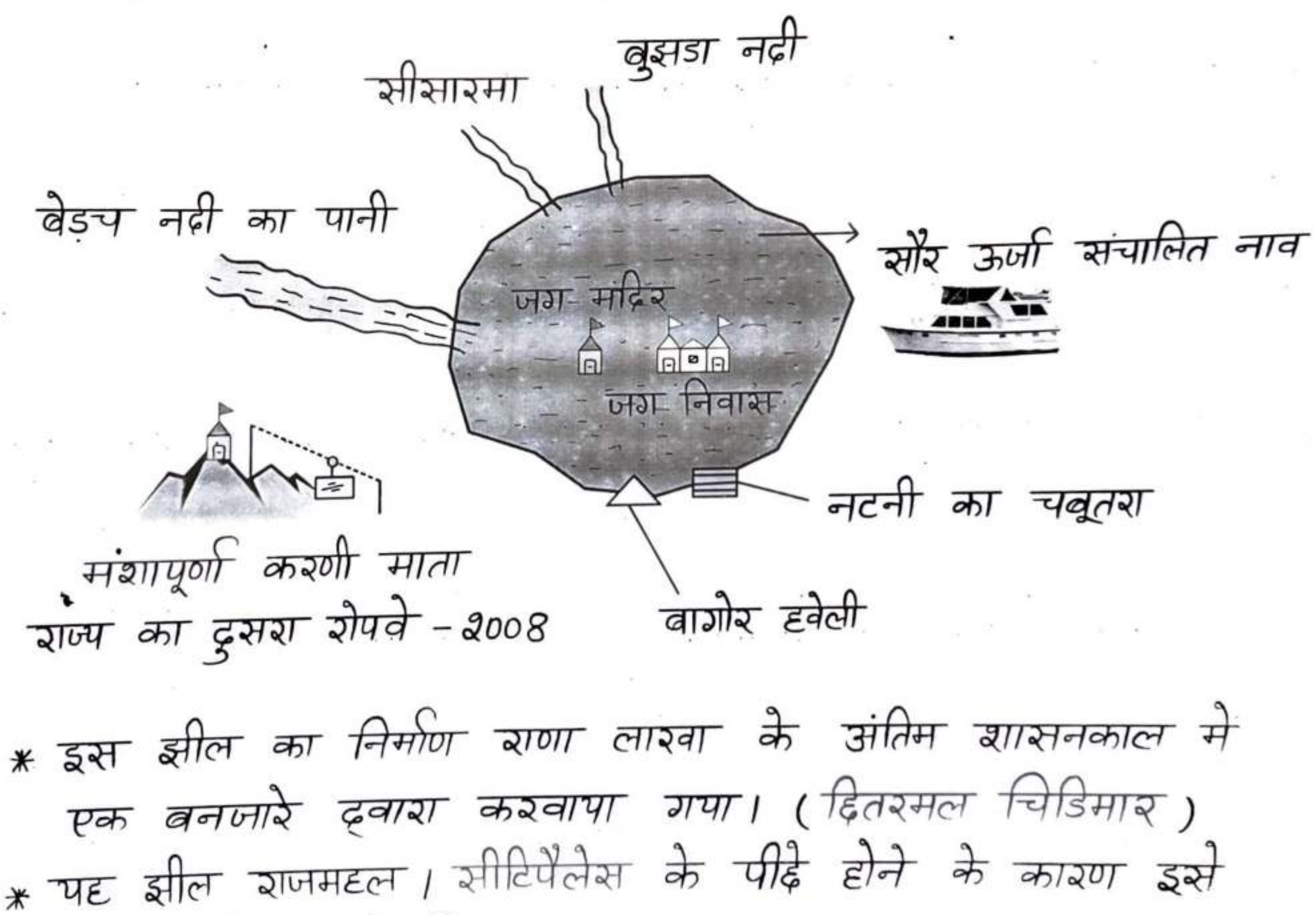

* इस झील का निर्माण राणा लाखा के अंतिम शासनकाल मे एक बनजारे द्वारा करवाया गया। (छितरमल चिडिमार)
* यह झील राजमहल / सीटिपैलेस के पीछे होने के कारण इसे पिछोला झील कहते हैं।
* इस झील के नजदीक 'दूधतलाई' स्थित हैं।

7. स्वरूपसागर झील ▶ (उदयपुर)

निर्माण - 1857 स्वरूप सिंह द्वारा

8. फतेहसागर झील ▶ (उदयपुर)

नींव - 1678 मे ड्यूक ऑफ कन्नौट द्वारा
निर्माण - 1688 जयसिंह द्वारा
पुन: निर्माण - 1888 मे फतेहसिंह द्वारा

9. उदयसागर झील ▶ (उदयपुर)

निर्माण - 1559 मे उदयसिंह के द्वारा

10. फॉयसागर झील

(अजमेर)

निर्माण - इंजीनियर फॉय के द्वारा
(1891-92)

11. अन्नासागर झील

(अजमेर)

निर्माण - अर्णोराज के द्वारा
1137 ई. मे

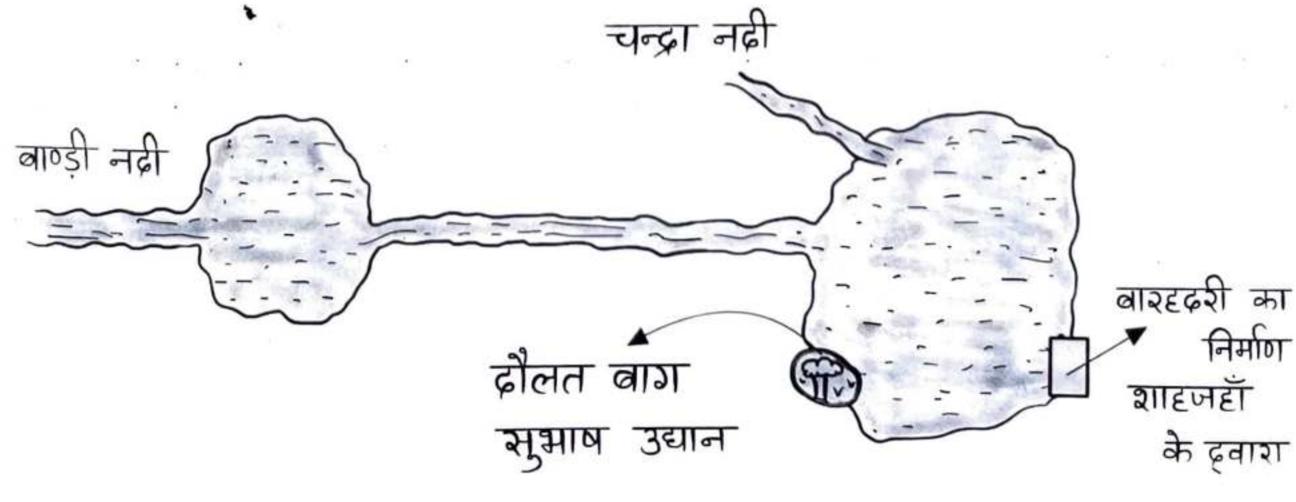

12. कायलाना झील ► (जोधपुर)

* राजस्थान की एकमात्र झील जिसमें IGNP का पानी आता है।
* यह एक प्राकृतिक झील है जिसका आधुनीकरण 1872 मे सरप्रताप के द्वारा किया गया।

13. बालसमंद झील ► (जोधपुर ग्रामीण)

इसका निर्माण 1159 मे बालक राव के द्वारा करवाया गया।

14. पन्नाशाह झील ► (खेतड़ी - नीम का थाना)

निर्माण - सेठ पन्नाशाह द्वारा 1870 में।

* खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह के आमंत्रण पर पधारे स्वामी विवेकानन्द को इस झील मे बने आवास मे ठहराया गया।

15. सीलीसेढ़ झील ► (अलवर)

निर्माण - महाराजा विनय सिंह ने 1845 ई. मे अपनी महारानी शीला के लिए करवाया।

राजस्थान में मीठे पानी की प्रमुख झीलें

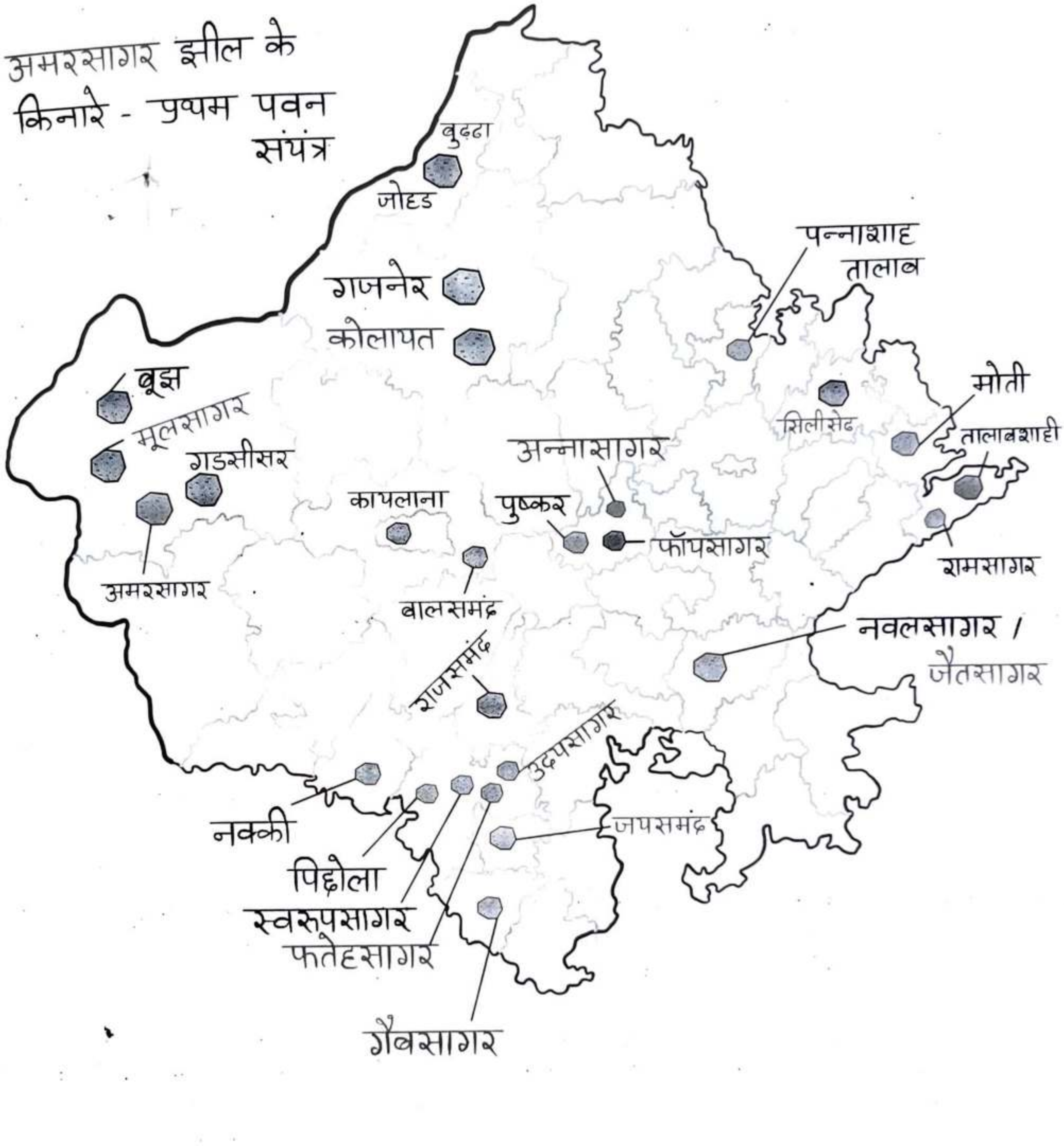

खारे पानी की झीलें

1. सांभर झील ▸ (जयपुर ग्रामीण)

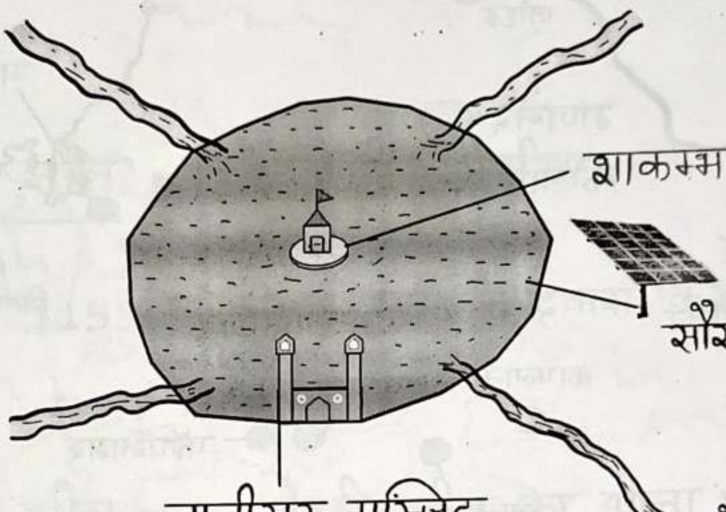

* इस नहर का निर्माण वासुदेव चौहान के द्वारा करवाया गया।
* यह राज्य का दूसरा रामसर स्थल (दलदल) है।
  23 मार्च 1990 को शामिल किया गया।
* यह राजस्थान की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है।
* नमक उत्पादन — भारत - 8.9 %, राजस्थान - 80 %
* प्राकृतिक रूप से यह झील जयपुर ग्रामीण, डीडवाना कुचामन, अजमेर मे विस्तारित है।
* सांभर झील मे राजहंस / फ्लेमिंगोज पक्षी आते है।

* सांभर झील के नमक की लवणता को कम करने के लिए 'स्वेडाफ्रूटी' वनस्पति का उपयोग किया जाता है।

2. डीडवाना झील ▸ (डीडवाना कुचामन)

* यहाँ का नमक खाने योग्य नहीं है क्योंकि यहाँ के नमक मे सोडियम सल्फेट की मात्रा अधिक होती है जिसका उपयोग रसायन तथा कागज उद्योग मे किया जाता है।
* यहाँ सोडियम सल्फेट का कारखाना 1964 मे स्थापित किया गया।
* यहाँ निम्नं दो उपक्रम है :- 1. राजस्थान स्टेट कैमिकल्स वर्क्स
  2. राजस्थान स्टेट सॉल्ट वर्क्स

3. कुचामन झील ▸ (कुचामन)

4. डेगाना झील ▸ (नागौर)

5. नावां झील ▸ (कुचामन)

* यहाँ आदर्श उद्योग लवण केन्द्र स्थापित किया गया है। जिसका उद्देश्य उच्च गुणवत्ता का नमक उपलब्ध करवाना है।
* राज्य की सबसे बडी नमक मण्डी नावां है।

6. पचपदरा झील ► (बालोतरा)

* यह राजस्थान की सर्वाधिक खारी / लवणता वाली झील है।
* यहाँ के नमक मे NaCl (सोडियम क्लोराइड) की मात्रा 98% तक होती है।
* यहाँ खारवाल जाति के द्वारा 'मोरली' नामक झाड़ी से नमक बनाया जाता है।

⇒ राजस्थान मे सर्वाधिक खारे पानी की झीले डीडवाना - कुचामन मे है।

⇒ राज्य की खारे पानी की झीले टैथिस सागर का अवशेष है।

Note ⇒ झीलो की नगरी उदयपुर को कहते है तथा राज्य की सर्वाधिक मीठे पानी की झीले उदयपुर मे है।

⇒ राज्य के पश्चिमी भाग में सर्वाधिक खारे पानी की झीले है।

राजस्थान में खारे पानी की प्रमुख झीलें

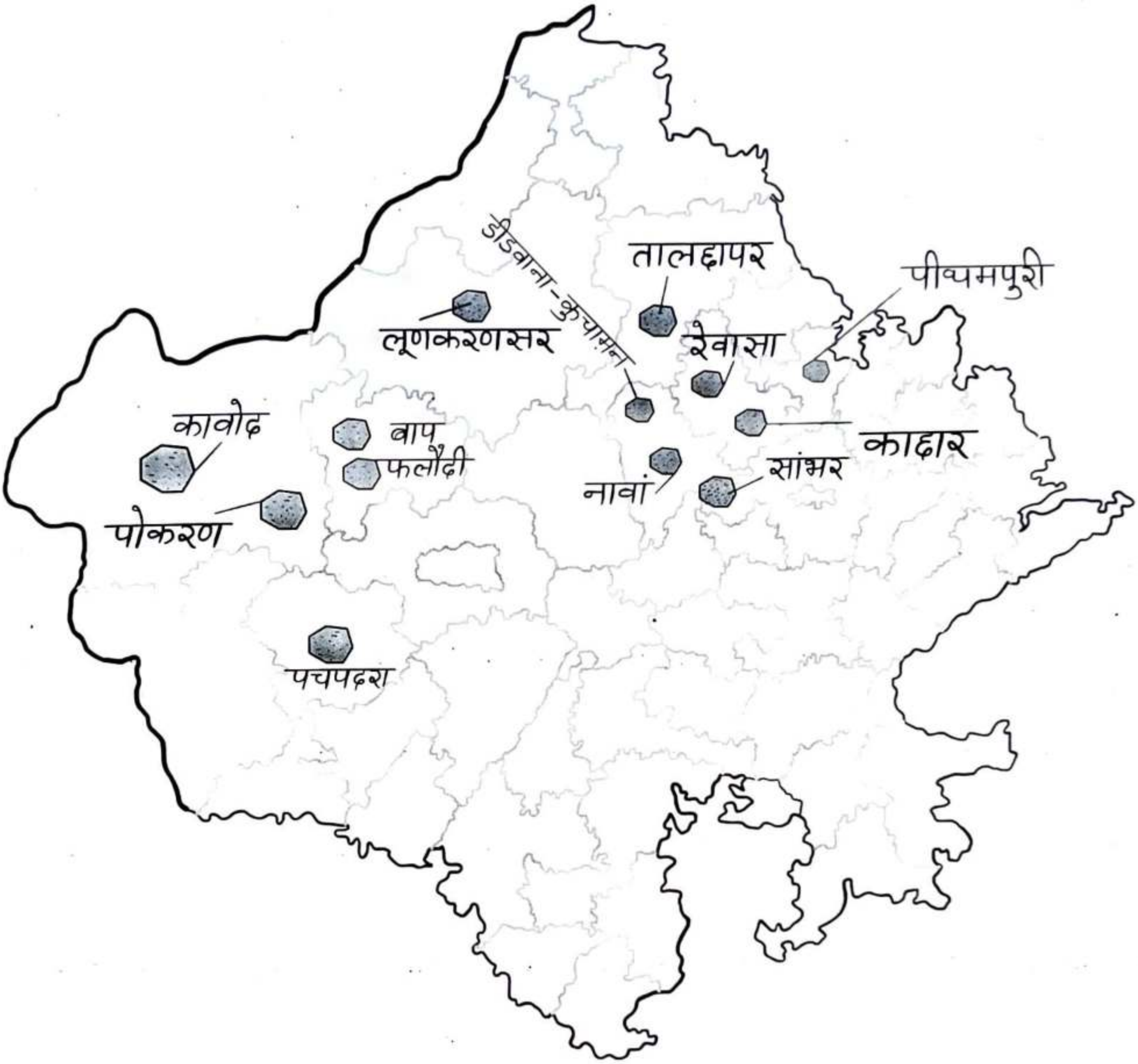

राजस्थान की मृदा

मृदा का अध्ययन – पेडोलॉजी

<u>मृदा निर्माण के कारक –</u>

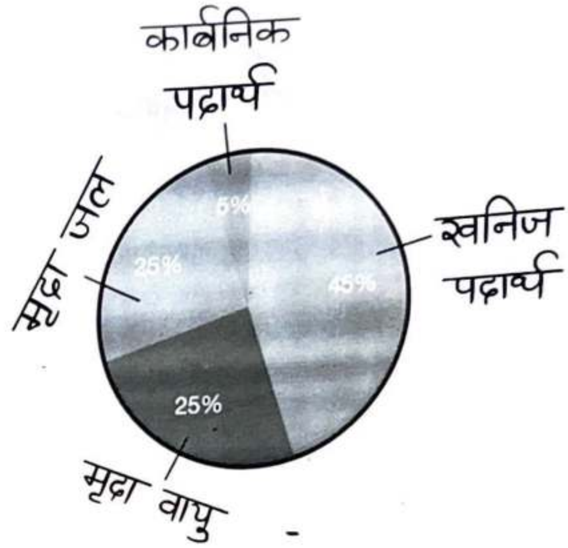

- राजस्थान की मिट्टीयों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है –

मिट्टीयों मे सर्वाधिक विषमता होती है।

1. <u>मरुस्थलीय मिट्टी</u> ▸ इस मिट्टी मे जल धारण करने की क्षमता अधिक है इस कारण इसे प्यासी मिट्टी कहते है।

* राजस्थान मे सर्वाधिक विस्तार इसी मिट्टी का है।

विस्तार – बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, चुरु, अनूपगढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़।

फसल – जीरा, ईसबगोल, ग्वार, बाजरा, मोठ, चना।

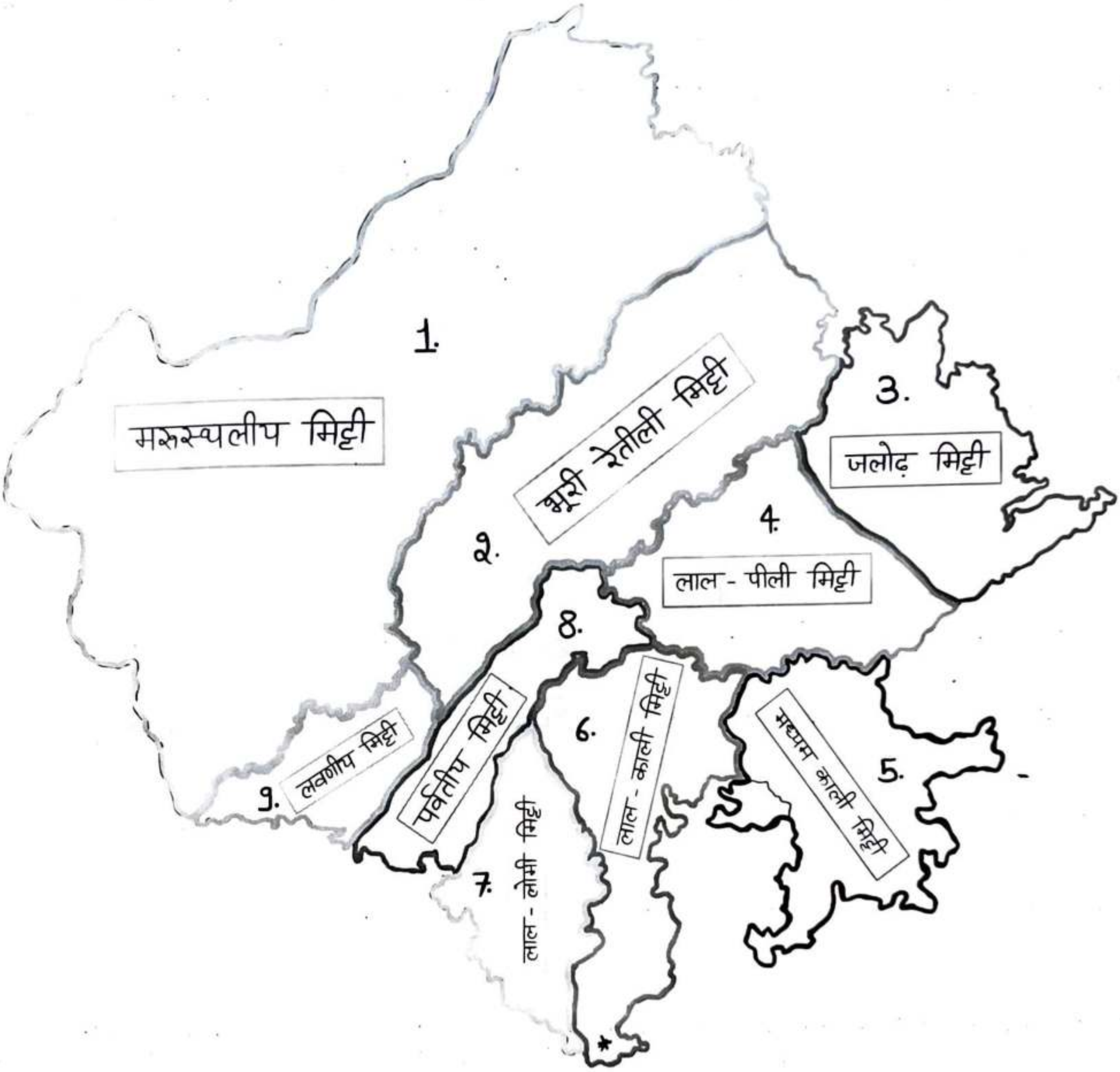

२ भूरी रेतीली मिट्टी

विस्तार - सीकर, चुरु, झुन्झुनू, नीम का थाना, नागौर, डीडवाना, पाली ।

फसल - जीरा, ईसबगोल, ग्वार, बाजरा, मोठ, चना ।

3. जलोढ़ मिट्टी

विस्तार - अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, जयपुर ग्रामीण, डीग, खैरथल तिजारा, कोटपुतली बहरोड

फसल - गेहुँ, जौ, सरसों।

*. यह सर्वाधिक उपजाऊ मिट्टी है।

4. लाल - पीली मिट्टी

विस्तार - अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, करौली

फसल - मुँगफली

5. मध्यम काली मिट्टी

विस्तार - हाड़ौती क्षेत्र

फसल - कपास, सोयाबीन, गन्ना

6. लाल - काली मिट्टी

विस्तार - उदयपुर, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, सलूम्बर

फसल - मक्का, अफीम, कपास, गन्ना

7. लाल - लोमी मिट्टी

विस्तार - डूँगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़

फसल - मक्का, अफीम, कपास, गन्ना

8. पर्वतीय मिट्टी

विस्तार - अजमेर, राजसमंद, सिरोही, उदयपुर, पाली।

फसल - मक्का

*. पर्वतीय ढालों पर मक्का की कृषि की जाती है। (सीढ़ीनुमा)

9. लवणीय मिट्टी

विस्तार - जालौर, साचौर, सिरोही, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

फसल - अमरूद, आँवला, जामुन

IMP★
• राजस्थान कृषि विभाग के अनुसार राजस्थान की मिट्टीयों को को [14] भागों मे बांटा गया है :-

1. मरुस्थलीय मिट्टी → सम्पूर्ण मरुस्थलीय जिले।

2. कैल्सीब्राउन मरुस्थलीय मिट्टी → बीकानेर, जैसलमेर

3. मरुस्थलीय / बालूका स्तूप मिट्टी → बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण

4. रेवेरिना मिट्टी → श्रीगंगानगर

5. सिरोजम मिट्टी → श्रीगंगानगर

6. जिप्सीफेरस मिट्टी → बीकानेर

7. कैल्सीब्राउन मिट्टी → सीकर, चुरू, झुन्झुनू, नीम का थाना, नागौर, डीडवाना, पाली ।

8. नवीन जलोढ़ मिट्टी → अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, खैरथल तिजारा, कोटपुतली बहरोड, जयपुर ग्रामीण ।

9. पीली भूरी मिट्टी → अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, करौली

10. नवीन भूरी मिट्टी → अजमेर, भीलवाड़ा, शाहपुरा

11. लाल - लोमी मिट्टी → उदयपुर, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, सलूम्बर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़

12. मध्यम काली मिट्टी → कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़

13. पर्वतीय मिट्टी → अजमेर, सिरोही, उदयपुर, पाली, राजसमंद ।

14. धूसर - भूरी मिट्टी → जालौर, साचौर, सिरोही, पाली, नागौर, डीडवाना कुचामन ।

• वैज्ञानिक आधार पर मिट्टीयो का वर्गीकरण :- [5] प्रकार

Note → वैज्ञानिक मिट्टीयाँ जलवायु के आधार पर वर्गीकृत की गई है।

1. एरिडोसोल्स - शुष्क जलवायु प्रदेश
2. एंटीसोल्स - अर्द्ध शुष्क तथा शुष्क जलवायु प्रदेश
3. इनसेप्टीसोल्स - अर्द्ध शुष्क, उपआर्द्र, आर्द्र जलवायु प्रदेश
4. अल्फीसोल्स - उपआर्द्र तथा आर्द्र जलवायु प्रदेश
5. वर्टीसोल्स - अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश
   *. यह मिट्टी सर्वाधिक हाड़ौती क्षेत्र मे होती है।

- नदियों के आधार पर मिट्टीयों का वर्गीकरण :-

1. घग्घर बेसिन → भूरी मटियार दोमट मिट्टी
2. लूणी बेसिन → भूरी दोमट मिट्टी
3. बनास बेसिन → भूरी मटियार दोमट मिट्टी
4. माही-चम्बल बेसिन → लाल-काली मिट्टी
5. चम्बल बेसिन → लाल-काली मिट्टी

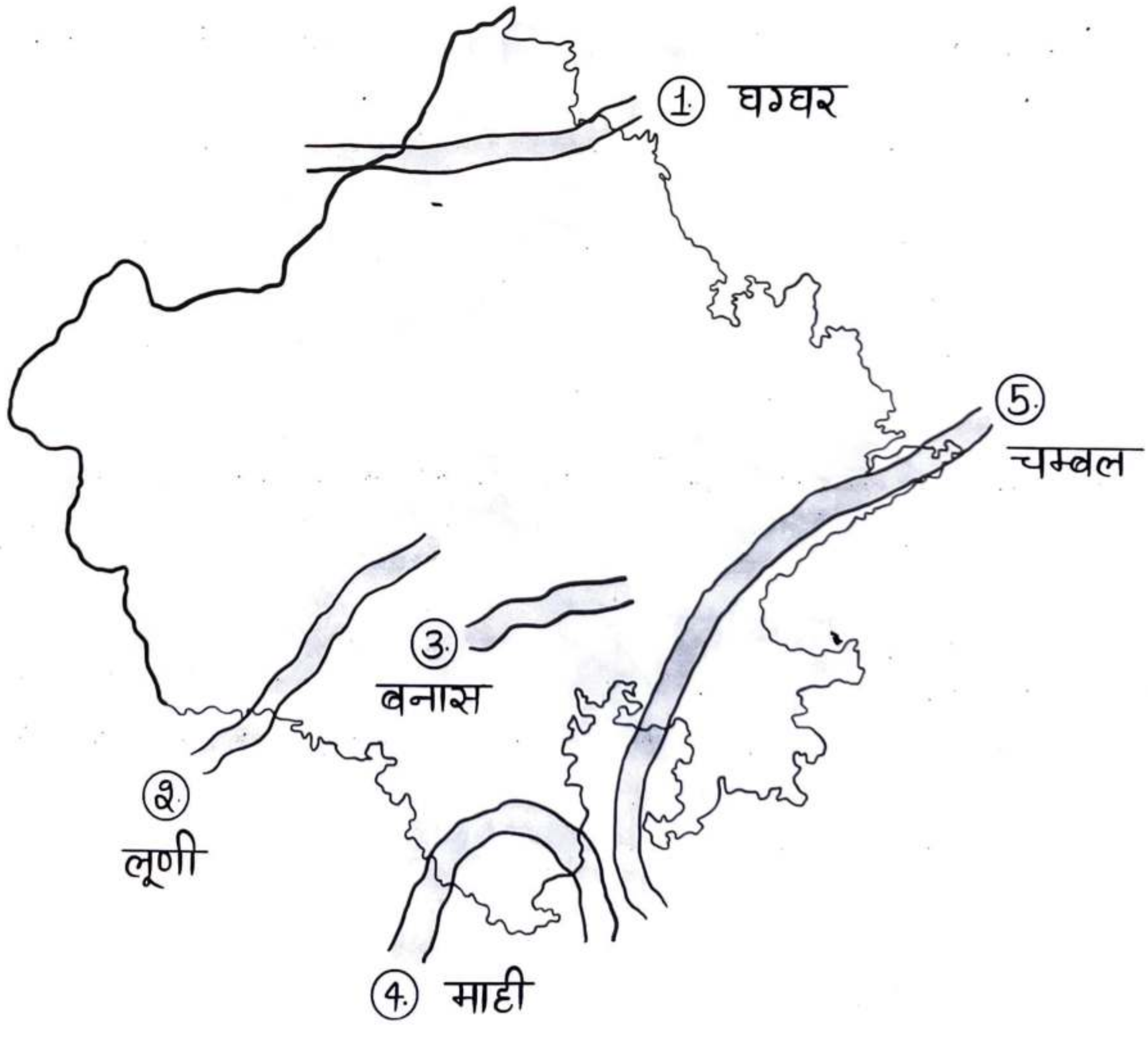

मृदा की समस्याँए ▸

वायु अपरदन :- पश्चिमी राजस्थान मे अत्यधिक गति से चलने वाली वायु के द्वारा मृदा एक स्थान से दुसरे स्थान तक चली जाती हैं तो इस प्रकार के अपरदन को वायु अपरदन कहते हैं।

*. वायु अपरदन निक्षेप का साधन भी है। इस प्रकार के अपरदन को क्षैतिज अपरदन के नाम से भी जाना जाता है जो जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, चुरू, सीकर जिलों मे सर्वाधिक होता है।

*. इन जिलों में हमें विभिन्न प्रकार के बालूका स्तूप या रेत के टीले देखने को मिलते हैं जो वायु के द्वारा निर्मित होते हैं।

आवरण अपरदन :- *. अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा के कारण भूमि की ऊपरी परत से पोषक तत्व बहकर निकल जाते हैं जिसके कारण भूमि कृषि योग्य नहीं रह पाती हैं जिसको आवरण अपरदन कहते हैं।

*. इस प्रकार का अपरदन वर्षा ऋतु में अरावली पर्वतीय प्रदेशों के पूर्वी भागों में अत्यधिक होता हैं क्योकिं यह अतिवृष्टि क्षेत्र मे पड़ता हैं। इस प्रकार के अपरदन को चादरी अपरदन भी कहते हैं तथा यह सिरोही, राजसमंद, उदयपुर में अत्यधिक होता हैं।

अवनालिका अपरदन :- इस प्रकार का अपरदन नदी के द्वारा किया जाता है।

*. यह सर्वाधिक धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, कोटा में होता है।

सेम की समस्या :- यह समस्या उस क्षेत्र में होती है जहाँ जल की मात्रा अधिक होती है। क्योंकि जल मृदा परिच्छेदिका मे चला जाता है।

*. मृदा परिच्छेदिका में उपस्थित कैल्शियम मे जल मिल जाता है जहाँ से जल तथा कैल्शियम मृदा की ऊपरी परत पर आ जाते है। यहाँ से जल वाष्पित हो जाता है तथा कैल्शियम की सफेद परत जम जाती है जिसे सेम की समस्या कहते है।

*. सेम की समस्या को दूर करने के लिए जिप्सम का उपयोग करना चाहिए।

इंडो-डच परियोजना :- शुरुआत - 2003
सहयोग - नीदरलैण्ड़
उद्देश्य - सेम की समस्या को रोकने के लिए यूकेलिप्टस / सफेदा का रोपण करना।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

- सेम की सर्वाधिक समस्या बड़ोप्पल गाँव (हनुमानगढ़) तथा श्रीगंगानगर में है।
- सेम की सर्वाधिक समस्या 'IGCP' में है।

- मृदा मे निम्न पोषक तत्व होते हैं –

  1. नाइट्रोजन 2. फास्फोरस
  3. पौटेशियम 4. कैल्शियम

- राज्य मे मृदा परीक्षण प्रयोगशाला – जयपुर, जोधपुर

- सिंचित भूमि को 'चाही' तथा असिंचित भूमि को 'बारांनी' कहते हैं।

◆ मृदा निर्माण के निम्न 5 कारक हैं :-

1. जनक पदार्थ → मृदा के पोषक तत्व जनक पदार्थ कहलाते हैं।

2. जलवायु → दो भिन्न जलवायु में एक ही जनक पदार्थ दो भिन्न मृदा का निर्माण करते हैं।

3. जैविक पदार्थ → पेड़ - पौधे, जीव जंतु।

4. स्थलाकृति → अपरदन की क्रिया के द्वारा निर्मित होते हैं।

5. समयावधि → 1 cm या 2 cm मृदा की परत बनने मे लगभग 2 शताब्दियो का समय लग जाता है।

Note ⇒ 2 तथा 3 कारक क्रियाशील तथा सक्रिय जबकि 1, 4, 5 कारक निष्क्रीय कारक है।

➤ पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर राज्य में मृदा की उर्वरता कम होती है जबकि पश्चिम से पूर्व की ओर उर्वरता बढ़ती है।

कृषि सहकारिता

सहकारिता का सिद्धान्त :- " एक सब के लिए सब एक के लिए "

- यह राज्य सरकार का विषय है जो अनुच्छेद 43 (b) मे 97 वाँ संविधान संशोधन के द्वारा जोडा गया।
- भारत मे सहकारिता की शुरुआत 1903 मे दुर्भिक्ष आयोग के द्वारा हुई।
- प्रथम सहकारी बैंक की स्थापना - 1904 डीग
- प्रथम साख सहकारी समिति - 1905 भिनाय (केकड़ी)
- प्रथम सहकारी कानून - 1915 मे आया।
- प्रथम सहकारी आन्दोलन की शुरुआत - 1919 मे अजमेर से
- सहकारी शताब्दी वर्ष -- 2004
- सहकारिता दिवस - प्रत्येक वर्ष के जुलाई माह के प्रथम सप्ताह के प्रथम शनिवार को।

सहकारिता का ढाँचा →

3 स्तर

आधार - ऋण / साख

अल्पकालीन अवधि	मध्यकालीन अवधि	दीर्घकालीन अवधि
5 से 15 माह	3 से 5 वर्ष	5 से 15 वर्ष

अल्पकालीन तथा मध्यकालीन का ढाँचा :-

3 स्तर

राज्य स्तर

* राजस्थान राज्य सहकारी बैंक जयपुर (1953) (एपेक्स)

जिला स्तर

* केन्द्रीय सहकारी बैंक (संख्या - 29)
* प्रथम केन्द्रीय सहकारी बैंक - अजमेर (स्थापना - 1910)

ग्राम स्तर

* प्राथमिक सहकारी साख समिति

Q. सहकारी क्षेत्र मे केन्द्रीय सहकारी बैंक कार्यरत है -

(A) केन्द्र स्तर
(B) राज्य स्तर
(C) जिला स्तर
(D) ग्राम स्तर

(C)

दीर्घकालीन का ढाँचा :-

2 स्तर

राज्य स्तर

राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक - जयपुर
स्थापना - 1957

जिला स्तर

जिला साख समिति

- राज्य मे प्रथम सहकारी ईसबगोल कारखाना - जालौर
- राज्य मे सहकारी कीटनाशक का कारखाना - झोटवाड़ा (जयपुर)
- राजस्थान राज्य सहकारी भेड़ एंव ऊन प्रशिक्षण संस्थान - जयपुर (स्थापना - 1957)

Note ⇒ केन्द्रीय भेड़ एंव ऊन अनुसंधान संस्थान - अविकानगर मालपुर (टोंक)

- किसान क्रेडिट कार्ड योजना - 1998
  (K.C.C. योजना)
  ↳ यह योजना केन्द्र सरकार की हैं। जिसके तहत प्रथम किसान क्रेडिट कार्ड 1999 मे श्रीरामनिवास यादव को दिया गया।

- सहकारिता किसानो को उचित ऋण उपलब्ध करवाती हैं।
- सहकारिता का ग्वार प्लांट - नागौर मे स्थापित किया गया।
- सहकारिता का बीज भण्डार कारखाना - भरतपुर

- राज्य मे महिला नागरिक सहकारिता बैंक की स्थापना 30 अगस्त 1995 को जयपुर मे की गई।
- महिला सहकारिता बैंक ⑥ हैं जो निम्न हैं -

  1.) जयपुर - 2
  2.) उदयपुर - 2
  3.) डीडवाना - 1
  4.) कोटा - 1

- "अपना बचत अपना घर" योजना महिलाओ के लिए सहकारी क्षेत्र में "महिला मिनी बैंक" की स्थापना 17 जनवरी 2001 मे आकोली (जालौर) में की गई।

जनगणना

* जनगणना का उल्लेख सर्वप्रथम - कौटिल्य
* अबुल फजल का आइने अकबरी मे जनगणना का उल्लेख मिलता है।
* विश्व मे सर्वप्रथम जनगणना - 1749 (स्वीडन)
* भारत मे सर्वप्रथम जनगणना - लॉर्ड मैंयो (1872)
* सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप से जनगणना - 1881 (रीपन) तथा इसके बाद प्रति 10 वर्ष मे जनगणना शुरू हुई।
* गर्म क्षेत्र की जनसंख्या अधिक बढती है जबकि ठण्डे क्षेत्र की जनसंख्या कम बढती है।
* चीन मे 65 वर्ष मे जनसंख्या दुगुनी हो जाती है।
* भारत मे 36 वर्ष, पाकिस्तान मे 30 वर्ष, बांग्लादेश मे 28 वर्ष, अमेरिका मे 128 वर्ष व जापान मे 350 वर्ष मे दुगूनी।
* रूस तथा जर्मनी की जनसंख्या कभी भी दुगूनी नही हो सकती।
* भारत मे 1 मिनट मे 29 बच्चे पैदा होते हैं अर्थात प्रति 2 सैकण्ड मे 1 बच्चा।
* भारत मे प्रथम गर्भ-निरोधक टेबलेट डॉ नित्यानंद ने 'सहेली' के नाम से बनाई।
* डॉ नित्यानंद को 'गर्भ निरोधक टेबलेट' का जनक माना जाता है, जिनका निधन 28 जनवरी 2024 को हुआ।
* 2011 की जनगणना 15 वीं जनगणना है।
* स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना 1951 मे की गई।
* 2011 की जनगणना स्वतंत्र भारत की 7 वीं जनगणना है।
* सन् 2000 मे जनसंख्या नीति जारी की गई इसके अनुसार 2045 तक जनसंख्या स्थिर की जायेगी।

राजस्थान के सन्दर्भ में 2011 की जनगणना

कुल जनसंख्या - 6.85 करोड़

राजस्थान का देश मे जनसंख्या की दृष्टि से 7 वॉ स्थान है।

सर्वाधिक जनसंख्या	कम जनसंख्या
1. जयपुर (66.28 लाख)	1. जैसलमेर (6.70 लाख)
2. जोधपुर (36.87 लाख)	2. प्रतापगढ़ (8.86 लाख)
3. अलवर (36.74 लाख)	3. सिरोही (10.36 लाख)
4. नागौर (33.07 लाख)	4. बूँदी (11.11 लाख)

सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर	कम जनसंख्या वृद्धि दर
1. बाड़मेर - 32.55 %	1. श्रीगंगानगर - 10.06 %
2. जैसलमेर - 31.8 %	2. झुन्झुनू - 11.71 %
3. जोधपुर - 27.7 %	3. पाली
4. बांसवाड़ा - 26.5 %	4. बूँदी

*. राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर — 21.31 %

राजस्थान का जनसंख्या घनत्व → 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर

सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व	कम जनसंख्या घनत्व
1. जयपुर - 595	1. जैसलमेर - 17
2. भरतपुर - 503	2. बीकानेर - 78
3. दौसा - 476	3. बाड़मेर - 92
4. अलवर - 438	4. चुरू - 147

जनसंख्या घनत्व ⇒ प्रति वर्ग किलोमीटर मे रहने वालों लोगो की संख्या

राजस्थान का लिंगानुपात → 928

सर्वाधिक लिंगानुपात		कम लिंगानुपात	
1. डुँगरपुर	994	1. धौलपुर	846
2. राजसमंद	990	2. जैसलमेर	852
3. पाली	987	3. करौली	861
4. प्रतापगढ़	983	4. भरतपुर	880

सर्वाधिक ग्रामीण लिंगानुपात		कम ग्रामीण लिंगानुपात	
1. पाली	1003	1. धौलपुर	841
2. राजसमंद	998	2. करौली	856

नगरीय क्षेत्र मे सर्वाधिक लिंगानुपात		नगरीय क्षेत्र मे कम लिंगानुपात	
1. टोंक	985	1. जैसलमेर	807
2. प्रतापगढ़	963	2. धौलपुर	864

लिंगानुपात ⇒ प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या

राजस्थान की साक्षरता → 66.11%

पुरूष साक्षरता - 79.20%
महिला साक्षरता - 52.12%

साक्षरता ⇒ 7 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो अपना नाम लिख व पढ़ सकता है साक्षर कहलाता है।

सर्वाधिक साक्षरता		कम साक्षरता	
1. कोटा	76.6 %	1. जालौर	54.9 %
2. जयपुर	75.5 %	2. सिरोही	55.3 %
3. झुन्झुनू	74.1 %	3. प्रतापगढ़	56 %
4. सीकर	71.9 %	4. बांसवाड़ा	56.3 %

सर्वाधिक पुरुष साक्षरता		कम पुरुष साक्षरता	
1. कोटा	65.9 %	1. जालौर	38.5 %
2. जयपुर	64.0 %	2. सिरोही	39.7 %
3. झुन्झुनू	61.0 %	3. जैसलमेर	39.7 %

सर्वाधिक महिला साक्षरता		कम महिला साक्षरता	
1. झुन्झुनू	86.9 %	1. प्रतापगढ़	69.5 %
2. कोटा	86.3 %	2. बांसवाड़ा	69.5 %
3. जयपुर	86.1 %	3. सिरोही	70 %

---

* राजस्थान मे सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या – 1. जयपुर
  2. जोधपुर

  कम नगरीय जनसंख्या – 1. प्रतापगढ़
  2. डुँगरपुर

* शहरों मे सर्वाधिक % के अनुसार जनसंख्या – 1. कोटा
  2. जयपुर

  कम % के अनुसार जनसंख्या – 1. डुँगरपुर
  2. बाड़मेर

0 से 6 वर्ष आयु जनसंख्या (शिशु) :-

* राज्य की कुल जनसंख्या का - 15.5 % — पुरुष 15.9 %, महिला 15.1 %

* सर्वाधिक शिशु जनसंख्या - जयपुर
  कम शिशु जनसंख्या - जैसलमेर

* शिशु लिंगानुपात - 888
  ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - 892
  शहरी शिशु लिंगानुपात - 874

* सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात - बाँसवाड़ा
  कम शिशु लिंगानुपात - झुन्झुनू

* सर्वाधिक ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - बाँसवाड़ा
  कम ग्रामीण शिशु लिंगानुपात - झुन्झुनू

* सर्वाधिक शहरी शिशु लिंगानुपात - नागौर
  कम शहरी शिशु लिंगानुपात - धौलपुर

SC [Scheduled Caste] अनुसूचित जाति	ST [Scheduled Tribes] अनुसूचित जनजाति
• राज्य की जनसंख्या का % = 17.7 %	• राज्य की जनसंख्या का % = 13.5 %
• सर्वाधिक SC – जयपुर, श्रीगंगानगर कम SC – डूँगरपुर, प्रतापगढ़	• सर्वाधिक ST – उदयपुर, बांसवाड़ा कम ST – बीकानेर, नागौर
• सर्वाधिक % SC – श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ कम % SC – डूँगरपुर, बांसवाड़ा	• सर्वाधिक % ST – बांसवाड़ा, डूँगरपुर कम % ST – नागौर, बीकानेर
• लिंगानुपात – 923 ग्रामीण लिंगानुपात – 923 शहरी लिंगानुपात – 922	• लिंगानुपात – 948 ग्रामीण लिंगानुपात – 952 शहरी लिंगानुपात – 893
• सर्वाधिक SC लिंगानुपात – राजसमंद कम SC लिंगानुपात – धौलपुर	• सर्वाधिक ST लिंगानुपात – डूँगरपुर कम ST लिंगानुपात – धौलपुर

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

➤ राजस्थान के निम्न दो जिलो की साक्षरता मे गिरावट आयी है -

1. चुरू
2. बाड़मेर

➤ निम्न जिलो की साक्षरता मे सुधार हुआ है -

1. डुँगरपुर
2. भीलवाडा
3. बाँसवाडा
4. टोंक

➤ स्त्री साक्षरता मे सर्वाधिक सुधार = डुँगरपुर; भीलवाडा
स्त्री साक्षरता मे कमी = बाड़मेर, चुरू

➤ राज्य के 14 जिलो मे साक्षरता दर राज्य की औसतन साक्षरता दर से अधिक है जबकि 19 जिलों की साक्षरता दर राज्य की औसत साक्षरता दर से कम हैं।

➤ राज्य मे ग्रामीण साक्षरता दर - 61.4 % जबकि
शहरी साक्षरता दर - 79.7 % है।

➤ सर्वाधिक शहरी साक्षरता - उदयपुर (87.5 %)
कम शहरी साक्षरता - जालौर (71.1 %)

➤ सर्वाधिक ग्रामीण साक्षरता - झुन्झुनू (73.4 %)
कम ग्रामीण साक्षरता - सिरोही

राजस्थान की पशु सम्पदा

* प्रथम पशु रिपोर्ट 1919-20 मे जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूँदी, अजमेर, किशनगढ़, बीकानेर मे हुई।

* स्वतंत्र भारत के बाद प्रथम पशु गणना 1951 मे हुई जो 7 वीं थी।

* आयोजक** – मत्सय पालन, पशुपालन एंव डेयरी मंत्रालय भारत सरकार
* गणना** – राजस्व मण्डल तथा पशुपालन मंत्रालय राजस्थान सरकार

* नवीनतम पशु रिपोर्ट 20 वी है। जो 16 अक्टूबर 2019 को जारी हुई।

* 20 वीं पशुगणना मे पशुधन – 5.68 करोड़
* 19 वीं पशुगणना मे पशुधन – 5.77 करोड़
* 20 वीं पशुगणना मे 1.66% की कमी हुई।

* 20 वीं पशुगणना मे पशुघनत्व – 166
* 19 वीं पशुगणना मे पशुघनत्व – 169

* नवीनतम पशुगणना मे पशुघनत्व मे 3 की कमी आई।
* राजस्थान का पशुधन की दृष्टि से देश मे 'दूसरा' स्थान है जो देश का 10.66% पशुधन रखता है।

* देश मे सर्वाधिक पशुधन उत्तरप्रदेश मे है।

	२० वीं रिपोर्ट	१९ वीं रिपोर्ट
1. बकरी	-3.81	+1
२. गाय	+4.4	+9.9 %
3. भैंस	+5.5	+16.9 %
4. भेड	-12.9	-18.8 %
5. घोड़ा	-10.8	+48.50 %
6. गधा	-71.31	-20.23 %
7. ऊँट	-34.64	-22.79 %

* २० वीं पशुधन रिपोर्ट मे गाय, भैंस मे वृद्धि जबकि बकरी, भेड, घोड़ा, गधा, ऊँट मे कमी हुई हैं।

* १९ वीं पशुधन रिपोर्ट मे बकरी, गाय, भैंस, घोड़ा मे वृद्धि हुई। जबकि भेड, गधा, ऊँट मे कमी हुई हैं।

Question

1. २० वी पशुगणना मे गायो मे १९ वी पशुगणना की तुलना मे कम वृद्धि दर प्राप्त हुई। ✓
2. २० वी पशुगणना मे भेडो की संख्या मे १९ वी पशुगणना की तुलना मे कम गिरावट हुई हैं। ✓
3. २० वी पशुगणना मे गायो की संख्या मे १९ वी पशुगणना की तुलना मे वृद्धि हुई हैं। ✓
4. २० वी पशुगणना मे गधों की संख्या मे १९ वी पशुगणना की तुलना मे दुगूने से अधिक गिरावट हुई। ✓

सही - (1.) 1, 2, 3 (2.) 2, 3, 4 (3.) 1, 2, 4 (4.) 1, 2, 3, 4

क्र.स.	पशु	राज्य का देश मे स्थान	प्रतिशत
1.	बकरी	1	14 %
2.	गाय	6	7.2 %
3.	भैंस	2	12.4 %
4.	भेड़	4	10.6 %
5.	घोड़ा	3	9.9 %
6.	गधा	1	18.9 %
7.	ऊँट	1	84.4 %

राजस्थान मे सर्वाधिक पशुधन :- 1. बकरी
2. गाय
3. भैंस
4. भेड़

राजस्थान मे सर्वाधिक पशुघनत्व :- 1. डूंगरपुर
2. बांसवाड़ा
3. दौसा

कम पशुघनत्व :- 1. जैसलमेर
2. बीकानेर
3. दौसा

* डूंगरपुर का पशुघनत्व 433 जबकि जैसलमेर का 62 है।

* 20 वी पशुगणना देश की प्रथम 'डिजिटल' आधारित पशुगणना है।

Note ⇒ 20 वीं पशुगणना मे भारत के सन्दर्भ मे 4.6 % की वृद्धि हुई है।

प्रमुख नस्लें

1. गाय की प्रमुख नस्लें

(1) थारपारकर / थारी / मालाणी :-

उत्पत्ति - सिंध (पाक)

* सिंधी क्षेत्र से आने के कारण इसे उजली सिंधी भी कहते हैं।

क्षेत्र - बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बालोतरा
प्रजनन केन्द्र - चाँदन गाँव (जैसलमेर)

* इसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता सर्वाधिक है।

(2) राठी :-

यह रेडसिंधी, साहीवाल तथा थारपारकर का संकरण है।

- राठी को 'कामधेनु' कहते है तथा यह डेयरी उद्योग के लिए उपयोगी है।

प्रजनन केन्द्र - नोहर (हनुमानगढ़)
क्षेत्र - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, अनुपगढ़, चुरु।

* राज्य मे सर्वाधिक दूध देने वाली गाय।

रेडसिंधी - क्षेत्र - पंजाब, हरियाणा
साहीवाल - सर्वाधिक दूध देने वाली गाय।
(मीठा)
* उत्पत्ति - मोंटगोमुरी (पाकिस्तान) क्षेत्र हैं।

(3.) मेवाती / काठी / कोठी :-

* सबसे शक्तिशाली गाय हैं।

प्रजनन केन्द्र - भरतपुर
क्षेत्र - अलवर, भरतपुर, डीग, खैरथल तिजारा, बहरोड़

(4.) साँचौरी :-
प्रजनन केन्द्र - सांचौर
क्षेत्र - सांचौर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, पाली

(5.) कांकरेज :-

* सबसे भारी नस्ल हैं।

उत्पत्ति - कच्छ का रण (गुजरात)
क्षेत्र - बाड़मेर, सांचौर, जालौर, सिरोही, पाली
प्रजनन केन्द्र - चोहटन (बाड़मेर)

(6.) मालवी :-
उत्पत्ति - मालवा प्रदेश (MP)
क्षेत्र - बांसवाड़ा, डुँगरपुर, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, हाडौती क्षेत्र।
प्रजनन केन्द्र - डग (झालावाड)

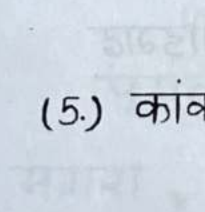

(7.) नागौरी :- उत्पत्ति - सुहालक प्रदेश (नागौर)
क्षेत्र - नागौर, डीडवाना कुचामन,
जोधपुर ग्रामीण, बीकानेर।
प्रजनन केन्द्र - नागौर

*. नागौरी बैल बोझा ढोने तथा कृषि कार्यों के लिए उपयोगी है।

(8.) हरियाणवी गाय :-
उत्पत्ति - हिसार, रोहतक, गुरुग्राम (HR)
क्षेत्र - हनुमानगढ़, चुरू, झुन्झुनू, भरतपुर,
सीकर, नीम का थाना।
प्रजनन केन्द्र - कुम्हेर (डीग)

(9) गीर गाय :-
उत्पत्ति - गिरवनप्रदेश - गुजरात
क्षेत्र - अजमेर, भीलवाडा, चित्तौडगढ़
प्रजनन केन्द्र - अजमेर

- विदेशी नस्ल →
1. जर्सी - अमेरिका
कम उम्र मे गर्भधारण गाय।
2. आयर - सायर - स्कॉटलैण्ड
सबसे सुन्दर गाय।
3. हॉलिस्टिन फिजियन - नीदरलैण्ड

Note ⇒ गोमूत्र से फिनाइल बनाने का संयंत्र हिंगोनिया गौशाला मे स्थापित है। (जयपुर ग्रामीण)

* राज्य की सबसे बड़ी गौशाला - पथमेडा (सांचौर)

२. भेड़ की प्रमुख नस्लें

TRICK → नाम सोचो बापू मगर मारवाड़ी जैसा ।

ना	नाली
सो	सोनाडी
चो	चनोप्पर / चौकला
बा	बागड़ी
पू	पूगल
मगर	मगरा
मारवाड़ी	मारवाड़ी, मालपुरी
जैसा	जैसलमेरी

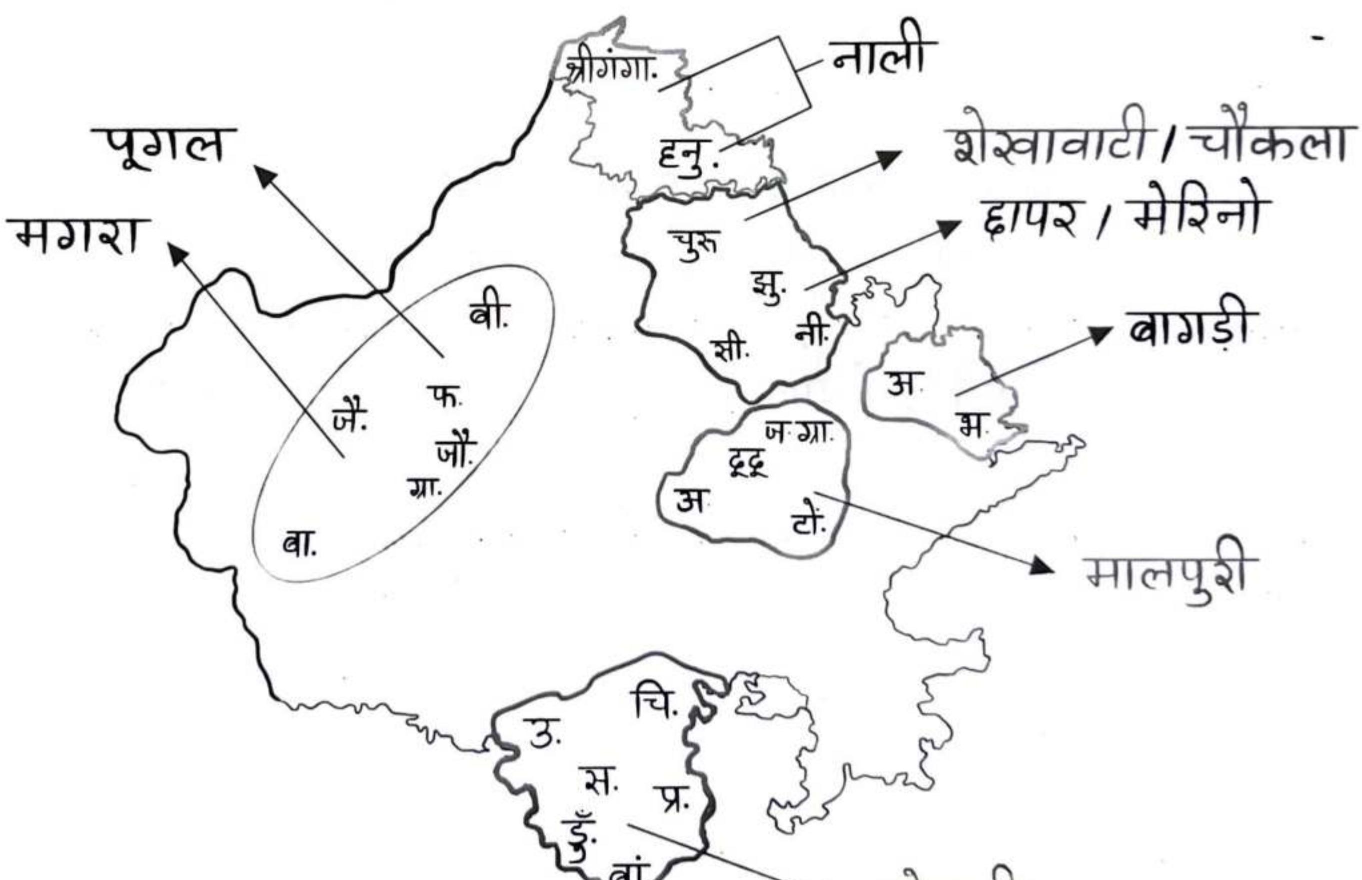

(1.) नाली :- श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
इस भेड़ की ऊन का रेशा लम्बा होता है।

(2.) सोनाड़ी / चनोथ्पर :- उदयपुर, डुँगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर।
अनुसंधान केन्द्र - चित्तौड़गढ़
* चरते समय इसके कान भूमि को स्पर्श करते हैं इसलिए इसे 'चनोथ्पर' कहते हैं।

(3.) चौकला / शेखावाटी / छापर / मेरिनो :- सीकर, चुरु, झुन्झुनू, नीम का थाना, बीकानेर।
अनुसंधान केन्द्र - बीकानेर
* मेरिनो ऑस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली भेड़ है जिसकी तुलना चोकला भेड़ से करते हैं।

(4.) बागड़ी :- बहरोड़, अलवर, भरतपुर, डीग
* इस भेड़ का 75% मुहँ काला होता है।

(5.) पूगल :- बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलोंदी।
अनुसंधान केन्द्र - बीकानेर

(6.) मगरा :- बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलोंदी।
अनुसंधान केन्द्र - बीकानेर
* सर्वाधिक माँस देने वाली भेड़

(7.) मारवाडी :- क्षेत्र - मारवाड़

अनुसंधान केन्द्र - जैसलमेर, जोधपुर

* सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता।
* सर्वाधिक प्राचीन नस्ल व सर्वाधिक मिलने वाली नस्ल।

(8.) मालपुरी :- टोंक, अजमेर, जयपुर ग्रामीण

अनुसंधान केन्द्र - जयपुर, टोंक

* इस नस्ल को केन्द्रीय भेड़ एंव ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर मालपुरा (टोंक) के द्वारा विकसित किया गया है।

(9.) जैसलमेरी :- क्षेत्र - जैसलमेर

* सर्वाधिक ऊन देने वाली भेड़ (प्रतिवर्ष 3-4 Kg)

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

उण्यों :- भेड़ का नर बच्चा।

उण्णी :- भेड़ का मादा बच्चा।

- केन्द्रीय भेड़ एंव ऊन अनुसंधान संस्थान - अविकानगर मालपुरा (टोंक)
  स्थापना - 1962
- केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला - बीकानेर (स्थापना - 1965)
- केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड - जोधपुर (स्थापना - 1987)
- भेड़ तथा बकरी का आहार 'आइबोमिक्स' की खोज - सेफुद्दीन किचलु के द्वारा की गई।

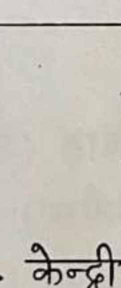

- केन्द्रीय भेड़ प्रशिक्षण संस्थान - जयपुर
- अविका कवच कार्ड योजना] उद्देश्य - भेड़ रोग निदान के लिए
  अविका क्रेडिट योजना] 2004 - 05

3. बकरी की प्रमुख नस्लें

उपनाम - चलता - फिरता फ्रिज, गरीब की गाय,
छापली, टाट

TRICK → अजब - सी मार शैलो पर

अ - अलवरी
ज - जमनापुरी
ब - बारबरी
सी - सिरोही
मार - मारवाड़ी
शै - शेखावाटी
लो - लोही
पर - परबतसरी

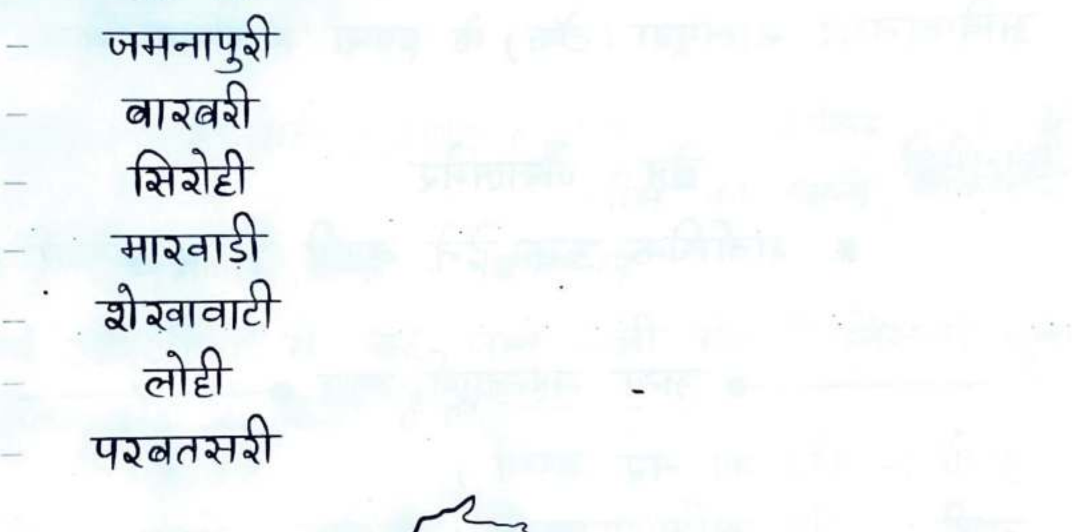

Q. निम्न मे से असंगत है -

	नस्ल		क्षेत्र
1.	मारवाडी	–	पश्चिम
2.	शेखावाटी	–	उत्तर - पश्चिम
3.	परबतसर	–	मध्य
4.	जमुनापुरी	–	दक्षिणी - पूर्वी

[2.]

(1.) अलवरी / जकराना / जखराना :-

क्षेत्र - बहरोड़, अलवर, खैरथल तिजारा, डीग, भरतपुर

* सर्वाधिक दूध देने वाली बकरी

(2.) जमनापुरी :-

क्षेत्र - कोटा, बूँदी, बांरा, झालावांड़

* यह विशालकाय / जादूई नस्ल है।

(3.) बारबरी :-

(सफेद बकरी) क्षेत्र - भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर

* सबसे सुन्दर नस्ल

* सर्वाधिक प्रजनन क्षमता

* जुड़वा बच्चे तथा शहरी नस्ल के नाम से जाती है।

(4.) सिरोही :-

क्षेत्र - सिरोही, उदयपुर, जालौर, साचौंर

* सबसे भारी नस्ल है।

(5.) मारवाडी :- क्षेत्र - बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बालोतरा, सिरोही।

* सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता

(6.) शेखावाटी :-

क्षेत्र - सीकर, चुरू, झुन्झुनू, नीम का थाना

* इस बकरी पर काजरी के वैज्ञानिको ने अनुसंधान किया।
* यह बिना सिंग वाली बकरी है।

(7.) परबतसरी :-

क्षेत्र - नागौर, डीडवाना कुचामन, जोधपुर ग्रामीण, बीकानेर।

* यह नस्ल हरियाणा तथा पंजाब की 'बीटल' बकरी की नस्ल तथा सिरोही नस्ल के संकरण से निर्मित हैं।

(8.) लोही :- क्षेत्र - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, अनुपगढ़

* सर्वाधिक मांस देने वाली बकरी।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

बकरी प्रजनन फार्म - रामसर (अजमेर)

- यहाँ बकरी विकास एंव चारा उत्पादन केन्द्र - 1981-82 मे स्वीट्जरलैण्ड के द्वारा स्थापित किया गया।

Note ⇒ केन्द्रीय चारा अनुसंधान संस्थान - अविकानगर (मालपुरा टोंक)

4. भैंस की प्रमुख नस्लें

TRICK →

- मुना
  - मुर्रा
  - नागपुरी
- बजा
  - बढ़ावरी (भदावरी)
  - जाफराबादी
- सुर
  - सुरती
  - रावी
- मे
  - मेहसाणा

(1.) मुर्रा / खुण्डी :- * सबसे अच्छी नस्ल।
क्षेत्र - अलवर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा, डीग,
जयपुर ग्रामीण।

(2.) नागपुरी :- * सबसे हल्की नस्ल।
क्षेत्र - दक्षिणी राजस्थान
उदयपुर, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, सिरोही, सांचौर।

(3.) भदावरी / बदावरी :- * सर्वाधिक वसा वाली नस्ल।
क्षेत्र - अलवर, भरतपुर, धौलपुर, दौसा,
जयपुर ग्रामीण, डीग।

(4.) जाफरावादी :- मिनी एलीफेन्ट कहते हैं क्योंकि इसका आकार
बडा तथा शरीर ढीला ढाला हैं।
क्षेत्र - उदयपुर, डूँगरपुर, बांसवाड़ा।

(5.) सुरती :- मूल क्षेत्र - सूरत
क्षेत्र - सिरोही, उदयपुर, डूँगरपुर।

(6) रावी (नीली) :- मूल क्षेत्र - रावी नदी।
क्षेत्र - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

(7) मेहसाणा :- * सबसे लंबा दुग्धकाल
* यह मूर्रा तथा सूरती का संकरण हैं।
क्षेत्र - बाड़मेर, सांचौर, सिरोही।

5. ऊँट की प्रमुख नस्लें

(1.) बीकानेरी :- यह सिंधी, अफगानी तथा ब्लूचिस्तान का संकरण है।
- इस ऊँट पर स्पॉट होता है अर्थात् ललाट पर एक छोटा सा खड्डा होता है।

(2.) जैसलमेरी :- ऊँट दौड के लिए प्रसिद्ध
* सवारी के लिए प्रसिद्ध, कृषि कार्यों मे उपयोगी।

(3.) नाचना :- (जैसलमेर)
* सबसे सुन्दर
* तेज दौडने के लिए प्रसिद्ध, सवारी के लिए प्रसिद्ध
* पर्यटको के लिए उपयोगी
* सेना के जवानो के लिए उपयोगी।

(4) गोमठ (फलौदी) :- यह भारवाहक ऊँट है जो बोझा ढोने के लिए उपयोगी है।

(5.) बाड़मेरी (बाडमेर)

(6.) सांचौरी (सांचौर)

(7) जालौरी (जालौर)

(8.) मालवी :- * यह ऊँट की सबसे छोटी नस्ल है।
क्षेत्र - बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, चित्तौडगढ़, कोटा, बांरा, बूंदी, झालावाड

(9.) मेवाती :- अलवर, भरतपुर

(10.) अलवरी :- अलवर

Note ⇒ खराई तथा कच्ची ऊँट की नस्ल दलदली क्षेत्र मे पाई जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- केन्द्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र - जोहडबीड़ (बीड)
- ऊँट एक दिन मे 18 से 36 लीटर पानी पी सकता है।
- ऊँट 7 दिन तक बिना पानी पीये रह सकता है।
- राज्य मे ऊँटनी के दूध की डेयरी - URMUL (उरमूल)
  उत्तरी राजस्थान मिल्क यूनियन लिमिटेड़ - बीकानेर मे है।
- ऊँटनी के दूध को 37°c तापमान पर 8 घंटे तक रखने पर भी खराब नही होता है।

6. घोड़े की प्रमुख नस्लें

(1) मालाणी :- बाड़मेर
* यह कलाबाजियों के लिए उपयोगी है।

(2) मारवाड़ी :- बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बालोतरा।
* तेज दौड़ने के लिए प्रसिद्ध है।
* घुड़दौड़ के लिए उपयोगी।

(3) काठियावाडी :- क्षेत्र - गुजरात
राजस्थान - बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, मे मिलता है।
* यह नस्ल अरबी तथा सिंधी घोड़े का संकरण है।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

- विदेशी पशु प्रजनन केन्द्र - बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
- हिमीकृत वीर्य बैंक - बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
- जर्मप्लाज्म बैंक - बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
  नार्वा खिचियान (जोधपुर ग्रामीण)
- चारा विकास बोर्ड - रोजड़ी (बीकानेर)
- बीज संयंत्र फार्म - बीकानेर, कोटा
- पशु आहार संयंत्र - 07
  1. बीकानेर
  2. जोधपुर
  3. पाली
  4. अजमेर
  5. कालाडेरा (जयपुर ग्रामीण)
  6. जयपुर - 02
- दुग्ध पाउडर संयंत्र - 08
  1. अलवर
  2. गोविन्दगढ़ (जयपुर ग्रामीण)
  3. जयपुर
  4. अजमेर
  5. भीलवाड़ा
  6. जालौर
  7. श्रीगंगानगर
  8. बीकानेर
- दुग्ध टेट्रा पैंक संयंत्र - जयपुर

क्र.स.	पशु	सर्वाधिक	कम
1.	बकरी	बाड़मेर	धौलपुर
2.	गाय	उदयपुर	धौलपुर
3	भैंस	जयपुर	जैसलमेर
4	भेड़	बाड़मेर	बांसवाड़ा
5.	घोड़ा	बीकानेर	डुँगरपुर
6.	गधा	बाड़मेर	टोंक
7.	ऊँट	जैसलमेर	प्रतापगढ़
8.	सुअर	भरतपुर	डुँगरपुर
9.	मुर्गी	अजमेर	डुँगरपुर

- राज्य मे अण्ड़ो की टोकरी - अजमेर
- सर्वाधिक देशी नस्ल की मुर्गियाँ - बांसवाड़ा
- मुर्गियों से सम्बन्धित 'कड़कनाथ' योजना की शुरुआत - बांसवाड़ा
- कुक्कुट प्रशिक्षण संस्थान - अजमेर (स्थापना - 1988 मे)
- राज्य मे सर्वाधिक देशी नस्ल की मुर्गियाँ - असील, बरसा पाली जाती हैं।
- राज्य मे सर्वाधिक विदेशी नस्ल की मुर्गी - 'टोगनबर्ग' पाली जाती हैं।

➤ मुर्गियों मे 'रानीखेत' रोग होता है।

मुर्गी का मांस	-	चिकन
बकरी का मांस	-	चेवणी
सुअर का मांस	-	गोश्त
गाय / भैंस का मांस	-	बीफ
भेड़ का मांस	-	मटन

➤ राज्य मे पशुपालन विभाग की स्थापना - 1957

राजस्थान के पर्यटन

* पर्यटन को उद्योग का दर्जा - 1989 मे
  सिफारिश - मोहम्मद युनुस समिति
* जन उद्योग का दर्जा - 2004-05 मे
* यह निर्धुम (धुँआ रहित) उद्योग है।
* पर्यटन निदेशालय - जयपुर पर्यटन विभाग - जयपुर
  स्थापना - 1955

• राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड - जयपुर
स्थापना - 1978

उद्देश्य - यातायात, भोजन, आवास उपलब्ध करवाना।

इसके द्वारा निम्न स्लोगन जारी किये गये है-

1. ढोला मारू - 1978
2. पधारो म्हारे देश - 1993 (ललित पंवार के द्वारा दिया गया)
3. रंगीलो राजस्थान - 2008
4. जाने क्या दिख जाए - 2016
5. पधारो म्हारे देश - 2019 (वर्तमान मे भी यही है)

रोप वे :- रोप वे एक्ट - 1996 के तहत दर्जा दिया जाता है -

(1.) प्रथम रोप वे - सुंधा माता (जालौर)
संचालित - 2006

(2.) द्वितीय रोप वे - मंशापूर्ण करणी माता (उदयपुर)
संचालित - 2008

(3.) तृतीय रोप वे - सावित्री माता (पुष्कर अजमेर)
संचालित - 2016

(4.) चतुर्थ रोप वे - सामोद हनुमानजी (जयपुर ग्रामीण)
संचालित - 2019

(5.) पाँचवा रोप वे - अन्नपूर्णा (जयपुर)
संचालित - 2023
* यह खोले के हनुमानजी के है।

शाही रेल सेवा :-

1. P.O.W. (पैलेस ऑन व्हील्स) - शुरुआत - 1982

पैलेस ऑन व्हील्स की सफलता को देखते हुए 2009 मे रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स (R.R.O.W.) की शुरुआत की गयी।

2. फेयरी क्वीन (2003) – इसकी शुरुआत शेखावाटी की कलात्मक हवेलियों को देखने के लिए की गयी।

3. विलेज ऑन व्हील्स (V.O.W.) – 2004

4. हेरिटेज ऑन व्हील्स – 2006

■ पर्यटन की दृष्टि से राज्य को 10 पर्यटन सर्किट मे विभाजित किया गया –

1. ढूंढाड़ सर्किट :–

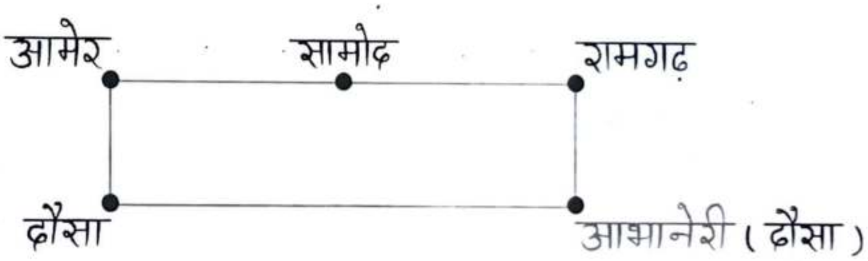

2. शेखावाटी सर्किट :–

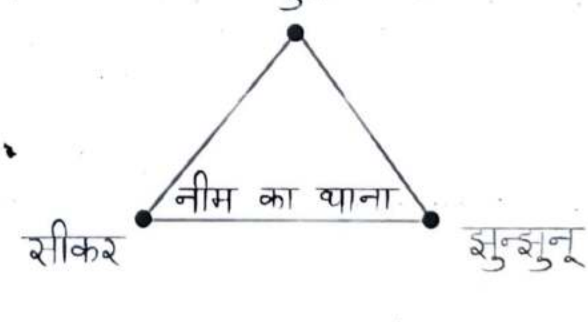

3. अलवर सर्किट :–

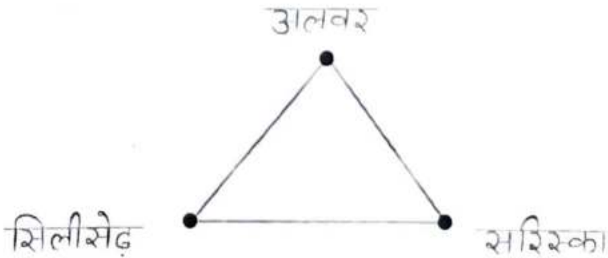

4. बृज सर्किट :-

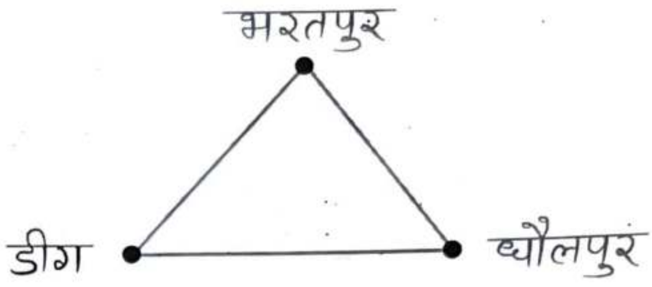

5. रणथम्भौर सर्किट :-

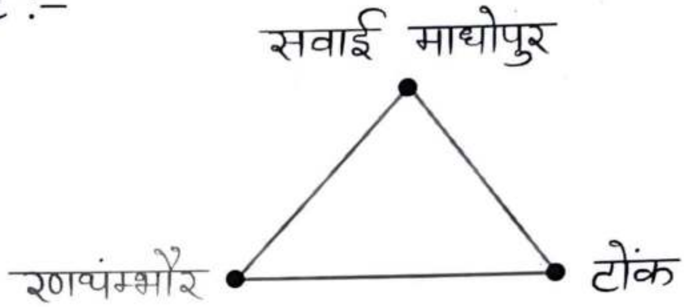

6. मेरवाड़ा सर्किट :-

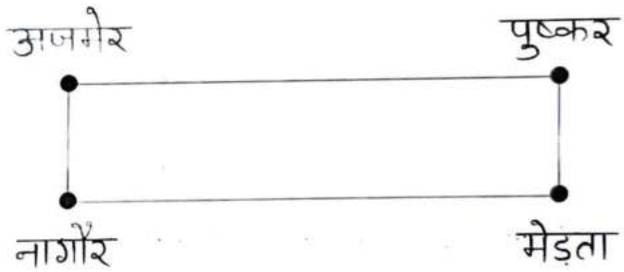

7. माउण्ट आबू सर्किट :-

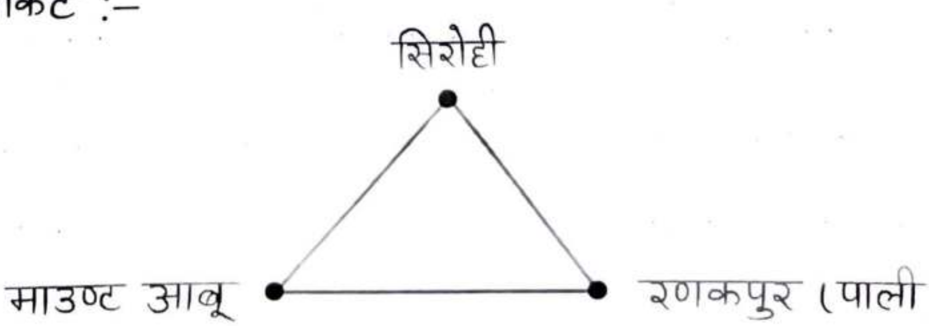

8. मेवाड़ सर्किट :-

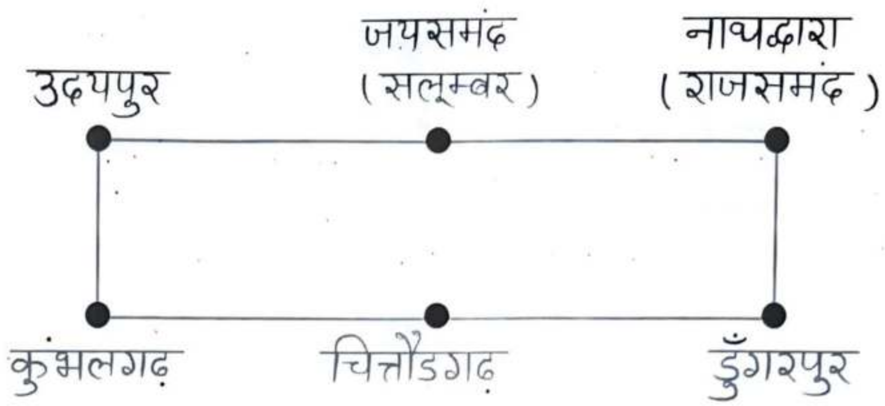

9. मरुत्रिकोण सर्किट :-

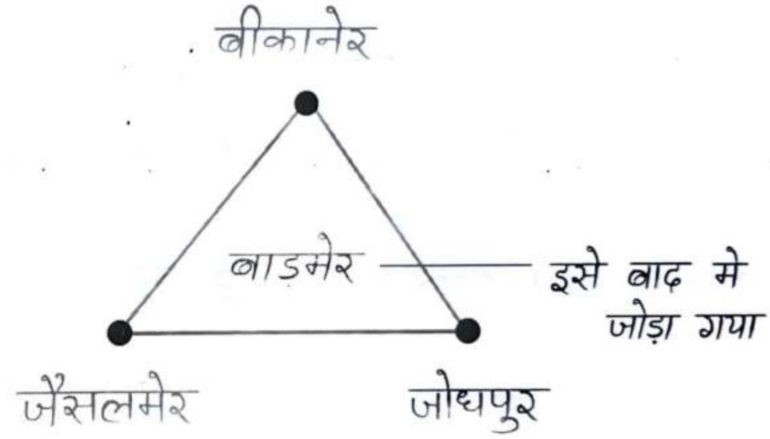

10. हाड़ौती सर्किट :-

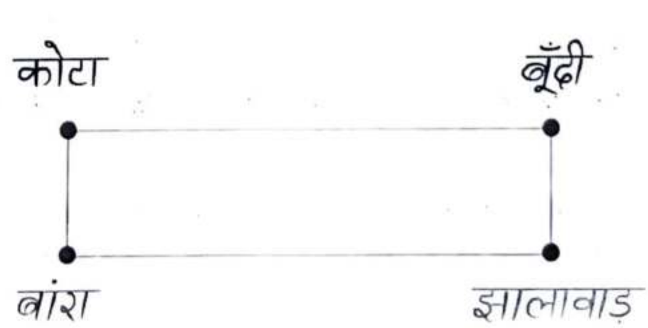

Note ⇒ महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट – महाराणा प्रताप के जीवन से संबंधित स्थानो को विकसित करना है।

जैसे :- चावण्ड, दिवेर, गोगुंदा, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी, उदयपुर।

* इस सर्किट के लिए 100 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।

अन्य सर्किट

कृष्णा सर्किट	वागड़ सर्किट	बुद्धा सर्किट
1. नाथद्वारा (राजसमंद)	1. उदयपुर	1. झालावाड़
2. गोविंददेवजी (जयपुर)	2. डूंगरपुर	2. जयपुर
3. खाटूश्यामजी (सीकर)	3. बांसवाड़ा	

■ पर्यटन विभाग के द्वारा निम्न महोत्सव आयोजित किये जाते हैं -

1. किन्नु महोत्सव - श्रीगंगानगर (दिसम्बर)

2. ऊँट महोत्सव - बीकानेर (जनवरी)

3. मरु महोत्सव - जैसलमेर (जनवरी - फरवरी)

4. थार महोत्सव - बाड़मेर (दिसम्बर)

5. वेलून महोत्सव - बाड़मेर (अप्रैल)

6. मारवाड़ महोत्सव - जोधपुर (अक्टूबर)

7. मेवाड़ महोत्सव - उदयपुर (अप्रैल)

8. बृज महोत्सव - भरतपुर (फरवरी)

9. डीग महोत्सव - डीग (कृष्णा जनमाष्टमी)

10. मीरा महोत्सव - चित्तौड़गढ़ (अक्टूबर)

11. शीत महोत्सव - माउण्ट आबू (दिसम्बर)

12. ग्रीष्म महोत्सव - माउण्ट आबू (जून)

13. शेखावाटी महोत्सव - शेखावाटी क्षेत्र (मार्च)

सर्वाधिक विदेशी पर्यटक आते हैं - जयपुर, जोधपुर, उदयपुर
सर्वाधिक स्वदेशी पर्यटक आते हैं - अजमेर, सिरोही

सर्वाधिक विदेशी पर्यटक आते हैं - दिसम्बर माह मे
कम विदेशी पर्यटक आते हैं - जून माह मे

सर्वाधिक स्वदेशी पर्यटक आते हैं - सितम्बर माह मे
कम स्वदेशी पर्यटक आते हैं - जून माह मे

राजस्थान राज्य होटल विकास निगम लिमिटेड - जयपुर
स्थापना - 1965

राजस्थान की पर्यटन नीतियाँ

- प्रथम नीति - 2001
- दूसरी नीति - 2007
- तीसरी नीति - 2015
- चौथी नीति - 2020

- राज्य सरकार की पेइंग गेस्ट योजना - शुरूआत - 1994
  उद्देश्य - पर्यटको को उचित सुविधा उपलब्ध करवाना है।

- राजस्थान मे सर्वाधिक विदेशी पर्यटक अमेरिका, फ्रांस से आते हैं।

- राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के द्वारा निम्न जगह नौकायान संचालित हैं -
  1. फतेहसागर झील (उदयपुर)
  2. कायलाना झील (जोधपुर)
  3. नक्की झील (सिरोही)
  4. सिलीसेढ़ (अलवर)

राजस्थान के परिवहन

परिवहन का अर्थ - किसी भी वस्तु को एक जगह से दुसरी जगह लाना तथा ले जाना परिवहन कहलाता है।

परिवहन के प्रकार :-

स्थल परिवहन   वायु परिवहन   जल परिवहन

रेल परिवहन   सडक परिवहन

रेल परिवहन

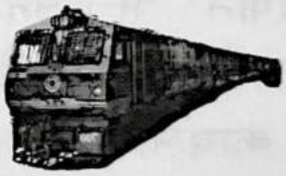

* राजस्थान मे प्रथम रेल की शुरुआत - 1874
  └── जयपुर रियासत
  आगरा फॉर्ट (UP) से बाँदीकुई (दौसा)

* राजस्थान मे प्रथम रेल बस की शुरुआत - 1994
  └── मेड़ता रोड़ से मेड़ता सिटी (नागौर)

* उत्तरी पश्चिमी रेलवे जोन - जयपुर, स्थापना - 2002

इस जोन के तहत् 4 मण्डल कार्यरत है - जयपुर
जोधपुर
अजमेर
बीकानेर

* राजस्थान मे 5 रेलवे मण्डल कार्यरत है।

* कोटा रेलवे मण्डल मध्य पश्चिमी जोन जबलपुर (MP) के तहत कार्यरत है।

रेलवे लाइन के प्रकार :-

नाम		पटरी के मध्य दूरी
1. ब्रॉडगेज	-	1.67 M (82%)
2. मीटरगेज	-	1 M (16.5%)
3. नैरोगेज	-	75 CM (1.5%)

राजस्थान मे मेट्रो रेल - जयपुर

I - चरण II

मानसरोवर से बडी चौपड़
उद्घाटन - 2011

II - चरण

सीतापुरा से अंबाबाडी

I - कॉरिडोर — मानसरोवर से चाँदपोल

II - कॉरिडोर — चाँदपोल से बड़ी चौपड़

संचालित / शुरुआत -
जून 2015

* 1925 मे वर्थ समिति की सिफारिश पर रेलवे बजट तथा आम बजट को अलग कर दिया गया।
जबकि 2014 मे मोदी सरकार ने रेलवे बजट व आम बजट को एक कर दिया।

* रेलवे संघ सूची का विषय है जिस पर कानून केन्द्र सरकार बनाती है।

* राज्य मे गाँधीनगर रेलवे स्टेशन (जयपुर) सम्पूर्ण रूप से महिला अधिकारियों के अधिकार क्षेत्र मे है।

* राज्य मे भारत का 8.83% रेलवे लाइन है।

* रेलवे मॉडल कक्ष - उदयपुर

* रेलवे भर्ती बोर्ड - अजमेर

* रेलवे प्रशिक्षण अनुसंधान केन्द्र - पचपदरा (बालोतरा)

*. राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा से संचालित रेलवे स्टेशन -
गोरमघाट (राजसमंद - अजमेर मण्डल)

*. राज्य मे सम्पूर्ण रूप से सौर ऊर्जा से संचालित रेलवे स्टेशन -
गाँधीनगर (जयपुर)

*. मीटर गेज का सबसे बडा यार्ड - फुलेरा जंक्शन (जयपुर ग्रामीण)

*. राजस्थान मे नैरोगेज रेलवे लाइन केवल धौलपुर मे मिलती है।

सड़क परिवहन

सड़क नीतियाँ

1. प्रथम सड़क नीति (1994) →

उद्देश्य - गाँवो को सड़को से जोड़ना।

*. सन् 2000 मे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना आ जाने से इसका उद्देश्य पूरा हो गया।

2. दूसरी सड़क नीति (2002) →

उद्देश्य - B. O. T.

(Build) (Operate) (Transfer)

बनाना संचालन स्थानांतरण

3. तीसरी सड़क नीति (2013) →

उद्देश्य - गाँवो को सड़को से जोड़ना।

रोडविजन 2025 → लागु - 2000

उद्देश्य - M. O. T.

Maintain Operate Transfer

राजस्थान से गुजरने वाले प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग निम्न हैं -

NH 48 **N.H. 48** ► खैरथल - तिजारा, कोटपूतली बहरोड, जयपुर ग्रामीण, जयपुर, दूदू, अजमेर, ब्यावर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, डूँगरपूर (11 जिले)

- यह राजस्थान का सबसे व्यस्ततम हाइवे है।
- यह भारत का 1^{st} Expressway है।
- ट्रोमा हॉस्पिटल जयपुर स्थित है जिसे चलता फिरता हॉस्पिटल कहते है।

NH 52 **N.H. 52** ► चुरू, सीकर, जयपुर ग्रामीण, जयपुर, टोंक, शाहपुरा, बूंदी, कोटा, झालावाड़ (9 जिले)

- यह राजस्थान का सबसे लंबा नेशनल हाइवे है। (793 KM)
- इसी NH पर मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान (कोटा, बूंदी, झालावाड़) स्थित है।

NH 62 **N.H. 62** ► श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, नागौर, जोधपुर ग्रामीण, जोधपुर, पाली, सिरोही (8 जिले)

- इस पर कोलायत झील स्थित है।
- इस NH पर D.M.I.C. के तहत रोहट क्षेत्र (पाली) को विकसीत किया जा रहा है।

NH 68 **N.H. 68** ► जैसलमेर, बाड़मेर, सांचौर

- इस NH पर राष्ट्रीय मरुउद्यान स्थित है।

NH 11 — N.H. 11 ► नीम का थाना, झुन्झुनू, चुरू, सीकर, बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर

- राजस्थान का दूसरा सबसे लम्बा NH हैं।
- कुल लम्बाई - 763 KM

NH 21 — N.H. 21 ► जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, भरतपुर

- इस पर घाट की गुणी सुरंग (जयपुर) तथा केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर) स्थित हैं।

NH 27 — N.H. 27 ► सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बूंदी, कोटा, बांरा

- इस पर सांवरिया सेठ मंदिर (चित्तौड़गढ़) तथा हैंगिग ब्रिज (कोटा) स्थित हैं।

NH 56 — N.H. 56 ► चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा

NH 44 — N.H. 44 ► धौलपुर

NH 148 (N) — ★★ N.H. 148 (N) ► डीग, अलवर, दौसा, सवाई माधोपुर, बूंदी, कोटा, झालावाड़

NH 754 (k) — N.H. 754 (k) ► हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, फलौदी, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, जालौर, सांचौर

NH 71 (B) — N.H. 71 (B) ► (नया नाम - 919)

- यह अलवर से सोहाना (HR) तक हैं जो 5 KM हैं।
- यह सबसे छोटा NH हैं।

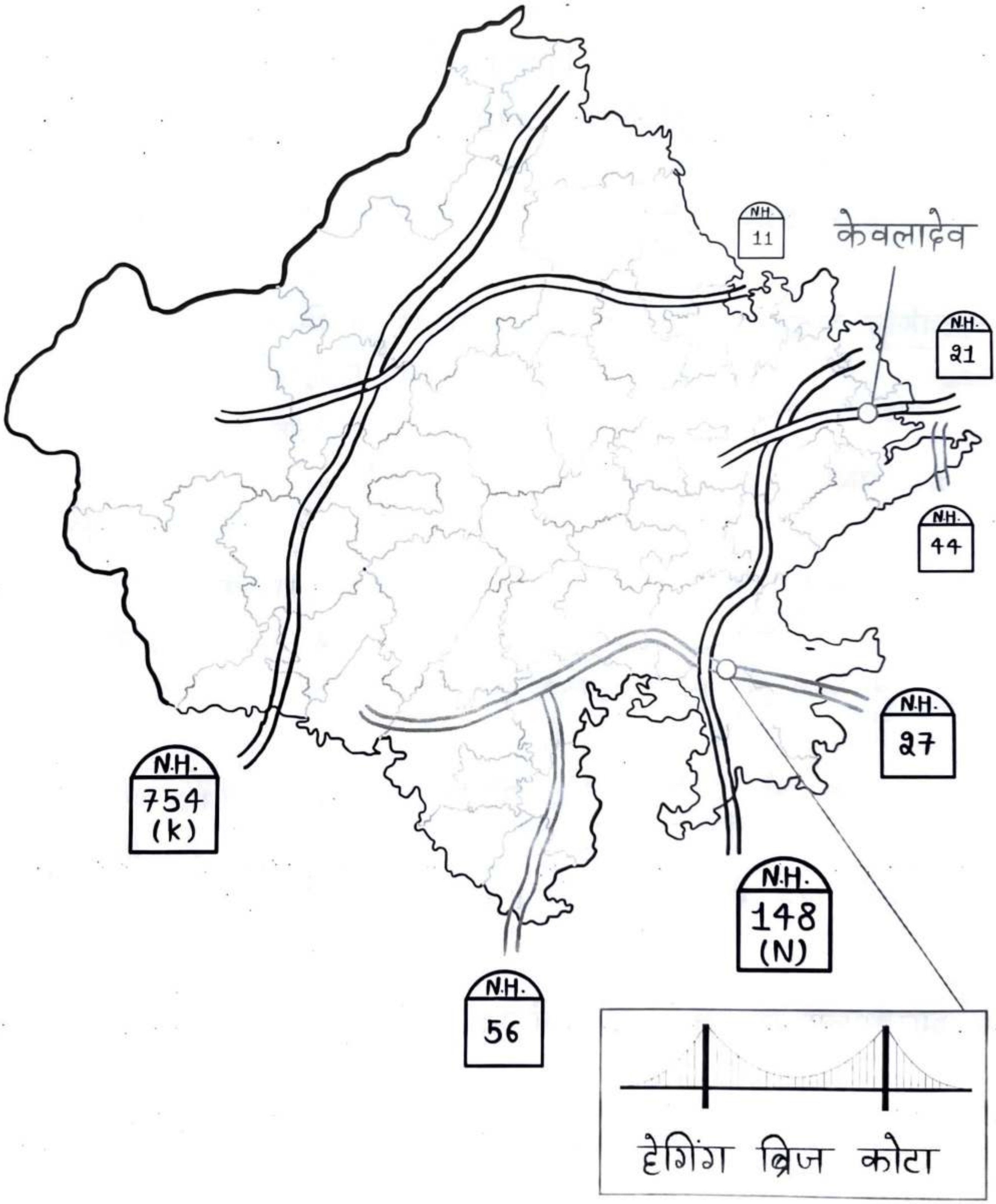
N.H. 11
केवलादेव
N.H. 21
N.H. 44
N.H. 27
N.H. 754 (k)
N.H. 148 (N)
N.H. 56
हेंगिंग ब्रिज कोटा

N.H.D.P. Imp. National Highway Development Project

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना

शुरुआत - 1999

- इसके तहत निम्न परियोजनाएँ हैं-

1. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना → इसका उद्देश्य निम्न 4 नगरो को जोड़ना है - दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता।

इस परियोजना के मार्ग मे NH 48 आता है।

2. पूर्व - पश्चिमी गलियारा → उद्देश्य - सिलचर (आसाम) को पोरबन्दर (गुजरात) से जोड़ना।

इसके मार्ग मे NH 27 आता है।

3. उत्तर - दक्षिणी गलियारा → उद्देश्य - श्रीनगर (J & K) को कन्याकुमारी से जोड़ना।

इसके मार्ग मे NH 44 आता है।

Imp.

◆ भारतमाला व्यावसायिक परियोजना :—

1. दिल्ली - वडोदरा गलियारा NH - 148 (N)

2. सोगरिया - सांचौर सवलपुर गलियारा NH - 754 (K)

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

- 31 मार्च 2022 के अनुसार राजस्थान का सड़क घनत्व – 81.47 KM/ 100 वर्ग कि.मी.

- राज्य मे सर्वाधिक सड़को की लम्बाई – बाड़मेर, जोधपुर
  कम सड़को की लम्बाई – धौलपुर, सिरोही

- सर्वाधिक राष्ट्रीय राजमार्ग लम्बाई – बाड़मेर, बीकानेर
  कम राष्ट्रीय राजमार्ग लम्बाई – करौली, प्रतापगढ़

- सर्वाधिक सड़को जुड़ा गाँव जिला – श्रीगंगानगर
  कम सड़को जुड़ा गाँव जिला – सिरोही

- राज्य मे 88.39% गाँव सड़को से जुड़े हुए हैं।

- राजस्थान मे सर्वप्रथम 1952 मे टोंक से राजकीय बस की शुरुआत की गई।

- राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना – 1964

- रीडकोर (RIDCOR) – रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेन्ट कंपनी ऑफ राजस्थान
  स्थापना – अक्टूबर 2004

- मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना – 2005
- ग्रामीण बस सेवा योजना – 2012 मे
- राजस्थान लोक परिवहन बस सेवा की शुरुआत – 2015

वायु परिवहन

► सबसे महंगा परिवहन है।

1. सांगानेर एयरपोर्ट – पह राज्य का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट है। जिसको दिसम्बर 2005 मे दर्जा दिया गया तथा फरवरी 2006 मे अधिसूचना जारी कर दी गई।

* यहाँ से सन् 2002 मे संयुक्त अरब अमीरात के लिए अन्तर्राष्ट्रीय उडान भरी गई।

2. डबोक एयरपोर्ट - उदयपुर
3. बीकानेर एयरपोर्ट - बीकानेर
4. जैसलमेर एयरपोर्ट - जैसलमेर
5. किशनगढ़ एयरपोर्ट - अजमेर
6. रातानाड़ा एयरपोर्ट - जोधपुर
   └ यह एयरपोर्ट नागरिक तथा सैन्य दोनो के लिए उपयोगी हैं।

<u>सैन्य एयरपोर्ट :-</u>

- सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)
- नाल (बीकानेर)
- फलौदी
- उत्तरलाई (बाड़मेर)

ग्रीनफील्ड़ एयरपोर्ट

- किशनगढ़ (अजमेर)
- नीमराना (कोठपुतली बहरोड़)
- शिवदासपुरा (जयपुर)
- जोधपुर एयरपोर्ट

- राजस्थान मे कुल 23 हवाई पट्टियाँ हैं –
  - सार्वजनिक क्षेत्र की हवाई पट्टियाँ है – 19
  - निजी क्षेत्र मे – 4

निजी क्षेत्र की हवाई पट्टियाँ निम्न है –

1. निवाई (टोंक) – अडानी ग्रुप
2. बांरा – अडानी ग्रुप
3. पिलानी (झुन्झुनू) – बिड़ला ग्रुप
4. कांकरोली (राजसमंद) – जे. के. ग्रुप

राजस्थान की कृषि

- भारत के संविधान के अनुच्छेद - 48 में कृषि तथा पशुपालन का उल्लेख किया गया है।
- MSP (न्यूनतम समर्थन मूल्य) :- किसी भी फसल का उत्पादन अधिक होने पर उसका मूल्य नहीं घटना चाहिए।

कृषि के प्रकार

1 सामान्य कृषि :-

(i) सघन कृषि

- इसमे भूमि संसाधन कम होता है।
- प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक होता है।
- प्रति व्यक्ति उत्पादन कम होता है।

2 वैज्ञानिक कृषि :-

(ii) विस्तृत कृषि

- इसमे भूमि संसाधन अधिक होता है।
- प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होता है।
- प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।

3 स्थानबद्ध कृषि :- स्थानबद्ध कृषि का अर्थ एक ही स्थान पर कृषि करना।

मानव → घुमक्कड → संग्रहण → आखेट → स्थानान्तरित कृषि → स्थानबद्ध कृषि

विशेषताएँ :- 1 फसल चक्र
2 कृषि के साथ मे पशुपालन
3 ग्राम देवी / देवता का उद्भव

4. स्थानान्तरित कृषि / कर्तन- दर्तन / पर्यावरण दुश्मन / काटो - जलाओ कृषि:

अर्थ - आदिवासियो के द्वारा पेड - पौधो को काटकर जलाकर भूमि खाली करके एक जगह दो या तीन वर्ष तक की जाने वाली कृषि को स्थानान्तरित कृषि कहते हैं।

- यह उष्ण कटिबंध क्षेत्र मे की जाती है।
- क्योंकि यहाँ तापमान की अधिकता के कारण जैविक तत्व मर जाते हैं जबकि वर्षा की अधिकता के कारण पोषक तत्व बह जाते हैं।

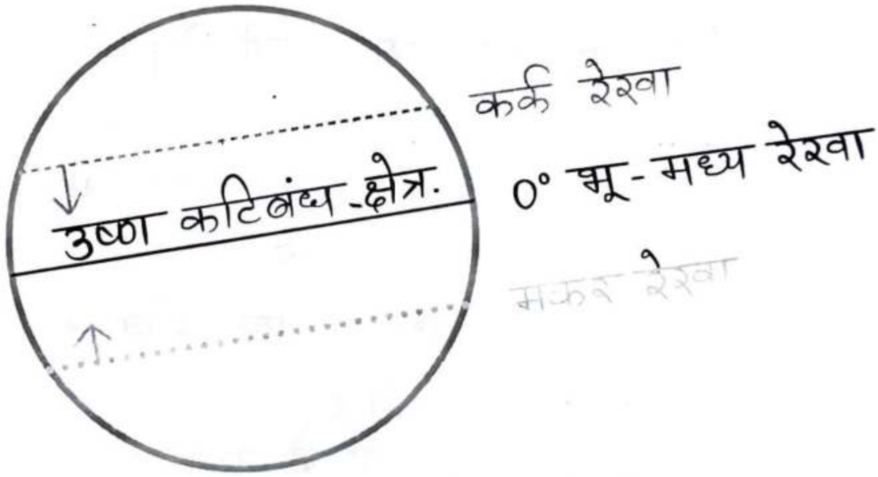

- इस कृषि मे प्रति हेक्टेयर उत्पादन नही बढ़ाया जा सकता है, क्योंकि इसका उद्देश्य केवल उपयोग करना है।

बुशफैलो कृषि :- 10 - 12 वर्षो के बाद खाली छोडी गयी भूमि पर फिर से पेड - पौधो को काटकर की जाने वाली कृषि।

स्थानान्तरित कृषि के नाम :-

1. वालरा ⇒ आदिवासियों के द्वारा की जाने वाली कृषि।

2. दजिया ⇒ आदिवासियों द्वारा मैदानी भागो में की जाने वाली कृषि।

3. चिमाता ⇒ आदिवासियों द्वारा पर्वतीय भागो मे की जाने वाली कृषि।

➤ असम मे स्थानान्तरित कृषि को झूमिंग कहते हैं।

4. ट्रक कृषि ⇒ इसका सम्बन्ध नगरो से है। इस कृषि मे अतिशीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुएँ जैसे - सब्जी, मांस, अण्डा आदि की कृषि की जाती है।

5. मोनो कल्चर ⇒ एक कृषि वर्ष मे एक खेत मे एक फसल लेना।

6. ड्यूको कल्चर ⇒ एक कृषि वर्ष में एक खेत में दो फसल लेना।

7. ओलिगो कल्चर ⇒ एक कृषि वर्ष में एक खेत मे तीन फसल लेना।

Note ⇒ कृषि वर्ष :- 1 जुलाई से 30 जून तक।

8. वाणिज्यिक कृषि ⇒ उद्देश्य - व्यापार करना।
- पूंजी की अधिकता, श्रम की अधिकता

2 प्रकार की होती हैं :-
(i) अन्न कृषि - इसका सम्बन्ध गेहुँ उत्पादन से है।
(ii) रोपण / यूरोपियन कृषि - यह उष्ण कटिबंध क्षेत्र मे होती है।

जैसे :- चाय, कॉफी, रबर, गन्ना, चावल इत्यादि।

वैज्ञानिक कृषि

1. सेरी कलचर - रेशम उत्पादन
2. एपी कलचर - मधुमक्खी पालन
3. पीसी कलचर - मछली पालन
4. सिल्वी कलचर - वृक्ष संवर्द्धन
5. विटी कलचर - अंगूर उत्पादन
6. वर्मी कलचर - केंचुआ पालन
7. हॉर्टी कलचर - बागवानी से सम्बन्धित
8. मेरी कलचर - समुद्री शैवाल
9. मॉरी कलचर - मलबरी उत्पादन
10. ओलिवी कलचर - जैतुन उत्पादन
11. ओलेरी कलचर - सब्जी उत्पादन

कृषि क्रान्तियाँ

1. हरित क्रान्ति :-

शुरूआत - 1966-67
जनक - नॉर्मन बोरलॉग
भारत मे जनक - डॉ M.S. स्वामीनाथन

इसमे निम्न 6 फसले है - चावल, गेहुँ, बाजरा, ज्वार, रागी, मक्का

उद्देश्य - खाद्यान बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करना।
लाभ - खाद्यानो को बढ़ावा अर्थात अधिक उत्पादन।
किसानो मे आत्मनिर्भरता।

नुकसान - 1. क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि क्योंकि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया।

2. बेरोजगारी में वृद्धि क्योंकि कृषि यंत्रो का प्रयोग किया गया।

3. छोटे किसानो (निर्धन) को नुकसान हुआ क्योंकि वह कृषि यंत्र नहीं खरीद सकते।

2. श्वेत क्रान्ति / ऑपरेशन फ्लड :-

शुरूआत - 1970
सम्बन्ध - दुग्ध उत्पादन
जनक - वर्गीज कुरियन

3. लाल क्रान्ति - टमाटर, माँस
4. पीली क्रान्ति - तिलहनो के लिए
5. नीली क्रान्ति - मछली पालन
6. गुलाबी क्रान्ति - झींगा मछलीपालन
7. बादामी क्रान्ति - मसालो का उत्पादन
8. गोल क्रान्ति - आलू उत्पादन
9. भूरी क्रान्ति - खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाना

कृषि जोत

अर्थ- कृषि भूमि कृषि जोत कहलाती है।

जनसंख्या बढ़ने पर जोत का क्षेत्रफल कम होता है लेकिन जोत की संख्या बढ़ती है।

जोत के प्रकार - 5

(1) बडा आकार
10 हेक्टेयर से अधिक
कुल जोत का % = 4.6%

(2) मध्यम आकार
4-10 हेक्टेयर तक
कुल जोत का % = 11.7%

(3) अर्द्ध मध्यम आकार
2-4 हेक्टेयर तक
कुल जोत का % = 18.5%

(4) लघु आकार
1-2 हेक्टेयर तक
कुल जोत का % = 21.9%

(5) सीमांत आकार
1 हेक्टेयर से कम
कुल जोत का % = 40.12%

कृषि जोत	क्षेत्रफल	संख्या
1. बडा आकार	- 13.2 %	- 11.1 %
2. मध्यम आकार	- 0.2 %	+ 0.4 %
3. अर्द्ध मध्यम आकार	+ 5.6 %	+ 6.7 %
4. लघु आकार	+ 10.5 %	+ 11.1 %
5. सीमांत आकार	+ 19.7 %	+ 22.3 %

- 10 वीं कृषि गणना मे बडे आकार तथा मध्यम आकार की जोत क्षेत्रफल मे कमी हुई जबकि अर्द्ध मध्यम, लघु तथा सीमान्त जोत के क्षेत्रफल मे वृद्धि हुई है।

- 10 वी कृषि गणना मे बडे आकार के जोत की संख्या मे कमी जबकि मध्यम आकार, अर्द्ध मध्यम, लघु तथा सीमान्त जोत संख्या मे वृद्धि हुई है।

- यह जोत के आँकडे 10 वी कृषि गणना के है।

➤ प्रथम कृषि गणना 1970-71 मे की गयी।
➤ 10 वी कृषि गणना 2015-16 मे की गयी।

राजस्थान के कृषि जलवायु खण्ड

राजस्थान मे 10 कृषि जलवायु खण्ड है जो निम्न है -

1. पश्चिमी शुष्क मैदानी क्षेत्र [I-A] :-

विस्तार	-	बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जोधपुर
वर्षा	-	20-37 cm (200-370 MM)
मिट्टी	-	मरुस्थलीय
परीक्षण केन्द्र	-	रामपुरं (जोधपुर)

2 उत्तरी-पश्चिमी सिंचित क्षेत्र [I-B] :-

विस्तार	-	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, अनूपगढ
वर्षा	-	10-35 cm (100-350 MM)
मिट्टी	-	लवणीय
परीक्षण केन्द्र	-	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ

3. आंशिक/सीमित पश्चिमी शुष्क मैदानी क्षेत्र [I-C] :-

विस्तार	-	जैसलमेर, बीकानेर, चुरू
वर्षा	-	10-35 cm (100-350 MM)
मिट्टी	-	मरुस्थलीय
परीक्षण केन्द्र	-	लुणकसर (बीकानेर)

4 अत स्थलीप जलोत्सरण क्षेत्र [II - A] :-

विस्तार - सीकर, चुरु, झुन्झुनू, नीम का थाना, डीडवाना - कुचामन, नागौर
वर्षा - 30 - 50 cm
मिट्टी - भूरी रेतीली
परीक्षण केन्द्र - आबूसर (झुन्झुनू)

5. लूणी संक्रांति प्रदेश (लूणी बेसिन) [II - B] :-

विस्तार - जोधपुर, पाली, सांचौर, जालौर, सिरोही
वर्षा - 30 - 50 cm
मिट्टी - भूरी दोमट
परीक्षण केन्द्र - सुमेरपुर (पाली)

6. अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र [III - A] :-

विस्तार - अजमेर, जयपुर, दौसा, टोंक, ब्यावर, केकड़ी, दूदू, कोटपूतली बहरोड़
वर्षा - 50 - 70 cm
मिट्टी - लाल - पीली
परीक्षण केन्द्र - तबीजी (अजमेर)

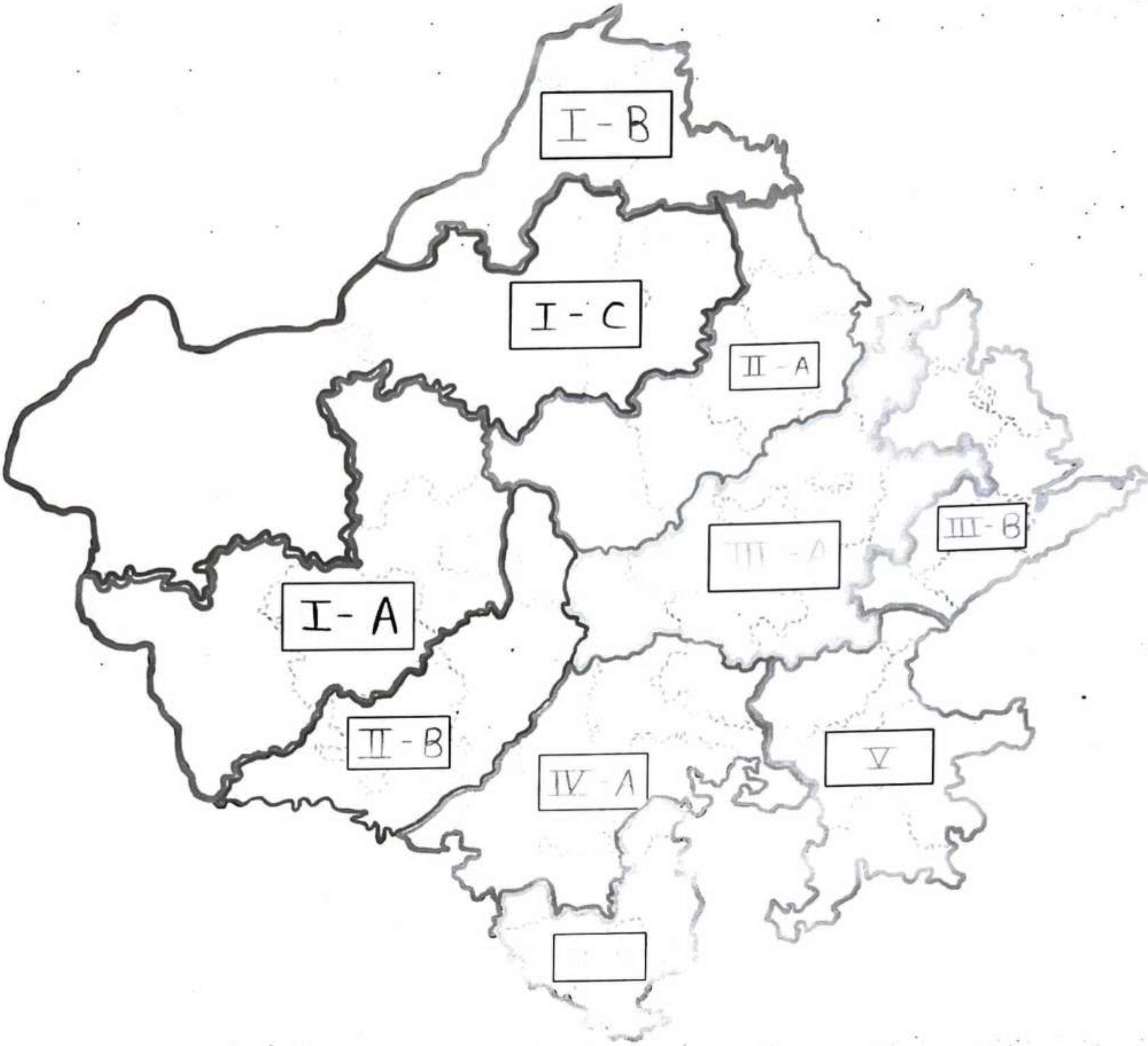

कृषि जलवायु खण्ड

7 बाढ़ सभाव्य पूर्वी मैदान [III-B] :-

विस्तार – खैरथल तिजारा, डीग, अलवर, सवाई माधोपुर, भरतपुर, गंगापुर सिटी, करौली, धौलपुर

वर्षा – 50 - 70 cm

मिट्टी – जलोढ़ परीक्षण केन्द्र – मलिकपुर (भरतपुर)

8 अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदान [IV-A] :-

विस्तार - शाहपुरा, भीलवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, सिरोही, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़

वर्षा - 50-90 cm

मिट्टी - पर्वतीय परीक्षण केन्द्र - चित्तौड़गढ़

9. आर्द्र दक्षिणी मैदान [IV-B] :-

विस्तार	–	डूंगरपूर, बांसवाडा, प्रतापगढ, द. चित्तौड़गढ, उदयपुर
वर्षा	–	50 - 110 cm
मिट्टी	–	लाल लोमी
परीक्षण केन्द्र	–	NO

10. आर्द्र दक्षिणी पूर्वी मैदानी क्षेत्र [V] :-

विस्तार	–	कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड, सवाई माधोपुर का कुछ भाग
वर्षा	–	65 - 100 cm
मिट्टी	–	मध्यम काली
परीक्षण केन्द्र	–	छत्रपुर (बूंदी)

कृषि फसलों का वर्गीकरण

I. उपयोग के आधार पर वर्गीकरण :-

1 Cover Crops (कवर क्रॉप्स) - ऐसी फसले जो मिट्टी को ढककर रखती है तथा इन फसलो की जडे जालीनुमा होती है।
जैसें :- मूंगफली, उड़द, मूंग।

- यह फसलें मिट्टी की उर्वरकता शक्ति को बनाये रखती हैं।
- यह फसलें मृदा अपरदन को रोकती हैं।

2. Cash Crops (नकदी फसलें) - ऐसी फसले जिनसे तुरन्त मुद्रा प्राप्त हो जाए।

जैसे :- कपास, गन्ना, अफीम, तम्बाकु।

3. Border Crops (बॉर्डर क्रॉप्स) - ऐसी फसले जो आवारा पशुओ को रोकने का कार्य करती हैं।

जैसे :- ग्वार, कुसुमा (कांटेदार फसलें)।

4. Trap Crops (ट्रेप क्रॉप्स) - ऐसी फसले जो मृदाजनित हानिकारक जीवों से सुरक्षा प्रदान करती हैं।

जैसे :- कपास के रेड कोटन रोग को रोकने के लिए उसके चारो तरफ भिण्डी की फसल उगाकर रोग को रोका जा सकता हैं।

II ऋतुओं के आधार पर फसलों का वर्गीकरण :-

	खरीफ / स्यालू	रबी / उनालू	जायद
बुवाई →	जून - जुलाई	सितम्बर - अक्टूबर	मार्च - अप्रेल
कटाई →	सितम्बर - अक्टूबर	मार्च - अप्रेल	मध्य जून
मानसून →	दक्षिणी पश्चिमी मानसून	पश्चिमी विक्षोभ (मावठ)	केवल सिंचाई पर आधारित

दो शाखाएँ

बंगाल की खाडी — अरबसागर

फसलें

(खरीफ)
ज्वार, बाजरा, मक्का, ग्वार, चवला, सोयाबीन, कपास, गन्ना, मूंगफली, अरण्डी, तिल, मोठ, मूंग, उडद, ढेंचा।

(रबी)
गेहुँ, जौ, सरसो, चना, राई, तारामीरा, मैथी, सौंफ, जीरा, ईसबगोल, मटर, मसूर, मिर्च, मूली, लहसून, आलू, धनिया, गाजर

(जायद)
खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, अन्य सब्जियाँ

➤ खरीफ की फसलो की सामान्य जानकारी :-

* उत्पादन (Production) इसका सम्बन्ध कुल उत्पादन से है।

* उत्पादकता (Productivity) प्रति हेक्टेयर या प्रति बीघा कुल उत्पादन।

1. बाजरा

वैज्ञानिक नाम	-	पेन्निसेटम टाईफोइडी
वर्षा	-	20-40 cm
मिट्टी	-	बलुई
उत्पादन	-	अलवर, जयपुर
उत्पादकता	-	अलवर, धौलपुर
क्षेत्रफल	-	बाड़मेर, जोधपुर
बाजरा अनुसंधान केन्द्र	-	मण्डोर जोधपुर

विशेषता :-

यह 5 F फसल है।

5 F

- Food खाद्यान
- Fodder चारा
- Fertilizer उर्वरक
- Fuel ईंधन
- Fiber रेशा (आहार)

- पूर्व से पश्चिम की ओर क्षैत्रफल बढ़ता है जबकि पश्चिम से पूर्व की ओर उत्पादन बढ़ता है।

2. मक्का

वैज्ञानिक नाम	-	जियामेज / माइज
वर्षा	-	50 - 80 cm
मिट्टी	-	लाल लोमी
उत्पादन	-	चित्तौड़, भीलवाड़ा
उत्पादकता	-	चित्तौड़, बूंदी
क्षैत्रफल	-	भीलवाड़ा, उदयपुर
अनुसंधान केन्द्र	-	बोरखेड़ा (बांसवाड़ा)

3. गन्ना

वैज्ञानिक नाम	-	सैकरम ऑफिसिनेरम
वर्षा	-	125 cm से अधिक
मिट्टी	-	मध्यम काली
उत्पादन	-	श्रीगंगानगर, चित्तौड़
उत्पादकता	-	करौली, जयपुर
क्षैत्रफल	-	श्रीगंगानगर, चित्तौड़
अनुसंधान केन्द्र	-	श्रीगंगानगर

4. चावल

वैज्ञानिक नाम	-	ओराइजा सेटाइवा
वर्षा	-	150 cm से अधिक
मिट्टी	-	दोमट / जलोढ़
उत्पादन	-	बूंदी, हनुमानगढ़
उत्पादकता	-	हनुमानगढ़, कोटा
क्षेत्रफल	-	बूंदी, हनुमानगढ़

5. चवला

वैज्ञानिक नाम	-	विग्ना साइनेसिस
वर्षा	-	50 - 80 cm
मिट्टी	-	दोमट
उत्पादन	-	झुन्झुनूं, सीकर
उत्पादकता	-	सीकर, बांसवाड़ा
क्षेत्रफल	-	झुन्झुनूं, सीकर

6. मूंगफली

वैज्ञानिक नाम	-	एराकिस हाइपोजिया
वर्षा	-	50 - 80 cm
मिट्टी	-	लाल - पीली
*. राजस्थान का राजकोट	-	लूणकसर (बीकानेर)
उत्पादन	-	बीकानेर, जोधपुर
उत्पादकता	-	बीकानेर, सिरोही
क्षेत्रफल	-	बीकानेर, जोधपुर

7. ज्वार

वैज्ञानिक नाम - सोरगम वल्गेयर
वर्षा - 50-70 cm
मिट्टी - दोमट
* गरीब की रोटी
उत्पादन - अजमेर, भीलवाड़ा
उत्पादकता - भीलवाड़ा, राजसमंद
क्षेत्रफल - अजमेर, पाली

8. कपास

वैज्ञानिक नाम - गोसिपियम हर्बेरियम
वर्षा - 500-100 cm
मिट्टी - मध्यम काली
* सफेद सोना (बणिया)
उत्पादन - हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
उत्पादकता - जालौर, बाँसवाड़ा
क्षेत्रफल - हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर

9. मोठ

वैज्ञानिक नाम - विग्ना एकोनीटीफोलिया
वर्षा - 20-40 cm
मिट्टी - बलुई
उत्पादन - बीकानेर, चुरू
उत्पादकता - जैसलमेर, जोधपुर, श्रीगंगानगर
क्षेत्रफल - बीकानेर, चुरू

➤ रबी की फसले :-

1 गेहूँ

वैज्ञानिक नाम	-	ट्रीटीकम एस्टीवम
वर्षा	-	50 - 75 cm
मिट्टी	-	दोमट
उत्पादन	-	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
उत्पादकता	-	अलवर, कोटा
क्षेत्रफल	-	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़

2 जौ

वैज्ञानिक नाम	-	होर्डियम वल्गेयर
वर्षा	-	70 - 100 cm
मिट्टी	-	दोमट
उत्पादन	-	जयपुर, श्रीगंगानगर
उत्पादकता	-	श्रीगंगानगर, अलवर
क्षेत्रफल	-	जयपुर, श्रीगंगानगर

3. चना

वैज्ञानिक नाम	-	साइसर एराइटिनम
वर्षा	-	50 - 70 cm
मिट्टी	-	बलुई
उत्पादन	-	चुरू, अजमेर
उत्पादकता	-	बांरा, कोटा
क्षेत्रफल	-	चुरू, हनुमानगढ़

4. सरसों

वैज्ञानिक नाम	-	ब्रैसिका कैम्पेस्ट्रिस
वर्षा	-	100 cm
मिट्टी	-	दोमट
उत्पादन	-	अलवर, टोंक, भरतपुर
उत्पादकता	-	अलवर, टोंक, भरतपुर
क्षेत्रफल	-	अलवर, टोंक, भरतपुर

5. अफीम

वैज्ञानिक नाम	-	पैपेवर सोमनिफेरम
वर्षा	-	20 - 40 cm
मिट्टी	-	लाल - लोमी
उत्पादन	-	चित्तौड़, कोटा, झालावाड़
उत्पादकता	-	चित्तौड़, कोटा, झालावाड़
क्षेत्रफल	-	चित्तौड़, कोटा, झालावाड़

6. तम्बाकू

वैज्ञानिक नाम	-	निकोटिना टोबैकम
वर्षा	-	25 - 50 cm
मिट्टी	-	लाल - काली
उत्पादन	-	जालौर, अलवर
उत्पादकता	-	झुन्झुनू, राजसमंद
क्षेत्रफल	-	जालौर, अलवर

राजस्थान के उत्कृष्टता केन्द्र

उद्देश्य :- कृषि फसलों पर अनुसंधान करना।

1. अनार - जयपुर
2. नींबू - कोटा (नांता)
3. खजूर - सागरभोजका (जैसलमेर)
4. संतरा - झालावाड़
5. आम - धौलपुर
6. अमरूद - टोंक
7. सीताफल - चित्तौड़गढ़
8. सब्जी - बूंदी
9. फूल - सवाई माधोपुर

प्रमुख योजनाएं

1. सहकारिता किसान क्रेडिट कार्ड योजना (K.C.C.) ⇒ 1998

उद्देश्य :- किसानो को KCC आवंटित करना ताकि उन्हें आर्थिक सहायता मिल सके।

* राजस्थान मे प्रथम KCC कार्ड - रामनिवास यादव को 1999 मे दिया गया।

2. आइसोपोम योजना (2004 - 05) ⇒

उद्देश्य :- तिलहन फसलों को बढ़ावा देना।

3. अमूल्य नीर योजना (2005-06) ⇒

उद्देश्य :- जल संरक्षण करना

4. गूगल संरक्षण विकास कार्यक्रम (2008-09) ⇒

उद्देश्य :- गुग्गल औषधीय पौधों का विकास।

5. राष्ट्रीय औषधि पादप मिशन [आयुष मिशन] (2009-10) ⇒

उद्देश्य :- निम्न औषधीय पौधों का विकास करना –
अश्वगंधा, सफेद मूसली, सतावरी, गिलोय, ग्वारपाठा, मुलेठी, तुलसी।

6. राज्य की प्रथम कृषि नीति (2013) ⇒

उद्देश्य :- प्रतिवर्ष कृषि विकास दर 4% तक रखना।

7. मुख्यमंत्री बीज स्वावलम्बन योजना (2017) ⇒

उद्देश्य :- किसानो को उन्नत बीज उपलब्ध करवाना।

8. राजस्थान कृषि खाद्य प्रसंस्करण निर्यात एवं व्यावसाय नीति- 2019

उद्देश्य :- कृषि निर्यात को बढावा देना।

प्रमुख फसलों की किस्में

1 गेहूँ ⇒ गंगासुनहरी, सोनाकल्याण, सोनालिका, कोहिनूर, मालविका, मंगला, मैक्सिकन, लालबहादूर, दुर्गापुरा-65, लोकवान।

2 मक्का ⇒ माहीधवल, माहीकंचन, सूर्यप्रभात, सूर्यकिरण, विजयकिरण, सविता।

3 चावल ⇒ माही सुगंधा, चंबल, जपा, पदमा, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, बासमती।

4 जौ ⇒ ज्योति, राजकिरण

5 चना ⇒ अनुभव, वरदान, अर्पणा, संगम, सम्राट।

6 सरसों ⇒ दुर्गामणि, वरुणा, पूसाकल्याणी, पायोनियर।

राजस्थान के प्रमुख खनिज

खनिज का अर्थ - भू-गर्भ से खनन (खुदाई) करके निकाले जाने वाले पदार्थ

खनिजो की विशेषताएँ - 1. असमान वितरित
2. प्रतिलोमी सिद्धान्त
└── अधिक मूल्यवान खनिज, कम मूल्यवान खनिज की तुलना मे कम मिलता है या कम मूल्यवान खनिज, अधिक मूल्यवान खनिज की तुलना मे अधिक मिलता है।

खनन की दो विधियाँ है -

1 विवृत खनन - इसे धरातलीय खनन भी कहते है क्योकि यह कम गहराई पर खनन किया जाता है।

2. कूपकी खनन - यह अत्यधिक जोखिमपूर्ण खनन है क्योकि यह अधिक गहराई मे खनन किया जाता है।

◆ खान एंव भू-विज्ञान विभाग - उदयपुर

* वर्तमान मे 82 प्रकार के खनिज है जिसमे से 57 प्रकार के खनिजो का उत्पादन हो रहा है।

* देश मे सर्वाधिक खनिज मे झारखण्ड के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है।

◆ राजस्थान खान एवं खनिज निगम लिमिटेड - उदयपुर

स्थापना - 30 अक्टूबर 1974

इसके कार्यों को निम्न 4 भागो मे विभाजित किया जाता है -

स्ट्रेटजिक बिजनेस एवं प्रोफिट सेन्टर :-

1. रॉक-फॉस्फेट
2. जिप्सम
3. लाइमस्टोन
4. लिग्नाइट

1. जिप्सम :- बीकानेर

* राजस्थान देश का 94% जिप्सम का उत्पादन करता है।

* श्रीगंगानगर, बीकानेर, चुरू देश का 17% तथा राज्य का 19% जिप्सम का उत्पादन करता है।

2. लाइमस्टोन :- जोधपुर

उद्देश्य - जैसलमेर तथा नागौर मे लाइमस्टोन की खोज करना।

* इसके द्वारा सोनु (जैसलमेर) क्षेत्र मे 1988 के अन्तर्गत लाइमस्टोन की खोज की गई।

3. रॉक-फॉस्फेट :- झामरकोटडा (उदयपुर)

झामरकोटडा उदयपुर से 26 KM दूर है।

* राजस्थान देश का 90% रॉक-फॉस्फेट का उत्पादन करता है।

4. लिग्नाइट :- (जयपुर)

1. गिरल - बाडमेर - 1994
2. सोनडी - बाडमेर - 2011
3. कपूरडी - बाडमेर - 2011
4. जालिपा - बाडमेर - 2017
5. कास्नाऊ इग्यार (नागौर) - 2003

* हमारे देश का राजस्थान 22% खनिज का उत्पादन करता है।
* राजस्थान देश का 15% धात्विक, 25% अधात्विक तथा 30% लघु खनिजों का उत्पादन करता है।

खनिजो का वर्गीकरण

धात्विक खनिज

- चमकदार
- आघातवर्धनीयता का गुण (पिटने पर फैल जाते हैं)
- तन्यता (तार खींचे जा सकते हैं)
- विद्युत के सुचालक

अधात्विक खनिज

- भंगूरता (पिटने पर बिखर जाते हैं)
- विद्युत के कुचालक

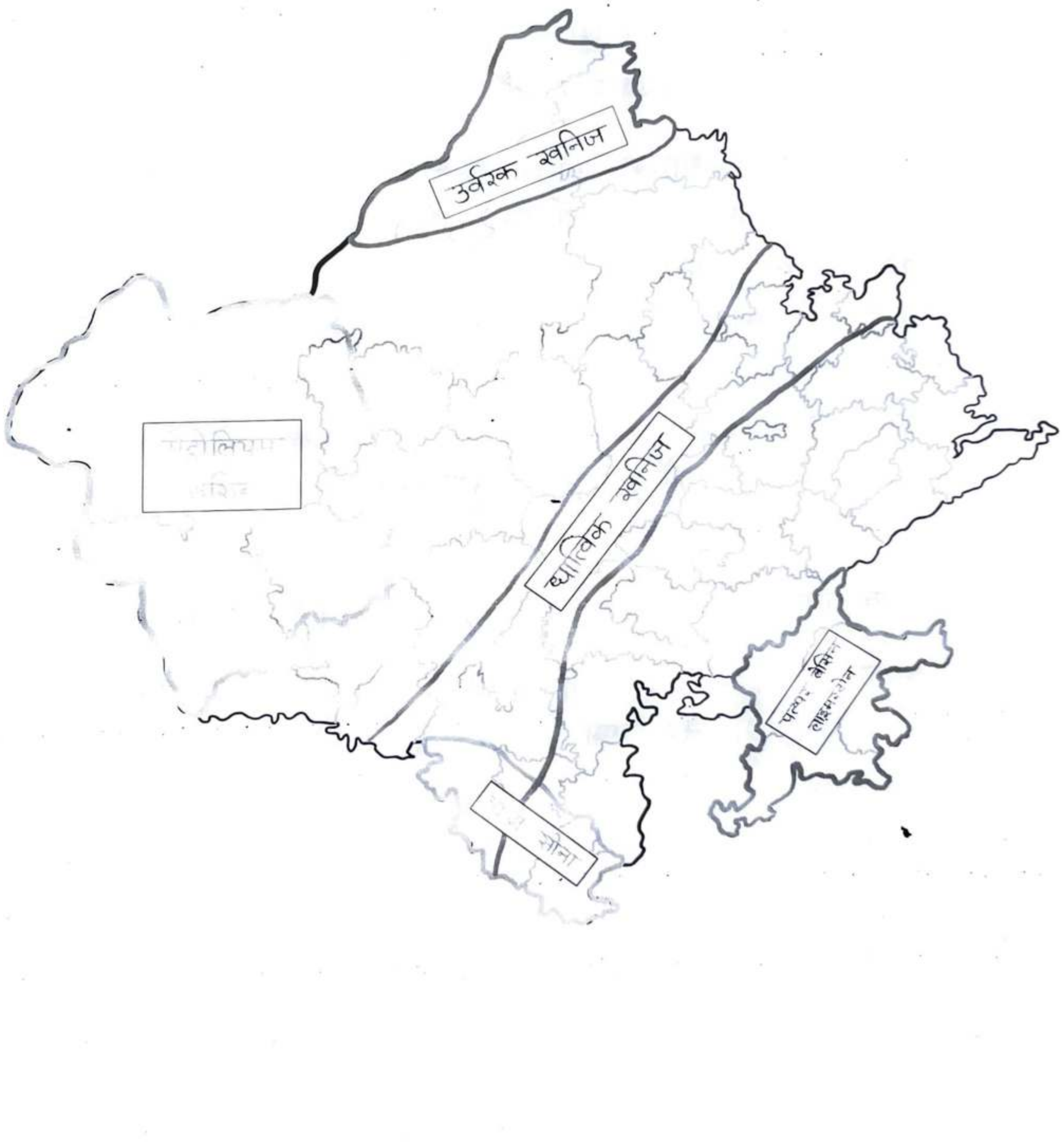
उर्वरक खनिज
धात्विक खनिज
सोना

धात्विक खनिजो का वर्गीकरण

1. लौह धात्विक खनिज :-

TRICK :-

काका मन लौटा पढाई मे

- काका
  - क्रोमियम
  - कोबाल्ट
- मन
  - निकल
- लौटा
  - टाइटेनियम
  - टंगस्टन
  - लोहा
- मे
  - मैंगनीज

2. अलौह धात्विक खनिज :-

1. सोना
2. चांदी
3. प्लेटिनम
4. एल्युमिनियम
5. मैग्नीशियम
6. सीसा - जस्ता
7. तांबा

◆ राज्य मे धात्विक खनिजो का वर्गीकरण निम्न प्रकार है -

* राजस्थान देश का 15% धात्विक खनिजो का उत्पादन करता है।

* खनिज मूल्य की दृष्टि से देश मे राजस्थान का 5वाँ स्थान है तथा खनिज संपदा की दृष्टि से दूसरा स्थान है। दृष्टि से

* राजस्थान मे अधात्विक खनिजो की प्रधानता अधिक है। इस कारण इनका मूल्य धात्विक खनिजो की अपेक्षा कम होता है।

* राज्य मे धात्विक खनिज की प्रधानता – अरावली पर्वतमाला मे है।

* अरावली पर्वतमाला मे खनिजों की प्रधानता होने के कारण इसे राजस्थान की जीवनरेखा कहते हैं।

Question

कथन – राजस्थान के पर्वतीय प्रदेश मे अत्यधिक धात्विक तथा ऊर्जा वाले
(A) खनिज की प्रधानता है।

कारण – राज्य के पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश मे ऊर्जा वाले खनिजो की
(R) अधिकता के कारण देश मे प्रसिद्ध माना जाता है।

Answer (A) A तथा R दोनो सही है।
(B) A तथा R दोनो गलत है।
(C) A तथा R दोनो सही है लेकिन R, A की व्याख्या नही करता है।
(D) A गलत तथा R सही है। [D]

* राज्य मे मरुस्थलीय प्रदेश ऊर्जा वाले खनिजो की दृष्टि से देश मे प्रसिद्ध हैं जैसे – पेट्रोल, कोयला, प्राकृतिक गैस।

* राजस्थान भौतिकीय दृष्टि से उत्तर - पश्चिम से दक्षिण - पूर्व की ओर खनिज संपदा की दृष्टि से अधिक संपन्न नही है जबकि दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर खनिजो की दृष्टि से अधिक सम्पन्न है।

1. सीसा - जस्ता :- इसे जुड़वा खनिज कहते हैं।

→ सीसा - जस्ता मिश्रित रूप से मिलता है इस कारण इसके इसके मिश्रित रूप को गैलेना कहते है।

सीसा - जस्ता के अयस्क → जिंकाइट, जिंक सल्फाइड, पाइरोसाइट, केलेमिन विलेमाइट।

उपयोग → जहाज, काँसा तथा बारूद निर्माण में।

राजस्थान के सीसा - जस्ता उत्पादन क्षेत्र -

1. उदयपुर - देबारी, जावरमाला पहाड़ी
2. राजसमंद - राजपुरा दरीबा, बेघुमी क्षेत्र
3. सवाईमाधोपुर - चौथ का बरवाड़ा
4. गुटा - किशोरीदास - थानागाजी (अलवर)
5. डूँगरपुर - घुँघराव माड़ो
6. बाँसवाड़ा - वरडालियाँ
7. भीलवाड़ा - रामपुरा आगुचा

2. ताँबा :-

उपयोग → विद्युत तार निर्माण में
अयस्क → कार्बोनेट, ऑक्साइड, सल्फाइड

1. नीम का थाना - खेतड़ी
2. झुन्झुनू - सिंघाना
3. अलवर - खो दरीबा
4. उदयपुर - अंजनी, देबारी
5. सलूम्बर - सलूम्बर
6. चुरू - बींदासर

3. लोहा :-

लौहा खनिज को आधुनिक विकास की धुरी कहा जाता है।

→ इसको आधारभूत उद्योग भी कहते है क्योंकि इसके द्वारा मशीनो का निर्माण किया जाता है मशीने अन्य उत्पाद का निर्माण करती है।

लोहे के 4 प्रकार → 1. मैग्नेटाइट
2. हेमेटाइट → राज्य मे।
3. लिमोनाइट
4. सिडेराइट

1. जयपुर ग्रामीण - मोरिजा बानोला
2. दौसा - लालसोट, नीमला राइसेला
3. नीम का थाना
4. झुन्झुनू - डाबला
5. करौली - देदरोली, लिलोटी
6. बूँदी - इन्द्रगढ़, मोहनगढ़
7. भीलवाडा - तिरंगा क्षेत्र
8. उदयपुर - थूर हुण्डेर, नाथरा की पाल

Note • जिंदल कंपनी के द्वारा राज्य का प्रथम स्टील प्लांट हम्मीरगढ़ पहाडी (भीलवाड़ा) पर स्थापित किया जाएगा।

4. मैंगनीज :-

उपयोग → लोहे को कठोर बनाने के लिए।

अयस्क → पाइरोलुसाइट, साइलोमेलिन, ब्रोनाइट।

बाँसवाड़ा – खाँमुरी, गुरासिया, कांचला, कांसला, कालाखुंटा, बारीखुंटा, तलवाड़ा, लीलवानी

5. बेरेलियम :-

उपयोग → आण्विक रिएक्टर
अयस्क → कार्बोट तथा सल्फेट

1. अजमेर – बान्द्रा - सिन्दरी
2. जयपुर – गुजरवाड़ा
3. उदयपुर – शिकारबाड़ी

6. टंगस्टन :-

उपयोग → रक्षा उपकरण, विद्युत उपकरण।
अयस्क → वुल्फ्रेमाइट, हुबेनेराइट, फर्बेराइट, रसेलाइट

* इसका गलनांक उच्च होता है। (1350°c)

उत्पादन → नागौर – भाकरी / रावल पहाड़ी (डेगाना)
सिरोही – वाल्दा / बड़ाबेरा
पाली – नानाकराब

7. सोना :- अपस्क → केलावेराइट, सिल्वनाइट

बाँसवाड़ा - आनन्दपुरा भूकिया, जगतपुरा भूकिया

यहाँ 2007 मे ऑस्ट्रेलिया की कम्पनी इण्डो गोल्ड के द्वारा सोने का सर्वेक्षण किया गया।

* निम्न जगह सोने की खोज की गई -

1. अलवर - खेड़ा मुण्डियावास
2. दौसा - धान बसेडी
3. केकड़ी - दाहुन्द (भिनाय)
4. शाहपुरा - देवतलाई
5. उदयपुर - रामपुरा खेड़ा
6. डूँगरपुर - भारकुण्डी
7. बाँसवाड़ा - धानोता

8. चाँदी :- यह सीसा जस्ता के साथ ही मिलती है।

अयस्क → हॉर्न सिल्वर, ओस्टाइट, पाइराजाइट

उदयपुर - जावर / जावरमाला पहाडी

* राजस्थान देश का सत-प्रतिशत चाँदी का उत्पादन करता है।

अधात्विक खनिज

1. आण्विक खनिज

1. अभ्रक

उपयोग → सौन्दर्य प्रसाधन तथा रबर के टायर बनाने मे।

उत्पादन → 1. भीलवाड़ा – दांता, भूणास
2. शाहपुरा – फुलिया
3. उदयपुर – चंपागुढा

2. ऐस्बेस्टॉस

उपयोग → सीमेन्ट के चद्दर तथा सीमेन्ट उद्योग मे
* यह प्राकृतिक रेशा वाला खनिज है।

उत्पादन → 1. अजमेर – नेराला, अर्जुनपुरा
2. ब्यावर – सेन्द्रा, मानपुरा
3. राजसमंद – तीखी गुढा
4. उदयपुर – झांझर की पाल
5. डुँगरपुर – घंटीगला

3. ग्रेफाइट

उपयोग → पेंसिल निर्माण मे उपयोग।

उत्पादन → 1. अजमेर
2. अलवर
3. बाँसवाड़ा

२. उर्वरक खनिज

1. जिप्सम / सेलेनाइट / सेलखड़ी / हरसौंठ

1. नागौर - गोठ मांगलोद, भड़ान, भाद्वासी, जोधियासि, धकोरिया।

२. श्रीगंगानगर, बीकानेर, चुरु क्षेत्र -

इस क्षेत्र मे जामसर (बीकानेर) राज्य की सबसे बड़ी जिप्सम की खान हैं।

3. जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली क्षेत्र -
बाड़मेर - पीर की ढाणी
पाली - खुटाणी

२. रॉकफॉस्फेट

उपयोग → फास्फेट उर्वरक निर्माण मे।

उत्पादन →
1. उदयपुर - झामरकोटड़ा
२. जैसलमेर - फतेहगढ़
3. जयपुर ग्रामीण - अचरोल
4. अलवर - आड़ुका - अंडावारी

3. पोटाश

उपयोग → गंधक अम्ल निर्माण मे किया जाता हैं।

उत्पादन → श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चुरु

4. पाइराइट्स

उपयोग → रासायनिक उर्वरक मे
उत्पादन → सलादीपुर (सीकर)

5. फेल्सपार

उपयोग → मिट्टी के बर्तन निर्माण मे
उत्पादन → अजमेर – मकरेरा क्षेत्र
भीलवाड़ा
राजसमंद

3. रासायनिक खनिज

1. फुलर्स अर्थ
2. बेराइट्स
3. डोलोमाइट
4. वर्मीक्युलाइट
5. वोलेस्टोनाइट
6. फ्लोसपार
7. गैरु / ऑकर्स

1. फुलर्स अर्थ (मुल्तानी मिट्टी)

1. बाड़मेर – आलमसरिपा, भाड़का
2. जैसलमेर – खींमसर, मंधा
3. बीकानेर – पलाना, बरसिंगसर, कोलापत

2. बेराइट्स

1. उदयपुर - जगत, रेलपातलिया, केवड़ा
2. सलूम्बर - बाबरमाल
3. अलवर - राजगढ़

3. डोलोमाइट

1. अजमेर - बजला-कावरा
2. जयपुर ग्रामीण - भैंसलाना, खोसीप्पल
3. जैसलमेर - ओढानिया
4. फलौदी - इंद्रो की ढाणी

4. वर्मीक्युलाइट - अजमेर, बाँसवाड़ा ।

5. वोलेस्टोनाइट - सिरोही, उदयपुर, पाली ।

6. फ्लोर्सपार

1. डुँगरपुर - माँडो की पाल
2. जालौर - भीनमाल

7. गैरु / ऑकर्स - चित्तौड़गढ़

4. मूल्यवान खनिज

1. पन्ना / हरि अग्नि

1. राजसमंद - कालागुमान
2. उदयपुर - गोगुन्दा टिक्की

- ग्रीन फायर बेल्ट :- गोगुन्दा से ब्यावर, मुद्दानी (अजमेर) तक 221 KM तक फैली हुई है।

2. तामड़ा / गार्नेट / फिरोजा / रक्तमणि

1. टोंक - राजमहल, जनकपुरा, कुशालपुरा, गावरी
2. केकड़ी - सरवाड़

3. क्वार्टजाइट

1. केकडी
2. ब्यावर
3. टोंक - देवली, मालपुरा

4. एक्वामेरिन

1. अजमेर
2. टोंक
3. भीलवाड़ा

5. मार्बल / संगमरमर

1. राजसमंद - मोरवड़, राजगढ़ खान
2. डीडवाना कुचामन - मकराना
3. केकड़ी - सावर

- बैंगनी मार्बल - बाँसवाड़ा
- नीला मार्बल - पाली
- पीला मार्बल - जैसलमेर
- लाल मार्बल - धौलपुर
- काला मार्बल - भैंसलाना (ज. ग्रा.)
- गुलाबी मार्बल - जोधपुर
- बादामी मार्बल - बाबरमाल (सलूम्बर)
- सतरंगी मार्बल - पाली
- लहरदार मार्बल - राजसमंद
- सफेद मार्बल - मकराना, राजसमंद

6. ग्रेनाइट

1. जालौर - ग्रेनाइट सिटी

- गुलाबी ग्रेनाइट - जालौर
- काला ग्रेनाइट - कालाडेरा (जयपुर ग्रामीण)
- पीला ग्रेनाइट - जैसलमेर

7. कोटा स्टोन - कोटा, झालावाड़, चित्तौड़गढ़

8. लाइमस्टोन / चूना पत्थर / सीमेंट - चित्तौड़गढ़, बूँदी, नागौर, जैसलमेर

5. ऊर्जा वाले खनिज

1. प्राकतिक गैस
2. पेट्रोलियम
3. कोयला

1. प्राकतिक गैस

सर्वाधिक उत्पादन - जैसलमेर
सर्वाधिक भण्डारण - जैसलमेर

प्राकतिक गैस के जैसलमेर मे निम्न क्षेत्र हैं :-

डांडेवाला गुमानेवाला रामगढ़ तनोट मनिहारी टिब्बा घोटारू

Note ⇒ राजस्थान मे सर्वप्रथम प्राकृतिक गैस का उत्पादन घोटारू मे 1994 मे शुरू हुआ।
बाड़मेर - रागेश्वरी

2. पेट्रोलियम

देश मे पेट्रोलियम उत्पादन मे प्रथम स्थान पर मुम्बई हाई बेसिन (महाराष्ट्र) है। 40%

दूसरा स्थान - राजस्थान। 17.36%

1. बाड़मेर → इसमे तेल के कुएँ निम्न है -
मंगला, भाग्यम, ऐश्वर्या, रागेश्वरी, वंदना, शक्ति, कामिनी, तुकाराम।

★ राज्य मे सर्वप्रथम तेल का उत्पादन मंगला तेल कुएँ से किया गया।

2. बीकानेर → पूनम तेल कुँआ।

3. जैसलमेर → बाघेवाला, साघेवाला, चिन्नेवाला।

◆ राजस्थान मे 4 तेल बेसिन तथा 14 जिले इन तेल बेसिन के अन्तगर्त आते है -

1. बाड़मेर - सांचौर बेसिन :- बाड़मेर, जालौर
2. जैसलमेर बेसिन :- जैसलमेर
3. बीकानेर - नागौर बेसिन :- बीकानेर, नागौर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरु।
4. विन्ध्यपन बेसिन :- कोटा, बूँदी, बांरा, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़।

3. कोयला

1. बाड़मेर - कपूरड़ी, जालिपा, गिरल, भाढ़रेस
2. बीकानेर - पलाना, बरसिंगसर, बिथनोक, नापासर गुढ़ा
3. नागौर - कास्नाऊ, इग्यार, मातासुख, मेड़ता

राजस्थान मे लिग्नाइट प्रकार का कोयला मिलता है।

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

► राजस्थान की खनिज नीति -

प्रथम	1978	CM भैरोसिंह शेखावत
दूसरी	1991	CM भैरोसिंह शेखावत
तीसरी	1994	CM भैरोसिंह शेखावत
चौथी	2011	अशोक गहलोत
पाँचवी	2015	वसुन्धरा राजे

Question निम्न में से कौनसा सुमेलित नहीं है -

1. ताँबा - अंजनी
2. अभ्रक - चम्पागुढ़ा
3. ऐस्बेस्टॉस - सेन्द्रा
4. फुलर्स अर्थ - ओढानिया

Answer (4.)

रिफाइनरी परियोजना - पचपदरा (बालोतरा)

समझौता = 2017 मे H.P.C.L. तथा राज्य सरकार के मध्य।

- H.P.C.L. (हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड़) का हिस्सा = 74 %
- राज्य सरकार का हिस्सा = 26 %
- संशोधित लागत = 72937 करोड़
- पहले लागत थी = 43129 करोड़

आधारित → पेट्रो केमिकल्स पर अर्थात पेट्रोलियम उत्पादन पर।

राजस्थान के अभयारण्य तथा राष्ट्रीय उद्यान

जैव विविधता :- किसी भी क्षेत्र मे पादप तथा जीव - जंतुओ की संख्या जैव विविधता कहलाती है।

दो विधियाँ - (1) स्वस्थाने :- किसी भी जीव को उसके प्राकृतिक आवास मे संरक्षण देना।
जैसे - राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, बायोस्फीयर रिजर्व, टाइगर रिजर्व, हॉपस्पॉट आदि।

(2) पर - स्थाने :- किसी भी जीव को उसके कृत्रिम आवास मे संरक्षण देना।
जैसे - चिडियाघर या कोई भी बन्द आवास।

राष्ट्रीय उद्यान (3)	अभयारण्य (27)
► यह केन्द्र सरकार के नियंत्रण मे है।	► यह राज्य सरकार के नियंत्रण मे है।
► प्राकृतिक आपदा आने पर पादपों को बेचा नहीं जा सकता।	► प्राकृतिक आपदा आने पर पादपों को बेचा जा सकता है।

राष्ट्रीय उद्यान - 3

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान - सवाई माधोपुर
2. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - भरतपुर
3. मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान - कोटा, बूँदी, चित्तौड़गढ़, झालावाड़

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान

* अभयारण्य दर्जा - 1955
* राष्ट्रीय उद्यान दर्जा - 1980

- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान
- राज्य की प्रथम बाघ परियोजना (1973)
- भारतीय बाघो का घर
- इण्डिया इको डवलपमेन्ट प्रोजेक्ट की शुरुआत - 1966-67

Note → टाइगर मेन ऑफ इण्डिया - कैलाश सांखला

- 2008 मे हैलीपेड के द्वारा यहाँ से सरिस्का मे बाघो का स्थानांतरण।

जलापूर्ती - रामसागर तालाब, गिलाई तालाब, मलिक तालाब, मानसरोवर तालाब

2. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

* अभयारण्य दर्जा - 1956
* राष्ट्रीय उद्यान दर्जा - 1981

- राजस्थान का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान
- राजस्थान का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान
- राज्य का प्रथम रामसर स्थल - 1 अक्टूबर 1981
- पक्षियों का स्वर्ग
- विश्व विरासत सूची में चयनित - 1985

पक्षी वैज्ञानिक - डॉ सलीम अली

- इसको यमुना जल समझौते (1994) के तहत् जल उपलब्ध होता है।

जलापूर्ती - अजान बांध, बंध बारेठा बांध

दर्शनीय स्थल -

1. त्रिनेत्र गणेश मंदिर
2. 32 खम्भो की छतरी
3. जोगी महल

दर्शनीय -

सारस / साइबेरियन क्रेन
आगमन - अक्टूबर - नवम्बर
वापस - मार्च - अप्रेल

* यहाँ राज्य का दूसरा सर्प उद्यान है।
* यह स्वर्णिम त्रिकोण पर स्थित है।

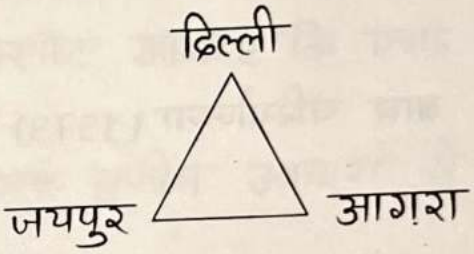

3. मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान - कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़

राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा - 09 जनवरी 2012
बाघ परियोजना का दर्जा - 10 अप्रेल 2013

- यह राजस्थान की तीसरी बाघ परियोजना है।
- इसको बनाने के लिए निम्न अभयारणों को लिया गया -
  1. दर्रा अभयारण्य
  2. जवाहरसागर अभयारण्य
  3. राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल अभयारण्य

- इस राष्ट्रीय उद्यान मे हीरामन तोता (एलेक्जेन्ड्रिया पेराकीट) मिलता है।

► यह राष्ट्रीय राजमार्ग - 52 पर स्थित है।

• राजस्थान के वन्य जीव अभयारण्य •

1. राष्ट्रीय मरू उद्यान — जैसलमेर, बाड़मेर
दर्जा - 1981

* राजस्थान का सबसे बड़ा अभयारण्य।

कुल क्षेत्रफल - 3162 KM^2
- जैसलमेर (1900 KM^2)
- बाड़मेर (1262 KM^2)

* इसमे गोड़ावण, टिड्डी तथा पीवणा सर्प मिलता है।
* इसमे आकल वुड फॉसिल पार्क स्थित है।
* इसमे मरूस्थलीय घास जैसे - सेवण / धामण, करड, अंजन, मुरात मिलती है।
* यह वनस्पति रहित अभयारण्य है।

2. सरिस्का अभयारण्य — अलवर
दर्जा - 1955

* सर्वाधिक हरे कबूतर, मोर तथा बन्दर मिलते हैं।

दर्शनीय स्थल - 1. भृतहरी गुफा
2. पाण्डुपोल मंदिर - शयन मुद्रा मे हनुमानजी

3. नीलकंठ महादेव - नृत्यरत गणेश प्रतिमा।

* इसमें क्रासका एवं कांकनवाड़ी पठार स्थित है।

3. सरिस्का 'अ' अभयारण्य

अलवर

दर्जा - 2012

* यह राजस्थान का सबसे छोटा अभयारण्य है। ($\simeq 5\ KM^2$)

Question राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है -

(a) रणथम्भौर

(b) राष्ट्रीय मरु उद्यान

(c) सरिस्का 'अ'

(d) सरिस्का

Ans. (a)

4. माउंट आबू अभयारण्य

सिरोही

दर्जा - 1960

* राजस्थान का सबसे ऊँचा अभयारण्य।
* जंगली मूर्गे पाये जाते है।
* 100 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ।
* यह राजस्थान का प्रथम इको - सेंसेटिव जोन है।
* यहाँ पर पुब्लेफेरिस नामक सबसे सुन्दर छिपकली पाई जाती है।
* यहाँ आबू एसिस डिकिल्पटेरा औषधि पाई जाती है।

5. कुंभलगढ़ अभयारण्य

राजसमंद, पाली, उदयपुर

दर्जा - 1971

* भेडियो के प्रजनन के लिए प्रसिद्ध ।
* चन्दन के वृक्ष मिलते है।
* रणकपुर के जैन मंदिर ।

6. जयसमंद अभयारण्य — सलूम्बर
दर्जा - 1955
* इसको 'जलचरो की बस्ती' अभयारण्य भी कहते है।

7. फूलवारी अभयारण्य — उदयपुर
दर्जा - 1983

* यह वर्षभर फूलों से ढका होने के कारण फूलवारी कहलाता है।
* यह महाराणा प्रताप की कर्मस्थली रहा हैं।
* इस अभयारण्य से 'मांसी वांकल' जल परियोजना गुजरती हैं।

8. सज्जनगढ़ अभयारण्य — उदयपुर
दर्जा - 1987
* यह राज्य का दूसरा सबसे छोटा अभयारण्य हैं।
क्षेत्रफल - 5.5 KM^2

9. सीतामाता अभयारण्य — प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, उदयपुर
दर्जा - 1979

* सर्वाधिक जैव विविधता
* सर्वाधिक - सागवान
* सर्वाधिक - औषधि
* चीतल की मातृभूमि
* उड़न गिलहरी (वैज्ञानिक नाम - रेड फ्लाइंग स्कीवरल पेटोरिस्टा एल्बीवेंडर) पाई जाती है।

२ झरने
- लव
- कुश

* हिमालय पर्वतमाला के बाद यहाँ सर्वाधिक औषधि मिलती है।

10. **भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य** चित्तौड़गढ़

दर्जा - 1983

* इसमे चूलिया जल प्रपात निर्मित है।
* यह तेज तरार व नुकीली घाटियों के लिए प्रसिद्ध है।
* इसमे मानद्रेसरा पठार स्थित है।

11. **बस्सी अभयारण्य** चित्तौड़गढ़

दर्जा - 1988

* यह अभयारण्य अरावली पर्वतमाला तथा विंध्याचल पर्वतमाला के संगम पर स्थित है।

12. **दर्रा अभयारण्य** कोटा, झालावाड़

दर्जा - 1955

* यह अभयारण्य घडियाल के संरक्षण के लिए बनाया गया।

13. जवाहरसागर अभयारण्य — कोटा

दर्जा - 1975

* यह भी घड़ियाल के संरक्षण के लिए बनाया गया।
* यहाँ राज्य का प्रथम सर्प उद्यान है।

14. राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य — कोटा, बूँदी, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर

दर्जा - 1979

* घड़ियाल के संरक्षण के लिए बनाया गया।

- तीन राज्यों में विस्तारित - मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर - प्रदेश
- इस अभयारण्य में गंगाई डोल्फिन मिलती है जो भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव है।

15. रामगढ़ विषधारी अभयारण्य — बूंदी

दर्जा - 1982

* यह राज्य की चौथी बाघ परियोजना है जो जून 2022 मे शामिल हुई।

16. शेरगढ़ अभयारण्य — बांरा

दर्जा - 1983

* इसको सांपो की शरणस्थली कहते हैं।
* यह परवन नदी के किनारे हैं।

17. कैलादेवी अभयारण्य — करौली, सवाईमाधोपुर
दर्जा - 1983
* यह धोक के वनो के लिए प्रसिद्ध है।

18. सवाई मानसिंह अभयारण्य — सवाईमाधोपुर
दर्जा - 1984
* इसमें धोक के वन मिलते हैं।

19. सवाईमाधोपुर अभयारण्य — सवाईमाधोपुर
दर्जा - 1955

20. केसरबाग
21. वनविहार
22. रामसागर
— धौलपुर, दर्जा - 1955

23. नाहरगढ़ अभयारण्य — जयपुर
दर्जा - 1980

24. जमुवारामगढ़ अभयारण्य — जयपुर ग्रामीण
दर्जा - 1982

25. **बंधबारेठा अभयारण्य** भरतपुर

दर्जा - 1985

* इस अभयारण्य को पक्षियों का घरौंदा कहते हैं।

26 **तालछापर अभयारण्य** सुजानगढ़ (चुरू)

दर्जा - 1962

* यहाँ काले हिरण मिलते हैं।
* इसमे तालछापर खारे पानी की झील हैं।
* इसमे हंस प्रजाति का सबसे लाड़ला पक्षी - ग्रेलेण्ड गुंज / सिलटी सवन / अंसर - अंसर मिलता हैं।

27 **रॉवली टॉडगढ़ अभयारण्य** ब्यावर, राजसमंद

दर्जा - 1971

* यह नीलगाय / रोजड़ा के लिए प्रसिद्ध हैं।

• राजस्थान के जंतुआलय • 5

1. जयपुर स्थापना - 1876
   * यह मगरमच्छ के प्रजनन के लिए प्रसिद्ध हैं।
2. उदयपुर स्थापना - 1878
3. बीकानेर स्थापना - 1922
4. जोधपुर स्थापना - 1936
5. कोटा स्थापना - 1954

7 - मृगवन

TRICK →

दुर से आकर पमा ने संजय को आम दिया।

- दुर — दुर्गवन (चित्तौड़गढ़) 1969
- से — सज्जनगढ़ (उदयपुर) 1984
- आकर — अमृता देवी (जोधपुर ग्रामीण) 1986
- प — पंचकुण्ड (पुष्कर) 1969
- मा — माचिया सफारी (जोधपुर) 1985
- संजय — संजय उद्यान (शाहपुरा) 1986
- आम — अशोक विहार (कोटपुतली बहरोड) 1986

• आखेट निषेध क्षेत्र • 33

1. बीकानेर - जोहड़बीड, देशनोक, मुकाम, दीयात्रा
2. जैसलमेर - रामदेवरा, उज्जवला
3. बाड़मेर - धोरीमन्ना
4. जोधपुर - गुढ़ा विशनोईयाँ, साथिन, फिटकाशनी
5. फलौदी - लोहावट, डेचू / देचू
6. सांचौर - सांचौर
7. पाली - जवाई
8. उदयपुर - बागदड़ा
9. चित्तौड़गढ़ - मेनाल
10. बांरा - सोरसन
11. बूँदी - कनकसागर
12. केकड़ी - शोकलिया
13. अजमेर - तिलोड़ा, गगवाना

14. नागौर - रोटू - सबसे छोटा आखेट निषेध क्षेत्र।

15. चुरु - संवत्सर - कोटसर
राज्य का सबसे बडा आखेट निषेध क्षेत्र।

16. जयपुर ग्रामीण - संथालसागर

• राजस्थान के कंजरवेशन क्षेत्र •

गठन → जीव - जंतुओ को संरक्षित रखने के लिए।

वर्तमान मे इनकी संख्या - 36

प्रथम कंजरवेशन रिजर्व - बीसलपुर (टोंक)

स्थापना - 2008

◆ राजस्थान के प्रमुख कंजरवेशन रिजर्व :-

झुन्झुनू - बीड़
नीम का थाना - शाकम्भरी, खेतडी बगिपाल, मनसामाता
जयपुर - झालाना - आमागढ़
टोंक - बीसलपुर
केकड़ी - अखड़ गांव
बांरा - शाहबाद, शाहबाद तलहटी, रामगढ़ कुंजी, सोरसन, बाझआमली

कोटा	–	उम्मेदगंज
भीलवाड़ा	–	हमीरगढ़
शाहपुरा	–	बीड़ घास, फुलिया खुर्द
उदयपुर	–	बागदड़ा, क्रोकोडाइल रिर्जव
पाली	–	जंवाई बांध लेपर्ड
सिरोही	–	वाडाखेडा रिर्जव
जालौर	–	सुंधामाता
सांचौर	–	रणखार
जोधपुर ग्रामीण	–	गुढा विशनोईयाँ
फलौदी	–	खींचन गाँव
नागौर	–	गांगेलाव, रोटू कंजर्वेशन रिजर्व
बीकानेर	–	जोड़बीड़ गाडवाला।

प्रमुख योजनाएँ :-

1. मरु वृक्षारोपण योजना – 1977-78
   उद्देश्य – मरुस्थल के प्रसार को सीमित करने के लिए वृक्षारोपण करना।

2. रुख भायला कार्यक्रम – 1986
   * यह वृक्षमित्र कार्यक्रम है जिसमे वृक्ष को अपना मित्र मानकर उसकी रक्षा की जाती है।

3. ऑपरेशन खेजड़ा – 1991
   * खेजड़ी के वृक्ष का संरक्षण करना।

4. अरावली वृक्षारोपण योजना – 1992

उद्देश्य – अरावली मे अवैध खनन रोकना, वृक्षारोपण करना तथा एनिकट का निर्माण करना।

5. बायॉलोजिकल पार्क योजना – 1994

उद्देश्य – पादप तथा जीव जंतुओ की सुरक्षा करना तथा पर्यटको के लिए पार्क को विकसीत करना।

इस योजना के तहत निम्न 4 बायोलॉजिकल पार्क विकसीत किए गए हैं –

1. सज्जनगढ – उदयपुर – 2015
2. माचिया सफारी पार्क (जोधपुर) ⎤ – 2016
3. नाहरगढ़ (जयपुर) ⎦
4. अभेड़ा (कोटा) – 2021

6. पुष्कर समन्वित विकास कार्यक्रम – 1997-98

सहयोग – कनाड़ा

* पुष्कर झील मे साफ - सफाई से सम्बन्धित

7. पेडोक्सी योजना – 2007-08

उद्देश्य – पर्यावरण संरक्षण तथा वृक्षारोपण करना

8. हरित राजस्थान योजना – 2009-14

उद्देश्य – नरेगा के द्वारा वृक्षारोपण करना।

राजस्थान मे निम्न 5 बाघ परियोजना है :-

1. रणथम्भौर बाघ परियोजना - 1973-74
2. सरिस्का बाघ परियोजना - 1978
3. मुकुन्दरा हिल्स बाघ परियोजना - 2013
4. रामगढ़ विषधारी बाघ परियोजना - 2022
5. धौलपुर - करौली बाघ परियोजना - 2023

राजस्थान की वनस्पति

* भारत की प्रथम वन नीति - 1952 मे घोषित हुई। जिसके तहत् कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 33% भाग पर, मैदानी भागो मे 20% तथा पर्वतीय भागो मे 60 से 65% भाग पर वन होने चाहिए।

* राजस्थान मे प्रथम वन तथा पर्यावरण नीति - फरवरी 2010 मे घोषित की। यह नीति घोषित करने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य है।

वन रिपोर्ट 2021 :-

→ प्रथम वन रिपोर्ट 1987 मे जारी की गई।
→ 17 वीं वन रिपोर्ट 13 जनवरी 2022 को जारी की गई।
→ वन रिपोर्ट प्रत्येक 2 वर्ष बाद जारी की जाती है।

नवीनतम वन रिपोर्ट के आँकड़े राजस्थान के सन्दर्भ मे :-

राजस्थान मे वन क्षेत्र - 32864 KM^2
वनावरण - 16655 KM^2 (4.87%)
वृक्षावरण - 8733 KM^2 (2.56%)
कुल वनावरण तथा वृक्षावरण - 25388 KM^2 (7.43%)

राज्य मे सर्वाधिक वन – 1. उदयपुर – 2753 KM^2
2. अलवर – 1196 KM^2
3. प्रतापगढ़ – 1034 KM^2
4. बाँरा – 1010 KM^2

राज्य मे कम वन – 1. चुरु – 78 KM^2
2. हनुमानगढ़ – 93 KM^2
3. जोधपुर – 109 KM^2
4. श्रीगंगानगर – 115 KM^2

सर्वाधिक % वन – 1. उदयपुर – 23.49 %
2. प्रतापगढ़ – 23.24 %
3. सिरोही – 17.49 %
4. करौली – 15.28 %

कम % वन – 1. जोधपुर – 0.48 %
2. चुरु – 0.56 %
3. जैसलमेर – 0.84 %
4. बीकानेर – 0.92 %

सर्वाधिक वनों मे वृद्धि – अजमेर, पाली, बीकानेर
वनों मे कमी – जालौर, करौली, सिरोही

*. इस वन रिपोर्ट मे 14 जिलों के वनो मे कमी तथा 19 जिलो के वनो मे वृद्धि हुई है।

निम्न जिलों के वनो मे कमी हुई है - जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, कोटा, बांरा, करौली, भरतपुर, अलवर, दौसा, चुरु।

* राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 9.60 % भू-भाग पर वन है।

* इस वन रिपोर्ट मे राजस्थान के वनो मे 25.45 KM^2 की वृद्धि हुई है।

राजस्थान के वनो का वर्गीकरण -

जलवायु के आधार पर | प्रशासनिक आधार पर

1. जलवायु के आधार पर -

सदाबहार	सागवान	मिश्रित	धोंक	काँटेदार
वर्षा - 150 + cm	75 - 110 cm	50 - 80 cm	30 - 60 cm	25 - 50 cm
क्षेत्र - 0.38 %	6.87 %	28 %	58 %	6.15 %
विस्तार - माउंट आबू	उदयपुर डूँगरपुर बांसवाड़ा	A B C D दौसा, उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, अजमेर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर	मरुस्थलीय जिलों को छोड़कर	मरुस्थलीय जिलों मे आते है।
वनस्पति - जामुन, आबू एसिस डिकिल्पटेरा	गुलर, महुआ, तेंदु	सागवान, शीशम, साल, चन्दन, महुआ	धोंक वन	खेजड़ी, रोहिड़ा, बेर, कैर, बबूल, नागफनी

२. वनो का प्रशासनिक वर्गीकरण –

आरक्षित वन (Reserved)	रक्षित वन (Protected)	अवर्गीकृत वन (Unclassified)
*. कटाई तथा पशुचारण संभव नही	*. सरकार की अनुमति पर कटाई व पशुचारण संभव है।	*. बिना सरकार की अनुमति के कटाई व पशुचारण हो सकता है।
37.05 %	56.49 %	6.46 %

• अन्य महत्वपूर्ण तथ्य •

- सघनता के आधार पर वनो का वर्गीकरण -

अति सघन वन	मध्यम सघन वन	खुले वन
70% भू-भाग पर वन	40-70% भाग	10-40% भाग
कुल क्षेत्रफल - 0.02%	1.28%	3.57%

- राजस्थान में सघनता के आधार पर वनो का प्रतिशत - 4.87%

- विश्व वानिकी दिवस - 21 मार्च
- विश्व जल दिवस - 22 मार्च
- विश्व पृथ्वी दिवस - 22 अप्रैल
- विश्व जैव विविधता दिवस - 22 मई
- विश्व पर्यावरण दिवस - 5 जून
- विश्व मरूस्थलीकरण दिवस - 17 जून
- वन उत्सव - जुलाई - अगस्त
- विश्व ओजोन दिवस - 16 सितम्बर
- वन्य जीव सप्ताह - 2 से 8 अक्टूबर

- राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड - जयपुर
  स्थापना - 14 सितम्बर 2010

खेजड़ी (प्रोसेसिप सिनेरेरिया) → राज्य वृक्ष का दर्जा - 1983

उपनाम → कन्नड़ भाषा - बन्ना - बन्नी
तमिल भाषा - पेपमेप
सिन्धी भाषा - धोकड़ा

*. राजस्थान का कल्पवृक्ष कहते हैं।

रोहिड़ा (टिकोमेला अंडुलेटा) → राज्य पुष्प का दर्जा - 1983

उपनाम → रेगिस्तान का सागवान / मरुशोभा

ढाक / पलास (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा) → जंगल की ज्वाला।

महुआ (मधुका लोगोफोलिया) → यह उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ मे मिलता है।

*. आदिवासियों का कल्पवृक्ष कहते हैं।